दिव्य वाणी भाग –2

सन् - 2021

अनुक्रमणिका

क्रमांक	विषय	पृष्ठ संख्या
1.	श्री गुरुजी की दिव्य वाणी	003 से 270
2.	शिष्यानुभव	272 से 283

॥ श्री सतगुरुवे नमः ॥

लाखों, करोड़ों, अरबों, खरबों, पदम् नील में कोई एक आत्मक्रीड़ सतगुरु होते हैं, जो सभी सम्प्रदायों के सैकड़ो लोगो को, जीवों को, आत्मा रूपी अपने स्वरूप में स्थित करा देते हैं, उन्हें अपने जैसा बनाकर अपने वास्तविक घर परमात्मतत्व, स्वधाम तक पहुँचा देते हैं। अतः इनका स्थान हमारी संस्कृति में परम् पिता परमात्मा से भी ऊँचा होता है। ऐसे ही श्री गुरुजीश्री वासुदेव रामेश्वर तिवारी जी है, है का अर्थ भौतिक शरीर से नहीं है।

श्री गुरुजी की जीवनी दिव्याम्बुनिम्नज्जन, स्मरणिका, गुरुजी की कुछ लिपिबद्ध वाणी, कई अवसरों पर स्वयं गुरुजी से गुरु भाई बड़कऊ भैय्या से गुरु पुत्र श्री अशोक भैया से, उद्बोधन, गुरुवाणी, कैसेट, और भी अन्य श्रोतों से तथा गुरुजी के वचनामृत का संकलन पूर्व में कई वरिष्ठ एवं समर्पित गुरुभाई, बहनों, द्वारा किया गया था और किया जा रहा है, वे सब आदर के पात्र हैं, सभी जाने-अनजाने, पूज्यनीय है, उन्हें सादर चरण स्पर्श प्रणाम है।

इन्ही साधनो से, उन सबके प्रयास से प्राप्त, गुरुजी के श्रीवचनों का गुरुपरिवार के एक मूढ सदस्य के द्वारा कम से कम शब्दों को, वाक्यों को लेकर, कुछ वाक्यों को और, पुनः आये हुए शब्दों को छोड़ते हुए, भावों में, उद्देश्य में परिवतर्न नही हो, इसका समुचित ध्यान रखकर श्री गुरुजी के शब्द वाक्यों को कैसेट से सुनकर लिखकर संकलन करने का प्रयास किया गया है। ताकि सभी पुस्तकों के कुछ सारगर्भित वाक्यो, भावों को, गुरुपरिवार और दिव्यमार्ग के पथिकों को गुरूजी की श्रीवाणी, अमृत वचनों को एक पुस्तक **"दिव्य वाणी भाग- 2"** शीर्षक के रूप में सबके लाभार्थ, (आचरण की उपयोगिता में) उपलब्ध कराई जा सके।

किसी भी कारण वश दिव्य पुरुष श्री गुरुजी की दिव्य वाणी के संकलन में कुछ भी त्रुटि दिखाई दे तो गुरु परिवार के इस साधक को, दुर्ग भिलाई के इस सदस्य को, (मो.न.९३०२८३४०७६) संकलनकर्ता को, हृदय से क्षमा करने की महती कृपा करेंगे। ऐसी आप सबसे विनम्र याचना एवं कर बद्ध प्रार्थना है, कृपया स्वीकार करेंगे ऐसी अपेक्षा है।

दिव्य वाणी भाग-1 में श्री गुरुजी की दिव्य-जीवनी का संक्षिप्त परिचय दिया जा चुका है, जिनका अवलोकन भाग-1में हम कर सकते है।

सादर प्रणाम

जय जय जय गुरुजी |

।। श्री गुरुजी की दिव्यवाणी ।।

(भाग – 2)

- हरि को भजे तो हरि ही होई। जिसको आप भजते है। आप वही हैं। पहले वही था, अभी भी है, आगे भी वह रहेगा। तो ये सत जिसमें है, वो सत्पुरुष जो है,ये उस सत् की पूजा है। सारा जगत जिस सत्ता के अंतर्गत है, वो वासुदेव है।उस सत् को ही वासुदेव कहा गया है। देही-इस देह को धारण करने वाला याने आत्मा। वो आत्मा जो परम् है या जो अध्यारोपित होकर बुद्धि के द्वारा जीवात्मा कहलाया। परन्तु ये आत्मा शब्द, दोनों समान है। आप शक्ति के द्वारा पलक मार सकते है, आ जा सकते है, कोई भी कार्य कर सकते है। ये बात भूल जाते है की वो शक्ति ही सब करती है (सोचते है मैं करता हूँ)। वो शक्ति है आपकी आत्मा। वही परम् है। वही सर्वशक्तिमान है, सर्वज्ञ है और सर्वत्र विद्यमान है। ये परस्पर विरोधी है लेकिन सत्य है। इसको अद्भुत कहा गया है। अगला जन्म नही, इसी जन्म में आप अपना उद्धार कर सकते है और अर्चिरादि मार्ग, ज्योर्तिमय मार्ग अपना कर अपना मार्ग प्रशस्त कर सकते है। अभ्यास(सतगुरु से प्राप्त) से होता है। जब तक गुरुदिश मार्ग से उसे धारण नहीं कर लेते। उस प्रकार से आचरण (चरण माने आचरण)नहीँ बना लेते, अपने जीवन को उस सांचे में नहीँ ढाल लेते, तब तक बहुत कठिन है। (विकार युक्त बुद्धि का विकारों सुख, दुःख, काम, क्रोध, लोभ, मोह, मृत्यु भय, के बन्धन से छूटकर निर्मल होना, शुद्ध होना) अभ्यास के द्वारा गुरुदिश मार्ग से चलने पर ये क्लेश अपने आप मिट सकते है आप समर्थ हो सकते है। गुरुदिश मार्ग से आप ऐसी ताकत प्राप्त कर सकते है, की आप अपनी डेस्टिनी को बदल सकते है। इसी जन्म में बदल सकते है। भव प्रत्ययो विदेह प्रकृति लयानाम। भव माने जन्म, जन्मतः। विदेह माने अंतरमार्ग में (सुषुम्ना में प्राण का प्रवेश) उसकी सदैव लौ (सुषुम्ना में प्राण संचरण से षट् चक्र भेदन की प्रक्रिया सद्गुरु कृपा से गुण, आनन्द, समता, आत्मशक्ति की प्राप्ति की सतत प्रक्रिया) लग जाती है। उसको अंदर ही अच्छा लगता

है।अंदर जाकर जो कुछ मिलता है वह अपने स्वजन, परिजन को बताया करता है कि बड़ा आनन्द आता है और सदा प्रसन्नचित्त रहता है। क्योंकि उसे कोई चिंता नही। मोक्ष का यही अर्थ है। यही लक्षण है। आपके पास रहकर, सूझबूझ देकर, आश्वासन देकर। आदेश दिया गया उस प्रकार से बुद्धि में रखकर अभ्यास में लग जाना चाहिए और किसी प्रकार की कोई चिंता नहीँ करना चाहिए। लेकिन हम चिंता करते है हमारा होता नही। तो जब ये हमारा तुम्हारा आ गया तो सब गया। फिर आप शरण में कहाँ आये? आपने सरेण्डर कहां किया? जैसा बताया गया, कहा गया, दिया गया वैसा आप करें तो अवश्य अंतरमार्ग खुल जाएगा। और प्रत्याहार केवल बैठने से सब शुद्धता आ जाती है। जिसको बाह्य संवेदना शून्यत्व (प्रत्याहार) कहा गया है। जब तक ये नहीं होगा तुम्हारी इन्द्रियों का वश में आना ये कुछ भी नहीं हो पाएगा। जैसे जैसे आप आत्मा की ओर पहुँचते जाएंगे। वैसे वैसे ये (विकार) सब बदलते जायेंगे। जितनी दृढ़ता और निश्चयपूर्वक आप दूसरे कार्य करते है यदि उतनी तत्परता, तल्लीनता, तन्मयता इसमें हो तो आपकी बुद्धि में जो दोष, दुर्गुण है वो सब बदलकर (शुद्ध होकर) गुण हो जाएंगे। नाना प्रकार के जो सुख दुःख आपके सामने है वो बदल सकते है।यहाँ आने पर वो सब बदल जाते है। महामन्त्र मणि विषय व्यालके, मेटत कठिन कुअंक भालके।इसी जन्म में आप उसको मिटा सकते है।

।। ध्यान ।।

- दीक्षा के समय गुरु शिष्य के अन्तर में प्रविष्ट होकर अंतर्यामी रूप से शब्द ब्रम्हमय ज्ञान का दान करता है।

गुरूजी के चरणों को लक्ष्य में रखना, ध्यान करते करते मणिवत, स्फटिक मणि के समान दसो नख हो जाते है, तब ग्रंथि, संशय दूर हो जाते है।
स्व का अध्ययन ही ध्यान है।उस परमतत्व की ओर जहाँ से आये हो उन्मुख रहो।

जब तक आप ध्यानमग्न है,आप भी वही है।

केवल अपने चित्त को, अपने मन को एक देश में बांधना है और जैसा दीक्षा में दिया गया वो ध्यान में लाना है, वो धारणा है, मन को एक जगह लगा देना है, पकड़ा देना है, बस पकड़कर रखना है ललाट में, भृकुटि के मध्य में दूसरी कोई बात नही। फिर बुद्धि से अंदर देखिये मन पकड़कर रखता है या नही, वेट एंड सी, बस। तटस्थ हो जाओ। ये आदेश है, पालन हो,होता है की नही, ये नही चाहिये। ये भव है कुरु नही। भव माने अपने आप होता है।कुरु माने करना।

आत्मा तो द्दष्टा मात्र है, कुछ न करना ही ध्यान है।

ध्यान में बाघ दिखाई दे, स्थिर रहे भय के भाव को पचा गये, यही वास्तविक समाधि लक्षण है। यह चेतन समाधि है।

गुरूजी से कोई आदेश प्राप्त करना चाहते हो तो निल होकर उनका ध्यान करे।

ध्यान करना नही बोलता, ध्यान में लाना है। तब तक वो धारणा है। जब ज्योति सामने आती है, तब वो ध्यान है।

जिसका मनन करता है, ध्यान करता है, वह ही हो जाता है।

जब गुरूजी का आराध्य का ध्यान किया जाता है, तब मन आराध्यमय हो जाता है और उसी का दर्शन होने लगता है।

मन से विकारो का ध्यान न हो ऐसा प्रयत्न करो। ध्यान बन जाता है, तो विचार उदय अस्त होते नही है।

ध्यान से जो हमारे विषय है, वो बाहर चले जाते है, और निर्विषय हो जाते है।

ध्यान जो है मानस, गुप्त रूप से मनन करना है। मन निर्विषय हो जाता है।

हमारे जो विचार उदय अस्त होते रहते है, इस जड़ता को दूर करने के लिये ध्यान करना है।

ध्यान माने गुप्त रूप से केवल मनन करना है।

ध्यान की स्थिति में एक ऐसी अवस्था होती है, जिसमे साधक को जब जैसी

इच्छा होती है, उसके संकल्प मात्र से पूर्ण हो जाती है।
ऐसा जो आत्मा परम् है (आदित्य वर्ण) अजर, अविनाशी है, कोई स्थान नही जहाँ वो नही है, उसका ध्यान करके बुद्धि को पैनी करना है।
केवल आप ध्यान करे भावना में निमग्न हो जाइये, आपके मन में वो जो है, अपने आप को प्रकट कर देता है। प्रत्याहार के बिना धारणा हो ही नही सकती। मन धारण के योग्य हो जाता है, तब आप कुछ नही करते अपने आप होता है।
ज्योति के रूप में उसका ध्यान करना चाहिये, जपना चाहिये, इसमें जो आनन्द प्राप्त होता है, वही सतचिदानन्द है, उसे ही पकड़ना है।
किसी कार्य को करने से गुरूजी ने मना तो किया नही है, काम से फुर्सत मिलते ही पुनः गुरूजी का ध्यान आना चाहिये।
ऐसा ध्येय होना की कभी भी हमारा कल्याण हो और हमको देख करके औरो का भी कल्याण हो।
श्वास चल रही है, आप कुछ नही कर रहे है, मात्र दृष्टा है, अकर्ता होना है। ध्यान ही तो मौन है। मौन स्थायी है, ध्यान अस्थायी है। बगैर स्मरण किये वो ध्यान बन जाना चाहिये। मौन का भार बढ़ने पर आत्मदर्शन हो जाता है।

- मैं आपको साधना करने की पद्धति शुरू से बता रहा हूँ, जिसको इस पार से उस पार तक जाना है, अंतर्जगत में जाना है, उसके लिए है, यह।
  आप ध्यान करे, दोनों भृकुटि के बीच में लक्ष्य रखे, कोई भी नाक, कान दबाने की जरूरत नही, कोई भी शक्ति या बल शरीर पर लगाने की जरूरत नही। प्राणायाम करने की जरूरत नही। मेरा विषय है, ध्यानं निर्विषयं मनः। वेट एंड सी। बस।
  धैर्यपूर्वक बुद्धि के द्वारा शान्ति, उपरामता, दिव्यता को प्राप्त होंगे। मन को आत्मा में स्थिर करके फिर कुछ भी चिंतन न करे। भटकना अर्थात इच्छाये अधिक है।

मोह ही रात्रि है, नींद अज्ञान। न कहीँ आना है, न जाना है, न पढ़ना है, न स्तुति। ईष्ट के चरणों में पड़े रहना है। कष्ट आयेंगे, किन्तु कटने के लिए। ऐसा आया और ऐसा गया।निर्विघ्न भोग। जग में सबको मित्र समझो, यह चेतन मन्त्र है। जैसे बालको को सिखाते हो, उसी प्रकार स्वयं सीखो। जग अनन्त है, क्रियाएँ अनन्त है, सदैव सीखो। भाव सहित कवच मन्त्र का जाप करो। फलाकांक्षा रहित, कर्म करना, जैसे श्वास, प्रश्वास के समान सहज कर्म करना।

जब आप जाग गये तो जगत का बोध हो गया। आपमें पुरुषत्व आ गया। निर्भय हो गये। ब्रम्ह हो गये। योगाभ्यास के समय योगी की समस्त चित्त वृतियां संयत होते होते सारी वृत्तियां एक मुखी होकर एकाकार हो जाती है। अति सूक्ष्म स्पंदन भी असीम चिदाकाश में विलीन हो जाता है, इस प्रकार वह निर्द्वन्द हो जाता है।

आत्म देव से बढ़कर कोई देव नही है, यही गायत्री मन्त्र का निष्कर्ष है, ॐ नाम की नौका है, इस नाव में बैठ जाने पर, अखण्ड प्रवाह से, अमोघ गति से, अंतर रहित ध्यान करने से, इस मल रूपी संसार से, मल रूपी आगार से, पार हो जाते है।

और समर्थ होकर औरो को भी, इस कीचड़ में से निकालने में समर्थ होता है, अपने जैसा औरो को भी तैय्यार करता है, यही विज्ञान है।

लोग बोलते है, की हमारा यह नही हुआ, वह नही हुआ।यह नही सोचते जहाँ घनघोर अँधेरा था, वहाँ थोडा तो प्रकाश हुआ। पर हम उतना आनन्द मनाते नही है, और सूरत उतारकर आते है, की हमारा कुछ नही होता।

आत्मज्ञान हो जाए, तो क्या कहना? तब तो तुम्हारी लाइफ तुम्हारी चर्या ही बदल जायेगी। अपना पराया भेद, यह सब चला जायेगा, स्त्री को आप स्त्री नही कहेंगे। तुम्हारी अर्धांगिनी, जिसको तुम पत्नी कहते हो, वह पत्नी नही रहेगी आपके लिए। एक एक कौड़ी के लिए मारे मारे न फिरोगे।

- डर के सिवाय कुछ नहीं, डर डर डर, कैसे बचना कैसे नहीं बचना। मैं तो कुछ करने को नहीं कहता, रहने को बोलता हूँ।
इस शरीर में अग्नि प्रसुप्त है,जला देने पर प्रकाश ही प्रकाश है,अखंड जो ज्ञान है।
रघु माने लांघना क्या लांघना है,दशेन्द्रियः मनः ....ये दशा आपको प्राप्त करना है, आपको त्रिवेणी संगम में जाके स्नान(आज्ञा में तीनों नाड़ियों के मिलन से) करना है,ये सिंहस्थ नहीं,ये माघ मकर नदी वो नहीं,मैं सब नहा धो के देख लिया सब छोड़ दिया,ये स्मारक है केवल, कारक नहीं।
ईषः माने पति, उस ईश्वर को साक्षी भी कहा, अनुमन्ता भी कहा, भर्ता भी कहा भोक्ता भी कहा,महेश्वर भी कहा और परमात्मा भी कहा।उपद्दष्टा माने साक्षी भी कहा।
इस देह में वो परमपुरुष है, जिनका ये ऐसे ऐसे नाम है, तो परमात्मा माने आपमें जो है, वो परमात्मा है।क्योंकि वो अच्छे से अपने आपको सब जगह स्थापित किया, और विशेष रूप से अपना पूर्ण रूप से आपमें, आपमें अपने आप को स्थापित किया और फिर से अलग हो करके सबका सबको धारण किया। इससे विश्वपति हो गया, वो विश्वपति हो गया।और विश्व, दूसरा अर्थ होता है, जब तक आप विश्वपति को प्राप्त नहीं होते तब तक आपका शोक मोह भय जा ही नहीं सकता, जब तक आपकी दशाहीन नहीं आएगी-ध्यान ही नहीं रही, अभाव ही नहीं हमेशा, सदा बुद्धस्थ, ये नहीं वो नहीं, ये नहीं वो नही ये तो नहीं रहता।
श्वस धातु है क्या,श्वस धातु से श्वास बना है विश्व माने श्वास लेने वाले प्राणी को ही,ये लोक को ही विश्व लोक कहा। ये लोक को विश्वलोक कहा गया और लोकों को विश्वलोक नहीं कहा,इसी लोक को विश्वलोक कहा,यहां श्वास लेने वाले प्राणी, जब तक ये श्वास आपके कंट्रोल में नहीं आता अभ्यास के द्वारा,श्वास श्वसन संस्थान और रक्ताभिसरण संस्थान और ये दोनों पर,और तीसरा वो और है, ये विचारों का उदय अस्त होते है जब

तक निरोध नहीं होते-तब तक वो दरवाजा (सुषुम्ना में प्राण का प्रवेश हो जाना) खुलता नहीं, दिल्ली की दरवाजा खुलती नहीं, जब तक दरवाजा खुलती नहीं,जब तक आप मुक्त नहीं, प्रकार कोई भी हो खाली दरवाजा खोलना है।

वो दरवाजा खोला कि वो अनेक जन्मों का वो मुक्त हो गए आप चले आप आगे बढ़ गये।

ये है विश्व, आपको विश्वपति, यही तो परमपद है, यही परमधाम है, और ये है आप, ऐसे-तुलसीदास यह दशाहीन संशय निर्मूल न जाहि-जब तक संशय आप,जब तक संशय है-क्या है फिर? संशय माने स्वयं पर अविश्वास बस,इसलिए औरो पर क्या विश्वास करेगा वो,औरो पर क्या भरोसा करेगा विश्वास नहीं। स्वयं पर भरोसा नहीं है तो औरो पर क्या भरोसा करेगा वो।इसलिए वो सदा सशंक, रहता है क्या, इसलिए वो सदा साशंक रहता है। इसी से मैंने ये पद..ये है रघुपति। भक्ति माने मेथड ऑफ वरशिप, कला जिसे-युक्ति मालूम हो, कर्म करता है जो कलयुग में वो मना किया,क्या मना किया-अश्वालम्बम गवालम्बम संयस्तम परपैती... अश्वमेघ घोड़ा छोड़ना महासम्राट बनने के लिए मेरा साम्राज्य ...गोमेघ-गो माने गाय नहीं,गो माने इन्द्रियाँ, जब तक अलग नहीं कर सकते आप।मेघ माने यज्ञ।जैसे आत्मनिवेदनं श्रवणं कीर्तनं... ।आत्म निवेदनं -आत्मा को सौप देना ये मामूली बात है?

आप जिसे शरण कहते है ये शरण शरण नहीं,आत्म निवेदनं ये है शरण।शरण माने क्या शरवत णं प्रत्यय शर माने बाण की तरह जिसे डाल दिया नीचे, जब तक उठाया न जाय, बाण वही पड़ा है। है क्या कोई-ऐसा जो हमको मिला या आपको मिला? जहाँ वो बोला और आपने कहा हा हा भाई कहा कैसे हो-तो शुरू उसका फिर रोना गाना, ये शरण है ये?तो ऐसे कोई शरण में आया? उदाहरण के लिए?हमें अपने से फुर्सत नहीं औरों को क्या देखेंगे,लेकिन जो हमारे समझ में है आपके सामने रखा, ये।

ये पद हमको अच्छा लगा, माने इसमें दोनों है क्या? कि सगुण और निर्गुण दोनों है क्या।अपने आप को सौंप देना। माने अपने पैर में खड़े होना।
या तो हाथी बनकरके उसमें बैठ जाओ क्या,भगवान की सेवा में अपने आपको बहा दो क्या, नहीं तो उल्टी धार मछली बनो फिर, उल्टी धार माने सुषुम्ना।और ये है ये मछली है,अच्छा अब नहीं बोल सकूंगा मैं। आप जो सगुण साकार हो और नववा जो है वो निर्गुण निराकार है।

- यानी इन्द्रियों को पता भी न चले कि कौन से काम हमसे लिया जा रहा है, और कल के दिन हमारी कोई कीमत भी नहीं रहेगी।

ऐसा पकड़ना चाहिए ऐसा आलिंगन करना चाहिए कि बिल्कुल न छूटे, जैसा मार्कण्डेय। आपने सुना होगा, चिटा चिटा क्या बोलते है मकोड़ा, एक बार वो पकड़ लेता है तो छोड़ने से नहीं छूटता, इस प्रकार से वो, पकड़ लेना चाहिए, ऐसा तब वो तमाम बाते होती है।
नहीं तो ये संसार छूरे की धार है, गिरे की कटे। सत्पुरुष के द्वारा सब कुछ होता है क्योंकि ये ऐसी चीज है, यहां न बोलना है, न चालना है और बराबर सब कुछ होता है।
बगैर कोई किये ये संस्कार हो जाता है, ये बात उतनी ही ठीक है, लेकिन आने वाले ने सब समझकर आना चाहिए।
जो लोग बाबा जी बनकर ठग रहे है हम किसी को नहीं ठगते।
जब तक शुद्धिकरण नहीं होता तब तक क्रियाहीन नहीं होता।
राम दूसरा है आत्माराम, जो योगियों के हृदय में रमण करता है, हम उस राम को मानते है। जो सबमें है, सर्वव्यापक है, सर्वत्र है, सर्वशक्तिमान है, सर्वज्ञता है।
संवाद माने वार्तालाप, साधु संत के बोलने पर भी कोई परिणाम नहीं होता, कारण क्या है?
संवाद का जो फल है, अपार है, धारणा-जिसने उसे धारण कर लिया,

धारणा उसे कहते है। धारण कर लिया, धारण कर लिया। विधान, वि नाम विषय, इससे बढ़कर कोई धारणा है ही नहीं। तब वो सुख अपार, अपार माने आनन्द। ब्रम्हांन्द कहते है उसको, आत्मानन्द कहते है उसको, चिदानन्द कहते है, परमानन्द कहते है।

वो अगर मिल जाय, वो अगर धारण हो जाय, तो क्या कहना पड़ता है। ज्ञानेश्वर कहते है वनही वाघवारे।

फिर उसमें ऐसा डाट लगाना की कोई उसमें घुस न पाय, वोही वाघवारे। बुद्धि आपकी आत्मस्थ हो जायेगी,आप सदा वाइड अवेकण्ड स्टेज जिसे कहते है, उसमें रहते है।

महाशक्ति हमें प्राप्त होती है,और ये होता है।

- ये ऐसी शक्ति है, ऐसी पावर है जाने अनजाने कार्य करती है, अपना तो कल्याण है ही। आई एम ए वर्कर, आई एम ए वर्कर, डोंट थिंक आई एम, योर ड्यूटी इस टू बी। यू आर नो देयर, यू आर थिंक दैट आई एम। नाट टू दिस आर दैट, आई एम ए वर्कर।

  जिसका काम है उसको है कि अपने को है, इनरमोस्टमेन है इनर वाइस है, वो है सत, वो है सर्वज्ञ, औमनीप्रजेंट, सर्वशक्तिमान। मैं मैं मैं- रियलाइज आई एम डोंट थिंक आई एम, योर ड्यूटी इस टू बी नाट टू बी दिस आर दैट।

  कोई है, अंदर कोई बोलने वाला है, सत के सिवाय कुछ नहीं है बस, तत्सत ॐ तत्सत। आई एम नाट ए आनर, आई एम ए वर्कर। दिव्यज्योति से सब उत्पन्न हुआ है, सब दिव्य है, वही तो है उसने सब पैदा किया तो वही तो है।

  हजारों जन्म हो गए हमारे इन्द्रियों की तृप्ति के लिए हम बाहर बाहर भटक रहे है, बहिर्मुख होने से ये हमारी इन्द्रियाँ ऐसी बना दी गई है। जैसे जैसे हम अंदर की ओर जाते है सब दोष गुण हो जाते है हमारे। अभी तुम

जीव हो वासनाओं से दबे हुए हो, अपना पराया बना है बीच में भेदभाव बना है। वही जीव ईश्वर है, क्लेशकर्मविपाकाशयैरपरामृष्टः पुरुष विशेष ईश्वरः अस्मिता राग द्वेष अभिनिवेश, जब मिट जाते है वही / पुरुष ईश्वर कहलाता है। वही दोष बदलकर गुण हो जाते है, वही दोष है निर्दोष होकर गुण विशेष ईश्वर कहलाता है। अनेक जन्मों के परिणाम वही के वही सहस्त्रदलकमल में भस्म होते जाते है, सद्गुरु को भी ईश्वर कहा गया। क्या संकेत है देव यहां है, इसलिए आत्मदेव से बढ़कर कोई देव नहीं है। अभ्यास ये है आवरण से अपने आपको अलग करना है। तुम्हें केवल दीवार/आवरण को ही अलग करना है, इसलिए उस शक्ति/आत्मा से परिचय नही हो पाता। आत्मा ही तो बोल रहा है और कौन बोल रहा है।आत्मा स्वयं ज्योतिर्भवती, वो लाइट सामने आ जाती है।आत्मदेव से बढ़कर कोई देव नहीं है, ॐ ऐसा जो नाव है, उस पर बैठने पर पार हो जाता है,माने अमोघ निरन्तर अंतररहित होने से निकल जाते है, और अपने जैसा और लोगो को भी/औरों को भी तैय्यार करता है यही विज्ञान है।

कार्य का विश्लेषण नहीं कर सकते तो क्या काम का? बोलने से नहीं करने से पेट भरता है।

दोनों मायोपाधि है हमें संसार में रहना है,रहेंगे लेकिन हम ईश्वर भी प्राप्त करेंगे। ईश्वर माने क्या? विषय को समझना और आत्मसात कर लेना है। परीक्षा होती है, परीक्षा देने हम जा रहे है।

- इसको धारण कर लिया धीरे धीरे ये(अपने) क्या करते है, ये कार्य क्षमता क्षीण होते जाते है, योगाभ्यास से धीरे धीरे अपने केंद्र में चले जाते है, जैसे केंद्र में जाते है, सेंटर ऑफ केनाल सुषुम्ना में जाते है, सेंटर ऑफ केनाल में ऊपर जाते है।

क्या हो जाता है बाह्य संवेदना शून्यत्व हो जाता है, अपने अपने गोलक में

चले जाते है। दो ही सेंटर में चले गये, अकिंजन जो है, अकिंजन जो सेंटर है, इस प्रकार जो, न पीनियल को धक्का देते है, इस प्रकार जो, जैसा बिठाये वैसा बैठा है, जैसा लिटाये वैसा पड़ा है। इस प्रकार से बाहर के सब क्षीण होनी लग जाती है। यदि यह स्थिति होने लग जाती है तब आप चले जाते है, ततः क्षिणे प्रकाशः वर्णम, तब आप, होते होते वहाँ पे और जो आवरण है प्रकाश पर, वह दूर हो जाते है। किसका? बाहर के वस्तुओं से कर्मेन्द्रिय ज्ञानेंद्रिय मन बुद्धि चित्त अहं जो संलग्न है, रात और दिन ये बाहर के दृश्य में ये जो आवरण जो बाहर से सतत जो चलते रहते है आपके विचार और उदय अस्त होते रहते है।आपके जो।

थाट है जो कि एग्जान को लेकर के, और वो इधर से सूटिंग होता है, केमिकल्स निकलते है, वो मालूम है हमको, जिसको गामा कहते है, तो ये तैय्यार हो गया। तैय्यार होने के बाद , उसमें जो डेण्ड्राइट्स है, रिसीव करते है, फिर जो ग्रे मैटर (जो) है और व्हाइट मैटर, ग्रे मैटर। सारे सेल्स है न्यूरोन्स है दूसरा ट्रेंगल्स से जुड़े हुए है और ग्रे मैटर व्हाइट मैटर जो है पूछ है उसकी जैसे अग्जान है इस प्रकार ट्रांसफर होते रहते है। ये जो ट्रांसफर (जो) होता है synaptic जो गैप है, ये ट्रांसफर होना बंद हो जाता है। ये इसका बन्द होना, और क्या हो जाता है टेंथ पीनियल नर्वस जो है इस प्रकार से आगे माने क्या होता है, टेंथ पीनियल जो है क्या है? वो विगर सर्कल कंट्रोल होता है क्या कंट्रोल होता है, सर्कुलेटरी और रिस्पाइरेटरी ये दोनों ब्लाकेज होने लग जाते है, याने ये भी अपने सेंटर में चले जाते है। तो न,आपको श्वास रह जाता है। श्वास प्रश्वास क्रिया बन्द हो जाती है, सर्कुलेटरी (ब्लड का) जो है रक्ताभिसरण भी बंद हो जाता है। ज्ञानतन्तु और गतितन्तु ये दोनों सेंटर में जाने के बाद क्या हो जाता है, कुछ भी नहीं रह जाता है।बाहर का भी है, लेकिन ये है, तब (जो आप बाहर की वस्तुओं से आप जो है) बाहर के वस्तुओं से, क्या हो गया कोई सम्बन्ध नहीं रहा। जब ये सम्बन्ध नहीं रहा तो इसको क्या कहा, स्व विषया सम्प्रयोगे चित्तस्य

मनैशः इंद्रियाणां, -चित्तस्य मनसः इंद्रियाणां - प्रत्याहरस्य,इसको प्रत्याहार कहते है। प्रति आहार याने प्रत्येक वस्तुओं जो आप आकृष्ट है प्रति जो तत्वों से आप अट्रैक्ट है (याने अट्रैक्ट है) परवश है उन वस्तुओं से आपका सम्बंध धीरे धीरे ये यत्न से (कौन से यत्न से क्या बताया आपको) नाद से, छूट जाता है। अखण्ड नाद जब बन जाता है, उस अखण्ड नाद से धीरे धीरे ये सब बातें, अपने आप अपने गोलक में चले जाते है, ये शक्तियां जो है जो बाहरी (कार्य) करती है अपने अपने गोलक में चले जाते है, जब गोलक में जब वो चले जाते है तो आकृतियां जो है वे रह जाते है। जैसा बैठा है वैसा बैठा है न खाता न पीता न ,कुछ नहीं कुछ नहीं, मरा तो नहीं जीवित तो है, लेकिन (सांस लेता है उसमें और भी बातें होती है, इसमें नहीं होता ऐसा है) विशेष स्वास लेता है और भी बातें होती है तो ये प्रत्याहार स्व विषया सम्प्रयोगे चित्तस्य मनैशः इंद्रियाणां, स्व का विषय जो है आप समझ लोगे, उसी प्रयोग में जो आप लगे हुए है, चित्त में जो संस्कार है वासना जो है, उदय अस्त विचार है, ये विचार के उदयअस्त जो है स्व विषया सम्प्रयोगे चित्तस्य मनैशः इंद्रियाणां, मन जो कार्य करती रहती है इधरउधर भागती रहती है माने क्या करना, ये अपने आप जो है क्या होता है ये सब जो विचारों का उदयअस्त बन्द हो जायेंगे माने सीनेट से एक्जानल जो है अपने एक्सआन में, एक्ससान जो अपना कार्य करता है (माने नहीं करता) गतिहीन जो है हो गया, ये काहे से होता है ये न्यूकूलस से है कौन सा कार्डिएट न्यूक्लियस इनहिलिट जो है नाश नहीं होता इरोल होता है।

क्या होता है मैं वेदान्त का एक चीज नहीं मानता हूँ नाश कहते है। वे नाश (हो ही) नहीं होता, नाश है ही नहीं कोई चीज अगर नाश नहीं, तो तत्व है तत्व का नाश कभी नहीं होता।परिवर्तन होता है ट्रांसफॉर्म होता है बदलता रहता है रूप बदल गया आकृति बदलती रहेगी। (ऐसे क्या मैं सही बोल रहा हूँ मैं डरता नहीं गोली से) मैं, साफ बोलता हूं मैं, ये नाश है ये

मिथ्या है ये मैं नहीं मानता इस बात को क्योंकि मैंने अपना मूल शरीर जो है (देखा)।

गीता मैं गीता को मानता हूं, गीता ब्रम्होपनिषद प्रकृतिं पुरुषं चैव विद्वयनादि उभावपि।विकारांश्च गुणांच्श्वैव विद्धि प्रकृतिसम्भवान। तो ये जो नाश है प्रकृति और पुरुष। प्रकृति माने सत रज तम।प्र+कृति, आपकी कृति माने सत्य, सत्य माने रचना। वो रचना जो है आपके मन और बुद्धि के द्वारा जो संसार में आप करते है या तो क्लेश बढ़ाने के लिए या क्लेश मिट जाने के लिए, पाने के है या छुड़ाने के लिए छूट जाने के लिए, ये बुद्धि कार्य करती है। तो ये प्रत्याहार जो है इसको कहते है। माने क्या होगा आप अपने आप को भूल गये। कैसे भूल गये नहीं समझ में आये शरीर जो है क्या होगा, बाह्य संवेदना शून्यत्व (के)। कार्डियिट जो है इनरसेल्फ़ और भी सिनेट्स है वो भी इनहीलेसन हो जाते है। आप ध्यान करते है तो मादकता चढ़ती है मादकता क्या चीज है एंडॉर्फिन है। एंडॉर्फिन है ये रेसेक्सन होते रहते है , ये बढ़ते है बढ़ने पर जो सेल्स है ग्रहण करते है सारे सेल्स (कवर होते चले जाते है) कवर होते होते जैसा बढ़ता है वैसे नशा चढ़ती है उस नशे में क्या होता है ये एंडॉर्फिन जो है नर्वस है ये अपना काम करना बंद, यानी शिथिल होती है नष्ट नहीं होता (कोई शिथिल होते है) प्रयत्न शैथिल्याणं यत्न समापत्ति। इस प्रयत्न से इन्द्रियाँ शिथिल हो जाती है और अनन्त जो है (आप महान) उस ओर (आप)मन लग गया, बुद्धि की वृत्ति आत्मा की ओर अपने आप अग्रसर होती चली जाती है माने बाहर से छुट करके भीतर की ओर अग्रसर होती है तुम्हारे जो है प्रयत्न से कुछ नहीं होता वो अपने आप रास्ता बनाते और जाती रहती है।

अब वो है प्राण केवल एक प्राण। आत्मा माने क्या केवल एक प्राण, प्राण एक सिंगल रे है। वो सिंगल रे नाक से जिस समय निकलना है (समय जो हो जाता है और ब्रेन में ये रेसेप्सन होते है) ये रस स्रावी ग्रंथियाँ में स्राव होते है उस कारण जो है मादकता बढ़ती चली जाती है, और जितनी मादकता

बढ़ती है आप सेप्रेट होते जाते है तो फिर सेंटर्स माने क्या?-जो है गोलक में चले जाते है फिर कार्डिएट न्यूक्लियस है उस पर कंट्रोल हो जाता है (फिर से होकर के)।

लेकिन नाश नहीं होता (नुकसान कुछ होता नहीं) निरोध होता है नाश नहीं होता। हमारे योग में निरोध शब्द है, नाश नहीं (ये नाशवान है, नाशवान है मैं इस बात को नहीं मानता)।नाशवान कुछ नहीं है,रूपांतर होता है नाश माने अस्तित्वहीन तो तात्पर्य ये है (हमारे कहने का) ये क्या है क्या हो गया, बाह्य संवेदना शून्यत्व, इसका नाम प्रत्याहार है। तब आप बाहर के वस्तुओं से जो अट्रैक्शन है वो आप अस्त हो गया। फिर नाच गाना होय, सांप आके बैठे, मच्छर काटे, मच्छर कम्बल बना के बैठे आपको बोध नहीं होगा। फिर ड्रम बजे, नाच गाना होय, ये स्थिति जो है इसका नाम प्रत्याहार।तब क्या होगा त्रयं सयंमात अतीत अनागत ज्ञानम।तब तीनों पर संयम होगा कौन सा धारणा ध्यान और समाधि।समाधि माने बुद्धि, धि नाम बुद्धि तब आत्मस्थ होती है। अन्यथा नहीं।तब ये तीनों पर अधिकार हो जाता है और पहले किस पर अधिकार होना चाहिए? प्रकृति पर, कृति माने प्रकृति, प्रकृति माने सत रजस तमस सम्भवा प्रकृति। अभी हमारी बुद्धि जो है ये गुड है ये बेड है, गुड है ये बेड है।याने कंस्ट्रक्टिव डिस्ट्रक्टिव इसी में हमारा सारा जीवन चला जाता है।माने सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण ये सब जो है, सतोगुण है तमोगुण है रजोगुण माने सक्रिय (एक्टिविटी तुम्हारे मूवमेंट तुम्हारे एक्टिविटी तुम्हारे एक्शन) रज माने एक्शन एक्टिव है बाहर का। तमोगुण रजोगुण, तमोगुण रजोगुण, तो ये जब तक आप तमोगुण रजोगुण में लगे है जब तक इसमें कुछ भी नहीं (आप नाम लिया करो, बोला करो, फिर से वापस आते है फिर ज्यों के त्यों)। सारे बाते जो है तो तात्पर्य ये है कहना ।

ये जो मैं बोला (वो) मैं सब देखा हूँ (आपको गवाही, दूंगा) गोल्डन लाइट में हमको सब दिखता है, डॉ व्ही ऐ शिंदे आपको पढ़ाये है, प्रथम देह स्थिति

ये होना चाहिए, ठीक कह रहा हूँ, आप लोग डॉक्टर है आपको । दो साल के बाद हमको उत्तर दिये वो शुक्ला, सी. के. शुक्ला उनको जो कहा हमने बताये ये हेलिक्स जो है तभी पुस्तक निकाले डॉ खुराना ने, डॉ आर पी पांडे (अभी जो गये वोअभी उपस्थित थे आज तो नहीं आएंगे वो लेकिन उनको बुला लो)   उनसे कहा हमने की भई, हमको ऐसा ऐसा दिखा, पिक्चर बताये उनको कई पिक्चर, ब्रेन जो देखा मैंने चादर फैला हुआ है गोल्डन लाइट हमको दिखा है कई पिक्चर देखा हमने, ये है।गोल्डन लाइट में दिखता है हमको मैं कुछ नहीं करता,सब दिखता है हमको बिल्कुल। ऐसे मैनें हेलिक्स देखा उसका फंक्शन देखा और सुना मैनें इंग्लिश में, इन आल दे आर सिक्सटीफोर कॉम्बिनेशन, वैसे तो बातचीत होती है वो चले गये। मैने क्रोमोसोम देखा 1981 फर्स्ट टाइम जो देखा मैंने, हम लोग श्रीनगर में थे क्रोमोसोम जो देखा, ऐसा ऐसा स्प्रिंग देखा(ऐसा ऐसा है और क्वाइल्स जो ऊपर है एक ऐसे चमकदार रोशनी होती है) रोशनी चमकदार जो है थाउजेंड माने जो तारे है क्रोमोसोम में। मैं झूठ कभी नहीं बोलता नहीं, आप जान लीजिये। [मेरा जीवन कोई नहीं जान सकता है और न कोई समझ सकता है] ये मैनें पूछा तब वो बताये (ये) क्रोमोसोम है। (अब ये अच्छी बात है उसके बाद हम चले आ गये) ये अवयव सब दिखते है हमको। तो तात्पर्य ये है कहने का ये बाह्य संवेदना शून्यत्व पहले होना चाहिए (इसका नाम प्रत्याहार है) प्रत्याहार, तब आपका जो मन है आपका मन बुद्धि चित्त, अहं। अहं माने मैं जो मैं मैं करता है वो आप है, तब क्या होता है, धारणासु योग्यतः मनसा। तब धारणा करने योग्य। (जैसे गर्भ नहीं होता उनके पास आ गये, संशोधन करता है, फलाना करते है ढिकाने करते है, हाँ अब योग्य धारणा, पर्त् से कुछ नहीं होता पर्त् को केरियर है) वो जीवात्मा आना चाहिए, वो जीवात्मा आती है,अगर फोन से बच्चे होते न, फिर तो ये दुनियाँ में जगह न होती खड़े होने (को) ।उसके अंदर जीव आता है जीवात्मा आता है वो कैसे आता है, ठीक है ऑलमाइटी जो कुछ है वो जीव आ जाता है। पहले

अंतरिक्ष में आता आने के बाद बादल में आता है फिर पानी में आता है पानी से पृथ्वी में आता है पृथ्वी से पौधों में जाता है यानी बीज जो है, बीज में जा के पौधे आते है पौधे फिर फसल तैय्यार होते है काटते है उसको घर ले जाते है कूटते है काटते है फिर उसको छानते है पीसते है फिर रोटी बनाते है बना करके खाते है खाने के बाद फिर ब्लड में जाता है,ब्लड में जाकर सीमन में जाता है,सीमन जाकर क्षरण होता है तब होता है। क्षरण होता है तब वो जीव पर्त् के द्वारा वहां आ जाता है।

- परमात्मा जब मायाधीन रहते है तो जीवात्मा कहलाते है, जब मायाधीश रहते है, तो ईश्वर कहलाते है।
  जैसे दर्पण के बिना अपना मुख नहीं देख सकते, उसी प्रकार अभ्यास बिना वह नहीं दिखेगा।
  क्रिया मन व देह करते है सदा प्रत्यक्ष करते रहो मैं कुछ नहीं करता, प्रभु अर्पण करो।
  जड़ होय चेतन, प्रत्येक में ब्रम्ह का दर्शन करते रहो।
  निष्काम व्यक्ति ही इस आत्मा का दर्शन कर सकते है, उन्हीं को शाश्वत शांति प्राप्त होती है।
  केवल गुरुजी को याद करो यही सहजावस्था है।
  गुरुजी महाशक्तिवान नहीं है,गुरुजी स्वयं महाशक्ति है।
  यदि हम अपनी आत्मा को गुरुजी के साथ लगाते है,तो जिस प्रकार एक चुम्बक में लोहे के टुकड़े को रखा जाय तो उस लोहे में चुम्बकत्व आ जाता है, ठीक उसी प्रकार गुरुजी के साथ लगे रहने से हमारी आत्मा उसी प्रकार की हो जाती है। 28, 8, 97।
  जानो। इतना जानों की जानने के बाद और कुछ जानना बाकी न रह जाय।
  पूर्व के कृत्य व किसी पर किये गये उपकार क्रमशः सोचना नहीं चाहिए, एवं उपकार को गिनाना नहीं चाहिए।

समय यदि है तो मौन व्रत पर केंद्रित होना चाहिए।
मनुष्य जन्म अनमोल रतन है,उसका जतन करो, अपना उद्धार [माने जन्म मरण से मुक्ति] करो । अन्यथा परलोक में अन्य प्राणियों में जाना पड़ेगा।
जीव। आत्मा। सर्वशक्तिमान है। यह हम है, हम जीव नहीं है।
जो मैं मेरा तेरा राग द्वेष में पड़े है वह जीव है।
मैं जीव नही आत्मा हूँ, ऐसा सोचो। आत्मा-परम्, अचल, अविनाशी, सर्वत्र, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, है। आत्मा-परम् है इसलिए परमात्मा। वह जगत के पहले भी था, अभी भी है और आगे भी रहेगा।
काशायदिक भाव[षट विकार। काम क्रोध लोभ मोह मान मत्सर] और राग द्वेष की निवृत्ति से प्राप्त होने वाला स्वरूप, यह सम्यक चरित्र याने पूर्ण चरित्र है।
याने मोक्ष।कैवल्य।तथा इसे ही चारित्र कहा है,यही है करेक्टर।यह जीवन मुक्ति है।
जब भी आप पर कोई आपत्ति विपत्ति आ जाय तो अपने सतगुरु को आवाज दो [लाखों कोस दूर रहने पर भी,याने अन्य लोक परलोक भी कह सकते है] पलक झपकते ही वो आपको बचा लेंगे।

- शरीर में शक्ति का स्पंदन मानसिक विचारो या मानसिक उपलब्धियों से बढ़कर ऊंची वस्तु है। शक्ति जहां पर कार्य करती है वहां पर भारीपन या दबाव बना रहता है।
मस्तक के शीर्ष भाग में माथे के ऊपरी भाग में संवेदना होने से शक्ति मन के अंदर अपने लिए खुला रास्ता बनाने का प्रयत्न करती है, ऐसे समय कम बोलना, चित्त को एकाग्र करना आवश्यक है।
शांति आनन्द स्थिरता, क्षमता जिसमें हर्ष होता है न शोक यही अवस्था श्रेष्ठ है। आगे यही महान हो जाता है।
जब गुरुजी / आराध्य का ध्यान किया जाता है तब मन आराध्यमय बन

जाता है उसी का दर्शन होने लगता है।
तुर्यातित अवस्था प्राप्त करना ही लक्ष्य है जहां साधक को होशोहवाश नहीं रहता कोई खिला दिया तो खा लिया, नहीं तो अपनी मस्ती में मस्त है।
यदि सुषुप्ति अवस्था का बोध बना रहे तो आनन्द की वह तुर्यावस्था है।
जहाँ निराकार के दर्शन हुए कि पंगुवत हो गये, फिर उसे दौड़ धूप भाती नहीं, आनन्द में डूबा रहता है स्वयं आनन्दवत हो जाता है।
परिवार में कमल सा रहना है, सबके साथ, सबसे अलग। साधक को लय अवस्था में रहना चाहिए। जो अनुभूतियाँ हो चुकी है, उसी में मस्त रहना।
गुरूवाक्य को हमेशा ध्यान में रखो, सत रज तम से परे होने सिर्फ शरणागत होना है (बाण की तरह उठाये तो उठे, नहीं तो पड़े है)।
मैं ही शक्ति बनकर प्रकृति बन गया ऐसा बोध होने पर शिव भाव आत्मभाव आ गया, साधक जाग्रत हो गया, स्वरूप का बोध हो गया।
शिव भाव प्राप्त करने के लिए त्रिगुणातीत होना जरूरी है।सतत अभ्यास से सत रज तम तीनों गुण समाप्त हो जाएंगे।

- मणिवत, कांचवत स्फटिक मणिवत जब उसकी बुद्धि हो जाती है उसके अंदर आ करके उसको सब अनेक जन्मों का दीखता है।
  पीछे जाता है वह आगे नही जाता, अनेक जन्म जो उसका हो चुका है और जन्म में किसका किसका सम्बन्ध है। उसका सम्बन्ध हो चुका है वो सब उसको दीखता है।
  योगी जो कर्म करता है, न वह पुण्य है न पाप है, न शुक्ल है न कृष्ण है।
  योगी को कर्म को बाधा नहीं होता। फल नहीं होता, लेकिन निष्काम कर्म है। निष्काम कर्म में कोई बन्धन नहीं सारे बन्धन जो है कट गये, साफ़।
  मुक्त है और सदा...भूत भविष्य वर्तमान को जानने वाला होता है।और इधर, नरक में जाने के लिए है, यमदूत उसके सिर के बाल ऐसे पकड़े

रहते है, नरक में ले जा रहा है मृत्यु के मुँह में या नरक में। ये सीधी बात है मैं कोई चापलूसी की बात नहीं करता हूँ। इधर जिसका सुषुम्ना मार्ग में प्रवेश न हुआ वे सब नरक में जायेंगे।शास्त्र बराबर है हमारे मनीषिगण सब, बराबर है। उनने हमको सब सिखाया बताया और करके दिखाया, लेकिन हम लेक्चर देते रहे खाली, चर्चा करते है,बात करते है, और क्या कहानी पढ़ते है। कहानी पढ़ने से कुछ नहीं होता। है पाप कर्म वेद पुराण (कर्मकांडी सम्भवतः)।

पुराण माने, मनीषीगण। लोग कहेंगे वो पुराना हो गया, लेकिन पुराना नही सही है ये। आज हमको अनुभव नहीं है वो। लेकिन हम कहते है बेकार बाते है सब। बेकार नही है ये सब। अभी क्या है बहुत दिन बाकी है, बुड्ढ़े हो जायेंगे जब। अरे हौ रे।

तात्पर्य यह है, योगी जो है अनेक जन्मों के कर्म जो है वो पीछे जाता है, क्यों जाता है वो भोगना पड़ता है। भोग है वो सामने आता है भोगना पड़ता है। यद्यपि उसको सुख दुःख नहीं होता, लेकिन भोगना पड़ता है, सामने आता है। किये गए शुभाशुभ कर्म। लेकिन वहां जाकर बन्धन नहीं है।

बाकी ये नरक के द्वार है, काम क्रोध लोभ ये नरक के द्वार है। जैसे यमदूत उसके बाल पकड़के एक एक सेकण्ड ले जा रहे है। ये चिंता किसी को नहीं है, मृत्यु की चिंता किसी को नहीं है। सिवाय बस सन्तति और सम्पत्ति बस। हमारा बस चले और पैसा खूब जमा हो, लोग मेरे पास आये। लोगों में मेरा नाम हो बस। ठीक है बाबा ठीक है, हम तो पागल आदमी है।

अनेक जन्म में तब ये जाता ह, ये भोगना है। आप जहां जहां जाएंगे काम होता है।

सत्वपुरुषयोः शुद्धि साम्ये कैवल्यम्। ये कैवल्य जल्दी नही है हजारों जन्म लेना पड़ता है। हजारों वर्ष बीत जाते है धीरे धीरे धीरे। तब कभी होता है। लेकिन कर्मों का विनाश कर सकता है इसी जन्म में। विधाती जो कर्म है उनका विनाश कर सकता है। जी हाँ।और वो ही कर्तव्य है पहले विधाती कर्मों का विनाश करना।

या तो सोई हुई शक्ति है उसको उठाकर ऊपर पहुँचा देना, हो गया काम। योगी को शुभाशुभ कर्मों का फल नही होता, यही कैवल्य है, वो मुक्त है। आगे चलकर अनेक जन्मों का बसभोग भोगते हुए। देखना भी भोग है। लोग जाते है उधर उधर देखने के लिए।ये सब भोग है।

काम तो ऐसा है जो इस प्रकार देखें। देखना है तो ऐसे देखे भूत को देखें भविष्य को देखे।ये देखना देखना है। तो योगियों को शुभाशुभ कर्मों का फल नही होता परिणाम नही होता। और योगियों को छोड़कर जो सब होते है पाप पुण्य होते है और पाप पुण्य के अंदर नरक में वो तैय्यार होते है।

रास्ता वही चलूँगा जो सीधा और साफ़ हो, बात वही कहूँगा जो सच्चा और इंसाफ हो।आनन्द मंगल हो कल्याण हो।

नहीं तो अवश्वमेव भोक्तव्यम् कृतम् कर्म शुभाशुभम् न भोक्तम् क्षीयते कर्म कोटिशः जन्म शतैरेपी। बिना भोगे वो। सैकड़ो करोडो जन्म वो छुटता नहीं, लेकर वो भोग भोगना ही होगा। इसके सिवाय छुटकारा नहीं। बन्धन काटों फिर निष्काम होकर के देखों न भोगो तीर्थ करो। स्वयं वो तीर्थ हो जाते है। और जो उसका हो गया वो तो।

मुद मंगलमय सन्त समाजू जो जग जंगम तीरथराजू। वो स्वयं तीर्थराज है घर घर गांव गांव जाकर सबको दर्शन देता है सबको तारता है। सबको ऐसा ऐसा है सन्मार्ग बता देता है। ये मार्ग से चलों तुम्हारा कल्याण होगा। मैं करता हूँ, मेरा है।नही तो।

थिर घर बैठों हरिजन प्यारे, सद्गुरु तुम्हरें कार्य संवारे। हरिजन माने आत्मजन। ये स्वजन नहीं दुर्जन नहीं। ये आत्मजन। तुम स्वयं जन हो, आत्मा के जन हो। सद्गुरु तुम्हारे काज संवारे। मैं करता हूँ मेरा है, इससे काम नहीं चलता। घर में गृहस्थ आश्रम में रहकर सब कार्य होता है। ये सद्गुरु जो है, सब कार्य करता है।

- मैं तत्व की बात बोलता हूँ, वो है आत्मा, वो है आप।आप देह नही है। आत्मा जो शब्द है, आ से आनन्द शब्द की उत्पत्ति है, और मकार से त्रिगुण दूर, वही उत्पत्त, स्थिति, लय्। ये वही चीज है, जिस पद को प्राप्त करना है, उसका नाम है परम्,परमपद।
भारत, भा के रूप में ज्ञान होता है, प्रकाशहोता है,नक्षत्र होता है। बोध होता है, वो कौन सा ज्ञान है ? आत्मज्ञान। आत्मा का दर्शन होता है, आत्मसाक्षात्कार होता है। मिला है बहुत लोगो को मिला है। रत माने लगे रहना, जिसके निकलने पर ये शरीर को जला दिया जाता है, वो क्या है? वो आप है, हम देह नही आत्मा है। पृथ्वी के अंदर,बाहर सब जगह प्रकाश है, सूर्य के प्रकाश से यह अलग है। तो आत्म ज्ञान में लगे रहना।
भारत में यही एक विद्या है, जिससे सारे जगत में उत्तम कोई विद्या नही। कृष्ण ने इसको राजविद्या, और विवेकानंद ने राजयोग कहा है।
ये विद्या हमने छोड़ दी है, इस ओर हम झुकने को तैय्यार नही, करने को तैय्यार नही, अरे थोडा बहुत तो चलो आगे, एक एक बूंद से घड़ा भरता है।

- स्वजन नहीं दुर्जन नहीं तुम स्वयं जन हो आत्मीय जन हो आत्मा के जन हो थिर घर बैठो हरिजन प्यारे सद्‌गुरु तुम्हरें काज सँवारे मैं करता हूँ मेरा है मैं करता हूँ मेरा है, कहीं भी आता जाता नहीं सब कुछ होता जाता है करता है करवाता है लेकिन मैं मैं, मैं करता हूँ, मैं करता हूँ, मैं मैं बकरी करती है क्या लेकिन जब वो धुनने के लिए आता है धुनिया जो है तो वो तुन्न तुन्न तुन्न करती है मैं नहीं तू है लेकिन क्या मरने के बाद क्या! लेकिन मैं मैं मरते दम तक। हरि थिर घर बैठो हरिजन प्यारे। आत्मा को प्रसन्न करो, देहो देवालयं प्रोक्तो,देहो देही निरंजनःअर्चितःसर्वभावेन, स्वानुभूत्या विराजते, देही माने आत्मा वो निरंजन है वो दिखता नहीं लेकिन वो हमेशा सदा सर्वदा तुम्हारें पास है और वो तुम्हीं हो। जैसे मनुष्य अपने आंख के पुतली को नहीं देख सकता बिना मिरर के, वैसे ही ये आत्मा बिना सतगुरु

के देखा नहीं जाता अनुभव में नहीं होता सद्‌गुरु चाहिए, दीक्षा होनी ही चाहिए। वो निरंजन है गुरु तुम्हारा अंजन लगाता है तो वो आंख में दिखती है अन्यथा नहीं। इसलिए, अर्चितः सर्वभावेन। उसको प्रकट करना चाहिए उसको साक्षात्कार करना चाहिए उसे देख लेना चाहिए समझ लेना चाहिए बातचीत कर लेना चाहिए और उसमें अंत में जाके समाहित हो जाना चाहिए। अर्चितः सर्वभावेन, तन मन धन इन तीनो से उसकी पूजा करनी चाहिए अपनाना चाहिए, आत्मसात करना चाहिए। स्वानुभूत्या विराजते। ये पुस्तकों से और बातों से नहीं मिलती है, ईश्वर सिर्फ अनुभूति है, तब वो विराजमान हो जाता है तब वो विशेष, राज माने राट, तब वो महाराज बनता है तब वो उसको महाराज महाराज कहते है। पंडित तो खाली वो पंडित है , खाली पंडित होता है।तब वो राज होता है राज से राट बना है,तब ये विराजते तब वो सबके अन्तःकरण में विराजमान हो जाता है। तब उसको सारी दुनियां सारा समाज उसको अपने अन्तःकरण में अपने मन में बिठा लेता है। देहो देवालयं प्रोक्तो, देहो देही निरंजनः अर्चितः सर्वभावेन, स्वानुभूत्या विराजते।

- अनुशासित रहना हमारे लिये हितकर है,परिवार के लिए भी, समाज के लिए भी ,राष्ट्र के लिए भी।
  हम सबसे छोटे है, हमें कुछ मालूम नहीं है, हमें समाज से ही ज्ञान प्राप्त होता है। अपने चरित्र में, अपने व्यवहार में, जितना लघु हो सकते है, उतना अच्छा है।
  मनुष्य का संशय और सारे भाव भावनाएं उसके समृद्ध होते चले जाते है। जिसके कारण एक व्यक्ति, एक व्यक्ति पर भरोसा नहीं करता है। मैं विश्वास नहीं बोलता, भरोसा कहता हूँ। भार डालना उससे काम लेना।
  एक तृण से लेकर मानव प्राणी पर्यन्त। उनके छोड़े हुए श्वास से हम जीवन पाते है और हमारे छोड़े हुए श्वास से उनको जीवन मिलता है।कोई ऊँच

नहीं कोई नीच नहीं। ये पारस्परिक सम्बन्ध कितने निकटतम है। लेकिन कहते है कि हमारा कोई सम्बन्ध नहीं, क्या लेना देना ।

एक विचार से दूसरे विचार में उदय होने या अस्त होने में एक अन्तर है। वह अन्तर अगर बढ़ता चला जाय तो मनुष्य महान होता चला जाता है।

शांति माने पीस, जहां कोई दूसरे प्रकार की हलचल न हो। आप अपने सिद्धान्त में, अपने कार्य में स्वयं दक्ष हो जाते है।

आपको स्वयं सूझ बुझ मिलती है, कैसा करना कैसा नहीं करना। उसका कारण और परिणाम दोनों बोध हो जाता है।

ऐसी एक अवस्था है,इस अवस्था में पहुँचने के बाद भूमिका दृढ़ होनी चाहिए।

वहां स्थिर होने के बाद।जैसे घर में आने के बाद बैठे है,सब लोग दिखाई देते है, सब लोग पहिचान में आते है, और कुछ सुनने में आता है, आँकलन भी होता है, विचार भी होते है।बहुत कुछ अपने जीवन में उतारने लायक होता है और अपना जीवन सुधर जाता है।

मनुष्य अपने आचरण से जाना जाता है, जिससे आदर का,सम्मान का पात्र बनता है, प्रतिष्ठा का पात्र बनता है। आचरण के बिना कुछ नहीं है, योग और कोई चीज नहीं, वो आचरण है।

हमें अनुशासन होना चाहिए,वो है आचरण। इस उपाय के द्वारा मार्गदर्शन होने के पश्चात, आपको जो प्राप्त हुआ है, वे उपदेश नहीं आदेश है। आदेश माने जिसका पालन होना चाहिए। डू डाई डू।कर मर कर। ये आपको करना है, तब वो होता है। ये स्थिर होते है,निरोध होता है। आप उसको हटा सकते है, बदल दे सकते है। लेकिन नाश नहीं होता है। अनेक जन्मों के संस्कार फिक्स है हमारे मस्तिष्क में।

अपने व्यवसाय में,समाज में आपको रहना है तो इन बातों (व्यवहार) को ध्यान में रखकर,मौन व्रत करके, उस तरह से अपने आचरण को, अपनी भाषा को, कृति को ताकि किसी की हानि न हो।इसमें सतर्कता रखकर अपना आचरण बना लेना चाहिए।

तब आप समाज में सुखी रह सकते है, फिर भी कठिनाई बहुत है। तो एस ए कैटेलिस्ट हमें रहना चाहिए, संसार में। कैटेलिस्ट केवल अपने आप में रहता है। न घटता न बढ़ता न कुछ करता धरता है, उसका वहां विद्यमान रहना काफी है। उस कैटेलिस्ट के प्रभाव से जो द्रव्य जहां तहां पहुँचना चाहिए, पहुँच सकता है। वो कुछ करता धरता नहीं है। ये है निष्काम कर्मयोग।

इसी तरह, योगीजन। ये जो साधक है, जिनकी भूमिका दृढ़ हो चुकी है, उनके केवल प्रभाव मात्र से होता है, वो कुछ करता धरता नहीं है।

कर्तुम् अकर्तुम अन्यथा कर्तुम् समर्थः। ये कुछ न करते हुए सब करते है और बहुत कुछ करते हुए भी, नहीं करते। इन्हें समर्थ कहा गया है।

आपको कैटेलिस्ट लाइक जीवन व्यतीत करना चाहिए,आपका ये जो प्रभाव है, अपने आप तारीफ है।

जो भी आपके (शुद्ध) वातावरण में आयेगा वो आपकी तरह बोलेगा, सुनेगा और कुछ दिनों बाद आपके जैसा शुरू हो जायेगा।उसका आचरण।

- बहुत कठिन यमघाट, गुरु बिन कौन बतावे बाट। यमघाट-यम + घाट, घाट माने साधना की पद्धति, मेथड ऑफ वरशिप।

  यम पाँच है।योगाभ्यास के दौरान, कुंडलिनी जागरण करते करते पॉवर्स आने लगते है, यम की प्राप्ति हो जायेगी।

  यम पाँच कहे गये है-अहिंसा,सत्य,अस्तेय, ब्रम्हचर्य, अपरिग्रह।

  १.अहिंसा-ऐसे व्यक्ति के दृष्टि सीमा, ओरा, के भीतर बैरभाव त्यागकर सहज बैरी भी मित्रवत व्यवहार करने लगते है, सिंह व बकरी साथ साथ खेलते है। २. सत्य-अनुभव के बोल ही बोलना है, सत्य के सिवाय कुछ नहीं। ३. अस्तेय-कोई छिपाव दुराव एवं चोरी नही जो जैसा है सामने है। यदि किसी और से छिपाकर आप कुछ जमा भी करते है,तो भी आप, स्वयं

तो देखते ही है फिर कैसा छिपाव। अर्थात चोरी नहीं।४. ब्रम्हचर्य- उर्ध्वरितस होना (मन और बुद्धि ब्रम्ह तत्व में लीन है, फलस्वरूप उर्ध्वरितस)५. अपरिग्रह-परि माने चारो ओर। ग्रह माने ग्रहण करना। तात्पर्य यह कि कहीं से कुछ भी ग्रहण नही करना। कल के लिए कुछ नही रखना। कोई दे तो भी नही रखना। उपरोक्त पांचों यम के प्राप्त होने पर 'संयम'सिद्ध हुआ,अर्थात महान हो गया। संयम ही ब्रम्ह है।

- गुरूजी की बताई हुई पद्धति से बैठ जाने पर , ये जितने भोग है कब आते है कब जाते है पता नही चलता है।

  हमको एक सिक्के के दोनों बाजू होना। प्रपंच भी चाहिए और आत्मानुभूति भी चाहिए।

  जब तक पूरी तरह से समर्पण नही होता, तब तक ये सुख, दुःख और आना जाना ये बना रहेगा।

  सब तेरा है।ये तेरा में भारी रहस्य है।

  सेवा हो,भक्ति हो तो इस तरह। दे दिया माने दे दिया, फिर गुरूजी जाने, हम नही जानते। ये नही भूलना चाहिए।

  हमको कम मिला ,उसको ज्यादा, ये छोड़ देना चाहिए।अपनी अपनी भोगो, अपनी अपनी में रहो और अपनी अपनी करो।

  इस प्रकार से निर्भर हो जाइये। न तपस्या करना पड़ता है, न त्याग करना पड़ता है। खाली समझ के रहना पड़ता है। कुछ भी नही करना पड़ता।

  उधो समुझि समुझि पग रखना। खाली समझ के रहना चाहिये। यही उत्तमा सहजावस्था है।

  कुछ नही होता है तो, सब उन्ही का है। ऐसा समझ कर चलिए। इसमें तीनो योग है।

  ये माया है,ये पापी है, इससे दूर रहो। मेरा सत्य, ये सत्य नही है। मेरा सत्य है की, मैं जैसा हूँ, वैसा सब है।

  मैं जैसा हूँ, वहीं मैं चाहता हूँ।

- वही विचार के रूप में आता रहता है आप मना नहीं कर सकते, वही संचित है। हम अपने वश में नहीं।
  तुम इंद्रियों के वश में हो, उसी को जीतना है। हम इंद्रियाधीन है।
  दिन भर राम राम पोपट पंक्षी की तरह रटना।दिन भर हरि हरि करना, लोगों पर प्रभाव डालना। और रात को रति सुख में मस्त रहना। चढ़ाने के बजाय उसे बहा देना।
  अगर दुनियाँ से मुँह मोड़ना है, तो आशा मत रखो दुनियाँ से। जो मिले खाओं न मिले चुप रहो। नैराष्यं परम् सुखं।
  दुनियाँ में दाम करे सब काम।अगर हमे दाम से काम नहीं, तो हमें कोई काम नहीं है।
  शरीर को अपना मानकर देखते रहोगे, तो संसार ही दिखेगा।
  जिसका मन आत्मतत्व में लीन है, वह ब्रम्हचारी है।
  जीव ही तो महान है। सुषुम्ना खुलने पर अभ्यास से आप जैसा सोचते है वैसा करते है और परिणाम होता है।
  आत्मा ही शक्ति है,शक्ति सब काम कर रही है। मगर आप जैसा चाहे आप वैसा कार्य हो जाता है। सोचते है वैसा हो जाता है, याद करते है वैसा हो जाता है। इसलिए कर्ता कौन है वही जो शक्ति है, वो करते हुए कुछ नहीं करता और नहीं करते हुए सब कुछ करता है। उससे बड़ा और कोई नहीं। यही जान लिये तो आप महान बन सकते है। वो अपना काम निरन्तर करती रहती है। हमारे अंदर वो शक्ति है, उसे अनादि और अनन्त कहा गया। आपमें वो शक्ति पूर्ण है।
  जिनका सुषुम्ना खुला है बातचीत होती है।
  सत्य के जरिये त्रिगुणमय संसार वश में आ आता है। विकार रूपी कार्य समाप्त हो जाते है, किसी प्रकार का भय जो शाश्वत मार्ग से उसे अलग करता है वो दूर हो जाता है। सत्य जो है आत्मा है।
  ये सब भोग है,देखना भी भोग है, याद करना भी भोग है, स्पर्श करना भी भोग है। वो आत्म रूपी सूर्य से मन रूपी दर्पण पर प्रकट होता है।

ये शरीर जो है तत्वों से भरे हुए है,और अन्तःकरण है। संस्कार जो है बन्धन जो है सब मन है। अन्तःकरण जो है।आत्मा क्या है? जीव ही तो परम् है। मैं आत्मा हूँ इसे हमने छोड़ दिया, मैं सुखी हूँ मैं दुखी हूँ। तन और मन मिलकर जो विकार है। ये विकार बाहर है।आत्मा ही शक्ति है, वही सब काम कर रही है। जिसका सुषुम्ना खुला है,आना जाना शुरू हो गया बातचीत होती ह, शांतता मिलने लगी। हमें अपने पर भरोसा नही है, तन और मन जो मिला हुआ है। जो दीखता है, आत्मा रूपी सूर्य से वो दीखता है, मन रूपी आइना में, सब भोग है। आप बैठ नही सकते ये स्थिति होगी। वो तीसरी आँख को अभ्यास के द्वारा प्रकाश में लाते है। जब बन्दा पाक हो जाता है, तो मैं अल्लाह उसे तब नूर से भर देता हूँ।और नूर ही नूर रह जाता है। ये ज्योति क्या है यही दिव्य शक्ति है जो ज्ञान के रूप में है। अभ्यास के द्वारा आपकी बुद्धि अखण्ड हो जाती है, जब एक वृति हो जाती है। यही निष्काम कर्म है। ये धर्म है।बाकी सब, स्वर्गादिसुख सुख के लिए है। मानव का जीवन जो होता है, वो जीवन्मुक्त होने के लिये है। गर्भवास फिर से आना न पड़े, इस प्रकार से कोई सद्गुरु मिल जाय।अपने आप को साक्षात्कार करने और जगत में शिक्षा दीक्षा के लिए हमारा जन्म हुआ है।आपमें वो शक्ति भरपूर है।

इंद्रियों के जो देवता है उसे जीतना है। सुख दुःख दोनों एक है। सत्य एक आत्मा है।आत्मा अपने आप में पूर्ण है, अनन्त शक्ति से पूर्ण है।खुद को ऐसा मिटा की तू न रहे तेरी हस्ति की रंगों बू न रहे। मैं और मोर तोर तै माया।मैं पुनर्जन्म को मानता हूँ,अनेक जन्म हमारे हो चुके है।जब तक तुम जीते जी मृत्यु को नहीं देखते, तब तक असम्भव है।

जब तक आप उस रंग में रंग न जाय तब तक आत्मस्थ होने का नहीं। आपका जीवन चरित्र उत्तम होगा।चरित्र से काई हट जाय, फिर न आये ये होना चाहिए। सतोगुण ही ज्ञान है।

मानव सृष्टि में श्रेष्ठ प्राणी है,उसमे जो है वो है ज्ञान।ज्ञान का माध्यम बुद्धि है। अपने आप में जो आनन्द है, वो परम आनन्द है। आप सदा मग्न रहेंगे।

- सुषुम्ना को खोल लेने पर परलोक की प्राप्ति सम्भव है, आत्मा का गुण ऊपर की ओर जाना है, आत्मा की शक्ति सुषुम्ना में खेलती रहती है। जिसे शरीर का ,धन, मान का भय हो उसे आनन्द प्राप्त हो ही नही सकता।
  कामना है, किन्तु निष्काम आत्मा अनुसन्धान जो है, वह निष्काम। याने फल की आशा नही। निष्काम कार्य में जब आप रत होंगे, तब प्रकृति उसकी पूर्ण व्यवस्था यथासम्भव या समय आवश्यकतानुसार करती है, या करा देती है। ये साधना जो निष्काम कर्म है इससे क्या होता है? ये आधि दैविक, आधि भौतिक, आधि दैहिक ये जो तीनो ताप है, दूर हो जाते है।
  गुरुकृपा से सुषुम्ना खुल जाना चाहिये, सुषुम्ना मार्ग से आत्मशक्ति को ,प्राण को लेकर, जब ऊपर ऊपर सब जगह पहुँचा देते है। तो सोई हुई जो शक्तियाँ है, अपने अपने केन्द्रो से विकसित होकर बाहर निकलने लगती है। आपके सारे कार्य होने लगते है, आप शक्तिमान हो जाते है।
  उस मार्ग में गमनागमन होना चाहिये अपना। यह सब मुफ़्त में नही होता। इसलिए इस शरीर को स्वर्णमयी कहा गया है, नही तो कचरा है, कोई काम का नही।अगर सुषुम्ना को खोलकर ऊपर नही आये तो।

- आप किसी को प्लीस नहीं कर सकते, हां कुछ समय के लिए एकमत हो सकते है।
  ये शरीर एक एक सेकंड काल के गाल में जा रहा है, भय के सिवाय कुछ नहीं, इत्थम जन्म निर्थकम।सार्थक कब होगा, विष्णु मार्ग। विष्णुमार्गम माने सुषुम्ना। इससे घुसने के बाद वो विष्णु बन गया, विष माने व्यापक। अभी आप संकुचित है,इतने संकुचित है कि अपने आप में भी संकुचित है। आप पत्नी से तो संकुचित है ही। आप सही बात बोल ही नहीं सकते इतने संकुचित है, क्योंकि इज्जत लज्जा मर्यादा मान ये, क्योंकि हमारे ये डुबाते चले जाते है दिन रात, ये हमको अच्छा लगता है। तो भय है भय है। तो विष्णु परम, ये जो मार्ग है, विष माने व्यापकत्व होता है।

व्यापक माने जैसे जैसे आप अंदर घुसते जाएंगे, आपके मन बुद्धि चित, मन और बुद्धि ये व्यापक, व्यापकता के लिए, इस शरीर से अपने प्राणों के द्वारा।

अभी आप जहां बैठे है उतने दूर में आपने व्याप्त किया, लेकिन जब आप याद करेंगे तो ज्योति में आप जाते है तो ज्योति जहां तक फैलती है, वहां तक आपके व्यापकत्व सिद्ध होता है, ये सत्य है।इस तरह से अभ्यास करते करते एक दिन ऐसा आता है कि सम्पूर्ण ब्रम्हान्ड में अंदर बाहर सब जगह आप पहुंच जाते है। ये मन बुद्धि फैलते पसरते पसरते ज्योति जो है फैलती है पसरती है उस आत्मा के साथ भी हमारी बुद्धि और मन फैलता और पसरता है, मन धारणा करता है और बुद्धि अनुभव करती है। ऐसा हमारा मन फैलता जाता है, आत्मा के साथ अभ्यास में, ये लाभ होता है आत्मानुसंधान से, और इसी को भक्ति कहा गया है। रामदास ने भी स्व स्वरूपानुसंधानं हेचि भक्ति हेचि ज्ञान। ये वेदान्त है।

- जो अपना देह भाव समाप्त कर देता है, वह राम के आश्रित होता है। यह है निर्बल के बलराम का रहस्य।

  मौन रहने का प्रयत्न करो। मौन हो जाइये हृदय ज्ञान किरणों से भर जायेगा। यही परमानन्द अवस्था है। मौन रहने का अभ्यास करो। प्रसंग आये तभी बोलो, बिना प्रसंग आये मत बोलो। कम बोलो तौलकर बोलो, अन्यथा मौन रहो।

  कर्म प्रधान है इसलिए संसार में या समाज में नैतिकता का महत्व है। ईश्वर प्रधान नहीं है।

  जैसा आचरण करोगे वैसा ही पाओगे। सचिदानंद रुपोअहं से सामर्थ्यवान होने का भाव स्वयं जाग्रत होगा और कार्य होकर रहेगा। जैसी धारणा रहेगी वैसी सिद्धि होगी।

  पहले पुरुष से प्रकृति उतपन्न हुई फिर वही प्रकृति पुरुष में समा गई। तुम

प्रकृति को भोगते हो और ईश्वर तुम दोनों को भोगता है।
यह सब जिससे उत्पन्न हुआ वह है प्रेम।यह जग उस सत्ता से ओतप्रोत है, यही प्रेम है। तभी शुद्ध प्रेम होता है।
भाव प्रधान, वह ईश्वर को अर्पित करके कर्म करता है, अंतर्मुखी है। कर्म की शुद्धता पर ध्यान देता है,इच्छाओं की पूर्ति के लिए कर्म करते है, बहिर्मुखी है।
जब तृष्णा से छुटकारा मिला तभी व्यक्ति जन्म मरण के आवागमन से मुक्त हो जाता है। वासना से रहित होओ, आत्मा में स्थिर रहो। श्रद्धा में कमजोरी न आने देना, श्रद्धा और विश्वासपूर्वक डटे रहो। अपने को अपना उद्धार करना है। मोक्ष प्राप्त करना है। अभ्यास से बुद्धि सामर्थ्य बढेगा। साधना द्वारा बुद्धि सामर्थ्य को बढ़ाना है, अपने आपको सामर्थ्यवान बनाना है। साधना में जितना समय आप देंगे लक्ष्य उतना ही निकट पायेंगे।
तीसरी भूमिका तक नास्तिक, उसके आगे(सत्वापत्ति) ब्रम्हविद् हो जाता है। सतत अभ्यास से सतगुरु की कृपा से आगे की अवस्था (धूतपाप, हंसा, तुरीय, देशकाल से परे)अवस्थाओं में पहुंचता है।
प्रयत्न करो और इच्छित वस्तु प्राप्त करो। जैसा बोया वैसा काटा।
मात्र ईश्वराधिन रहने से कुछ नही मिलता।
छठी भूमिका (तुरीय)से ऊपर जाने से ॐ का दर्शन होता है। तब निर्वासनिक प्रेम का उदय होता है। स्थिति हो जाने से कैवल्य होता है।
हर मनुष्य को अपने आप में रहना चाहिए। प्रत्याहार,दुनियादारी से मन को हटाना है। परिवार में अपने आपको adjust करना है।
क्रोध को अपने वश में करो, मधुर शब्दों का प्रयोग करो। क्रूर से दूर सदा रहिए। निर्लिप्त बहुरूपिया बनकर काम करना है। स्वरूप समष्टि का बोध करना है।
गुरु पर अधिक से अधिक विश्वास करो। साक्षी भाव में रहना है। थाटलेस रहने का अभ्यास करो। ब्रम्हानंद अपने आप बढेगा।
चित्त मगन होय ऐसा रहिए।

- सकाम - प्रकृति से सम्बंधित कार्य। हजारों विचार, लाखों कल्पनाएँ दिन रात। बहिर्जग से इतर मानव प्राणियों से डिस्टर्ब रहता है। निष्काम - आत्मा अनुसंधान जो है। अखण्ड, कंटिन्यु, नित्य, अनब्रेकेबल होने से ये जो तीन ताप है, दूर हो जाते है।

  विदेही - निष्काम कर्म अखण्ड होने पर पूर्व के संस्कार नष्ट हो जायेंगे, माने सब कुछ भूल गया। न देह की सुध है, न जग की सुध है, न आने जाने, न सोने की, न जागने की माने किसी प्रकार की सुध नहीं है।

  जप- विचारों को दबाने के लिए यह प्रारम्भिक अवस्था है। स्मरण / स्मृति - यह सेकण्ड अवस्था है छवि याद रहे,सामने रहे।

  सोहमस्मि माने विदेह माने उसकी मृत्यु / विशुद्ध में हो जाती है, उसके बाद ऊपर आज्ञा चक्र / पिनियल बाडी में जाता है। आत्मा प्राणों समेत जैसे पीनियल बाडी में प्रवेश किया, वैसे ही प्रकाश आ जाता है। वह निराकार आत्मा साकार ज्योति के रूप में - साकार हो जाती है। अष्ट्सिद्धि नवनिधि, भूत भविष्य देखना आदि यह शक्ति आज्ञा चक्र में प्रवेश कर जाती है। आज्ञा चक्र में ज्योति रूप प्रकट होने पर सोअहं कहा।

  जब साधक अभ्यास करते करते ब्रम्हरन्ध्र में पहुँचता है तब पूर्ण हो जाता है - ब्रम्हांड ज्योति से भर जाता है। वह उस आत्मा को निराकार ब्रम्ह को देखता है। निरतिशय अवस्था, अहंब्रम्हास्मि हो गया। संशय निर्मूल हो जाता है, वहाँ न देश है न काल है न भय है न मोह न काम न क्रोध है। अनन्त जन्मों का - कर्मों का भूत भविष्य का पूरी सफाई हो गई। वह परम ब्रम्ह हो गया।

  अपने आप को अपने पद पर फिर से नियुक्त करने, नियुक्त भी नहीं युक्त होना है, फिर से पहुंचना है - ये अभ्यास है।

  जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति - ये तीनों जब मिल जाते है, याने तमोगुण, रजोगुण, सतोगुण, तीनों पर जब संयम हो जाता है। तब आप उस शरीर में जाते है,

जहाँ आत्मा स्वयं ज्योतिर्भवती। तो आज्ञा चक्र / तुर्यावस्था में आने के बाद धन कभी घटता नहीं है, चाहे कितना भी बाटो। धर्म किये धन न घटे जो सहाय रघुवीर तुलसी पंछिन के पिये घटे न सरिता नीर। रमन्ते योगिनः यस्मिन् सः रघुवीर - वीर माने प्रेरक। आत्मा में रहकर जो प्रेरित करती है, उस प्रेरणा को धारण करके जब कार्य करती है, तब, तुलसी पंछिन के पिये घटे न सरिता नीर। तुर्यावस्था में त्रिवेणी संगम होता है, याने जो सदा इस प्रकाश में स्नान करता है। उसको गंगा, यमुना, पुष्कर से क्या प्रयोजन।

अपने बाल बच्चों स्त्री से व्यवहार करते हुए भी अपने आपको कभी न भूले, समय निकालकर अपने आपके लिए थोड़ा बहुत प्रयास करे। एकांत में बैठ चित्त शुद्ध कर जो प्रक्रिया बताई गई है, उसमें लग जाओ, फिर वो सुख है वो अपार है, अंत नहीं अनंत है। सत्यं ज्ञान अनंतम् ब्रम्ह। ये जो प्रक्रिया है, ये धर्म है, ये है स्वधर्म। बस आप लगे रहिये बाहर का कम होते जायेगा, अंतिम सांस तक आप इसे नहीं छोड़ेंगे, ये आत्म दर्शन है,आत्म साक्षात्कार है।

गुरु को समर्पण ही आत्मा को समर्पण है, तीनों अवस्थाओं / जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति से परे होना है, तुर्यातित् अवस्था ही लक्ष्य है। गुण रहित होना है।

जब तक साधक में एक निष्ठा नहीं आती तब तक शुद्ध सतोगुणी बन ही नहीं सकता। मनसा, वाचा, कर्मणा - गुरु और ब्रम्ह में एकात्मता का विकसित होना ही एक निष्ठता है तभी शुद्ध सतोगुणी हो जाने की योग्यता प्राप्त करेगा।

यह देह पूर्ण है सब कुछ प्राप्त करने में सक्षम है, धारणा में ढील न आने दो। इच्छा की अधिकता के कारण सुख दुःख आते है। सफलता और असफलता में सामान्य रहना है। (सब उन पर छोड़ दो, छोड़कर ही सामान्य रहा जा सकेगा, सम्भवतः)

आत्मा के साथ एकात्मकता रखना सबसे बड़ा एवं प्रभावशाली भजन है।

इसी क्रिया से अहंकार जाता है।
वस्तु (जड़ चेतन स्त्री पुरुष कीट पतंग वृक्ष लता आदि) बनी हुई है - वह हमी तो है, उसे वस्तु न समझकर आत्मा (ज्योतिर्मय) समझने पर उसका (उस वस्तु का, विभिन्न समझने के भाव का) आत्मा समझने पर उसका मन पर प्रभाव नहीं पड़ता है, यही सर्व संकल्प के त्याग का रहस्य है।

- चिंतामुक्त होकर सद्गुरु के ऊपर सब कुछ छोड़ दीजिये, अर्थात कर्तापन के अहम भी।
  मनुष्य स्वयं अपने भाग्य का निर्माता होता है, अतएव उसे सदमार्ग में सत्कार्य में जैसा बने जितना शीघ्र बने लग जाना चाहिए।
  मनुष्य अपने कर्मों को चरित्र को घटनाओं को गुरुदिश मार्ग से नियंत्रित करने में समर्थ है।
  नही बन रहा है, बिगाड़ हो रहा है, यदि केवल संकल्प करोगे माने मन में रहना है, बताया नही जाता वह धीरे से अपने आप हो जाता है।
  खुदा ने कभी शैतान पैदा ही नहीं किया, डिवाइन से डिवाइन ही आया है।
  अभ्यास करने वाला शांत हो जाता है हमें सत और असत् का ज्ञान अवश्य होना चाहिए।
  शक्ति माने आत्मा वो महाशक्ति है, डिवाइन पावर है, उसको प्राप्त करना है, उसकी शरण में जाना है अर्थात अपनी शरण में जाना है।
  जब आत्मा सर्वज्ञ है सर्वत्र है फिर चिंता किस बात की?
  सब कुछ गुरूजी पर छोड़ दो गुरूजी तुम्हारें रक्षक है, सेवक है।
  न चिंता करना है न चिन्तन करना है, केवल रहना है। अपने ईष्ट पर कायम रहना है।
  प्रत्येक स्थिति में भगवान के मंगलमय स्वरूप को देखो।
  जब आपने दे दिया,तो मेरा तेरा कहाँ रह गया।
  आप सब समर्थ है,लेकिन हम अपनी सामर्थ्य को भूल गये है, और उस ओर हम कुछ नहीं करते।

- वो शक्ति है वो महान शक्ति है वो महाशक्ति है वो सर्वव्यापक है, और सर्वत्र है, और सर्व शक्तिमान है। सब जगह विद्यमान है, इस चीज को हम लोग भूल गए और बाहर बाहर भटक रहे है। नहीं, तीन प्रकार के साधक हम पाते है तुलसीदासजी लिखे है कि गुरुकृपा से-क्या बताया सुझहि, श्रीगुरूपदनखमणिगणज्योति सुमरित दिव्य दृष्टि हिय होती-ये अभ्यास कहाँ तक करना, गुरुजी के चरणों में लिपट रहना, कबीरदास कहता है कछु लेना न देना मगन रहना कहत कबीर सुनो भाई साधो-क्या साधना गुरु के चरण में लिपट रहना, आप जब सोते है तो गुरु के चरणों को तकिया बनाके सोना, गुरुचरण जो तकिया है - सो गये उसी में। मैंअपनी बताता हूँ आपको ये सब चोरी है सब सीक्रेट है ये। संस्कृत में अलग है लेकिन चीज यही है। गुरुपद पंकज निर्भरभक्ता संसाराता अर्चिरात भव मुक्ता-जिस दिन से आप दीक्षा लिये, गुरु चरणों में आपने पूजा किया उसी दिन से आप मुक्त है-तत्काल अच्चिदानन्द मार्ग में, फ्राम द वेरी मोमेंट यू आर फियरलेस या लिबरेशन ये मुक्ति है। तो तात्पर्य ये है कहने का, कबीर ने भी कहा है कि कर में दबा लेना गुरु के चरण। तो श्री गुरूपदनखमणीगण ज्योति-गुरुजी के चरणों को लख में रखना और कुछ नहीं वो जो नख है उनके, दिवाली जैसी दिया जल उठती है चमकती है न, तो जब तक ध्यान करते करते दसों नख में, दसों मणिवत चमक न उठे, दसों मणिवत चमक न उठे माने आपको ऐसा चमक अनुभव न हो जाय वहां चमके या न चमके ये सवाल नहीं है हमको उसमें चमक आनी चाहिए। तो ये वो चमक आने से-सुमिरत दिव्य दृष्टि हिय होती, अगर आपका स्मरण बराबर है तो वो जो नख है मणिवत चमक उठते है स्फटिक मणि की तरह वो दसों नख हो जाते है-तो उघरहि विमल विलोचन ही के-तब जाकर के मन का जो ग्रंथि है जो कट मर रहे है तब वो ग्रंथि मिट जाती है। ग्रंथि माने-संशय डाउट, संशय संदेह शंका ये सब दूर

हो जाते है, और ट्रांसपैरंट (लाइफ) हो जाता है जैसे पानी के नीचे कोई रहता है, क्लियर वाटर है तो नीचे सब चीज दिखता है, ऐसी इस दुनिया में रहकर या बैठे बैठे सारी दुनिया सब कुछ वही बैठे बैठे उसमें दिखाई देने लग जाती है। वही योगी / योगिनी हो जाता / जाती है, ये आत्मयोग हो गया, जहाँ आत्मयोग हुआ वहाँ वो निश्चिन्त हुआ।
तन्मय करने से क्या होता है वहां मैं नहीं रहता है। खटपट है, मैं मैं करता हूँ जब तक ये मिटे नहीं तब तक दर्शन नहीं होता। तन्मय होकर राम ही श्याम है, श्याम ही राम है, ये स्थिति प्राप्त होकर। उस जैसा होकर। फिर चटपट दर्शन हो जाता है। इस प्रकार जो अपने आपको सौंप देता है-इस प्रकार एक के सिवाय छवि या विचार न आये। इस प्रकार जो उपासना में रत रहता है-ऐसा जो पंगुवत भक्त है गूंगा है बहरा है-नित्य युक्त सतत योग है। छोड़कर (घर बार आदि) हम कहीं नहीं जाते-जो जो परिणाम है होना है हो जाता है। मैं उसकी सेवा करता हूँ-उसका प्रमेय व सिद्धान्त हो गया है, वो व्यक्ति है-वही सिद्ध है।
अपौरुषेय-उससे सबकी पैदाइस है, कोई गुण नहीं कोई रूप नहीं। बिना मुंह खाता, बिना पैर चलता है, बिना...। लासानी-उससे दूसरा कोई नहीं, एक अद्वितीय है। आत्मा की कोई आयु नहीं है, आत्मा ही शक्ति है, स्वयं आत्मा बोधस्वरूप है। दिव्य ज्योति से सब उत्पन्न हुआ है तो सब दिव्य है, वही तो है। कोई है अंदर, कोई बोलने वाला। आत्मा ही तो बोल रहा है और कौन बोल रहा है। जो कुछ कार्य होते है तुम्हारे अंदर उस महाशक्ति के द्वारा (होता है) वो आत्मा है,अखंड जो ध्वनि है वो ॐ है। सद्गुरु के द्वारा ज्ञान प्राप्त करो, यही देवालय(शरीर) है। इनरमोस्टमेन है वही डिवाइन है-वो है सत, वो है सर्वज्ञ, आमनीप्रेसेंट (सीएन्ट, पोटेंट), सर्वशक्तिमान है। मैं मैं मैं । वो ऐसी शक्ति है पावर है जाने अनजाने कार्य करती है, जिसका काम है वो जाने। अपना तो कल्याण है ही ।दोष जाय ऐसा व्यवहार रखिए आप, वो दीवार को दूर करना है। आत्मा, जो वासनाओं के आवरण से

दबा हुआ है, कम से कम वासना कामना, एक मिनट तो दूर हो, अपने आप को तो देखने दो,हम ही दुनिया भर के इच्छा कामना वासना वाले है। तन मन धन तीनों से उसे अपनाना चाहिए, भारतीय संस्कृति को पनपाना है-तो इसमें घुसेंगे नहीं जब तक। इसी जन्म में संस्कार मिल गया जिसका नाम है धन-आत्मा रूपी धन। प्रत्येक श्वास में वो चलता रहे तो धीरे धीरे वो बलवान होता है।ये, दर्शन होने से -अभाव दूर हो जाते है, भाव में आ जाते है। देता है माने-शक्ति, यही आत्मा तब महात्मा-महान आत्मा हो जाता है। स्थायी होने पर तब सर्व गुण सम्पन्न-ये आनन्द है, ये सुख है। माने हम अपने ही शत्रु है अपने ही मित्र है।

प्रत्येक व्यक्ति अपने आप में सुंदर है वो है विनय, विनय माने झुकना माने सेवा करना।विद्या जो है वो है विनय। विनय होना चाहिए। तो अपने आप को मिट जाने से होता है, अपने को मिट जाना है-एक दाना जैसे मिट्टी में मिल / मिट जाता है और नाना दाना आ जाते है। अभ्यास ये है आवरण से अपने आपको अलग करना, बोलने से नहीं करने से पेट भरता है। संसार में रहना है रहेंगे लेकिन हम ईश्वर प्राप्त भी करेंगे।

शरणागत किसे कहते है-बाण की तरह (उठाये तो उठे नहीं तो पड़े रहे) , लेकिन अभी तक मैं बाकी है, मैं बाकी है-मुझे ये करना है, ये करना है। सब कार्य होता है सतगुरु तुम्हारे सब कार्य करता है, करता है करवाता है। लेकिन मैं करता हूँ, मैं करता हूँ। सुबह शाम आकर यहां कुछ न कुछ मिलता है, उसको अनुभव कहते है। सत्पुरुष के द्वारा सब कार्य होता है यह ऐसी चीज है न बोलना न चालना है बराबर संस्कार होता है, आने वाले ने समझकर आना चाहिए, मकोड़ा जैसा पकड़ लेना चाहिए । सुख दुख भोगना तो पड़ता है / लेकिन ऐसा आया ऐसे गया, भोग करके फिर समाज में मार्गदर्शन करता है। ये संजीवनी विद्या है घर घर जाना चाहिए।

देहोअहं, देह की उपासना कर रहे है, देह चला जायेगा। क्या होगा? कुछ चला, कुछ आता जाता नही। राम और श्याम चले गये, सब ज्यों के त्यों है। प्रकृति अपने कार्य करने में स्वयं दक्ष है।

- एकाग्रता माने एक के सिवाय कुछ न रहे। विचारों का उदय अस्त होना बन्द हो जाता है, तभी एकाग्रता प्राप्त होती है।
  जहाँ सत नहीं है, ये सत का बोध (साक्षात्कार) नहीं है, वहाँ भाव बिल्कुल नहीं है। अर्थात जहाँ सत है, वही भाव है, अन्यथा ये सब अभाव है। आप बराबर मलरहित हो जायेंगे, खाली अभ्यास करना है। संकल्प चाहिए, ये मैं (आत्मा) हूँ, और ये (साक्षात्कार) मुझे प्राप्त करना है।
  अपने आप को जानने की जो साधना है, इसी को पुरुषार्थ (आत्म पु•) कहा गया है। श्रद्धा-सत अर्थात सत्य, जिसका ये जग है उसके प्रति होना चाहिए। जब तक अन्तर्यामी गुरु का प्रकाश नहीं होता, तब तक बाह्य उपदेश व्यर्थ है, दीक्षा के समय सद्‌गुरु शिष्य के अन्तर में प्रविष्ट होकर अन्तर्यामी रूप से शब्दब्रम्हमय ज्ञान का दान करता है। गुरुकृपा पर दृढ़ विश्वास श्रद्धा अचल रखना यही शिष्य का कार्य है। आत्मा तो तुम हो ही, सब कार्य आत्मा से ही हो रहा है, खाली अपना कचरा साफ करना है।
  आनन्द शांति चैतन्यज्योति प्रस्फुटित होती है, यही ज्ञान चक्षु का उन्मीलन है। क्रिया की आवश्यकता समाप्त हो जाती है।

- आत्मा परम है वही धाम है, नमः माने मैं नहीं। मैं देह नहीं आत्मा हूँ।
  चरण के शरण आये इतना बहुत है, जब तक गुरु चरणों में स्नेह नहीं तो ये जन्म क्या है? ततः किम, ततः किम।
  छोड़ना नहीं है, बैठों आसन में। जिसके बात में दम नहीं उसके बाप में दम नहीं। कालूपुर में हमको एक सुदामिया बुआ ने पहचाना, और कहा ये साधारण व्यक्ति नहीं है।
  मेरे पिता ने मुझे तीन ज्ञान दिए थे-१. झूठ नहीं बोलना २.चोरी नहीं करना ३. भीख नहीं मांगना। मैंने उनके तीनों आदेशों का पालन किया।
  हम शाम की चिंता नहीं करते क्या खाएंगे? कैसी व्यवस्था होगी? मुझे उस पर (परमात्मा) भरोसा है। पैदा होने के पहले वो भोजन की व्यवस्था कर देते है।

आपको जितना अनुभव है उतना ही बोलो, उससे अधिक नहीं। अपने आप को पढ़ो हम क्या करते है, क्या नहीं करते, हम कैसे है? चरित्र घर बनाना है यह न भूलो।
अपने आप को जानना है पहचानना है, मनुष्य सर्व गुण सम्पन्न है। भारत में यही एक विद्या है जिससे सारे जगत में उत्तम और कोई विद्या नहीं, कृष्ण ने इसे राजविद्या कहा। जिस दिन से आपने दीक्षा ली, गुरुचरणों की पूजा की, उसी दिन से आप मुक्त है। इससे बढ़कर ब्रम्हवेत्ता नहीं दुनिया में ये जो बोल रहा हूँ। जब तक सत्पुरुष नहीं मिलता, उस परमात्मा को कोई भी प्राप्त न कर सका, यह है गुरुजी की महिमा। तू जान तेरा कारोबार जान और अपने आपको, सबको उसको सौप दे सब हो गया, और अपना काम करें। इस तत्व से मगन सब कुछ होता जा रहा है, कब जीवन बीत गया पता नहीं चलेगा और हर काम होता रहेगा, यही सहज योग है सहज माने साथ साथ। आत्मा की ओर बुद्धि को शनैः शनैः लगा देना, जैसा बाहर लगाते है वैसे धीरे धीरे भीतर की भी आदत डालिये, होता है। धीरे धीरे इन्द्रियाँ सब शिथिल हो जाएंगी, संवेदना चली जायेगी, जहां संवेदना गई कि अपना काम बना। ये जो विषय है, ये विषय नहीं, विषयातीत है।
धर्म माने आत्मा, यह जो परम है, उसे ही परमात्मा कहा। धर्म वो जिससे महाकारण शरीर या ज्योतिर्मय पिंड जो परम है, प्राप्त कर लेते है। आत्मा रूपी धर्म निष्काम कर्म के प्रभाव से बुद्धि साम्य अवस्था को प्राप्त कर निर्विकार मणिवत हो जाती है, तब ये आत्मा स्वयं ज्योतिर्भवती। और जन्म मरण का भय ये सब छूट जाता है। तुम धर्मात्मा बनो तब अर्थ धर्म काम मोक्ष मिलेगा। अर्थ की कोई कमी नहीं होगी अभाव नहीं रहेगा। ईश्वर के पास पहुंचने के ईश्वरीय तत्व है उसे धर्म कहते है, धर्म उसे तब कहते है जब उसकी गति अखंड हो जाय। ऐसे ध्येय होना की कभी भी हमारा कल्याण हो और हमको देख करके औरों का भी कल्याण हो।
ब्रम्हा विष्णु महेश ये सब आत्मशक्ति का विकाश करके कल्याण के लिए

कार्य करते रहते है, वो हमारे गुरु है, हमारे जैसे वो भी देहधारी है। लेकिन ये सब अभ्यास के बाद कि बातें है। कृष्ण राम सब हमारे जैसे है लेकिन अनेक जन्म संसिद्धि-अनेक जन्मों के बाद कृष्ण, कृष्ण हुए। तभी कृष्ण अर्जुन से कहते है हमारे तुम्हारे कई जन्म हुए, तुम भूल गए, मुझे सब बोध है।

मनुष्य अपने अलभ्य सुंदर और उत्तम मानव जीवन को जो लाखों करोड़ों वर्षों याने कल्पान्तर के बाद मिलता है, मैं और मोर तै और तोर में फंसकर जो सार है उसको छोड़कर, जो असार है इसके पीछे पूर्ण जीवन व्यतीत कर देता है। हम इतने भौतिकवादी हो गये है कि अपने आप को भूल गए है, अपनी संस्कृति को, उन मनीषियों को अपने बाप दादों को अपने गोत्र को, जिनके नाम से हम बिकते है भूल गए है। हम यह भी भूल गए है कि सत्यंवद धर्ममचर। सत्य कहना,सत्य करना और उसी तरह से चलना, उसी का अध्ययन और अभ्यास करे, समाज में भी कराये, और आचरण में रहे। तुम्हें अगर शक्तिमान होना है तो उस सत वस्तु को मत छोड़ो, बाकी सब कुछ छोड़ो और सत को पाओ। मैं की समाप्ति की वह पास में। मन धारण के योग्य हो जाता है तो आप कुछ नहीं करते अपने आप होता है।

गुरु और ब्रम्ह में एकात्मता का विकसित होना ही एकनिष्ठता है, तभी शुद्ध सतोगुणी होने की योग्यता प्राप्त होती है। आत्मा गुण रहित है आपको गुणरहित होना है, चिन्तनरहित होना है। तीनो गुण साम्यावस्था को प्राप्त हो गए, तब साधक शांतातित बनता जाता है। तीनों अवस्थाओं से परे होना है, तुर्यातित अवस्था प्राप्त करना ही लक्ष्य है, जिसमें साधक को कोई होशोहवास नहीं रहता, कोई खिला दिए तो खा लिया नहीं तो अपनी मस्ती में मस्त रहता है।

काम बन गया तो सब ठीक है, न काम बने तो सब टेढ़ा, जिसको देखो वो टेढ़ा है, ये अपने शुभाशुभ कर्मों का फल है। उस मन्त्र पर निर्भर करके-कार्य के आरम्भ, मध्य, कार्य के अंत में जहां तहां आना जाना करते हुए, तो आपका कार्य अवश्य होगा। आपमें जो बल है विश्वास है ये गुण अवश्य

प्रकट होंगे। संशय अविश्वास शंका आदि दोष दूर हो करके, शांति आनन्द अवश्य आएगी। निर्विघ्न कष्टरहित भोग भोगते हुए, परमधाम जो आत्मा है, शनैः शनैः पहुंच जाते है, इतनी ताकत है क्लीं बीज में वो पूर्ण काम है, यही गृहस्थाश्रम से लेकर मोक्ष तक सहायक है। आप अभी भी मुक्त है, आगे भी मुक्त है। माफ करना ये वाणी से समझाया जा नहीं सकता, ये अभ्यास से जाना जाता है। आहुति-जैसे कामिनी कांचन में बलि चढ़ा देते है, वैसे ही अपने आपको जानने के लिए बलि चढ़ा देना चाहिए,आत्म प्रेरणा से आगे बढ़ना चाहिए, ऐसा करने से साधक लौकिक व अलौकिक क्षेत्र में निष्णात होते चला जाता है, भय से दूर होकर निर्भय हो जाता है। आत्मा की जो वाणी सुनता है वही करता है, आत्मा ही सबसे प्रिय हो जाता है। ये सांसारिक कार्य और उनसे सम्बंधित चिंताएँ दूर हो जाती है। चिंतामुक्त होइये, सद्‌गुरु के ऊपर सब कुछ छोड़ दीजिए अर्थात कर्तापन का अहं भी।

संसार-वेदान्त और व्यवहार का ही ताना बाना है इसमें रहकर ही साधनारत रहना है। आत्म साक्षात्कार रूपी ज्ञान ही, सभी के लिए अनिवार्य व स्वाभाविक है। दुष्ट प्रवृत्तियों से बचते हुए विद्या को सीखते हुए, संग्रह करते हुए आगे बढ़ता है। हमारा ज्ञान बना रहे, सदैव तत्पर रहे।हमारे लिए वेदान्त और व्यवहार दोनों में कोई अंतर नहीं है, अंतर केवल अपने को नियंत्रित करने में जीवन क्षेत्र में अमल करने में है, व्यक्ति आज व्यवहार में कमजोर होता चला जा रहा है।

ये कुरु नहीं है, ये भव है, भव माने अपने आप होता है, अपने आप को जानने की साधना है, इसी को पुरुषार्थ कहा गया है। निष्काम व्यक्ति ही आत्मा का दर्शन करते है।अन्तः के भीतर ही उपनिषदों के तत्वों की खोज करो, तुम सभी ग्रंथों में श्रेष्ठ ग्रंथ हो, गुरुकृपा पर दृढ़ विश्वास श्रद्धा अचल रखना, यही शिष्य का कार्य है। शिष्य में केवल सतगुरु ही आध्यात्मिक शक्ति का संचार करते है, आनन्द शांति चैतन्यज्योति प्रस्फुटित होती है

यही ज्ञान चक्षु का उन्मीलन है। जब तक उस अन्तर्यामी गुरु का प्रकाश नहीं होता बाह्य उपदेश व्यर्थ है। एक शब्द भी अनुभव में नहीं आया खाली गप्पा मारते है। तू ही तू है सब जगह, एक और अनेक, सब तू ही तो है, बहुत कठिन है। शरण में गए माने तन मन धन सब समर्पित हो गए, और किसके शरण में जाए, अरे हम अपनी शरण में आते है, वही महाशक्ति है वही कुंडलिनी है वही आत्मा है वही सर्वत्र है वही आप है। पहले दिल साफ करो, फिर आईने ए साफ करो, खाक खुदी से उनकी सूरत या अपनी सूरत दिखाई नहीं देती है। बका की गर तमन्ना है तू हस्ती से गुजर पहले यही होता है वस्ल उसका तू जीते जी मर पहले, इसके बिना नहीं होता है नहीं होता है नहीं होता है। शब्दों के द्वारा ये जाना नहीं जाता, यहां अभ्यास अभ्यास अभ्यास। एक तत्व के अभ्यास के बिना निरोध नहीं होता। खाली मैं मेरा, तै तेरा, मैं और तू-अगर भूल गए तो आप महान है पक्के धर्मात्मा है, वरना धर्मात्मा नाम के है। विष से वेश बना है वेश बना लो, वो साफ हो जाएगा। हद तक पहुंचा दे, हद से अनहद होना है, तब खुदा बन्दे से पूछता है, बता तेरी रजा क्या है। बाकी हाथी के दांत खाने के कुछ और दिखाने के कुछ और है। मानव शरीर के अंतर्गत स्वर्ण सन्धि प्राप्त हुआ है, वो है अन्तःकरण-मन बुद्धि चित्त व अहं। वही सर्वज्ञ बीज है, ब्रम्ह बीज है, अगर समझ मेंआया तो वही सर्वज्ञता के लक्षण है।

व्यक्ति माने अभिव्यक्ति-आत्मा की अभिव्यक्ति, यह भाव वाचक है। निष्काम व्यक्ति ही आत्मा का दर्शन कर सकते है। सर्वदा अभ्यास के द्वारा मन को अनन्त भाव में भावित करते रहो। इच्छा अज्ञान, इच्छाशक्ति पूर्ण ज्ञान अवस्था में रहती है, ज्ञान माने आत्मस्थ।प्रत्याहार माने विकारो रूपी अवरोध से मन को हटाना है। कर्म में अनासक्त होकर निरत रहो, वासना रूपी पेड़ को अनासक्ति रूपी कुठार से काट डालो। सदा प्रत्यक्ष करते रहो तुम कुछ नहीं करते, क्रिया मन व देह करते है। गुरु अर्पण करो। अभी तक जिसे तू कहता है, वह भी मैं हूँ जब ऐसी एक वृत्ति रह जाती है, तब आत्म साक्षात्कार सुलभ हो जाता है।

जब तक ये प्रकिया सत्पुरुष के द्वारा न मिले, षट चक्र भेदन जब तक नहीं हो पाता, तब तक सैकड़ो करोड़ो जन्मों का भोग भोगना ही होगा, उसके बिना छुटकारा नहीं। जब तक ये ग्रंथियाँ भेदन न हो, जब तक तुम षष्टम भूमिका में पहुंचते नहीं, तब तक आनन्द नहीं, आनन्द नहीं। षष्टम भूमिका में पहुंचने के बाद हम साधक के अभ्यास को बंद करा देते है, ये शक्तियां अब तुम्हारा काम करेगी। सभी काम ऐसे ही बन जाते है माने संकल्प करोगे, वो मन में रहना है बताया नहीं जाता, धीरे से अपने आप हो जाता है।

- जितना इस मार्ग में मिलता है वह जाता नहीं बना रहता है हालत और भी अच्छी हो जाती है यह जो आत्मज्योति है वह ही कल्पतरु है सब ऋद्धियाँ सिद्धियां इससे सम्भव है मांगों जैसा मिलता है। ज्योति के रूप में उसका ध्यान करना चाहिए, जपना चाहिए, इससे जो आनन्द होता है, वही सच्चिदानन्द है। उसे ही पकड़ना है।

मन का मैल निकाले बिना न साधना होगी न भक्ति।चित्त प्रसन्न होते ही सारे दुःखों का अवसान हो जायेगा। जहाँ भोग है वहां चिंता, भोग के त्याग से ही सारी चिंताएँ समाप्त हो जाती है। मैंने जो बीज बोया है निष्फल नहीं है और नही तो मरते समय आप ज्योति में जायेंगे। हमने ज्योति का आत्मज्योति का बीज बोया है। एक सेल से आप अनेक सेल में देह पाये है, अब आकुंचन के द्वारा उसी सेल रूपी बिंदु से देह प्राप्त करना है, ज्योतिर्मय देह। यह बिंदु ज्योतिर्मय है।अभ्यास के द्वारा दिव्य आंख (तीसरी आंख) खुल जायेगी।

कामना वासना का संकल्प न करें, विचार ही समय पाकर मूर्त रूप धारण करता है। मौन स्थिति आने पर साधक निंदा स्तुति से दूर रह सकता है। प्रेम और अनुराग बिना वो नहीं मिलते। तुम्हें अगर शक्तिमान होना है, तो उस सत वस्तु को मत छोड़ो, बाकी सब कुछ छोड़ो और सत को पाओ।

बगैर खीझे अनासक्त भाव से मौनावस्था में रहने का प्रयत्न करो। मौन रहने का प्रयत्न करें और अधिक से अधिक काल पर्यन्त डूबे रहे यही साधना अब आपको करनी है ध्यान रहे। लव मात्र भी अगर ज्योति दर्शन हो जाय, तो प्रत्यवाय नहीं है अर्थात वो घटता नही बढ़ता चला जाता है। आप लोग अभ्यास करते है और ज्योति का दर्शन हो रहा है इस ज्योति को हमने धर्म कहा है। जब से आप दर्शन करते है,उस घड़ी से किये गए कर्मों का प्रारब्ध नहीं बनता है।आत्मा को देखकर , आत्मज्योति में उसका प्रवेश हो जाता है, माने परमशक्ति आपको प्राप्त हो जाती है।

किसी बात की चिंता मत करो, सब गुरुजी पर अर्पित करके आनन्द में डूबे रहो। यदि दुःख न टाल सको तो गुरुदेव की ओर उन्मुख करके स्वयं निश्चिन्त हो जाओ। किसी प्रकार की चिंता करे ही नहीं, तभी समाधि की ओर क्रमशः अग्रसर होंगे। देह या शरीर की चिंता न करें, नाहि घर की, धन की ना ही सदस्यों की, फिर देखिए कैसी मस्ती आती है। आप स्वयं सच्चिदानन्द स्वरूप है।

अभ्यास से जो लाइट या प्रकाश मिलता है, उसमें संस्कारों के काजल धुलते है। लाइट के अंदर सदा रहना चाहिए, वह प्रकाश ही मार्ग प्रकाशित करता है। तमोगुण रजोगुण सतोगुण इन तीनों पर जब संयम हो जाता है तब आप उस शरीर में आते है जहाँ आत्मा स्वयं ज्योतिर्भवती।

सहज अभ्यास करें तो इस शरीर में जो तीर्थ है वहां स्नान होता है, तुर्यावस्था में आज्ञाचक्र में त्रिवेणी संगम होता है। याने जो सदा इस प्रकाश में स्नान करता है, उसे गंगा यमुना पुष्कर से क्या प्रयोजन?

जब बुद्धि (साधना के दौरान) ई नाम शक्ति, जब इनका मेल तीसरी नेत्र , ज्ञाननेत्र में होता है, तो निराकार आत्मा ज्योति रूप में प्रकट हो जाती है। मृत्यु को लांघने के बाद ज्योति दिखती है, नजर आता है, अनेक जन्मों का लेना देना भूत भविष्य सब दिखता है। ये तुरीय अवस्था है, बोधमय शरीर है, उसका शरीर प्रकाशमय हो जाता है।

सब हमारे अंदर है हम ही है।अपने आप को पढ़ो, जब तक प्रकाश न मिले, जब आप अन्तर्मुख हो जायेंगे तो प्रकाश आ जायेगा। ज्योति इधर से आयी उधर गयी ये वह स्थिति नहीं है,आपको उसमें रहना होगा। यह एक जन्म की बात नहीं है हजारों बार जन्म लेना पड़ता है। अनेक जन्मों के बाद तब ये तमाम बात होती है।

ये जो अभिक्रम है अभि माने भीतर अंदर अंदर में दीप। न नाशम इसका नाश नहीं होता। बाकी जो कर्म करते है उसका नाश। एक बार भी ये बुद्धि शुद्ध हो जाये, आत्मा स्वयं ज्योतिर्भवती। एक बार भी फ्लेश हो जाये, तो सब भयों से मुक्ति हो जाती है। एक बार भी ज्योतिस्वरूप आत्मा का दर्शन हो जाय, उसकी तुलना में दस दस अश्वमेध करने वाले भी नही आते। एक ज्योति के सिवाय ब्रम्हांड में कुछ नहीं है, स्त्री या पुरुष तो बाहरी रचना है, एक आत्मा के सिवा क्या है?

अंदर बाहर सब जगह ज्योति है,वो ज्योति हमको दिखाई नहीं देती। लेकिन दिखाई देती है, बिल्कुल दिखाई देती है, बिल्कुल सत्य है।अनन्त सूर्यों का सूर्य है, वही सत्ता है, वह सत है और कुछ नहीं। वो आत्मा है, आत्मदेव है, अनन्त सूर्यों का सूर्य है। आत्मा रूपी सूर्य जब प्रकट हो जाता है तो क्या नहीं हो सकता? अभ्यास इतना करो कि एक आत्मज्योति के सिवाय कुछ न रहे, यह परमब्रम्ह है, यही अहं ब्रम्हास्मि है।

सबमें एक ज्योति है ये केवल कहने की बात नही है, यह सत्य है, ऐसा जो देखता है वह सम्यक देखता है। कबीरदास ने आज्ञा चक्र में ज्योति रूप में प्रकट होने पर सोहँ कहा, निरतिशय अवस्था अर्थात ब्रम्हरन्ध्र में स्थापित होकर अहं ब्रम्हास्मि हो गया। ब्रम्हरन्ध्र में संशय निर्मूल हो जाता है क्योंकि वहां न देश है न काल है न भय है न मोह न काम न क्रोध।अनन्त जन्मों का कर्मों का भूत भविष्य की पूरी सफाई हो गई, तब वह परम ब्रम्ह हो गया। मैं या अहं के समाप्त होने पर ही हम उस अवस्था में पहुँचते है, जिसे निर्बीज समाधि कहते है। एबव टाइम एंड स्पेस।इस स्थिति को प्राप्त

करने पर साधक ज्योतिर्मय पिंड हो जाता है। जब साधक अभ्यास करते करते ब्रम्हरन्ध्र में पहुँचता है, तब पूर्ण हो जाता है,ब्रम्हांड ज्योति से भर जाता है।

- जड़ और चेतन के संयोग से (मेटर और एनर्जी के संयोग से) प्रकृति और पुरुष के संयोग से ये सृष्टि हमारे सामने है। ये परिवर्तनशील है।चलायमान है।

  लक्ष्मी भी चलायमान है, प्राण भी चलायमान है, ये संसार भी, सब कुछ चलायमान है। तो निश्चल कौन है?

  धर्म एकोहि ही निश्चला। तो धर्म क्या चीज है? धारणात धर्म इत्युच्यते। हम जो धारणा करते है की अपने आपको जानें। अपने आप को देख सके। आत्मसाक्षात्कार कर सके। यह धारणा की मैं देह नहीँ, लक्ष्मी नहीं, आग नहीं, पानी नहीं, मिटटी नहीं। सप्रपंच (जिसमें हम फंसे है) नहीं। अहं आत्मा। मैं आत्मा हूँ। आत्मा मेरी महान है,वही सब कुछ है, वही परम आत्मा है। जिसको पाकर मनुष्य परमपद प्राप्त कर लेता है। ये जो धर्म है, परम् है, निश्चल है, निष्काम हैऔर शांत है । अगर शांति पाना है तो इस बाह्य जग में शांति नहीं है।

  इस संसार में जन्म लेने के बाद पाप और पुण्य, शुभ और अशुभ कर्म के सिवाय क्या है? जब आप यही नहीं छोड़ रहे है, तो अपने आपको जानने के कर्तव्य से क्यों विमुख होते है? सम्मुख क्यों नहीं हो जाते। सम्मुख होइ जीव मोहि जबहिं जन्म कोटि अघ नासहिं तबहीं। श्रद्धा विश्वास को जब तक आप जाग्रत नहीं करेंगे, तब तक आंतरिक प्रवेश हो ही नहीं सकता। जब तक आंतरिक प्रवेश हो नही पाता तब तक शांति सैकड़ों कोस नहीं, सैकड़ों जन्म दूर है। शांति एक स्थिति है,एक अवस्था है।स्थिति-अपने आप में स्थित होना है।

  तो हमारा प्रथम कर्तव्य है, अपने आप को जानना। ये है कर्तव्य। अपने

आप को जानना अपने आप को समझना। इसमें जो आत्मा है, वही जीव है, वही परम् है। परमोत्कर्ष में जो पहुँच गया वही परमात्मा है, और कोई दूसरा नहीं। तो तुम्हीं हो और कोई दूसरा नहीं। तुम्हीं महान हो पर बोलने से नहीं होता, करने से होता है।

आपमें ही है वो। वो शक्ति है, महाशक्ति है, उसे आपको विकसित करना होगा, प्राप्त करना होगा। आप स्वयं अधिकारी है अपने आप के लिये। आप अपने आप को उच्चतम स्थान पर और निम्न से निम्न स्थान पर भी ले जा सकते है। यह आपकी इच्छाशक्ति पर निर्भर है।

तो जो अग्नि प्रसुप्त है, उसको जलाना है। इसको तो पाना है। सत्पुरुष या सतगुरु के सानिध्य में रहकर होता है ये। संसार में हमारे संस्कार, हमारी वासनाएँ, इच्छाएं, कामनाएं, हमारे काम क्रोध लोभ मोह मान मत्सर भय मृत्युभय रूपी आवरण ने वो जो शक्ति है, उसे इतना दबा दिया है की वो दबती ही चली जा रही है। उस सत शक्ति को विकशित करना है, खड़ी करना है। उठाने के लिए कभी सन्धि ही नहीं मिलती और हम कभी उस सतशक्ति को उठाने का प्रयास ही नहीं करते। ये सत ही कुण्डलिनी है, महाशक्ति है,अल्लाह है, गॉड है,अनन्त नाम है इसके।

आप बस अपने आप को जानें। मनुष्य कमजोर नहीं है। हम तो दुखी है, हम तो पापी है, हम यूँ है,हम त्यूँ है। ईश्वर अंश जीव अविनाशी, चेतन अमल सहज सुख राशि। अरे आप तो सुख के राशि है। ये सब इस कारण से है की हम अपने आप को भूल गये है। अपनी संस्कृति को भूल गये है। जो व्यक्ति अपने से ही विमुख है, विपरीत है,अपने से ही प्रतिकुल है तो वो किसके समाकुल होगा? आज कोई भरोसे लायक नहीं है वो संसार में। आज एक व्यक्ति दूसरे पर भरोसा विश्वास नहीं करता। इससे घर घर में, व्यक्ति व्यक्ति में फूट है। आप दुःख में जी रहे है और निरन्तर अपने बच्चों को दुःख में शामिल कर रहे है। न कभी निकले न निकलने की कोशिश करते है आप। और अपने बच्चों को उसी दुःख वाले गड्ढ़े में डाल रहे है।

ये चरित्र हीनता है, अनुशासन हीनता याने शिक्षण बराबर नहीं है।
आदमी साधारण होते हुए भी असाधारण है। वो दिव्य शक्ति है। वो डिवाइन एनर्जी है। क्यों सोचते हो कि हमसें कुछ नहीं हो सकता? कहाँ से आया ये रोना? ये रोना है क्या? मनोबली होते हुए भी अपने बल से, आप दुखी है। ये तो दुर्बलता है, तुम्हारीं। इस अहंकार को क्यों नहीं बदलते? क्यों नहीं उसका शुद्ध सात्विक रूप देते? हमारे सुख दुःख का कारण है केवल,अहंकार।
ये दुर्बलता, दुर्गति तभी जा सकती है, जब प्रत्येक अपने आप को समझें, अपने आप को जानें। तब चरित्र का निर्माण होता है, वरना चरित्र एक पुस्तकीय नाममात्र है। धर्मम् चर, सत्यम् वद। सत्य बोलो और धर्म से चलो। धर्म माने आत्मा। आत्मसाक्षात्कार यही धर्म है। तब वो धर्मात्मा होता है। चरित्र है।
सतगुरु सत्पुरुष के आदेशानुसार, सानिध्य में अभ्यास करें। अपने आप को जानने की जो पद्धति है, यही भक्ति है। भक्ति माने उपाय। भक्ति याने सेवा करने की पद्धति। अंदर बाहर ऊपर नीचे दाहिने बांये आगे पीछे वही है लेकिन दीखता नहीं है। हाँ सतगुरु के बताये उपाय से आप चाहें तो प्राप्त हो जायेगा। अध्ययन, अभ्यास के बाद उस परम् को पाकर जब वो स्थिर हो जाता है, तब वो मुक्त माना गया है। जीवन मरण से इस अन्नमय कोष से उसकी मुक्ति हो जाती है,छुटकारा मिल जाता है। तब उसका सम्यक् जीवन दिव्य जीवन प्राप्त होता है।
इस भूमि को स्पर्श करके पाताल से आकाश तक दिव्य लोक पर्यन्त एक ही पुरुष है और कुछ नहीं। यही वेद है। वही ब्रम्ह है, कुण्डिलिनी है, सब कुछ है, और कोई दूसरा नहीं। वही जानने योग्य है। न हमें कहीं आना है न जाना है केवल हमें पद्धति मालूम होनी चाहिए। जानने पर प्राप्त होने पर अभी जो हमारी दुर्गति है, दूर होकर वो सुगति हो जायेगी।आपको, जो चाहेंगे वो मिलेगा। जो सोचेंगे वो होगा।संसार में आपका भी कल्याण होगा, लोगों का भी कल्याण होगा।

आप मंगलमूर्ति होंगे। मंगल कहते है, कल्पतरु को। कल्पतरु के नीचे जावो, तो जो कहेंगे, सोचेंगे झट परिणाम उसका आ जाता है। ये है सत्य। सत्य की परिभाषा है की सत्य प्रतिष्ठान-जैसा आप सोचेंगे वो फल सामने आ जायेगा, वैसा आपको मिल जायेगा, ये सत्य है। कल मिलेगा, परसो मिलेगा, ऐसा नहीं,वो क्रिया का फल तत्काल पीछे पीछे है।

अभ्यास कैसे करें ताकि समय समय पर जो विघ्न बाधायें उतपन्न होती है, वो दूर हों। तीनों बाधायें दैविक दैहिक भौतिक ये भी आपसे दूर होंगी। ये सब सतगुरु के द्वारा प्राप्त होता है, उनके आदेश का पालन हो, पर सन्देह संशय शंका नहीं होनी चाहिए। इसे श्रद्धा कहते है। श्रद्धा माने एक बार आपने धारण कर लिया, तो धारण कर लिया। इतिहास में इसका उदाहरण सावित्री और सत्यवान है। ध्यान में लाना पड़ता है, ध्यान एक घर्षण है। चन्दन शीतल है,लेकिन उसकी दो लकड़ी पकड़कर घिसो तो अग्नि प्रकट हो जाती है। ध्यान के बिना मिलता नहीं ये। एक से दूसरे, और दूसरे केंद्र में ऊपर ही ऊपर जाना है।

अपने आत्म साक्षात्कार के लिये जो कर्म किया जाता है वही निष्काम कर्म है। जब ये निष्काम कर्म अखण्ड हो जाता है, जब एक वृति बन जाती है तो, आपकी बुद्धि में वो आत्मा अपने आप को प्रकट कर देती है, आपको दर्शन हो जाता है। ये है धर्म जब निष्काम कर्म अखण्ड रूप धारण कर लेता है।

श्रीकृष्ण ने कहा है कि मेरा जन्म भी दिव्य है और कर्म भी दिव्य है। जिसका कभी कोई प्रारब्ध बनता नहीं, कोई भाग्य बनता नहीं, और कोई संचित वंचित नहीं। ये सब दिव्यत्व को प्राप्त होता है। इसलिये यदि आपको दिव्यत्व प्राप्त करना है, दिव्य जीवन प्राप्त करना है तो आप अपनी प्रसुप्त शक्ति को जगा लीजिये, और सतगुरु के उपदेश आदेश के द्वारा शनैः शनैः कई जन्मों के बाद उसी स्थान पर आप पहुँच जायेंगें। ये आश्वासन है हमारा। ये अपने आप आगे बढ़ते चला जाता है, जब आप जन्म लेंगे, जहां तक जमा है,उसके आगे बढ़ते जायेंगे।

- जो एक का नही, वो अनेक का है, आत्मा की कोई आयु नहीं है, आत्मा ही शक्ति है, आत्मा स्वयं बोधस्वरूप है।
उससे सबकी पैदाइश है, उससे दूसरा कोई नहीं है, एक, अद्वितीय है। उसका नाम ओम है। अ उ म, वाला नहीं। उसको ब्रम्ह और माया कहा। तत माने वह, ब्रम्ह माने महान।
इस बॉडी से आत्मा के निकलने के बाद कोई काम का नही रह जाता। आप उस परम तत्व को धारण करने पर नीच से नीच रावण, उच्च से उच्च ,राम से उच्च जीवन व्यतीत कर सकते है।
हमें क्यों नहीं होता, उन्हें क्यों होता है, ये नही सोचते हम क्या क्या कचरा लेके आये है। कितना मिट्टी है।
ये चीज दूर करना है, अपना पात्रता की तैय्यारी चाहिए। दूध भरने के लिए अलग पात्र चाहिए, सब अलग अलग चीज रखने के लिए अलग अलग पात्र चाहिए। वैसी तैय्यारी चाहिए। ये अपवर्ग जो है, क्या नाम दे दिया, जो युद्ध मे भी जिसकी बुद्धि स्थिर है, याने अपना पराया नहीं है। युधिष्ठिर।क्या तैय्यारी होगी, क्या स्थिति हो सकती है। जरा जरा सी बात पर विपरीत हो जाते है, बड़े धर्मात्मा बनते है हम लोग, हम और मैं गया नहीं तो क्या गया? मैं आया तो प्रतिकूल में तू भी है, जहां मैं जिंदा है वहां तू भी है।
वही निर्गुण निराकार, वही महेश्वर, परम आत्मा, ज्योति के रूप लाकर के ध्वनि में प्रकट होकर के आवाज दिया, उसे मुनियों ने मनीषियों ने सुना और याद हो गया। कण्ठ से कण्ठ बोलते गए याद करते गये।
राम जो है आत्माराम है, सवर्त्र है,सर्वशक्तिमान है, सबमें रमता है हम उस राम को मानते है।
ये संजीवनी विद्या है, घर घर जाना चाहिए घर घर पहुँचना चाहिए।
प्रकृति स्वयं अपने कार्य में दक्ष है। देहोअहं,देह का उपासना हम कर रहे है, देह चला जायेगा, क्या होगा? कुछ चला जाता नहीं, कुछ आता जाता नहीं। राम और श्याम चले गये, सब ज्यों के त्यों है।
जब तक बाहर सांस चलती है वो कभी निरोध नही होता।

अहं कौन है, वही तो ब्रम्ह बीज है, सर्वज्ञ बीज है।
सत्पुरुष चाहिए, सत्पुरुष के द्वारा सब कार्य होता है, यह ऐसी चीज है न बोलना है न चालना है। बराबर संस्कार हो जाता है,आने वाले ने समझकर आना चाहिए। मकोड़ा जैसा पकड़ लेना चाहिए, मुंडी टूट जाय लेकिन वो नहीं छोड़ता।
क्रियाहीन कैसा हो? जब तक शुद्धिकरण नही होता। बगैर क्रिया बिन संवाद माने बगैर आघात किये कैसे होता गया। साधु संत के बोलने पर भी कोई परिणाम नही होता। बगैर क्रिया बगैर आघात के कैसे होते गया।
वो शक्ति चलाती है, गुरु सिर्फ उपकरण है, यंत्र है, इंगलिश में सोल कहते है, आत्मा कहते है, उसी को जीव कहते है। हर कष्ट में हर समय कैसी भी स्थिति हो, अभ्यास करना चाहिये, नहीं छोड़ना चाहिए। जिनको भरोसा है, वही पार उतरता है, पार पाता है, वही सुखी होता है उसके सारे कार्य बन जाते है।
तुम योगी बनो न बनो, होओ न होओ, समाधि में जाओ न जाओ। लेकिन ये भरोसा है, या तो स्वयं पर भरोसा करो या सतगुरु है तुम्हारा उस पर करो। होता है काम।
मन शांत है तो सभी कुछ अच्छा है नही तो नही। रास्ता वही चलूंगा जो सीधा और साफ हो, बात वही कहूंगा जो सच्चा और इंसाफ हो।अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभं न भोक्तम क्षीयते कर्म कोटिशः जन्म शतैरेपी। योगी को शुभाशुभ कर्म का फल नही होता, यही कैवल्य है
लोग इधर उधर जाते है घूमने, देखना भी भोग है। बिना भोगे वो छूटता नही, वो भोगना ही पड़ेगा। बंधन काटो, और बंधन काटने के बाद, निष्काम होकर कर्म करो। वो स्वयं तीर्थराज है, घर घर जाकर आशीर्वाद देता है, कल्याण करता है, रास्ता बता देता है।
थिर घर बैठो हरिजन प्यारे, सतगुरु तुम्हरे कार्य सँवारे।हरिजन माने

आत्माजन, तुम स्वयं जन हो। गृहस्थ आश्रम में रहकर सब कार्य होता है, सतगुरु तुम्हारे सब कार्य करता है, करवाता है।
लेकिन मैं करता हूँ, मेरा है, यह नहीं। मैं मैं बकरी करती है, धुनिया जो है सुखाकर के रस्सी बना देता है, तब वो तुन्न तुन्न करती है, मैं नहीं बाबा तू, लेकिन मरने के बाद क्या? मरने से पहले मैं मैं मरते दम तक।

- पाग यानी अंदर बाहर वही है, अल माने लीन होना, (पागल) ईश्वर प्रेम में लीन होना।
भाग्य-याने प्रारब्ध से प्राप्त कर्मफल, जिसके कारण जन्म हुआ है, भोगना ही पड़ेगा। उसे पौरुष या विद्या से नष्ट नहीं किया जा सकता।
ज्ञान - माने आत्मसरूप, आत्मस्थ। इच्छा (कामना) अज्ञान। इच्छाशक्ति पूर्ण ज्ञान अवस्था में रहती है।
प्रत्याहार-विकारों रूपी अवरोधों से, दुनियादारी से मन को हटाना है।
ब्राम्हीस्थिति-जब पांचों ज्ञानेन्द्रिय (आंख, कान, त्वचा, नाक, जीभ) मन बुद्धि चित्त सहित चेष्टारहित हो जाए।
अन्तर्मुख-होने पर सबमें स्वस्वरूप दिखता है या देखता है।
संयम-ही ब्रम्ह है, अहिंसा सत्य अस्तेय, ब्रम्हचर्य अपरिग्रह में रहना ही संयम है।
वैराग्य-अपने को भूल जाने का नाम है, जीव ब्रम्ह है समझना, संसार से मन हटाकर बलस्थ होना है। लक्षण चित्त निर्मल, क्षमा, सरलता, पवित्रता, प्रिय अप्रिय प्राप्ति में समता, समस्त इच्छाओं का अभाव।
सद्‌गुरु-ऐसा, स्मरण मात्र से किसी का भी काम बन जाये चाहे वह शिष्य हो या न हो।
निर्बलता-अपने स्वरूप को भूल जाने से है।
शांतावस्था-मन शांत हो जाता है, उसकी कोई इच्छा नही रहती, करने की, पाने की,जमा करने की।
प्रेम-यह जग उस सत्ता से ओत प्रोत है, तब शुद्ध प्रेम होता है, यही प्रेम है।

ब्रम्हविदवरिष्ठ-ऐसा व्यक्ति जो अपने लिए कुछ नहीं चाहता वह हो जाता है। आत्मक्रीड़ वह होता है।
कर्म-कर्ता जो सोचता है। क्रिया,जो वह करता है। संशय-अनात्म चिन्तन करने से होता है।
ब्रम्हानन्द-निर्विचार होने का अभ्यास करो, ब्रम्हानन्द अपने आप मिलेगा।
निवृति-पुत्र पत्नी भाई बन्धु नाते रिश्ते के साथ व्यवहार की भूमिका जो इस तन में मिली है, उसका निर्वाह करना ही है, उनके बिना नहीं मिलेगी।
समत्वयोग-न कोई स्त्री न पुरुष, न बेटा न बेटी, सब आत्मायें है, ऐसी धारणा। लाभ हानि पर ध्यान न देकर बराबर समझकर निरपेक्ष भाव से कर्तव्य करना है। जगत में रहना है, घर में रहना है, नही रहकर भी रहना है। न कोई ऊंच, न नीच, न ही कोई भेद, न बन्धन।
प्रेम उत्पन्न-होने पर, स्त्री है तो मीरा बन जाती है, पुरुष है तो वह तुकाराम बन जाता है।
मलरहित होना-आज्ञा चक्र जो तीसरी आंख, गोलोक, बैकुंठ, शक्तिपीठ, कैलाश, निराम्बुज कहा गया है, वहां पहुंचने पर। शिव, कल्याण मलरहित होना।
समाज का साफ सुथरा होना-प्रेम व सत्य से चलने पर, आचरण में होना तब।
मुक्ति-सुषुम्ना के द्वार खुलने पर। सबमें ज्योति की तरह आत्मा का अनुभव या प्रतीति से भी।
ध्येय-ब्रम्हचिन्तन ही ध्येय है। भावातीत होना-अपने आप में रहना है, मौनस्थिति, शांतस्थिति, शुद्धस्थिति, मन की समाहित स्थिति है, लक्षण निंदा स्तुति से दूर रहना।
त्रिवेणी संगम-आज्ञा चक्र में इड़ा पिंगला सुषुम्ना के मिलन से सदा प्रकाश में स्नान करना।
कल्पतरु-यह जो आत्मज्योति है वही कल्पतरु है, सब ऋद्धियाँ सिद्धियां इससे सम्भव है।

अद्‌भुत रस-आनन्दमयकोष, सत्यलोक, ब्रम्हरन्ध्र है, में प्राण स्थापित होने पर समस्त ब्रम्हांड का ज्योति से भर जाना, अवर्णनीय आनन्द का आ जाना, ही अद्‌भुत रस है।

- निर्गुण सगुण होकर साकार होता है। साकार-सा + आकार। सा=वह। वह शक्ति जो कार्य करती है। कार, कुरु (धातु) से बना है। कार> <कारि = कार्य। निर्गुण होते हुए वह गुणयुक्त है।
  जब निर्गुण है। जब गुण नही। तब क्या है? निराकार है। फिर वह क्या है? वह शक्ति है। क्योंकि शक्ति निराकार होती है। उसका कोई रूप(आकार)नहीं है।
  तब ये रचना कैसी?
  वह, शक्ति से सगुण है। स=वह। गुण=गुण। गुण ही शक्ति है। उदाहरणार्थ-
  जब तक साधक अध्ययनरत होता है तब तक वह गुणग्राही रहता है। गुण ग्रहण करने के पश्चात, वह शक्ति सम्पन्न होता है। क्योंकि शक्ति को गुण के रूप में कहा गया है। गुण ही (वह) शक्ति है।
  प्रशिक्षण अवधि पूर्ण होने पर, गुण ग्रहण करने के पश्चात, अधिकार सम्पन्न होने के पश्चात वह अधिकारी होता है। वह गुण सम्पन्न हो जाता है।
  वह [गुण=शक्ति से] सब कुछ, साकार होता है। यही अद्वैत सिद्धान्त है। वही, महाशक्ति (परमात्मा) के नाम से कही गई है। यही शक्ति अपने आप में पूर्ण है। वेदान्त दृष्टया परमात्मा-ऐसा नाम दिया गया है।
  इसे को आत्मा कहा गया है। आत्मा-स्थिति है। आत-आनन्द का घोतक है। मकार, बिन्दु पूर्णत्व का घोतक है। तब यह भी सिद्ध हुआ की आत्मा ही परम है। अर्थात-
  दशों दिशाओं में व्याप्त है।
  वह कौन है? कहाँ है?
  वह तुम हो।

आत्मा त्वम् गिरिजामतिः सहचराः प्राणाः। शरीर गृहं पूजां ते विषयापभोग रचना निद्रा, समाधिस्थिति।
आत्मा = शिव। गिरिजा = पार्वती । मति = बुद्धि । पार्वती = पर्वत रूपी शरीर में निवासरत शक्ति।
जैसे सूर्य और उसकी किरण में भेद नहीं है, वैसे ही आत्मा और (सहचर)प्राण में भेद नहीं है।
निद्रा=विषय, विषयाधीन।
समाधि=विषयातीत। कालातीत।
निर्गुण सगुण निराकरण। 2, 10, 86।

- ओंम क्लीं श्री सतगुरुवे नमः। श्री माने ऐश्वर्य जो चाहिए समय पर, क्लीं माने पूर्णकाम। आपकी जो कामनाएं है आगे पीछे बाल बच्चों से सब पूरा होगा। और श्री माने जो- जीवन में चाहिए आपको समय समय पर वो सब प्राप्त होता रहता है। सद्‌गुरुवे नमः, नमस्कार नहीं बोलना: क्या बोलना है? श्री सद्‌गुरुवे नमः। सत् माने आत्मा। ओमनीनिपोटेंट, ओमनीप्रसेंट, ओमनीसियेंट, दैट इस ओंम। सत् इस डिवाइन एनर्जी, दैट इस डिवाइन एनर्जी। "आई एम पासिंग राइट थ्रू ईट, एन्जोयिंग दैट प्लेसर: दैट इज नाट प्लेसर, दैट इज ब्लेसिंग्स, प्लेसर इज ऑफ वर्डली अफेयर्स..." कोई भी काम, कोई बड़ा सामने आ जाय तो ये मंत्र बोलना मन में, गुरुजी सम्हालों, क्या बोलना? गुरुजी सम्हालों, इसे बनाओं बस, वो काम सीधा हो जायेगा। ध्यान करू तो भी वही बोलूँ (एक शिष्य)? एक दो दफे। बस। सैकड़ों दफे नहीं। बिलिव ,बिलिव मिन्स टू रिलाय। हां, रीलाइबल, और ये सतगुरु है। ये कन्फूकीयां गुरु नहीं है। गुरुजी इस आलवेज विद यू, ..नाट् ओनली आई एम विद यू बट माय ब्लेसिंगस् आर विद यू...रीच फार अवे"(चाहे कितनी भी दूर रहो, आप तक मेरी ब्लेसिंग्स - आशीष, बनी रहती है) ये प्रत्यक्ष देव है, देव माने आत्मदेव। देव माने देवी देवता

नहीं।आत्मदेव, ये साक्षात है। ये बोलना नहीं पड़ता। मैं अपना कई जन्म देखा हूँ, आज बोलता हूँ मैं। हमको प्रपोगैंड़ा नहीं होना, ऐड्स नहीं होना।

- अहं के अभाव में वह आगे बढ़ता चला जाता है। यह सत्य है।
  उस अभ्यास से जो लाइट या प्रकाश मिलता है,उसमें संस्कारों के काजल धुलते है।
  लाइट के अंदर हमेशा रहना चाहिए, वह प्रकाश ही मार्ग प्रकाशित करता है।
  अभ्यास करने वाला शांत हो जाता है, हमें सत और असत का ज्ञान अवश्य होना चाहिए।
  ज्ञान में डुबकी लगाकर कुछ हासिल होता है। स्वयं को खोजना ही भक्ति है ज्ञान है।
  इसी अभ्यास से साधक अहं से मुक्त होकर सिद्धावस्था तक पहुंचता है।
  अहं किस बात का जब तुम्हारा अगली स्वास ही तुम्हारे बस में नहीं, न मालूम कौन सी घड़ी अंतिम हो।
  जब साधारण जीवनचर्या वश में नहीं, शरीर के भीतर होने वाली स्वाभाविक क्रियाएँ वश में नही, तो फिर चलने फिरने, उठने बैठने, जैसी समान्य क्रिया का कैसा अभिमान?
  कृष्ण, राम आदि सब हमारे जैसे है, लेकिन अनेक जन्म संसिद्धि अनेक जन्मों के बाद कृष्ण कृष्ण हुए।

तभी कृष्ण अर्जुन से कहते है कि हमारे तुम्हारे कई जन्म हुए, कई बार साथ साथ आये, किन्तु अहं वेत्ति न त्वं। तुम भूल गए मुझे सब बोध है। तात्पर्य है पहले हम अपने को जाने।
यह देह पूर्ण है, आदित्य / सूर्य, वर्ण का ध्यान और कवच मंत्र / बीज मंत्र / गुरुजी का याद / स्मरण, का जाप साथ साथ रखो।
धारणा में ढील न होने दो। कर्तापन से दूर हुए की स्वभाव स्वयं होने लगता है।

उसे वस्तु न समझकर आत्मा समझने पर उसका प्रभाव मन पर नहीं पड़ता है, यही सर्वसंकल्प के त्याग का रहस्य है।

- पानी का सदृश्य एक दिखता है, वो नहीं है। वो मृषा है, मृषा माने मृगतृष्ण। तृष्णा से मृगतृष्णा बना है जो झूठी प्यास मानते है। जिसे माया कहा गया है, यह अग्नि है यह हाथ में आने वाली नही है, याने आपका जीवन दूसरे का जीवन होकर, नारकीय, संकटपूर्ण जीवन, संकटाकीर्ण जीवन। इससे निकलने के लिए योगमाया है। इसे योगमाया कहा है, वो मिलने पर ही शक्ति है। उस जन्म के जो अग्नि है लेकिन उसमें पानी है, आलिंगन / योगमाया से, करने पर वो भस्म कर देंगी।

  माया यह है कि जैसी दिखती है वैसी है नहीं, यद दृष्टं तद नष्टं। जो दिखाई देती है जहां तक दिखाई देती है उसका नाश अवश्यंभावी है-इसी को माया कहा।

  जब तक सुषुम्ना खुलती नहीं मूल केंद्र तक जब तक पहुंचते नहीं तब तक हमारी सारी वासनाएँ हमारी सारी इच्छाएं-काम, क्रोध, मद, लोभ, मत्सर, राग द्वेष सब बने रहते है। इस प्रकार नाना जन्म लेकर भटकते रहते है और आखिर मर जाते है।

  इसलिए मनीषियों ने एक बात निकाली है जिसे कहते है योग। योग माने सुषुम्ना शक्ति।

  इस माया से निकलकर के, जिस माया से सारे योग सिद्ध होते है-योगमाया जो है। मानो हमारी इच्छाएं, कामनाएं और वासनाएँ पूर्ण होती है वो योगमाया से। ये सारे योग अपने आप खुलते है।

  तो मन बुद्धि चित्त और अहं सहित पाँचतत्व है-ये भी शक्ति है लेकिन यह हमारे बस की नहीं है, इससे हम कुछ नहीं कर सकते है ये स्वयं अपना कार्य करती है।

  एक शक्ति और है वो हमारी पराशक्ति है, जो परा है सबसे परे है। माया ये

तो हाथ में आती नहीं मनुष्य और फंसता चला जाता है। निकलना है तो ये पराशक्ति प्राप्त करो।
सिद्धि करिये उस मार्ग में जाकर (मेरुदण्डिय, विष्णु मार्ग) जो सेंटर है, केंद्र है, वहां अपना स्टेटस बनाओ। और अपनी शक्ति को विकसित करके, माया को दूर करके, पराशक्ति / योगमाया को प्राप्त कर सकें, इससे अष्टसिद्धि, नवनिधि प्राप्त होती है।इन शक्तियों के द्वारा बुद्धि सामर्थ्य के अनुसार समाज का हित पहुंचाकर और इस प्रकार किसी का कल्याण कर सकते है।मार्गदर्शन करें।

- जिस दिन आपने दीक्षा ली, गुरुचरणों की पूजा की, उसी दिन से आप मुक्त है। इससे बढ़कर ब्रम्हवेत्ता और कोई नहीं है दुनिया में, मैं ये जो बोल रहा हूँ। जब तक सत्पुरुष मिलता नहीं, उस परमात्मा को कोई भी प्राप्त न कर सका, कोई भी साक्षात्कार न कर सका, यह है गुरुजी की महिमा।
उसमें बने रहने से, ये जो बराबर दिव्य दृष्टि है, आप लगे हुए है तो भविष्य कभी नहीं आता।आप अंदर जायेंगे और अधिकारी होते है, और जो कार्य करते है, बनेगा की नहीं बनेगा ये सब चला जाता है। कभी भी चिंता नहीं होती और आपका कार्य आपका फल अपने आप हो जाता है।
सभी कार्य को बाजू कर कुछ मिनट बैठकर आत्मा का अनुसंधान करना चाहिए। जब मन शुद्ध हुआ तो कठौती में गंगा, फिर वह मस्त रहता है।
सिद्धियों के फेरो में पड़े बिना आगे बढ़ना ही उचित है। सिद्धि असिद्धि हानि लाभ को समान समझो, ये तो भोग है,पचना है पाप कर्म करते करते। रोते क्यों हो संयम करो और जितना मिला उसे पचाओ और तब आगे बढ़ो। जितना इस मार्ग में मिलता है, वह जाता नही बना रहता है, हालत और अच्छी हो जाती है। सब इससे(अभ्यास, स्मरण, प्रेम से जो ज्योति दर्शनस्वल्प भी जुगनु जैसे सूर्य चन्द्र ज्योर्तिमय गुरुशरीर से विराट अखण्डज्योति जैसे शरीर तक, से, ऐसे ज्योति वाले गुरुजी से) सम्भव है जो मांगो वह मिलता है।

उस परम तत्व से जहां से आये हो उन्मुख रहो, जब तक देह है सुख दुख आते रहेंगे और समाप्त भी होते रहेंगे। यदि दुःख न टाल सको को गुरुदेव की ओर उन्मुख करके स्वयं निश्चिन्त हो जाओ। यत्न में ढ़ील न आने दो। आप अपनी धारणा को जिस अवस्था या रूप में (जैसे) रखोगे वैसे ही काम होगा। निराशावादिता से दूर रहो। दोषों से बचते रहे, इंद्रियों पर काबू रखे। बगैर खीझे अनासक्त भाव से मौनवस्था में रहने का प्रयत्न करो, किसी बात की चिंता मत करो।सब गुरुजी पर अर्पित करके आनन्द में डूबे रहो।

- ॐ। सत।जिसको कहते है, ॐ तत्सत जिसको कहते है, परब्रम्हणे नमः जिसको कहते है, वो कालो का (काल) महाकाल है।
  जिस शाश्वत ज्ञान को प्राप्त करने के बाद कोई अन्य ज्ञान प्राप्त करना शेष न रह जाय-वही वेद है।
  सेवा स्व हस्त से होनी चाहिए।
  हमारे भीतर जो समाज का ऋण है। घर से लेकर कौटुम्बिक, धार्मिक, सामाजिक राजनीतिक-ये सारे ऋण जब तक नहीं चुकाओगे, आप मुक्त नहीं हो सकते।
  प्राणियों को सत्वगुण की अधिकता से हरि भक्ति, रजोगुण से जन्म मरण की परम्परा और तमोगुण से अधोगति (नरक, निम्नगमन, नकारात्मक) प्राप्त होती है।
  सत्वगुणी का चित्त (भरोसा, स्वयं, आत्मा, स्थित, स्थिति, समता, से सम्भवतः) विकार रहित होता है।
  संसार में कोई किसी का नहीं है -यह तत्व है। इस मूल तत्व को समझकर आप अपना व्यवहार करिए।
  अल्पज्ञता की ओर जाओगे तो अल्पज्ञ रह जाओगे (बहिर्मुखी सम्भवतः) सर्वज्ञता(आत्मा, समष्टिमूल) की ओर जाओगे तो सर्वज्ञ हो जाओगे।

• ● यही विराट पुरुष है यही विराट ब्रम्ह है, और कौन सा देवता है? इसलिए तुलसीदास जी ने कहा है, सियराममय सब जग जानी, सियाराम माने मानव योनि से लेकर के सारा जग, सम्पूर्ण जग को मैं जाना, मैं आत्मतत्व को भी जाना और ये दृष्यजग है उसको भी जाना, ये मेरा है, रामायण में नहीं मिलेगा आपको, ये अनुभव की बात, योगियों की भाषा है। सारा विश्व डिवाइनओशनऑफ लाइट वो दिव्य चारो तरफ से शरीर का अंदर बाहर और कुछ नहीं, कोई जग नहीं कोई देव् नहीं कोई, अखण्ड। अखण्डमंडलाकारं व्याप्त येन चराचरँ तत्पदं दृश्यं, ये अनुभव में आया।

● निरपेक्ष भाव से कर्तव्य करिये, जगत में रहना है, नही रहकर भी रहना है, न कोई स्त्री है, न पुरुष है, न बेटा है न बेटी है, सब आत्मायें है। ऐसी धारणा ही समत्व योग कहलाती है।
शरीर का परिवर्तन है, आत्मा तो सर्वव्यापक है, तो आना जाना कहाँ है?
एनर्जी स्थायी नहीं है, अस्थायी है हिलती डुलती है।
जब तक सत्पुरुष नहीं, उस परमात्मा को कोई भी प्राप्त न कर सका (कोई भी साक्षात्कार न कर सका) ये है गुरुजी की महिमा।
आपको इंद्रियों की सीमा को लांघना है, तब वहां आत्मा का प्रवेश है।
एक तत्व के अभ्यास से पांचों तत्व विशुद्ध हो जाते है। निरोध होता है, यही सूक्ष्म शरीर है।
इस शरीर में आत्मा अत्यंत असंग है, निर्मल है। टैलीपैथी, इंटयूटिव पॉवर होने लगता है। सभी कामों को बाजू कर आत्मा का अनुसन्धान करना चाहिए।
14वीं एवं 16वीं शताब्दी के बीच ऐसे सन्त हुए जो गृहस्थ थे,उन्होंने गृहस्थ रहकर अपना आत्मकल्याण और दूसरों का आत्मकल्याण किया।
आत्मा यही अग्नि है, इसके उदीयमान होने के बाद सम्भल कर रहने की आवश्यकता होती है।अन्यथा जो हम कहते करते है,भोगने आना पड़ेगा।जो भोगना है,अभी भोग लो। आत्मा ही सबकी त्राता है।स्व का

अध्ययन ही ध्यान है।ब्रम्ह चिन्तन ही ध्येय होना चाहिए। हमें अपने आप(आत्मा)में रहना है,यही भावातीत होना है,उसे ही मौन स्थिति कहा गया है। उस परमतत्व से जहाँ से आये हो उन्मुख रहो, अनासक्त होकर अंदर से उसकी प्राप्ति की इच्छा रखने पर दर्शन सुलभ हो जाता है।संसार छोड़ने की आवश्यकता नहीं है। जब ईश्वर का सानिध्य महसूस होने लगे हर जगह उसका आभाष हो यही ज्ञान है।तब सभी वस्तुएँ सजीव मालूम होने लगती है,मैं ही वही हूँ, बोध होने लगता है।

- कितना बढ़िया है ये, आत्मा स्वयं ज्योर्तिभवति, अपने आप को पर्दे से हटाकर प्रकट कर देती है। ये जो सर्वत्र है, सर्वज्ञ है, सर्वशक्ति है। आत्मा ही अपने आप को ज्योति रूप में प्रकट कर देती है।

  पहले सृष्टि में प्रकोप महामारी से आता था, प्रकृति में बोझा जब बढ़ जाता है, साफ कर देता है, ये प्रकृति के नियम है। ये कभी खत्म नही हुआ और ये जब से आया है, आकाश में, मालूम नहीं कब से आया है, ये कोई नही जानता। अनन्त है चारों तरफ से। प्रकृति माने जैसे हमारी जो प्रकृति है वैसे उसकी जो प्रकृति है। हमारी जो बुद्धि है ऐसी जो बुद्धि है। एक ही सत इस प्रकार से, आदि से था, बहुत बहुत पहले इसके सिवाय कुछ भी नहीं, कुछ भी नहीं था, वो सबसे आगे था। माने वो सत्ता सर्वव्यापक है। एक परा, एक अपरा।

  तो उत्पत्ति स्थिति लय-ये प्रकृति के कार्य है। ये प्राकृतिक धर्म है। ये प्रकृति अपना कार्य करती है। प्रकृति की क्रिया का नाम धर्म है। ये प्राकृतिक है (उत्पत्ति, स्थिति, लय) जिसे चेंजिंग कहते है। सदा परिवर्तनशील है, और परिवर्तनशील हो करके, यही उसका कल्चर है, पहचान है। यहां कोई भी चीज अस्थायी है, न स्थायी है। ये प्रकृति के कार्य है, इसका नाम प्राकृतिक धर्म है। ये अपने आप, आटोमेटिकली अपने आप चलती रहती है। ये कभी नष्ट नही होती।

ये लय हो जाते है, माने लोप हो जाते है। प्रकाश इतना बढ़ जाता है, चारों तरफ इतना बढ़ जाता है, बढ़ते बढ़ते जब ये सेंटर में आ जाते है,अंधेरा हो जाता है, जब प्रकाश अदृश्य हो जाय तो अपने को दिखता है क्या? इसी प्रकार होते हुए भी वो दिखाई नहीं देता, इसलिए इसको क्या कहा गया- यही पूर्ण है। होते हुए नहीं है। ये जब लोप हो जाता है तब। दो प्रकाशबिंब को अपोजिट डायरेक्सन में मिलाया जाता है तो अंधेरा हो जाता है। लेकिन अंधेरे में वो नाश होता नहीं, बदलता नहीं-अदृश्य हो जाता है। विद्यमान है हटा दे वो फिर सामने आ जाता है। कब आया कोई नहीं जानता कब से आया, ये कोई नहीं जानता।

प्रकृति व पुरुष ये दोनों अनादि है।और ये दोनों एक है। एक होते हुए दो है, दो होते हुए एक है-जिसे द्वैताद्वैत कहा। एक बीज है वो अनेक हो जाते है, अनेक जो है एक है, ना।

तो क्रम विकास से (स्वेदज, अण्डज, उद्भिज, और जरायुज) आज जो है, ऐवुलुसन के बाद, ये सृष्टि रचना आज जो है, कल भी होगा-ये रहस्य है।

- जिसका मैं ध्यान करता हूँ, मनन करता हूँ, वह मैं ही हो जाता हूँ।

श्रद्धा या सत्य का जिसने ध्यान किया । वह परम् आत्मा को आत्म सत्ता को प्राप्त कर लेता है।

आत्मसत्ता को जिसने धारण किया, वह वही हो जाता है।

तुष्टि माने जिसे प्राप्त होने पर सब तुष्ट हो जाता है। ये सन्तोष धन है, जो आवे सन्तोष धन सब धन धूल समान।

जैसा आपको बताया गया है, उस प्रकार से स्मरण कर (बुद्धि को पीछे सत कार्य में लगाकर) जैसा सिखाया गया है वैसा अभ्यास करना चाहिये तब आप निर्भय हो जायेंगे। जीवन पूर्ण हो जायेगा।

जिसका कोई रंग, रूप नही, आकृति नही। जो अनादि और अनन्त है, वही सबका गुरु है।

आत्मानुसंधान हेतु किये जाने वाला कर्म ही निष्काम कर्म है। नित्य मानेअनब्रेकेबल तब निष्काम कर्म अखण्ड हो जाता है। तब उसे कोई संशय नही, न कोई कार्य।

निष्काम कार्य में जब आप रत होंगे। तब प्रकृति उसकी पूर्ण व्यवस्था, यथासम्भव या समय, आवश्यकतानुसार करती है। या करा देती है। निष्काम कर्म है इससे क्या होता है? ये आधि दैविक, आधि भौतिक, आधि दैहिक, ये जो तीनो ताप है, दूर हो जाते है।

आत्मा की शक्ति सुषुम्ना में खेलती रहती है। आत्मा का गुण ऊपर की ओर जाना है।

सुषुम्ना में घुसकर मृत्यु को पारकर, आज्ञाचक्र में प्राण को स्थापित कर देने पर दिव्यत्व (सत)को प्राप्त होकर, भूत भविष्य का ज्ञान हो जाता है।

वो कालजीत हो जाता है। सुषुम्ना कालं भवति। गुरुकृपा से सुषुम्ना खुल जाना चाहिये, यह सुषुम्ना मार्ग से प्राण को ले जाकर, जब ऊपर ऊपर सब जगह पहुँचा देते है। तब होता है।उस मार्ग में गमनागमन होना चाहिये, तब केन्द्रों में सोई हुई शक्तियां विकसित, होने लगती है। विकसित, होकर बाहर निकलने लगती है। तब आप शक्तिमान हो जाते है, सारे कार्य आपके होने लगते है। यह सब मुफ़्त में नही होता। इस शरीर को स्वर्णमयी कहा गया है। नही तो बेकार है, कचरा है, अगर सुषुम्ना को खोलकर ऊपर नही आये तो।

पीनियल बॉडी में प्रवेश होते ही बुद्धि आत्मस्थ हो जाती है।

आज जो नाक के द्वारा साँस लेते हो उसे सुषुम्ना द्वारा लेना है। यह अभ्यास है, गुप्त है। उस रस को ही ऊपर ले जाकर फैलाना है।

- ऐसी धर्म यानी बन गई है न, असत्य बोलो और भी जो कुछ है। ऐसा न समझे माने करना है। मेरे में है मैं बोलता नहीं हूँ, आज से नहीं बचपन से है। मुझे कोई मिला नहीं मेरा जन्म दूसरी जगह का है, मैं और देश का हूँ मैं, मैं पैसा नहीं निकाला, मैं सब छोड़कर यहाँ आया हूँ और इसीलिए आया हूँ, मैं। लेकिन मुझे कोई नहीं मिला।

  जब हिंद का बादशाह,..जो है, ये हिंद का बादशाह है। ये प्रभाव जिसमें का, जिसको कहते है मेरे जीवन में अगर झुका वही झुका, क्योंकि एक लड़के के लिए शाह शहंशाह के पास गया, अभी याद है (हाँ) इसलिए मेरे दिल में घर बन गया और वो फना न हो सका। और मैं भी उस गंगा को लेकर के और अपने आपको।

  मैं कई बार मर मर चुका हूँ और मर मर के जिंदा हुआ हूँ। ये जो इतना मैं कहता हूँ, दुनिया जानती है, डाक्टर भी जानते है, और भी लोग थे, सबने देखा है, मेरा अंतिम समय, बात अंतिम माने। (अली जी - उम्र कितना १०० के पास है) नहीं सौ तो नहीं ८४ है।

  ये हकीकत है मैं अब क्या बताऊँ आपको, मैं कभी झूठ नहीं बोलता। कोई उसको माने न माने। क्योंकि मेरा और कोई दुनिया में कोई देहात नहीं उद्योग नहीं, कोई लेन नहीं देन नहीं, कुछ भी नहीं। मैं एक पागल आदमी हूँ, ये नाम के पीछे मैं पागल हूँ और वो ही कोई आता है पूछता है तो मैं सिखा देता हूँ।,जो कुछ पूछते है कोई, मुझे जो मालूम है, ये बताता हूँ मैं, ऐसा ऐसे ऐसे। भलाई करते हुए तुम्हारे जग में भी भला होगा ही मैं इतना जानता हूँ। ये शरीर रूप को, अपने आप को तो मिटा नहीं सकते। खुद को ऐसा मिटा की तू न रहे, बहुत मुश्किल है ये। तेरी हस्ती की रंगो बू न रहे, ये बड़ा मुश्किल है, सूफियाना है, लेकिन हम तो, ऐसी जिंदगी जो हमारी है जिससे बहुत से लोग हमको मिलते गये है। और बताऊँ आपको मैं औरंगाबाद में था, सन् १४ में, १४ इस्वी में अरब से एक शख्स दौलताबाद में पहुंचे, और वो पहुंचे हुए थे, आज उनकी मजार वहाँ है। सन्

१४००, मैं औरंगाबाद में ही हूँ, मैं अपने जंगल में एक बड़ा छतरी वही रहता था मैं अंदर, अभ्यास में, तो दोपहर के बाद में आके खड़े हो गये, ऊँचे पूरे थे, उनके हाथ में कड़े थे और वो हिंदी में बोले जो कि अरबी, अरब से आये हुए थे, वो कहते है- किला बांधों, किला बांधों, किला बांधने के बगैर कुछ नहीं होता है। मैं पूछता हूँ, दिन के १२ बजे की बात है ये, मार्च महीने की बात है -,किला कैसा बाँधा जाय? तो उनने कहा गायत्री मंदिर में जाओ, वहाँ पर एक पुस्तक है, फला फला ये, उसको क्या कहते है चेप्टर में, फरा फ़ुरा ऐसा जो लिखा है, माने एक टुकडा बता दिये इसको जो सोच कहते है, तब उसको ७२ जिसे कहते है, बोले, उसको लिख दो, और उसमें जैसा लिखा, अपने आपको उसी तरह से कर लेना, ये कर लेने के बाद। ये बिल्कुल दोपहर १२ बजे की बात है ये, मैं उठा और वैसे ही चला, और जहाँ तहाँ पहुँचे लेकिन पता नहीं चला, तो एक जगह वहाँ पर, कुछ वो जो बनता है, लेकिन वो नहीं थे, फिर पता चला की कालवीपुरा जो है दौलताबाद के पास में, वहाँ उनकी मजार है, और वे सन १४०० में आये थे, ये है, ये वो पहुंचे हुए थे। बाकी ये लोग तो जैसे तैसे है।

चल दिया वहाँ, ये, जी हां। ज्ञान देओ..। और पहुंचे हमी लोग पांच सात साथ में थे, और मुझे जो कुछ वहाँ से मिला। फस्ट क्लास जो फूल जो चाहिये था हमको, वही फूल फिर से हमारे पास आ गया, वो वही रख दिया। और वहाँ से माफी चाहा और शुक्रिया अदा करते हुए, चले आये, ये अभी काल ही की बात है और ये सन् ३७ की बात है, ये हुमनाबाद वाली बात जो है ये ३१ की है, १९३१। और ये जो अरबी हमको मिले ये सन् हाँ, ३७ की बात है तो ऐसे लोग जो है बड़े अब।

(अली जी - जाने का मकसद कुछ और होता है, बुलाने का मतलब कुछ और) हाँ ये क्या बात है! (अब देखिये हमारे आपको मिलने को ६ दिन, ७दिन से मैं परेशान हूँ। हमसे बताये न, गौतम साहब ने, एस, ओ, ने. एक शख्स है हमारे ऐसी मुलाकात हुई और वो आपसे मिलना चाहते है, मैंने

कहा मुझसे, आप कभी हमारे पास आ सकते है, आप कभी भो हमारे ये बोला। (अलीजी - बहुत खुश हुआ हमारे, जो आपने बोला है, आने को, ऐसा है कि मिलना आप लोगों से..) नहीं मेरे पास कुछ नहीं है।(वाजिद अली - आपको तो खुद नहीं मालूम लेकिन हमको तो मालूम है, है आपके पास सब कुछ, जब तो ऐसी ऐसी हस्तियां है आपको बुलाती है, कोई मामूली बात नहीं होगी)। मैं इतना ही जानता हूँ, एक नाचीज है इसके पास कुछ भी नहीं है, कुछ भी नहीं है, ये कुछ भी नहीं है। इसको दुनिया में सभी लोग चाहते है, क्योंकि हमारे पास कुछ है ही नहीं है। (वाजिद अली जी - नहीं ऐसा नहीं है) कुछ भी हमारे पास नहीं है। मेरे पास देखिये, सभी धर्म के लोग, अब क्या बताऊँ, जितने रिलीजन है न दुनिया में..अभी एक जोड़ी गई, दिगम्बर जैन, अभी बोले,हमको तो आप कुछ, ऐसा सभी लोग है, बहुत से लोग है।अब क्या बताऊँ आपको, अपने पास कुछ है ही नहीं, आते है कुछ हमको देओ हमको देओ। ये आज कहता हूँ, कि बाबा इनको क्या दें। (अलीजी - आप बोल दिये तो मिल जाता है न, ऐसा भी तो है। जो खिलाने बैठते है न, वो दूसरों को खिलाते, खुद न खाते है, ऐसा है। आप जो बैठे है न, दूसरों को फायदा पहुँच रहा है न, जब तो आते है, मेरा अपना ख्याल है भई, नाराज मत होइयेगा। मेरा ऐसा ख्याल है जब इतने लोग चाहते है न तो, देखिये न सब को मिलता है जब तो आते है..) नहीं भई, ये सहाय किसी और की है, मैं तो खाली बहाना हूँ। ये तो बहाना है खाली, ये बहाना है, बाबा। काम है किसी और का ये, ये तो एक, अब क्या कहे, डंडा है हम, ये डंडे के सहारे से काम है ये कोई होता होगा। क्या होता है, हमको पता नहीं, लोग कहते है। आप भी कह रहे है। लेकिन ये कैसा है, क्या है, क्या है, कौन जाने? लेकिन हाँ मैं बचपन से हाँ पागल आदमी हूँ, इतना मैं कह सकता हूँ, आपको। मैं बचपन से पागल हूँ, मैंने पढ़ना लिखना छोड़ दिया, मैं थर्ड तक पढ़ा हूँ, स्कूल छोड़ दिया। (अली जी -

कुदरती देन है आपकी) ये आप लोगों की संगति है, ये आपकी देन है, मैं तो आपसे उधार लेता हूँ और देता हूँ।

- हम ऐसे रहे कोई प्रकार का दुख हमको न हो। हमारी जीविका में किसी प्रकार की चिंता न रहे और मरण का भय ना रहे और कोई बन्धन न रहे, तीन ही प्रकार के है और क्या है? ये तीन ही प्रकार से मुक्ति पाने के लिए छुटकारा पाने के लिए नेहाभिक्रम...ये अभिक्रम है, न नाशा अस्ति, ये जो अभिक्रम है आत्मसाक्षात्कार आत्म दर्शन हेतु जो कर्म किया जाता है वही कर्म निष्काम कर्म है। बाकी जो आप बाहर के कर्तव्य करते है, सब सकाम है। हम आपके काम आएंगे तो आप हमारे काम आएंगे। ये डर है, भय है ये भयवश सब कुछ काम करते है, यहां स्नेह नहीं है, जीवन में। एक रूढ़ि बन गई है, इसके अंदर भय है भय समाया हुआ है तो ये जो अभिक्रम है-आत्म साक्षात्कार हेतु आत्म दर्शन हेतु आत्म शक्ति को प्राप्त करने हेतु जो कर्म की जाती है वो कर्म निष्काम कर्म है। बाकी जितने कर्म आप करते है वे सब सकाम कर्म है।और सकाम कर्म क्या है? वो स्वर्ग और नर्क का अभिक्रम है।और बार बार मां के पेट में आके जन्म लेने में देता है। निष्काम कर्म-नेहाभिक्रम नासो अस्ति प्रत्यवाय न विद्यते - प्रत्यवाय माने ये नाश नहीं होता। उल्टा दोष भी नहीं। नाश भी नहीं होता और दोष भी नहीं। जब पुण्य भी नहीं दोष भी नहीं, क्या होगा? माने जब अनेक जन्मों का पुण्य उदय होता है तब ये होता है, तब फिर वो केवल पुण्य मात्र रहता है। पुण्य आप जानते हो वो पुनि पुनि और भाव वाचक ध्वनि ध्वनित होने से उसमें जो उच्चार किया जाता है तो वो पुण्य हो जाता है। ये सब, यजति, इसका स्थान, ये विषय, बुद्धि के सहारे मन ने जो धारण किया ये, पुण्य बन गया। पु नाम दुःख का है, पु नाम न्यास, नाश हो। ये कर्म करने से ये कुछ भी नहीं बनते। दैहिक, दैविक, भौतिक, इन तीनों ताप मतलब दूर होने के लिए, उससे छुटकारा पाने के लिए आत्मदर्शन,

आत्मशक्ति। राईसिंग, सेटिंग एंड थाउसिंग, इन तीनों कार्य का दूर करने के लिए उससे छुटकारा पाने के लिए आत्मदर्शन,आत्मशक्ति को विकसित करना अनिवार्य है ये प्रथम कर्तव्य है। हमारे बाप दादा भूल गये और हमारे, मुझे जो है 74 साल हो गए, मुझे कोई योगी एक भी नहीं मिला यहां से वहां तक। बाल्यकाल से है जन्म से सब कुछ है।हमारी जीवन में आप देखने चाहते हो मैं बताता हूँ, ये किताब लीजिये और पूछिये एक एक शब्द बताता हूँ। और अभी लोग जीवित है हमारे जीवन में, ये कार्य करता हूँ,यहां बैठा हूँ। ये कार्य के लिए जिसको आत्मशक्ति कहते है, आत्मशक्ति ये क्या है, कैसे विकसित होती है, प्रयोग करने पर ये क्या क्या है। अभी लोग जीवित है, परीक्षा किये ये क्या है। जांचने के लिए नाम देता हूँ, पता देता हूँ और गांव का नाम देता हूँ। जाके पता लगा सकते हो अगर ये सच न मिले तो चाहे जो सजा देना, मुझे गोली मार दो। तात्पर्य ये है दो ही बात है लौकिक और पारलौकिक एक सिक्के के दोनों पहलू है अगर बराबर है। कोई नहीं मिला, ये बिना हिचक के, ले जाना है।अगर एक बाजू लंगड़ा हो जाय और एक बाजू से कुछ नहीं होता, ये तो पलायनवादी है लंगोटी लगाना, रचना बढ़ाना।

- मेरा जो कर्तव्य है सामाजिक। ये सामाजिक कर्तव्य है कि राष्ट्र जो है बनी रहे, राष्ट्र में जो लोग है वो भी बने रहे। और हमारी जो संस्कृति है-योग, आत्मसाक्षात्कार वाली जो योग है, वो बनी रहे। तो जब जिस राष्ट्र में संस्कृति नहीं वो राष्ट्र ,टिक नही सकता।, संस्कृति के बिना राष्ट्र टिक नहीं सकती। माने जो लोग है वो संस्कृति के आधार से उनका जीवन है, और जीवित है, और परम्परा चलती है। जब परम्परा चलती है तो राष्ट्र जिस हाइट से है, बनी रहती है।

- करने वाले को ये प्राप्त होता है - चाहे वैदिक काल हो, उपनिषद काल हो, चाहे पौराणिक काल हो, या दर्शन काल हो, चाहे आधुनिक काल हो, या वर्तमान काल हो, जो करेगा इस तत्व को प्राप्त होता है। परम आत्मा पद को प्राप्त होता है। परम पद जो है न घटता है, न बढ़ता है, सब जगह है।

- मनुष्य स्वयं अपने नाश का कारण है। सभी सोचिये ये परम शक्ति जो है, वही धारणा है, वही आपका धर्म है, वही परम् आत्मा है। अरे सोचने से तो ही (काम) बनता है। ये ध्यान, धारणा आप, क्या करते है, क्या है? ये जो सत्य है।अच्छी बात क्यों नहीं सोचते, अच्छे मार्ग में क्यों नहीं आते।अच्छे मार्ग में आकरके अभ्यास करके,अपने आप को भीतर ले जाइये शरीर में, जैसे जैसे आप भीतर जायेंगे,आप नाना शक्ति संपन्न होंगे। और आपकी ये सुरक्षा, जीविका और उद्धार उसकी चिंता नहीं रहेगी।

- तपस्या करते है तो इन्द्रिय का भय है । इन्द्रियों का भय है वो खत्म हो गया। सिनेमा दर्शन को जाएंगे, लेकिन गुरु दर्शन नहीं, खाली गुरु नहीं सद्गुरु दर्शन नहीं, दरस परस मज्जन अरु पाना। ज्ञान रूपी गंगा जो बह रही है आत्मा रूपी सागर जहाँ जाना है। मन्दिर जाते है पत्थर के दर्शन करने, सोचते है किवाड़ बन्द हो जाएगा, मगर ये दर्शन नहीं है
दर्शन तो ये (सतगुरुजी) है जहां तरण तारण और मरण मारन है। काल का भय है सभी बोलते है, लेकिन बचने का कोई उपाय नहीं है, भय दुनिया की है, लेकिन दुनिया को तो आप प्रसन्न नहीं कर सकते। जैसे आप स्वयं अप्रसन्न है वैसे सब अपने आप में अप्रसन्न है,आप किसी को प्लीस नहीं कर सकते हां कुछ समय के लिए एकमत हो सकते है, थोड़े देर एक हो सकते है, वो एकमत को भी नहीं मानेंगे। कुछ देर के लिये हो सकता है सामाजिक कार्य करना है, तो मिल करके सामाजिक कार्य करें, कार्य हो गया आप फिर से पृथक हो गए, इसका मतलब, यही-कि तुम्हारा हमारा

मत हरदम एक नहीं है। ये काया भी काल के गाल में प्रत्येक सेकेंड जा रही है, ये शरीर हमारी, मां बाप कहते है बेटा बड़ा होता है लेकिन ये नहीं जानते एक एक सेकंड काल के गाल में जा रहा है,और वो कब मुँह बन्द करेगा ये कोई नहीं जानता। यहां ज्योतिष जो है कर्नाटक वाले भीमा शंकर शास्त्री सब फेल्वर, इंदिरागांधी के बारे में बड़े बड़े तांत्रिक बड़े बड़े ज्योतिषी सब फेल्वर । तो तात्पर्य यह है छोटे का नाम क्या लेना बड़े का नाम लेना । बाकि सारे जो है पीछे पीछे ऐसा भाग्य तुम्हारा ऐसा ऐसा हो गया। इस प्रकार से जीवन हमारा निर्रथक जीवन में जो चरित्र है जब तक वो रास्ता (सुषुम्ना) खुलता नहीं तब तक वो सब निर्रथक है। आधा से ज्यादा सोने में गया और आधा मे आध अर्थ मे गया आधे मे आध जो है तरुणाई मे गई भोग मे गया, और आधे आधे द्वादशांस जो है रोग मे गया, ऐसा करते करते दिन-ब-दिन हम चले जा रहे है इत्थम जन्म निर्थकम। ऐसा जन्म लेने का ये जन्म हमारा निर्रथक हो गया।

सार्थक कब होगा? विष्णु मार्ग में-विष्णु जो है वो पद प्राप्त करने पर सार्थक हुआ, भय रह ही नही जायेगा, विष्णु माने क्या विष्णु मार्ग माने सुषुम्ना इसमें घुसने के बाद विष जो धातु है,अनु प्रत्यय क हलन्त बनने के बाद दोनों के संयोग से विष्णु बन गया, विष्णु माने व्यापक। अभी आप संकुचित है इतने संकुचित है, पत्नी से संकुचित है ही, अपने आप में भी संकुचित है, सब जगह से संकुचित तो है लेकिन अपने आप में भी संकुचित है। आप सही बात बोल ही नहीं सकते इतने संकुचित है, क्योंकि ये सब मर्यादा मान ये जिसमें हमारी रहने की जरूरत है इसमें हमारा मान दिन रात भय है भय है, तो विष्णु मार्ग की जरूरत है विश माने व्यापक, जो है जैसे जैसे आप अंदर घुसते जायेंगे, मन और बुद्धि चित, मन और बुद्धि ये व्यापक होते जायेंगे।

इस शरीर मे, अपने प्राणों के प्राण जो है, अभी आप बैठे है उतनी जमीन आपने व्याप्त किया, लेकिन ध्यान में जब बैठेंगे तो ज्योति जहां तक फैलती है वहां तक आप व्याप्त होते जाते है, में व्यापकता सिद्ध है।

अभ्यास करते करते एक दिन ऐसा आता है सम्पूर्ण ब्रम्हांड में आप फैल जाते है। वो जो हमारी बुद्धि है पसरते पसरते वो जो आत्म ज्योति है फैलती है पसरती है उस आत्मा के साथ आपमें भी बुद्धि और मन फैलता है, बुद्धि धारण करती है। और मन फैलता है। ऐसा हमारा मन फैलता है। जाता है आत्मा के साथ में।ये लाभ होता है, आत्मानुसंधान से।

और इसी को भक्ति कहा है रामदास ने यही कहा है - स्व स्वस्वरूपांसन्धाने हेचि भक्ति हेचि ज्ञानं। ये वेदान्त है या नहीं बताइये, माने एम. ए होने से पी. एच. डी होने से होता नहीं। कबीर दास बोलते है काशी में विद्वान लोग के पास जो है अरे बोले तू कहत है कागज की लेखी हम कहत है आँखन देखी। तुम लोग कागज को पढ़कर बोलते हो, हम तो आंख की देखी, याने दिव्य नेत्र का दर्शन। कितना अंतर है। तो आंखे देखी यही सत्य होता है। तो तात्पर्य है आँखन देखी, विष्णुम पद निर्भयं,अंदर जाओ देखो अपने आप को पवित्र करो। दर्शन करो और अपने शरीर मन आदि को पवित्र करो। पवित्रीकरण-उपकरण नहीं है

ये, योग के सिवाय और कोई दूसरा उपाय नहीं है अपने को शुद्ध करने में। इस तरह से गीता में कृष्ण ने कहा राजविद्या राजगुह्यं पवित्रमिदमुत्तमम प्रत्यक्षावगमं धर्म्यं सुसुखं कर्त्तुमव्यम। इस विद्या के ग्रहण करने से वो प्योरिफायर है, पवित्र कर देते है, ये पवित्र हो जाते है आपको ये प्योर कर देती है, खाली इच्छा कामना वासना जो है ये राग द्वेष जो है ममता जो दुनियावी है ये सब शुद्ध हो जाते है और आप शुद्ध होकरके कुल में भी आदर्श होते है, समाज में भी आदर्श होते है। ये साधना कर ऐसे लोग है। जहां अरबों रुपए खर्चा करके वैज्ञानिक लोग प्रमेय को लेकर भीतर जा रहे है नहीं पहुंच पा रहे है।

भारतीय लोग पहले से ही आत्मा का दर्शन करके, आत्मा क्या है? ज्ञान प्राप्त किया ,साक्षात्कार किया और उसके गुण को लेकर सब संसार को सुख पहुंचाया,और अनहोनी होनी करके दिखाया। स्वामी रामदास जी

निकले तपस्या बारह साल के बाद घर आये झोला लिए और कवच हाथ में, निकले अरे महाराज जो है बाल है दाड़ी है मूंछ है कपली जो है खाली, गाँव गये मारे कौवा को नीचे उतर गया देखा नहीं ये कैसे बाबा जी है कही भूंज के खा जाय तो पकड़े उसको कौन है संत, ऐसा करता है गाँव में लाके सबको बुलाये, ये साधु होकरके ब्राम्हण समाज जो है मानव होकर के प्राणियों को ये मारता है, एक ही उपाय है एक नाई को बुलावो सर के बाल जो दाढ़ी मूंछ जो है इसका मुंडन कराओ और काजल जो है पोतकर गधे में बिठाके पूर्व कि दिशा में पहुंचा दो ठीक है। नाउ आ गया अपना साफ वाफ किया वो सब, झोला नहीं किनारे किया साफ करने के बाद वो ले गए फिर बोले उतर बोले गदहे से, उतरे फिर ऐसे ऐसे हाथ किये झोला में पक्षी जो है जा जा बोले पक्षी जो गिरे सब जो है वो सब उड़े।ये अनहोनी को होनी है, है कहीं तुम्हारे विज्ञान में कहीं है।

लोगो की ऐसी भावना बनी हुई है कि ईश्वर कृपा करें तब होता है, मेरी भावना एक ही है मेरा मानना है जो ये है। धीरे धीरे हम लोग भोग विलास में पशु बन गये, राग द्वेष इसमें जो है पशु बन गए।यही एक मार्ग है जीरो मार्ग बोलते है इसको। ये सारा आयु जो है काल जो है। एक बार दर्शन तो हो जाय कल्याण हो जाय। लेकिन विश्वास भरोसा श्रद्धा हमारा नहीं है। ये मार्ग में चलने पर धीरे धीरे व्यापकता जो है सर्व व्यापकता हो जाती है। बुरा जो ढूंढा आपनो मुझसे बुरा न कोई। एक सेकंड भी फ्लेश होता है तो कल्याण है। कल्याण निर्मल होना है। अखण्ड मण्डलाकारम। सत माने आत्मा, आत्मानुभूति खाली फ्लेश मारने जैसा हो जाय। अपना कल्याण के लिए। लौ मात्र जो है कल्याण हुआ है। सब सोचते तो है सोचने से क्या है?

हमारे योग के विषय में लोगों की ऐसी धारणा बनी हुई है, कि ईश्वर कृपा करे तब होता है। और मेरी भावना ऐसी है, मेरा भावना है तुम्हारा कुछ नहीं सकता मिस्टर, ये जो भूमिका, भावना हमारी बन गई। इससे क्या होता है कि हम फिर भोग विलास में, आकरके पशु बन गये। मनुष्य के

रूप में पशु केवल रह गये।, राग द्वेष और काम क्रोध मद लोभ मान मत्सर आदि जो है बस इसके हम पुतला बन गये।

विष्णु पदं निर्भयं।विष्णु पद जो है माने आत्मपद् जो है - इस मार्ग में घुसकरके इस रास्ता, हाई वे जो जीरो है, पूर्ण जो है, उस पूर्ण जो मार्ग पूर्णता की ओर ले जाने वाली मार्ग, उसको जो अगर आप पहुँच जायेंगे तो एवरी रूट, रिच टू ऐनी रूट, रिच टु रोम। ये बोला गया है।, जितने मार्ग जो है इस रूम को पहुँचते है रूम जो बना है एक दिन में नहीं बना। इसी जन्म में नहीं बना अनेक जन्म में बना है। और ये एक मार्ग है जीरो मार्ग बोलते है जो। माने पूरा जो है रास्ता जो ले जाती है, ये ऐसा ले जायेंगे आपको।

ये इस तरह व्यापक होते जायेंगे आप, जाते जाते भी आप व्यापक, व्यापकता आपमें आती जायँगी। जहाँ जहाँ जायेंगे, सब सम्मान करेंगे और अपने हृदय में स्थान देंगे। और प्रतीक्षा भी करेंगे हमारे यहाँ आये। तात्पर्य ये है इत्थम जन्म निर्थकम्। जब तक उस पद पर नहीं पहुँच सकते विष्णु पद जो है, तब तक तो हमारा भय दूर होता नहीं है। चोरी हो गई, यहाँ से वहाँ तक सब लोहे के दरवाजे है। इस प्रकार से ये चोर जो है न आयु, काल रूपी चोर है। वो हमारे पीछे पड़ा हुआ है, न जानते हुए न समझते हुए अपने आपको उसी तरह गर्त में हम जा रहे है ये अर्थ समझ में आ गया आपको- जहाँ से अच्छी चीज मिलती है वहाँ पहुँचने की, पहुँच के वहाँ से ले लेंगे, हमे मना नही ले लेंगे। लेकिन अच्छी चीज है बट रही है आपको मालूम है यहाँ से हमारा कल्याण हो रहा है। तो मार्ग में चलो भोग भोगते हुए कम से कम एक बार दर्शन तो हो जाय। एक बार दर्शन से कल्याण हो जाता है।

ये सतपुरुष, सद्‌गुरु, और भगवान ये ईश्वर कहते हैं। नाम, कृष्ण आदि, एक बार भी दर्शन हो गया आपका कल्याण हो गया। ये समझ नहीं, सतपुरुष, सद्‌गुरु जिसको ब्रम्ह कहा ये सब एक है। लेकिन ये हमारा

विश्वास, भरोसा और श्रद्धा नहीं है। कुछ भी नहीं है। है, नहीं है, ऐसा नहीं है, ये तो खाली टाइम बीइंग है। रात हुई कमरा खाली करके जाना ही है, ऐसा सतगुरु सत्पुरुष जो है दिन भर में एक बार दर्शन करना ही है।
उसकी व्यापकता जो है धीरे धीरे सर्वव्यापी होते चला जाता है। क्या कहते है उसको - हरेक आदमी सेंटर में होना, खाली जग गई, सेंटर मे आ गई वो सुषुम्ना-ये चीज जो मिल रही है, कहीं नहीं है। बुरा जो खोजन मैं चला बुरा ना पाया कोई, जो दिल खोजा अपने तो मुझसे बुरा ना कोय। कहने का तात्पर्य यह है इत्थम् जन्म निर्थकम्, ठीक है। विष्णु परम धाम जो है, जिसकी सुषुम्ना खुली है, आत्मा के पथ में आते जाते है, आत्मज्योति की दर्शन होते चली जाती है, एक सेकण्ड भी होता है कल्याण होते चले जाता है, एक सेकण्ड भी इधर से उधर आते जाय तो भी आपका कल्याण होते जाता है।
गुरुजी का आदेश का पालन करके उनका जो है कल्याण होते जाता है। कल्याण माने निर्मल हो गया। एकं नित्यं विमलम अचलम सर्वधी साक्षी भूतं नित्यानंदम परम सुखदं केवलं द्वंदातीतं गगन रहितं भावातीतं त्रिगुण रहितं सद्गुरु तं नमामि। अखंड मण्डलाकारं व्यापतं येन चराचरं तत्पदं दर्शितं तस्मै श्री गुरुवे नमः। उसका काम होता चला जायेगा। लौ मात्र इतना भी दर्शन हो जाय तो कल्याण हो जाता है। ये कितना सस्ता धन है, कितना सस्ता खेल है लेकिन आपको बिलिव ही नहीं। सत्कर्म, सत् माने आत्मा। माने आत्मानुभूति पलक मात्र जितना दर्शन हो जा, सारा विश्व जो है...। अपने कल्याण के लिए तुम्हें समय नहीं है। इतना कहना पर्याप्त है।

- आप अपने आप को पढ़ सकते है अपने आपको बंधन से धीरे धीरे निकालो। पढ़ो रात को सोते समय कितना नेक काम किये कितना भला काम किये। कितना झूठ बोले, कितने बहाने किये, कितने बहानेबाजी किये, अभ्यास करो। नींद लग जाय सो जाओ। इतना तो शुरू हो। जो ये है भक्ति आपकी, ये दीक्षा के अंतर्गत है ये।

पहले, प्रथम भक्ति मम हरि कथा प्रसङ्गा, दूजे संतन के सङ्गा। पहले हरि कथा समझो, भाषा समझो। और भाषा और अपने आपको, इस मार्ग में हम कैसे है? कितने है? कैसे है? हम कितने शुद्ध है, कितने बहानेबाज है। कितने झूठ बोलते है घर वालों से बाहर वालों से। ये रोज अपना हिसाब लगाकर, सो जाना।

करके ये देखो, ये कार्य ही सिद्ध है। न राम है न दाम है न कृष्ण, न राम है, न हरि न शंकर न मंकर न कंकर। सिर्फ अपने आप को पढ़ो रात को सोते समय, की जहाँ बिस्तर में आके आप पड़े है। आप पीछे जाओ, बिस्तर में सोने से फिर पहले, कहाँ थे, कहाँ थे, कौन मिला, करना, ऐसे रीडिंग करते करते आप नींद लग जाय सो जाइये।

सेल्फ रीलाइजेसन, नो यूवर सेल्फ, नो दाई सेल्फ। अपने आपको पढ़ो। और कुछ नहीं, ये है योग। मैं जो आपके सामने रखा।पढ़िये हम भले बुरे कितने है, हमारा व्यवहार है वो पहले है। सुबह से शाम तक क्या किये, उसको याद करो, नींद आ जाय, सो जाओ। कोई मना नहीं।

राम, आत्माराम है ही सबमें है।किसमें नहीं है। वो नहीं तो शरीर को कोई पूछता है। अच्छा आशीर्वाद, आनन्द मंगल हो, आज इतना ही बोलेंगे।

तुलसीदास ये है दशा हीन संशय निर्मूल न जाहि। जब तक आपकी संशय दूर नहीं होती है, तब तक तो आप जहाँ है, वही है। अभ्यास करने से शक्ति मिलती है। नहीं तो, संस्कार एक बंधन ही है आपकी।

- वो कृष्ण है, वो मैं हूँ, वो वासुदेव स्वरूप है।

- ये आपको ज्ञान हो जाना चाहिए, मेरा यहाँ कुछ भी नहीं, शरीर तक है नहीं। फिर है क्या?

- तुमको खाली साक्षी भाव से रहना है, आत्मभाव से रहना है। स्व अक्ष, संशय रहित।

- निर्मल होने के बाद, मैं और तू, ये मेरी स्त्री है, ये मेरे पति है - ये नहीं रह जाता है। सिर्फ आत्मा से संबन्ध है।
न पानी का रंग है,न कोई स्वाद है, ये बाहर का है सब, ये बाहर का रंग है - निकाल दे, तब वो स्वच्छ है।

- जितने व्यक्ति है, उनकी आत्मा महाशक्तिमान् है।और वो दिव्यशक्तिमान है, दिव्यशक्तिसंपन्न है। उसको न बढाना पड़ता है, न घटाना पड़ता है। खाली हम वासनाओं को बढ़ा और घटा रहे है। अभ्यास कोई चीज नहीं, ये वासना जो हमारे आवरण है, उसको दूर करना है।

- आपको जो प्राप्त हुआ है, वे उपदेश नहीं आदेश है। आदेश माने जिसका पालन होना चाहिए। डू डाई डू, कर मर कर।ये आपको करना है तब होता है। आप उसको हटा दे सकते है, बदल दे सकते है। अपने व्यवसाय में समाज में आपको रहना है तो इन बातों / व्यवहार, को ध्यान में रखकर, मौन व्रत करके, उस तरह से अपनी भाषा को, कृति को ताकि किसी को हानि न हो। इसमें सतर्कता रखकर अपना आचरण बना लेना चाहिए। तब आप सुखी रह सकते है।

- तुम अज्ञानी हो - ज्ञानिनः तत्व दर्शिनः। तत्व मिलता - तुम्हारे पास कोई नहीं चाहिए तुमको। जो मिले। बिन मांगे मोती मिले, मांगे मिले न भीख। और जो मांगना न चाहो, तो कमा के खाना सीख, हरि ॐ, हरि ॐ। प्रत्येक आदमी अपना, अपना किस्मत लेकर आये है, प्रत्येक अपना अपना भाग्य लेकर आये है। भाग्यं फलति सर्वत्रं न विद्या न च पौरूषं। भाग्य प्रधान है, भाग्य प्रधान है अगर तुमको ऊपर चढ़ना है-कुवां में तो भाग्य प्रधान रखो, न तुम्हारा विद्या काम के, न दुनिया के विद्या काम के, न धन काम के। इन दोनों से मुख मोड़ना पड़ता है कौन सा? कनक, कामिनी- इन दोनों से दूर

होना पड़ता है, और मांगना बन्द, मुँह बन्द,बन्द। जो मिले ठीक, न मिले ठीक। मरना कबूल हो। ये संकल्प होना चाहिए मर जायेंगे लेकिन छोड़ेंगे नहीं, तब वो चेला-चेला शिष्य है वरना वो ठग है। ऐसे ठग हजारों हमारे है, हमको कोई नहीं मिले सब धोखा देने वाले मिले, सब धोखा देने वाले मिले, हरि ऊँ, हरि ऊँ। किसी की मत किसी से मिलती नहीं है, किसी की बुद्धि किसी की बुद्धि से मिलती नहीं है। प्रत्येक के प्रारब्ध, प्रत्येक के भाग्य भिन्न भिन्न है, सब भाग्याधीन है कर्माधीन है। सब जीव है, परवश है, क्या करे वो खुद के नहीं है खुद को विश्वास नहीं है, वो क्या विश्वास करेगा? क्या विश्वास? क्या विश्वास करते हो? जो मिले सब ठीक है,15साल से मैंने सब छोड़ दिया हूँ,अब छोड़ा मैंने, आज से और छोड़ दिया, हरि ऊँ, हरि ऊँ। कबीर का कहना है, पाथर पूजे हरि मिले तो हमसे भी कह जाना। प्रेम गली अति सांकरी जा में दो न समाय, शीश उतारे भुई धरे तब बैठे घर माय। ठठ्ठा नहीं ये मजाक नहीं है, हां जीते जी मरो, फिर वापस आ जाओ तब ऊपर १२ वे केंद्र में आज्ञा चक्र में तब जाकरके जितेन्द्रिय होते हो।अन्यथा कपड़ा बदला करो और किताबे लिखा करो, पढ़ा करो, दुनिया को बनाया करो, हमको पागल नहीं बना सकते, पागल को क्या पागल बनाओगे। मैं मानवता को मानता हूँ, मैं सम्प्रदाय को नहीं मानता हूँ, मैं कूप मंडूक नहीं हूँ। मेरे जीवन में मेरे पास में हर सम्प्रदाय के लोग हमारे शिष्य है। जितने सम्प्रदाय दुनिया में है - सब लोग हमारे शिष्य है, काले, गोरे, पीले, नीले, ये सब जितने जात पात है ऊँच नीच, सब हमारे शिष्य है, हरि ऊँ, मैं मानवता को मानता हूँ। यदि मानव मानवता की हद तक रहे तो वो मानव नहीं देव है, इसके विपरीत यदि अपने तक, अपने को देवता समझे तो वो मानव नहीं है, वो नीच है, तुच्छ है,अहा,अहा- वो दानव है, हरि ऊँ। मैं इतना देखा हूँ कि मनुष्य, चर्चा राम की करेंगे, काम करेंगे दाम के लिए, और रात को बगल में लेकर कामिनी के इच्छा और

अपनी इच्छा के कारण करेंगे और अपना सारा जीवन ये तीन विषय में - १. लेक्चर बाजी, २. शरीर को बेचना रोटी के लिए, ३. और जिसको ऊपर चढ़ाना है उसे कुवां में और पानी भरना है, रात को कुवे में पानी भरना है, ये तीन में आज तक अधिकतर पाया हूँ मैं। अभी तक कोई आत्माराम का अनुभव वाला व्यक्ति नहीं मिला।इसलिए जो चर्चा करता है, शास्त्र में लिखा है शास्त्रात रूढ़ि बलीयसी, शास्त्रों में भी रूढ़ि बलवान है। तुलसीदास जी भी मान गये योगी तुलसीदास जी - कि जाकी रही भावना जैसी प्रभु मूरत देखी तिन तैसी। ये तुलसीदास जी ने अपने राम चरित्र मानस में दिया है। तो मैं किसी को मना नहीं करता हूँ, हाँ रूढ़ि बलवान है। अब मैं मना किसी को नहीं करता हूँ। आपकी भावना,जैसी भावना है वैसी फल आपको मिलेगा, आप रोटी खायेंगे तो आपका पेट भरेगा, मेरा नहीं। मैं नास्तिक हूँ, मैं हजारों माइल चलकर आया हूँ, और वही तुलसीदास के चौपाई के आधार कि काक होंहि पिक बकहुँ मराला, मज्जन फल पेखिय तत्काला।, मज्जन फल पेखिय तत्काला। तो हमको मिला हम आये १९१९ में और केवल तेरह तारीख स्नान करने गये, बोट एक घण्टा के लिए कर दिये - त्रिवेणी संगम में गए, खूब पानी में उतरे और खूब नहाये-कौवा हूँ मैं कोयल बन जाऊंगा, बगुला हूँ मैं हंस बन जाऊंगा, लेकिन कुछ हुआ नहीं घंटे से ज्यादा हो गया। पिता ने खेंच के निकाला हमको बोट से, और दो चार चपत जमा दिया, हाँ बस कोयल बन गये और हंस बन गये। वो दिन से मैंने हाथ जोड़ लिया, हाथ जोड़ लिया। मैं तीर्थ क्षेत्र नहीं जानता हूँ। मैं पत्थर की पूजा नहीं करता हूँ, मैं लकड़ी की पूजा नहीं करता हूँ, मैं साँप बिच्छू की पूजा नहीं करता हूँ। मैं दुनिया भर के व्रत उपवास किया हूँ, मैं पूजा पाठ किया हूँ, रसोई बनाया हूँ, बर्तन मांजा हूँ, पानी भरा हूँ, मैं बोझा ढोया हूँ मैं सब काम किया हूँ, दुनिया में जितने काम है सब किया-लेकिन भीख नहीं मांगा, मरना कबूल लेकिन भीख नहीं

माँगा। लोगों के बाजार में फेंके हुए, पत्ते खाया, गाजर है मूली है ये सब, ये खाता था, मैं मांगता नहीं था, नहीं, पता लगा लो - झूठा मिले तो चार चप्पल जमा दो, हरि ऊँ। तो भैय्या जिसकी भावना जैसी है"आप अपना करो, करने में मना नहीं करता, मैं कोई अधिकारी नहीं हूँ, हरि ऊँ। तुलसीदास जी का ये-गुरु पद रज मृदु मंजुल अंजन, नयन अमिय दृग दोष विभंजन। तब तक तुम्हारे वो जो तीसरी आँख है,उस का पर्दा, ढल नहीं सकता, डोल नहीं सकता,और टूट नहीं सकता। नयन अमिय, अमिय नाम- मोक्ष का है तब तक वो, उसको मोक्ष नहीं होता है। जब तक, वो जो पलक है वो जो अनेक जन्मों के करोड़ों जन्मों के संचित जो संस्कार तुम्हारे है जब तक वो विनाश नहीं हो जाता है तब तक तुम्हें इस, शरीर से, आवागमन से, जन्म मरण से छुटकारा कभी भी नहीं मिल सकता, कभी नहीं, सोचना नहीं। तो नयन अमिय दृग दोष, ये दृग दोष है, विभंजन। जब वो घुस जाती है - तब जाकर के उसका गुण धर्म शरीर में प्रकाशित और विकसित हो जाती है, मृत्यु के। उसी प्रकार से गुरुजी में, सत् वाक्य, कर्म वाक्य, आत्मा में घुस जाय और लग जाय तब जाकर के बस उसके सिवाय कुछ नहीँ। अपना मृत्यु का आलिंगन करना होगा कोई लिखता नहीं कोई बोलता नहीं, अनुभव के बोल है, मैं बोलता हूँ, तब मृत्यु होती है और मृत्यु के बाद मृत्यु के समय में ये विद्याती विनाशं होता है वही केंद्र है, तीसरा, दूसरा केंद्र है ही नहीं है। वही केंद्र जो है विधाती कर्मों का विनाश संपूर्ण हो जाता है तब ऊपर जाता है १२वें में। तब जाकर के और तीसरी आँख खुल जाती है, ये सेकडों दफा, नीचे से ऊपर तक के, तब उसके ज्ञान, तब उसका ज्ञान हो जाता है, आत्म ज्ञान होता है,आत्म ही ज्ञान है,आत्मा ही ज्ञान है, ज्ञान ही आत्मा। इसमें जो भेद समझता है वो मुर्ख है,और मुर्ख है। वो कुछ नहीं जानता किताबी पंडित होगा, होगा कैसे? हरि ऊँ । होगा अनुभवशून्य, अभाव है। भाव माने बढ़ता है, हरि ऊँ, हरि ऊँ। इसी तरह लेते हुये, ये

संसार तुम्हारे ख्याल से, पीछे हो गये - नहीं नहीं। एक जर्नलिस्ट जिसका नाम है, पालब्रंटन, उसने अनुभव किया और बोल रहा है, क्या बोल रहा है - इफ दिस यूनिवर्स हेड नाट् बीन फार्मड आउट ऑफ डिवाइन ऐसेंस नन ऑफ दि क्रियेशन विदिन इट कुड होप ट्रुली टु कम इनटू डिवाइन स्टेट-ये पाल ब्रंटन का अनुभव है। ये सब जानते है, ऐसा ही देख लो, हमारे संतों का कहना है-दिस बाडी विल फिनिश व्हाट एवर सेक्रिफ़ाइस् यू मे डू, यू हैव टू वर्क हार्ड फार साल्वेसन, यू डू फार ही, एस यू थिंक, यू आर हरि ऊँ, हरि ऊँ। ये लड्डू नहीं है, रसगुल्ला नहीं है, हमको मत सिखाओ, हौ रे, हमी मिले तुमको। प्रेम गली अति साकरी जा में दो न समाय, शीश उतारे भुई धरे तब बैठे घर माय। ये शीश उतारे, शीश उतारे, शीश उतरे, दे जाय - ये क्या है? हमको तो आज तक भारत में एक भी आदमी नहीं मिले, वेषधारी बहुत मिले, हमको माफ करना। ठग मिले, हमको ठग। मैं चार बार अपना मृत्यु देखा, पांचवी बार कोलैप्स और फिर से वापस आ गया। चार दिन, तीन दिन, पांच दिन, सात दिन, एक दिन, मृतवत, मुर्दे की तरह बच्चा जैसे सोता है, वैसे पड़ा रहा, कुत्ते नहीं पूछते।अष्ट्सिद्धि मुझे प्राप्त है मैं प्रयोग कर लिया और सब छोड़ दिया,अहंकार, मैंने किया। मेरी दृष्टिकोण से, ये लोग बदनामी करते है, कनक कांता, कनक कांता, पैसा औरऔरत, ऐसा जो, घृणा घृणा दृष्टि से, हमको ये जँचता नहीं। मैं तू-मेरे दृष्टिकोण से हमारे दृष्टिकोण से, मैं और तू, ये न रहे। खुद को ऐसा मिटा की तू न रहे, तेरी हस्ती की रंगों बूँ न रहे, भागना चाहो, भाग, चार सूं से भाग इतना कि चार सूं न रहे। अरे स्वयं को ऐसा अभ्यास करो, न तू, न मैं, में न तू ये दोनों न रहे, तुमको सुधि बुधि न रहे, होने दो, भागना चाहते हो तो दशो दिशा से भागो, इतना भागो कि दशो दिशा न रहे, तुम्हें बोध न रहे। तो मेरी दृष्टिकोण से ये मैं और तू ये दो नहीं समाती या तो मैं और तू बराबर है, या तो मैं और तू को खो बैठो- अभ्यास करना माने इसको खोना है, मैं और तू

दोनो को, इतना अभ्यास होना। मृत्यु को आलिंगन करना है और उसके परे जाना है। मैंने किया हूँ, रु रुअ बस, बस हो गया, लग गया, गिर गया। एक दिन, तीन दिन, पांच दिन, सात दिन, पड़ा रहा। न किसी की निंदा, न किसी की स्तुति। मैं और तू, ये भूल जाना है हमको, जीते जी मर पहले, मामूली बात नहीं। वेशांतर होकरके और बाबाजी बनकर के हम भगवान है हमारी पूजा करो। और हमारे मुँह से आप शब्द भी नहीं मिले, बस हो गया। खाली हमको आदर सत्कार करना है। मैं पानी नहीं देता हूँ, इन दोनों को पानी नहीं देता पूंछता नहीं हूँ, हरि ॐ तत्सत् । मुझको माफ़ करना। तब वो औदार्य कहते है। चरित्र,औदार्य पूर्ण हो गया,तब वो उदार है, तब वो श्रेष्ठ है। सेठ माने श्रेष्ठ है, न की पैसा हो गया की श्रेष्ठ है, वो दुनिया के लिए वो श्रेष्ठ होंगे, लेकिन वो निक्कमा है, किसी काम के नहीँ। अयम् निजःपरो वेत्ति गणनाम लघुचेतसाम, औदार्य चारितानां तू वसुधैव कुटुंबकम। सारा वसुधा मेरा कुटुंब है, जब ऐसी दृष्टि हो जाय, तब औदार्य हो गया, तब मैं तू ये दोनों, बिना मृत्यु केंद्र पार किये बिना, आलिंगन किये बिना कई बार, एक बार नही कई बार, होने से तब जाकर के आस्तिक हुआ।

- शुद्ध माने तू है कि एक, ये है रत्न।रखो।रखो माने ऐसा रहो। ऐसा रहो का मतलब आप खाली मात्र रहो, आपको खाली मात्र रहना (उन पर सब छोड़कर सब कार्य करते निर्भर उन पर स्मरण में सदा सबमें उनको एक देखते हुए रहना) है।
(अभ्यास में दोनों आंखों के मध्य अंतर्दृष्टि आदेश पालन करते हुए शांत बैठना है केवल) ऐसे बैठे है। कब क्या होगा, क्या परिवर्तन होगा (ये हमे पता न चलेगा) ये अपना काम नहीं है।अपना काम तो खाली गुरुजी ने कहा था। खाली (केवल) उसको रखके (गुरुजी की आज्ञा केवल एक बार मन्त्र बोलकर भ्रू मध्य में अंतरदृष्टि से मन को लगा देना, बुद्धि से देखना)

बैठ जाना है। बैठ जाना(चुपचाप), न आगे सोचना, न ही पीछे सोचना है। तो ये युक्ति है जो गुरुजी ने बताया(है)। ये वो बने रहे तो बुद्धि से परे निकल जाओगे, कब निकल जाओगे ये (आपको) पता भी नही चलेगा।
बाह्य संवेदना शून्यत्व (शरीर बोध रहित) ये प्रत्याहार है, ये है तुम्हारी द्वार। ये खुल जायगा। वही बन्ध है, बन्ध माने बन्द है।अभ्यास से वो जब खुला तो ऊपर पहुँच गये, सिक्स्थ प्लेन (आज्ञाचक्र) में पहुँच गये।
फिर ये संशय कहाँ? वहाँ संशय नहीं है,आप विशुद्ध हो गए अब। इस प्रकार से ये विशुद्धाख्य (विशुद्ध चक्र, गले में) इसको क्रॉस करना ही पड़ता है, पीनियल (आज्ञाचक्र) में आना ही पड़ता है। लेकिन इस तरह से। कोई (और कुछ भी) करना नही है (केवल अभ्यास में भ्रू मध्य में मन से देखते हुए आगे पीछे का न सोचते शांतावस्था में बैठना है, कोशिश में लगे रहना है केवल बैठना है10 या 20 मिनट मन में सोचकर इतने मिनट हम बैठेंगे) देखो अब समझ आया न।
रेगुलर (प्रतिदिन एक या दोनों समय सुबह शाम या रात्रि में जैसी सुविधा बने) द्दढ़ संकल्प (लेकर) तब काम (आज्ञा चक्र में मन प्राण की स्थिति, बाह्य संवेदना शून्यत्व फिर धीरे धीरे अन्तर्संवेदना शून्यत्व मन बुद्धि अहंकार की शांतता निर्मलता दिव्यता भी) होता है।
ये सब छोड़ो(घर बाल बच्चे परिवार नौकरी धंधा, सदोषम अपि न त्यजेत, आदि नहीं छोड़ना है) भागना वागना (जंगल हिमालय एकांत स्थल घर छोड़कर) नहीं है, कहीं (घर छोड़कर कहीं भी नहीं) ये। और हमको घर (आत्म स्थिति, चलते फिरते आत्मा में एक की दिव्यता में स्थित रहना, आत्मा में मन का प्रवेश, सबमें एक ब्रम्ह रूपी गुरुजी का दर्शन होना मन से द्दष्टि से, कार्य में अनुभव, राग द्वेष रहित, आनन्द स्थिति) यानी उसका ये उधर (आत्मा में, दिव्यता में, महाशक्ति में, परमात्मा में, भगवान में) हो जाता है, अपना (जो सिर्फ दोषमय क्षुद्र अपना पराए भेद बुद्धि थी अब दिव्यता के साथ है में है)।

भाव तो निराला (सबमें उस एक सिर्फ एक ब्रम्ह हेतु निर्मल दृष्टि, अंतर्दृष्टि, शत्रु मित्र दुष्ट शिष्ट सबमें) नाहि दूजा (अब दूसरा कौन है, वही तो है, एक, निर्मल ज्योतिर्मय ब्रम्ह की अंतरदृष्टि भाव कभी बाहर से भी) पांडुरंग ध्यानी (गोल्डन लाइट ही दिख रहा है,अंदर से मन से, या बाहर से भी, वही सबमें लक्ष्य हो गया है) पांडुरंग मनि (मन में वही पीला सुनहरा ज्योति है, मन भी वही सुनहरा रंग हो गया है, कालापन छूट गया, उसी रंग में अब रंग गया) पांडुरंग कांति (सुनहला ज्योति की छवि है तेजमय है, दिव्य है, जड़ चेतन में स्त्री पुरुष सबमें वही दिव्य है, सारा जगत अब गोल्डन लाइट मय अब दिव्य है)।

- रिलाइज आई ऍम, बट डू नॉट थिंक आई ऍम। यस, दिस इस मेन सीक्रेट इन ईट।
  एक क्षण भी अहम ब्रम्हास्मि के बिना न बीते।
  साधक स्वल्पकाल में अपने मूल में,अपनी मूल स्थिति में चला जाता है, वो मन्त्र है , दासोअहं ।
  गॉड विसिट्स यू एवरीडे, बट यू आर नॉट प्रसेंट एट होम।अब किसकी फाल्ट है ये? अपना दोष देखो, दूसरों का क्यों देखते हो?
  उस सत वस्तु को मत छोडो, बाकी सब कुछ और छोडो और सत को पाओ, अगर शक्तिमान होना हैं तो। सत है आत्मा, वो महाशक्ति है।
  बुद्धि आत्मा के साथ सलंग्न है, तो मन पर दृश्य या ध्वनि का कोई परिणाम नहीं हुआ या संस्कार बने नही।
  साथ ही जीवित रहते हुए इच्छा रहित आयु व्यतीत करना। नशे को पचाना आ गया तो सारी शक्तियाँ मिल जाती है।
  पलक मारने में जितना संग हो जाये, यानि दर्शन हो जाये तो ये स्वर्ग अपवर्ग जितने है, ये सब किसी प्रसंग में नहीँ आते।
  आत्मा जो दिखती नही, वही निरंजन है, वह निरंजन तुम ही हो, देह रूपी

सजीव देवालय में। आत्मा ही देव है।
जिसको स्टैंडर्ड ऑफ़ लिविंग कहते है, यहाँ हम हार खा जाते है।
उसमें बने रहना है, आप रत है, लगे हुए है तो भविष्य कभी नहीं आता, कभी भी चिन्ता नहीं होती। एक ठिकाना, आपको स्थायी होना है, सेल्फ पर।
मन बुद्धि को, विषयों से परे अपने आप में केंद्रित कर देते है। तब हम पूर्ण रूप से सन्तुष्ट हो जाते है।
न चाह की चिन्ता। मगन रहने पर तृप्ति आ जायेगी, और अपने आप अभाव का नाश हो जायेगा।
बाहर की रुकावट है-सम्पत्ति, मान, यह अंदर जाने नही देता है।
ज्ञान प्राप्त करने में कोई बाधा नहीं, यदि बाधा है तो न करने और टालने की आदत।
हम असंग है, शरीर से हमारा कोई सम्बन्ध नहीँ। हमे अपने आप में रहना है, यही भावातीत होना है।
जाग्रत समाधि आनन्द, ब्रम्हानंद आपको लेना है तो ऐसी सन्धि में खड़े हो जाओ की जहाँ से आपको बोध होता रहे।
दृष्टा दृश्य रहित स्थिति में, ऐसी सन्धि पड़ती है, उसमे आपको ठहरना है।
आपको वृति रहित होना है। मुझसे ही प्रकृति बनी है, ऐसा साधक जाग्रत हो गया। तीनों गुणों से परे होना है।
निर्बीज माने अहं भाव वहां नष्ट हो गया, इसके ऊपर देशकाल से और परे हमको जाना है। लेकिन अरबो में एकाध होता है।
युअर ड्यूटी इस टू बी। मीन्स आलवेस पाज़िटिव। रिआलाइज् नथिंग आई ऍम।

- सारा भू मंडल भर् दिया ज्योति से और क्या चाहिए।
चार बार, पांच बार मृत्यु को देखा, मुर्दे सरीखे पड़े रहते थे, डॉक्टर लोग आकर देखते थे। ये वो गुरुजी है।मृत्यु को लांघ लिया।

नौवें वर्ष में 4 माह समाधि में रहे। ये भारत में आकर, हमको नहीं मिला, हमको कोई नहीं मिला।
सारा भूमण्डल ज्योति से भर् गया।महाप्रलय देखा।
प्रकृति के परे है। बारहवें साल में केवल प्रकाश में रहे। वाणी के बिना, वहां वाणी ही नहीं, क्या, वहां वाणी नहीं है। क्या है? आत्मा, हां आत्मा।
वाणी नहीं क्या है, मौन है। इसी से मौन जो है, वाणी नहीं, मौन है। उसका नाम ॐ है। एकाक्षर नाम है-ॐ।
किसी से नहीं बोलता है, फिर भी बोलता है। बोलता है, नहीं बोलते हुए बोलता है। ॐ कहा गया। माने मौन होते हुए बोलता है, बोलता है मौन है। ये है। मौन है फिर भी बोलता है, ये मौन है।
वो जैसा है, वैसा ही है। मौन होते हुए बोलता है, वो, ऐसा है वो। है वो प्रकाश। क्या है, प्रकाश। लोक है, प्रकाश जो है लोक है। नाना प्रकार के लोक है और जगह है और है।
वो बोलता है नहीं बोलते हुए बोलता है। नाना प्रकार के लोक है, नाना प्रकार के प्रकाशमय लोक है। प्रकाश के सिवाय कुछ नहीं। ज्योति के सिवाय कुछ नहीं। ज्योति।

- धीरे से वो समर्थ होते चला जाता है, रघुवीर समर्थ कहा था कल, ये रघुवीर है, माने आपकी प्रेरणा है, अंदर जो विचार है, वो सत्य होता चला जाता है, हाँ, रघुवीर माने प्रेरणा, ये रघुवीर है। आत्मा रूपी प्रेरक से जो प्रेरणा मिलती है, प्रेरक माने विचार, वो विचार सिद्ध होते चले जाते है। इससे ये पाने के बाद, तब वो रामदास स्वामी ने कहा, जय जय रघुवीर समर्थ, ऐसा है, तब वो समर्थ होता है। कर्तुम अकर्तुम अन्यथा कर्तुम समर्थः, नहीं करते हुए सब कुछ करता है, सब कुछ करते हुए कुछ भी नहीं करता, माने प्रारब्द्ध, बनता ही नहीं वहाँ। माने सारे मुक्त, ये दुःख क्लेश कर्म विपाक्, ये सब साफ। ये जो बीज बो दिया जाये आपके, आपने जो दीक्षा ग्रहण किया। द, दद ,धातु है, इक्ष माने इच्छा ,जो आपने प्राप्त किया, जो ब्रम्ह

विद्या आपको दी गई है। उसको गँवाना नहीं, एक दो मिनट, एक मिनट भी देख लिया, जैसे बताया ध्यान हम करे, मिले न मिले, समझे न समझे, लेकिन वो एक दिन ऐसा आयेगा, प्रचण्ड ज्योति आपके सामने आ जायेगी, अपने आप आता है। एक माचिस का काड़ी, माचिस को जलाओ अंधेरे में सारे रूम में उजाला हो जाता है, हो जाता है न, लेकिन कितने देर तक जितना उसकी अस्तित्व है, जितनी उसकी अस्तित्व है। उसके बाद फिर अंधेरा है, तो आज हमारी हालत ऐसी है, हम ये जला रहे है, जो ज्योति ला रहे है, तो ये माचिस का काड़ी तो है, उसके बाद फिर ज्यों का त्यों, लेकिन कम से कम उजाला तो हुआ, दिखा तो सही, ये तो विश्वास है कि नहीं, ये भरोसा हो गया की नहीं। ये भरोसा रखना चाहिए हमको, नहीं हमारा तो फिर से वो आ गया, ये आ गया, ये नहीं सोचते कि इतना तो मिला। जहाँ घोर अंधेरा था, कम से कम दिया जल तो गई। एक सेकण्ड या दो सेकण्ड, एक मिनट तो काड़ी जल तो गई, इतना प्रकाश तो मिला आपको, इतने में आपका काम बन जाता है। ये तो वो दिया खाली जल रहा है, उसके अंदर, इतने में सब काम हो जाता है। हो जाता है कि नहीं, तो इतना अपने को आनन्द मनना चाहिए, तो हम आनन्द मनाते नहीं, वो ही अपना सूरत उतारकर आते है। हमारा कुछ नहीं होता, ऐसा है, इस तरह कहते है।

वो दिव्य है वो,अंदर आप देखते है अभ्यास करके, सब दिव्य ज्योति है वो। उसी से आपके दिव्य गुण संपन्न हो जाते है।और ये जो चीजे है, वो नित्य होना, सब छोड़ दे वो।अपने को दुनिया में रहना है, माँ के पेट से फिर से नहीं आना है। घोड़ा होना, मोटर होना, गाड़ी होना,सब होना, पैसा होना, कौड़ी होना,पत्नी, पुत्र होना, सब होना, ये जमीन, जर, पैसा होना। सब होते हुए आप मुक्त है : हमको ये चाहिए। हमारे पास पलायन वादी नहीं है, हमने जो किया है, उसको भोगने के लिए तैयारी है, जी हाँ।

इस तरह हम किसी पर आरोप नहीं करते। आरोप करना माने, बैर होना है, इसने किया इसलिए ऐसा है। अरे कोई किसी का नहीं बिगाड़ता है,

सिर्फ भोग है, चुपचाप भोग लेना। मौनं सर्वार्थ साधनं। ये चीज है, मौन हो जाये। कोई जरूरत नहीं, ऐसी जो बीज आपने भरा हुआ हुई है, ये सब बिल्कुल वो निष्फल नहीं है, और नहीं तो मरते समय आप ज्योति में जायेंगे, जी हाँ। जिस समय शरीर आप छोड़ेंगे, ज्योर्तिमय मार्ग में आप जायेंगे। स्वयं ज्योति, ज्योति के बीज हमने बोया है,आत्म ज्योति का बीज बोया है, ऐसा है।

या राम राम बोलो, राम नाम से कुछ नहीं होता, मूल तत्व ये है और ये आपके सामने है। तुमको वो बोला न उस दिन अंश है, अंश माने टुकड़ा है, टुकड़ा होते ही नहीं, हाँ, वो पूर्ण है, उसका टुकड़ा है ही नहीं, अखण्ड् है वो। उसको क्या समझाया जाय? याने योगाभ्यास में करते करते, अनेक जन्म के बाद तब वो समझ में आता है, अरे बाबा, वो तो हम ही है, ये सब हमीं है सब।

मैं ही विराट हूँ - क्या होगा फिर बाद में, मैं ही विराट हूँ। विराट माने महान, ये स्वाभाविक है। हमारी ही तो रचना है, ये सब। एक ही सूत्र है - एकोअहं बहुस्याम। वो / एक, पुरुष था, अपने आप को वो ये कहता है, मैं एक होते हुए अनेक हो जाऊँ, तो एक होते हुए अनेक हो गया, वो। माने एक से अनेक हुआ न, तो अनेक से एक नहीं है, हाँ, अनेक से एक है। इसलिए तो सब एक है, माने सब एक ही है कि नहीं, एक ही है। एक अन ऐक क्या ऐक अन ऐक माने एक है ही सब - ये अभ्यास के द्वारा जाना जाता है। ये तत्व ही तो एक है, ये दो पत्ते पढ़े और एक ही सूत्र है - एकोअहं बहुस्याम। तब वो पढ़े थे, पंचदशी में, रख दिया, ये सब खोटा है, सब खोटा है। सांप लाता हूँ, पकड़ ना मुंडी से, खोटा है, ये सारा खोटा है, डाल ना हाथ पैर उसमें। अय, कुआ है कूद ना। हाँ, खोटा है, फिर क्यों डरते हो। तुमको नदी है, न पहाड़ है न दिवाल है। अनेक जन्मों के ये सभी है। ये सब शक्ति है, लेकिन सोई हुई है, नहीं जानते, उसको कैसा जगाना है। अभ्यास यही है, ये सारे आवरणों को दूर करना, और दिव्य शक्ति संपन्न होना। अपना कल्याण हो गया, औरों का कल्याण करना, ये है योग मार्ग। ये है योग, साधन करने का

हेतु, यौगिक शक्ति, याने आत्मस्थ जिसे आप बोलते है। आत्मिक जो गुण है ये सब आपमें प्रकट होते है और आप आदर्श हो जाते है, तब आप महात्मा होते है। महान है आत्मा, स महात्मा। मुझे महात्मा कहो, ये कहने की आवश्यकता नहीं, मुझे मान दो, मैं महात्मा हूँ, ये भी आवश्यकता नहीं, ये अहंकार है। महात्मा कह रहा, अरे वो काहे का महात्मा, अरे दुनिया भर का विकार आपमें है, काहे का महात्मा।

- मूल में ये बातें बचपन से लेकर के जीवन पर्यंत,तो तात्पर्य ये कहने का हँसावस्था होना चाहिए। हँस माने नीर, क्षीर, विवेक न्याय। दूध में कितना पानी है, पानी में कितना दूध है। सत्य कितना है, असत्य कितना है उसको बोध हो जाता है, माने त्रिकाल दर्शी हो जाता है। त्रिकाल दर्शी माने क्या? भूत भविष्य आदि का बोध होता है। स्वयं का भूत भविष्य का बोध होता है। कौन कहाँ है, क्या है, कौन रिश्ता था, कौन रिश्तेदार था, कौन पुत्र है, कौन कलत्र है, कौन माँ है, कौन बाप है - ये सब बोध होता है। कहाँ कहाँ जन्म हुआ, कौन है, कैसा लेना देना ये सब - तुर्यावस्था है ये। वहाँ ये सब उसको दिखता है, उसको बोध होता है, उसके पहले नहीं होता है।
  ये सब मेरा है, मेरा कुटुंब, मेरा लड़का, मेरा फलाना, जब तुम्हारे है, तुमने पैदा किया भई, तो उसको बना दो न। लगा दो, या इतना धन सम्पन्न, दे दो। तुमने जन्म दिया तो, उसको भी दे दो ये सब। ये कितना बड़ा मोह और भ्रांति है हमारी-मेरा मेरा मेरा, अरे न कोई मेरा न कोई तेरा, ये चिड़िया रैन बसेरा। कर्तव्य पालन करना मैं जानता हूँ, मैं सिर्फ ये बात कर्तव्य कहा शुरू में, कर्तव्य, तव्य माने योग्य, कुरु धातु से कर बना है, योग्य जो है वही करना है, जो योग्य है, मैं वही करूँगा, जहाँ मेरा बाप हो या माँ हो, भाई हो, बहन हो, कोई हो। मैं उनके फंदे में नहीं आता, मैं वो व्यक्ति हूँ, पूछ सकते है,जाकर के सब चीज, ये मेरा जो गृहस्थ में हो गया है। हमारी पीछे है,हम उनके पीछे हम नहीं है। उनको तो..नाते है क्योंकि

उनको कुछ मिलना है, हमसे। हमको न तब मिला, न कोई आशा है हमको, हमको तो कोई आशा है नहीं, हम तो केवल कर्तव्य पालन करते है, बस और कुछ मालूम नहीं। आज जो योग्य करना है, वही हम करेंगे और कुछ नहीं। तब आप एकनिष्ठ हो चुके है, यही कर्तव्य निष्ठ है। जो योग्य है वही करना है, अयोग्य कुछ नहीं करेंगे।याने सन्मार्ग में लग गया, सन्मार्ग, सत्पथ पर आ गये। हँसावस्था में क्या होता है, वो विटनेस है, साक्षी है। कितना भी रहे किसी के, वो निष्पक्ष हो जाता है। निर्वैर हो जाता है, निरपेक्ष हो जाता है, कोई अपेक्षा नहीं रहता है किसी से। हित होता रहे इसी से, समाज का भला हो, भला होता है उससे, समाज भी उसका भला करती है, समाज उसकी भला न करे, भोजन छादन् और जो व्यय चाहिए उनको, जितना चाहिए उतना, समाज न करे, तो समाज के काम के भी नहीं रह जाता है वो। समाज उसकी सेवा करती है और वो समाज की सेवा,उसी तरह से उसके पास जो ऐश्वर्य है, उससे सेवा करता है, ये पारस्परिक सम्बन्ध है। आप ऐसा सेवा करते है और वो साधक ऐसा सेवा करता है। ये है कर्तव्य, ये लेना देना कोई प्रारब्द्ध नहीं बनता। तुर्यावस्था में आने के बाद प्रारब्द्ध नहीं बनता, भाग्य नहीं बनता, पिछला भोगना होता है लेकिन जब से आप रियलाइस कर लिए अपने आपको, आपने आत्मदर्शन कर लिया, ज्योति दर्शन कर लिया, सुषुम्ना मार्ग खुल गया, उन्मुक्त हो गया, आना जाना जिसका है, उसका प्रारब्द्ध नहीं बनता। अभी और जितना है कर्तव्य जानता है, जितने है सुषुम्ना मार्ग खुला है ज्योति दर्शन पाया है, नया प्रारब्द्ध नहीं बनता।

आगे इससे और कौन सी कमाई हो सकती है? आपकी आयु है जब तक शरीर की कर्म करते है लेकिन प्रारब्द्ध नहीं बनता, कोई जमा नहीं होता, भोग भोगने के लिए। कितनी बड़ी कमाई हो गई, वो कीर्तनकार बता नहीं सकता, क्योंकि वो तो खाली पोपट है, पोपट पंक्षी। कीर्तन करना, किर् नाम पोपट, तन माने शरीर। पोपट पंक्षी तो है वो, राधेश्याम, राधेश्याम,

राधेश्याम, करो। ईश्वर है, पांडुरंग है, खूब गाते है, नाचते है, पोपटराम, और जहाँ बिल्ली को देखा पोपट / तोता, ढेंच् ढेंच् ढेंच्, फिर कीर्तन शुरू हो जाता है वहाँ से, ये कीर्तन शुरू होता है। इनसे कोई बोध होता, कुछ होता नहीं। जब तक सतोगुण उदय नहीं हुआ है, प्रापर चेनेलाइस न कर सके, वो गुरु भी नहीं है, कुछ भी नहीं है, वो तो हमसे बदतर है क्योंकि वो व्यापार करता है, नाम बेचकर धन कमाता है, धर्म को बेचता है और ज्ञान को निचोड़ता है। ज्ञान जो मिला है, पुस्तक ज्ञान उसे ज्ञान जिसका नाम है धर्म, जिसे धारणा करके चरित्र बनाया, सेंटर कैनाल के बाहर निकलकर के वो चरित्र बनाया, उस चरित्र को वो पढ़ता है और तुमको सुनाता है खूद नाचता गाता है तुमको भी नचाता गाता है, रोता है,और पैसा खीसे में धरकर चल देता है। न तुम्हें कोई ज्ञान, न उसको कोई ज्ञान। बेचहिं धर्म वेदहि। वेद जो है ज्ञान को बेचते है और धर्म को लूटते है। जितना निकल सके, उतना निकाल लो, वो जो नाचता गाता है, २००/- रु, के लिए नाचता गाता है। जहाँ खत्म हुआ है गाना वो, घूमते हुए उठ गये, ये कमियां है अंदर बाहर, खत्म हुआ उठ गये, कमी नहीं खाली दोष।

तात्पर्य ये है हमारे कहने का ये छः भूमिका तक हम आते है। सप्तम भूमिका तक आप पहुँच जाते है, बिना सतगुरु के वो प्राप्त होता नहीं। और बना रहा उसमें, एक दिन जब होता है। लेकिन जैसे लगा पड़ा हुआ है, वैसे पड़े रहे। नहीं तो कुत्ते की गति हो जाती है, घर वाले भी नहीं पूछते और बाहर वाले तो पूछेंगे ही नहीं। वो तो कुछ मिल गया होगा कुछ, भूत प्रेत, आदि का। बिना महत्वपूर्ण बात के कोई प्राप्ति नहीं होती, स्वानुभव है ये। बातें सुना मैंने मुंगेली में, तब से सतर्क हो गया, सबको कहता हूँ, देखो संभलकर, गिरना नहीं, पीओ लेकिन गिरो मत। जन्म तुम्हारा सफल हो गया, बन गया, क्या बन गया? इस जन्म में सुषुम्ना खुलने के बाद, यहाँ जो ज्योति दर्शन होती है। इस जन्म, शेष आयु जो कर्म आप कर रहे है, उसका फल अब नहीं बनता है। वो अधिकाधिक महत्वपूर्ण होता चले

जाता है, कम कमाई है ये? बताओ मुझे जवाब दीजिये आप लोग।
ये सप्त भूमिका है जीवन के सप्त भूमिका है, ये सात भूमिका इस जीवन में हमको प्राप्त करना है। और ये अभी खाली बातों से बना है स्थितियाँ हमारी। स्थितियों में भेद है, देह की स्थिति अलग होती है रूप, आत्म स्थिति अलग होती है। आज देखना हो तुम्हारे क्या नाम डा. की पत्नी को देखो। वो कीर्ति के पीछे पड़ गई, वो कच्ची गोटी निकल गई, पुजाना शुरू कर दी, मेरे पास ये देवी है मेरे पास वो देवी है, वो देवी है, मैं।

- मैं किसी के घर नहीं गया, पेड़ों के नीचे ही रहा, इस तरह साढ़े ग्यारह साल हम रहे, न हमें मच्छर काटा, न सांप काटा, न भूत लगे न ही प्रेत लगे। मैंने 9 वर्ष की आयु में पढ़ना छोड़ दिया पिताजी को कह दिया कि मैं ये विद्या पढ़ना नहीं चाहता, इससे शरीर बेचना पड़ेगा। जब प्रलय हुआ तब कुछ भी नहीं था-तब एक सत्य था कृष्ण। और तब मैंने अपने आप को पाया, 9 वे वर्ष में ये महासमाधि की अवस्था है। मैं दूसरा साल जैसे लगा, 4 घण्टा उसी में था, सब इंद्रियों का कार्य बंद था, नाड़ी सब बन्द। 4 बजे मेरी हलचल शुरू हुई, बाकी हमको होश है, बहुत याद है। ये वराह कल्प है, काल गणना है।
मेरे पिताजी मुझे पुरोहिती सिखाना चाहते थे, मैंने नहीं किया। मैं पाखंड नहीं करता हूँ, मुझे सब देवी देवता मिले है-जानकी राम गुरु वशिष्ठ, हनुमान, लक्ष्मी, शंकर पार्वती, गौरी, दुर्गा, गणेश, राधिका कृष्ण,और संतों में मुझे बहुत मिले है। मेरे पास कितनी सिद्धियां,शक्तियां आई कि मांग लो जो मांगना है, मुझे कुछ नहीं चाहिए कहकर वापस कर देता था।
मैंने बीस साल दवाखाना चलाया, 24 घण्टे दरवाजा बंद नहीं किये, पैसा ,कौड़ी और कपड़ों से भरे संदूक में ताला नहीं लगाया,और कभी झूठ नहीं बोला। तेल्हारा छोड़ा तो गांव के लोग रोने लगे, पूजा किये, आरती भेंट किये और मुझे यह सर्टिफिकेट मिला-गांव का हीरा चला गया।

मेरे प्राण निकल गये मैं24 घण्टे निष्प्राण रहा, 72 घण्टे निष्प्राण रहा, 5 दिन रात निष्प्राण रहा, 7 दिन निष्प्राण रहा।फिर जीवित हो गया। दुर्ग के घर में 3 दिन निष्प्राण रहा, और फिर जीवित हो गया। डॉक्टर देखकर जाते थे, कहते थे चिंता की कोई बात नहीं, शरीर में प्राण है, अभी कुछ बिगड़ा नहीं है, लेकिन क्या बात है मैं नहीं जानता। इन्हें चाय का पानी, संतरे मौसम्बी का जूस-एक एक चम्मच पिलाओ वे पी जायेंगे। ये मरे नहीं है, जीवित है, यद्यपि होश नहीं है।

अरबों, खरबों, नील, पदम् में आपको एकाध मिल जाये तो मिल जाये, वर्ल्ड में एकाध अनुभवी मिल जाय तो मिल जाय-ये तुम्हारे सामने बैठा हुआ है। ये अहंकार नहीं है। ये जैसा दिखता है वैसा नहीं है, यह साधारण नहीं है, असाधारण व्यक्ति है। इसमें जो अभिव्यक्ति है-वो महाशक्ति है। वह सर्वशक्तिमान है, सब जगह विद्यमान है। इससे बढ़कर ब्रम्हवेत्ता और कोई भी नहीं है, दुनिया में ये जो बोल रहा हूँ। मेरा जन्मजात है, कई जन्मों से है। युग युगांतर की तपस्या है। इस जीवन में छः बार मृत्यु देख चुका हूँ। नौ वर्ष में कुण्डलिनी जाग्रत हुई। नवनिधि हमने सब देख लिया, रिद्धि सिद्धि सब छोड़ दिया, अहंकार में आता है, वह।, पंद्रह साल में घर छोड़ा हूँ, अभी भी हमारी पैतृक संपत्ति है। माँ के पास इतना सोना था कि आज / 28,12, 96; की कीमत में 50-60 लाख से ऊपर का रहा होगा। यह सब छोड़कर और 70 बीघा जमीन छोड़कर गया था।

सन 1938 में हम दूसरी बार समाधि में गये तब से हमारी चिंता दूर हो गई, मृत्यु कैसे होती है, वह मैंने अनुभव किया। मैं महाप्रलय से 1983 तक तपस्या करता रहा। 26 जुलाई 1983 को, अशोक धर्माधिकारी के यहाँ नाश्ते के बाद, पलंग में जाके लेट गया फिर धीरे धीरे बेहोश होते गया और प्रकाश धीरे से फैलने लगा, फैलते फैलते सकल ब्रम्हांड में वह दिव्य प्रकाश; सारा संसार में वह दिव्य प्रकाश फैल गया। संसार में कुछ नहीं रहा-न घर न द्वार, न पैसा न कौड़ी, न पत्ता न पेड़, न पशु न पक्षी। एक

दिव्य ज्योति के सिवाय कुछ भी नहीं, और मैं उसके बीच में।
सहस्त्रार में जाने के बाद 22 दिनों में मृत्यु हो जाती है, ईश्वर कोटि के अवतारी पुरुष ही वहां से लौट आते है। मैं अवतार के साथ आया हूँ।
हम अमेरिका छोड़ आये थे, भारत में कुछ खोजने के लिए, लेकिन यहां कोई नहीं मिला, बस हम अकेले है,अभी तक साथी नहीं है।
मैं जो चाहता हूँ, वो ही होता है, सब अपने आप बन जाता है। हर चीज बिन मांगे पहुंच जाती है। मैं किसी से मांगता नहीं, यह सारा उसका खेल है। मैं कुछ नहीं करता अपने आप हो जाता है, कैसे होता है, हमें मालूम नहीं। मैं जीवन्मुक्त हूँ,ये उसकी लीला है, मैं लीला पात्र हूँ। मानव का पूर्व संचित प्रारब्ध बनाता है, अगर मैं नहीं है तो संचित कहाँ से आया? बताओ ये मुझे।
शरीर छोड़ने के बाद भी मैं आपके पास हूँ ये कोई बोलेगा नहीं, मैं बोलता हूँ। क्योंकि 500 साल पहले के लोग मुझे मिल चुके है।
जो एकमात्र सद्‌गुरुजी को अपना गुरु मानते हो, दूसरा और किसी को भी नहीं। व उनके मार्गदर्शन पर चल रहे हो, या चलना चाहे, उनके लिए ये आश्रम है, ये सब गुरूपरिवार है। चाहे किसी भी माध्यम या रूप से सद्‌गुरुजी का मार्गदर्शन या दीक्षा प्राप्त हो। यहां माध्यम जो है गुरु नहीं है केवल निमित्त मात्र है। गुरुजी ही एक मात्र सद्‌गुरु है।
ये सतगुरु है, ये सत्पुरुष है। ये गुरुजी साधारण नहीं है, यहां बोलता हूँ, वैसा होता है। बुद्धि मेरे अधीन है, मैं बिल्कुल स्वाधीन हूँ। मैं अपनी मृत्यु छः बार देखा हूँ, मृत्यु को पार कर गया मैं, फिर भी जीवित हूँ। सारे हिंदुस्तान में एक भी सत्पुरुष नहीं है, एक भी योगी नहीं है। मैंने परमपद को प्राप्त किया, परमहंस हुआ हूँ मैं। हिंदुस्तानी भाषा सुन लो, मैं परमहंस हूँ, मैंने सब बंधन काट लिया है, मृत्यु केंद्र के ऊपर गया और ब्रम्हरंध्र में स्थायी हुआ।
आपको (सारे गुरु परिवार के लिए / जो गुरुजी को देखे न हो केवल चाहते

हो, उनके लिए भी) जो अनुभव होते है, वह मेरा आशीष है, मैं मेरा होते हुए भी इतनी प्रगति है, यह आशीष है। कलियुग में अब कोई ब्रम्हचारी नहीं है, सबके कपड़े गीले होते है, अभ्यास के द्वारा उसको ही ऊपर चढ़ाना है, उसी का अनुसंधान करना है, अभ्यास करना है। यह अभ्यास है, यह गुप्त है, रस को ही ऊपर ले जाना है और ऊपर ले जाकर फैलाना है। जिसका मन आत्मतत्व में लीन है, वह ब्रम्हचारी है।

पंद्रह साल की आयु में घर बार संपत्ति सब छोड़कर, सब उसके हाथ में है, ऐसा रहना क्या मामूली बात है। मैंने कभी मांग नहीं, पानी तक नहीं मांगा। मैं सब कुछ गोल्डन लाइट में देखता हूँ। मैंने अपना मूल शरीर देखा, इस शरीर का कहाँ से आदि और अंत है। शारीरिक अवयवों का कार्य संचालन सभी देखा है। मुझे आकाशवाणी होती है, मैं लोगों को चमत्कार नहीं बताता। मैंने मस्तिष्क में संस्कार कोशिका को परत दर परत देखा है। मैंने पिनियल बॉडी देखा, उसका कार्य मुझे मालूम है, जिसको तीसरी आंख कहते है।

मैंने भूत बताया, भविष्य बताया, दूरदृष्टि, दूरश्रवण बताया। जीव दान दिया है। मरते हुए को बचाया है। एक समय में कई जगह उपस्थित होना, आपत्ति विपत्ति पड़ने पर, यह किससे हो सकता है? यह कार्य अलग है। यह सब मेरे एक जन्म की तपस्या नहीं है,अनेक जन्मों की है, युग युगांतर की है। मैं collapse होने के बाद फिर ठीक हो गया, ऐसा हो सकता है क्या? मैं बचपन से भीख मांग रहा हूँ, भगवान से, आदमी के पास नहीं गया। जैसे राजा किसी को दे दे, या पूर्ण दान कर दे, वह कुछ पर विशेष कृपा कर सकता है, उस सत्ता रूपी दरबार से करता है। उसी प्रकार वह महाशक्ति (गुरूजी शक्तिमान नहीं महाशक्ति है-श्रीगुरुजी) जैसा चाहे कर सकता है।

मैं समय और काल से परे हूँ, मेरे जैसा विश्व में नहीं है। हमारी वाणी को शास्त्र प्रमाणित करते है। मैं ओंकार हूँ।

मैं तत्व की बात बोलता हूँ। मैं महावीर स्वामी हूँ, वासुदेव हूँ, मैं गुरुनानक

हूँ, स्वामी रामदास हूँ, तुलसीदास हूँ। खाली नाम अलग है, रूप अलग है, काल अलग है, बाकी तत्व एक है, सुषुम्ना एक है, कुंडलिनी एक है, परमपद प्राप्त करने और मृत्यु प्राप्त करने का रास्ता एक है। शरीर की रचना एक है।

मैं शिष्य नहीं बनाता, हमअपने जैसे उसको तैयार करते है। ये स्टेटस है, एक साल नहीं, हजारों साल नहीं, एक जन्म नहीं, अनेकों जन्म लेना पड़ता है, तब ये तमाम बातें होती है। प्रथम कर्तव्य है-अपने आप को जानना। मेरा क्या है? सब तेरा है, इस तेरा में ही भारी रहस्य है, अतः प्रतिनिधि होकर आत्म साक्षात्कार में लग जाना चाहिए। दीक्षा मंत्र है, सद्गुरु चरणौ शरणं अहं प्रपद्ये। शरण में गये, माने तन मन धन, सब समर्पित हो गया। सद्गुरु, सत्पुरुष तो कुछ मांगता नहीं, न भगवान मांगता है, वो तो खाली मन मांगता है, क्योंकि उसके पास मन नहीं है। वो कहता है, तू मन अर्पण कर, मेरे को सब मिल गया।

- निरपेक्ष कुछ न मांगना कुछ न लेना, वो समाज की सेवा कर सकता है, वो समाज से विभक्त नहीं होता, तो समाज से जो विभक्त नहीं वो है भक्त। हम ऐसा, ऐसे लोगों को भक्त कहते है, वरना आज जो है, जमाना आज जो वातावरण है,आज जो परिस्थिति है देश की और जो कुछ है चल रही है मानव समाज में वो प्रत्येक व्यक्ति स्वतंत्र है कोई किसी का आधार नहीं कोई किसी के आधार से आता भी नहीं। कोई किसी को मानने को भी तैयार् नहीं, कोई किसी को सुख दुःख में साथ देता नहीं, मरता है आदमी मरने दो, सारा प्रापर्टी हम लोगों को मिल जाय तो अच्छा है। पड़ोसी की भी है कंगला हो जाय तो अच्छा है, पड़ोसी पर भी पहला हक हमारा होता है। पड़ोस के है अंदर कोई चीज देखना चाहो तो पहले पड़ोसी को पूछो, ना कहेगा तब बिकेगा, अन्यथा नहीं। ये अर्थ हो गया। अब कहाँ सहायक कोई है, कोई सहायक है, कोई सहायक नहीं। तो इंडिविसुलविसम् आज

है, आप सोचिये आप अपना कल्याण कहाँ है, कि धर है, कैसा है? तो वैदिक धर्म में ये बताया, वैदिक धर्म में ये गायत्री मंत्र दिया। गायत्री मंत्र का अर्थ आज आप लोगों के सामने हमने रख दिया। इसलिए हमेशा ये प्रार्थना होना चाहिए। अपने आत्मा से कहना चाहिए कि मेरी बुद्धि तुम्हारे तरफ बनी रहे, तो बहुत अच्छा है। नहीं तो आजकल क्या है, कौन सा बना है, मराठी श्लोक है न सदा सर्वदा, योग तुझा, तुझा घड़ावा, तुझे कारणे, देह माया परावा। सुंदर मिठाई, विठाई, साथ में ये तुझा कारणे, तुझे कारणे देह माया, परावा। ये स्वामी रामदासजी ने, श्लेषार्थ में अपने को कविता दिये, बस इतना कहके हम बस अपना बाइंड अप करते है। इत्यलम। शांतिः शांतिः, शांतिः।

समाज ने दिया वो नहीं है, माने मिशन ने दिया है, हाँ, हमसे वसूल करते है, उनके पास इतना रुपया है कि क्या बताऊँ आपको, अध्यावधि रुपया है, हमसे वसूल करते है और मिशन ने भेजा है। मैं निंदा नहीं करता हूँ मैं सत्य कहता हूँ। हम सत्य की खोज में है, सर्च आफ्टर ट्रुथ, ये मेरा सिद्धांत है, निंदा स्तुति नहीं, मैं किसी पार्टी का नहीं। हम पार्टिलेस् आदमी है। पसंद आ जाय तो ठीक है, नहीं पसंद आये तो ठीक है। अगर आपको फिर से भारतीय संस्कृति को, फिर से उसको पनपने देना है, पनपाना है, उसको उन्नति करना है तो जब तक आप इसमें घुसेंगे नहीं, अरे मूलो नास्ति कुतो शाखा, मूल ही नहीं तो शाखा कहाँ से रहेगी। जड़ ही नहीं तो शाखा कहाँ से होगी भीतर।

मूल स्वभाव से मकार बिंदु हो जाता है तो बिंदु माने क्या? उससे सब पूर्ण है, संस्कृत में उसको सब पूर्ण कहा। पूर्ण वो है जो अनंत शक्ति, महाशक्ति जिसका आदि अंत नहीं है। वही सत्य है, वो पहले से था, पहले से न होता तो ये सारा ब्रम्हांड, जितने ब्रम्हांड है सबको उसने धारण किया, माने पहले से भी था। उत्पन्न किया सब ब्रम्हांड को और धारण भी कर लिया और पालन पोषण, और अपने में लीन भी कर लेता है। उत्पत्ति,

स्थिति और लय, द्वारा जिनके तीनों विपरीत गतियाँ है जिनमें वो उसको धर्म कहा गया। वो जिसने, ये सबको धारण किया है, संरक्षण फिर पालन पोषण आदि सबकी जीविका का प्रबन्ध, उसको पाना ये धर्म है।धारणात् धर्म इत्युच्यते, इसके धारणा से ही मनुष्य जाना जाता है। धर्म उसको फल होता है, धारणा का फल है जो - वो धर्म है। वो सारे ब्रम्हांड को धारण किया उनमें सबसे अलग है आदि अंत पता नहीं चलता। सबसे पहले था, अभी भी है, आगे भी रहेगा। सबमें समाया हुआ है तंतुओ में वही ब्रम्ह है। तो कहा गया, इतना तो कह दिया उसको धर्म कि चाणक्य ने भी कहा है कि चला लक्ष्मी, चला प्राणः, चला लक्ष्मी स, चला चलति मंदिरे, चला चलति संसारे, धर्म एकोहि निश्चलः, धर्म ही निश्चल है। वो धर्म है बिल्कुल निश्चल है, जो .. सबको धारण किया, अभी भी है, आगे भी है। सबमें परिवर्तन है, उसमें कोई परिवर्तन नहीं है। वही शांत है, परम है,निष्कल् है, निश्चल है, अचल है। वो शांत है, वही महान है।

अब महान है तो बहुत से लोग फिरते है जिसको महात्मा कहते है वेषधारी बहुत से ऐसे फिरते है, महात्मा ही महात्मा होंगे। तो महात्मा तो जाना जाता नहीं। तो महात्मा कैसे जाना जायेगा? लेकिन धर्मात्मा जाना जाता है महात्मा नहीं जाना जाता है। महात्मा की कोई पहचान नहीं है अपने पास में, पहचान ही नहीं सकते। वो जो बोलते है मान लेते है, सही है कि झूठ, जो कुछ होगा, कोई जानता नहीं है। आत्मा यस्य स महात्मा, जिसकी आत्मा महान हो, लेकिन वो जाना नहीं जाता। धर्मात्मा पहचाना जाता है, क्यों पहचाना जाता है, मनु महाराज ने लिखा है अपनी मनु स्मृति में। धीर्विद्या सत्यं अक्रोधे,दशकं धर्म लक्षयम।अहिंसा सत्यमस्यं दशमं धर्म लक्षणम। ये धर्म की पहचानने के लिए लक्षण होते है, जैसे ज्वर आने के लक्षण मालूम होते है, अगर ये मालूम होता है, अंग टूटने लगता है, प्यास अच्छा लगता है। जैसे ये लक्षण पैदा होता है भाई इसको ज्वर आने वाला है। छींक आती है सर्दी होने वाली है ऐसी जो लक्षण उत्पन्न होते है, बीमार

होने के लक्षण है या सर्दी होने के लक्षण है, वैसे लक्षण से जाने जाते है कि स्वास्थ इसका खराब होने वाला है। वैसे धर्मात्मा पहचाने जाते है महात्मा नहीं, जितने लक्षण है, दस लक्षण बताये है उनसे ही।
धृति धारयति, वो धारण करता है, भला बुरा जो कुछ मिलता है वो धारण करता है, शांत रहता है, किसी को जवाब नहीं देता। माने सहिष्णुता सब सहन करता है, सब कुछ सहन करता है जो कुछ उस पर बीते। किसी को वो नहीं बोलता, जैसे तुकाराम महाराज सब कोई उसके पीछे लगे है महिलाओं ने क्या किया, उबलता हुआ पानी का घड़ा उनके सिर में डाल दिया, उबलता हुआ पानी डाला गया वो। उसने बोला विठ्ठल तू कितना अच्छा है, कोई शिकायत नहीं न कोई गर्म नहीं, होने दिया कितना बचा दिया, ये है। ऐसा जो कुछ हुआ ये सहन करने की शक्ति आपने ही दिया है मुझको, माने भगवान को उसने सहन कर दिया, अपने आप को दे दिया। फिर कैसे वो बोल सकता है, मेरे में पानी डाल दिया, मेरे में दुःख हुआ, ये मैं वो भूल गया। वो भगवान को अपने मन दे दिया। मन एक ही होता है, दस बीस तो होता नहीं, जब मन भगवान को दे दिया फिर जब शरीर पर जो कुछ बीत जाये, भगवान से जाकर कहता है, तुमने कितना मुझे बल दिया। ये सब सहन कर सका, सब हो सका, इस प्रकार से वो कभी नहीं कहा, अरे बेटे तूने पानी डाल दिये, मैं तेरे घर में आग लगा दूंगा, ऐसा तो नहीं बोला वो। यही सहिष्णुता है, सहन शक्ति बढ़नी चाहिए। धृति माने धारयति धारणा ये शक्ति होना चाहिए, सुख दुःख आदि में जितना भी आये अपने ऊपर कैसे ही हो, उसको शांतता पूर्वक धारण कर लेना चाहिए, निगल जाना चाहिए। तब वो धर्मात्मा जाना जाता है। अगर वो गर्म होता उबलता, तब वो धर्मात्मा है ही नहीं।ये लक्षण है, सहन शक्ति उसकी इतनी बढ़ जाती है कि वहन है, कुछ भी कर दो। वो नहीं बोलता किसी से कि वो वहन कर दिया। रामकृष्ण परमहंस को अच्छी पिटाई की गुंडों ने चार पांच मिलकर, एक सिपाही उधर से निकल रहा था, उनने देखा, दौड़ा

बोला अरे परमहंस को तुम लोग ऐसा कर रहे हो, भागे वो पकड़े, पकड़ के लाये उनके पास में बोले बाबाजी देखो ये लोग आपको मार रहे है न यही लोग है न, नहीं बोले ये नहीं है, ये लोग है हमको नहीं मारे, ये लोग तो अच्छे आदमी है, अरे किसको पकड़ के लाये। सिपाही देखे बोले मैं क्यों घुमू फिर, अरे हमी देख रहे है कि मार रहे है, पीट रहे है, सब कुछ कर रहे है, मारकर गिरा दिये उनको, साधु बना है, परमहंस बना है, ठग बना है ऐसा कहकर पिटाई हुई है। और भागे जब वो पुलिस आये जब पकड़ा तो नहीं, ये है अच्छा आदमी है ये हमको कभी नहीं मारे, हमने इन्हें कभी देखा नहीं सभी अच्छे है। छोड़ दिया भई, पुलिस आ गई वो,ये है। ये धारणा होनी चाहिये, है अपने पास कुछ है? क्षमा, माफ कर दिया, माफ कर दिया नहीं, सामर्थ्य, बुद्धि सामर्थ्य श्राप देने में, आशीर्वाद देने में, समर्थ। वो कहेगा वैसा होता है, नहीं करने से होता है। कर्तुम् अकर्तुम अन्यथा कर्तुम् समर्थः। सत्, सब काम करने में समर्थ है, इसे परस्पर विरोधी कहते है। हाथ नहीं है करता है, पैर नहीं चलता है, मुँह नहीं खाता है, वाणी नहीं बोलता है। परस्पर विरोधी होता है, ये लक्षण होते है धर्म के। तो धि माने सामर्थ्य अपनी सामर्थ्य के बाहर नहीं जाना चाहिए। ना धन से, न शरीर से, न मन से, न वचन से,क्रोध मोह अपनी जहाँ तक है अपनी वही तक काम करें, जहाँ तक बल है जहाँ तक शक्ति है। वरना इंकार कर लेना, हाथ जोड़ लेना। और इतना श्रम न करें कि बुखार आ जाय, कि डाक्टर को बुलाना पड़े, तो तन मन धन से जो कुछ कार्य किया जाय, अपने सामर्थ्य के बाहर न जाये। आप मनुष्य है, मनुष्य की सेवा तो करनी चाहिए। दम अपने आपको वश में रखना चाहिए, शरीर ये होता है ऐसा करना, ये ऐसा करना, लोग कहते है, ऐसा करना चाहिए, वैसा करना चाहिए, सब बहकावे में नहीं आना चाहिए। सोचना चाहिए, नये नये सोचना चाहिए। किसी ने कुछ कहा गड़बड़ नहीं करना पड़ता है वहाँ से जाओ, ये सोचना

चाहिए, सोचने से पहले आधार हो। व्यक्ति क्या है, कौन है, अपना हितैषी है, सम्बन्धी है कि कौन आदमी है। क्यों बाहर ले जा रहे है, सब सोचना चाहिए, एकदम वो बाहर नहीं जाना चाहिए। अपने आपको वश में रखना ये है। अपना मन, बुद्धि और शरीर को वश में रखना कभी भी कोई भी काम सोचकर करना चाहिए, बिना सोचे नहीं करना चाहिए। सहसा करके पछतायेंगे, जल्दबाजी नहीं करना चाहिए। करना है पूछकर करना, लोगों के सलाह लेकर करना, तब उसको आनन्द मिलता है। अस्तेय - चोरी नहीं करना चाहिए, कोई भी चीज नहीं छुपाता, अपने घर में सब ओपन होना। सब सीक्रेट ओपन, जन्म से ही बच्चों को जो कुछ हो सब ओपन करना। कहो हाँ अगर तुम्हारे मतानुकूल हो तो, अगर चोर.. हो तो, उसे कभी अपने गुप्त बात नहीं बताना चाहिए, क्योंकि गुप्त बात का फ़ायदा लेकर तुमको नंगा कर देगा। वो तो देखते है तुम सच बोलो और मैं मार दूँ। अभी आपने कहा, बैर बेचने वाला सच बता दिया और मारा गया। तो सभी बातें सबको नहीं कहा जाता। चाहे पति हो, या पत्नी हो, या कोई भी हो, गुप्त रखना पड़ता है। अस्तेय - चोरी नहीं करना चाहिए, कुछ चीज नहीं छुपाना चाहिए। जो छुपाने लायक है वो ही छुपाना बाकी सब प्रकट कर देना है। सब कोई अधिकारी नहीं है, कुटुंब में, अनाधिकारी भी होते है। शौच - पवित्र होना चाहिए, माने शरीर पवित्र होना चाहिए। साफ, सुफ कपड़ा पहनना चाहिए, फट गया तो सी लेना चाहिए। सहन करना चाहिए, अच्छी प्रकार से स्वास्थ बनाये रखना चाहिए। उसी प्रकार से ये मन को भी साफ रखना चाहिए। मन के जो मल है, काम क्रोध मान मत्सर आदि राग द्वेष, सब छोड़ दिये राग और द्वेष ये मेरा है ये तेरा है। मैं, मेरा, तै, तेरा ये जो भेद है जहाँ तक हो सके, उसको दूर करने का प्रयास करके रहना चाहिए। शौच माने शुचि जैसे अंदर बाहर पवित्र होना चाहिए। बाह्य भी पवित्र रहते है, वो मंत्र पढ़ने से कुछ नहीं होता, आचरण में लाने से होता है।

इंद्रिय निग्रह - अपनी इंद्रियाँ अपने वश में, जितेन्द्रिय होना चाहिए। जो मन में आये ऐसा किये, मन में आये वैसा खाये, ये नहीं होना चाहिए। सहन वृत्ति भी होना चाहिए, जितेन्द्रिय होना चाहिए। अहिंसा - जहाँ तक हो सके सबका कल्याण हो, सबका शुभ हो सके, सबको लाभ हो, होना है, अपने द्वारा सबको हित पहुंचाए। सबका हितैषी बना रहे, जहाँ तक हो सकता है आपसे, जो कुछ है उसके पास में, तन मन धन के द्वारा, जीवन भर वो हितैषी रहे समाज् के, वो समाज का एक घटक है। घटक है समाज का, समाज का बहुत बाद ऋण है, हम को क्या करना समाज से, ये उदण्ड पना है, आप करे। समाज आपको फेंक दे, तो कहीं के नहीं रहोगे आप। सत्य - जहाँ तक हो सत्य बोलना चाहिए, अगर किसी का जीव धोखे में है वहाँ झूठ बोलकर उसका जीव बचा लेना। किसी का घर उजड़ता हो चोर आये लूटने के लिए तो झूठ बोलकर उसका संपत्ति बचा देना। और किसी कन्या का घर बसता हो, उसका विवाह होता हो, उसका जो भी हो अधर्म हो, तो कभी उसको परोसा नहीं रखना चाहिए। उसका धूल में पर्दा डालकर उसका घर बसा देना चाहिए। ये तीन शब्द के जो स्थान है, तीन जगह है तो ये झूठ पुण्य हो जाता है। झूठ नहीं बोलना चाहिए, झूठ यहाँ पुण्य कार्य है, ये झूठ नहीं ये व्यवहार है। व्यवहार में रखा जिससे वो व्यक्ति आदर्श होता है। घर न उजड़े, बसाये। जीव न जाने दे उसको बचाये। तो तात्पर्य ये है यहाँ झूठ बोलने से अगर कल्याण होता है तो वो झूठ, झूठ नहीं है, उसको पुण्य माना गया है। अहिंसा, सत्यं, अक्रोधं, क्रोध नही करना चाहिए। गर्म नहीं होना चाहिए, क्यों नहीं होना चाहिए, ये सब साहूकार है, ये सब वसूल करने आये है। रोज उऋण हो रहे है तो क्यों गर्म होना। जैसा जिसको देना है वो हर तरह से देगा, चाहे हँसकर दो, चाहे रोकर दो, प्रसन्न चित्त क्यों नहीं देते। मनु ने अपनी स्मृति में लक्षण बताये है, धर्मात्मा के, ये दस प्रधान लक्षण होते है, धर्मात्मा के।

महात्मा के कोई पहचान नहीं है, वो आत्मरति है, ये आत्मक्रीड़ है।

आत्मरति जो होता है जैसे रतिसुख होता है केवल पति पत्नी को हो अनुभव होती है, अन्य संसार के, अन्य कुटुंब को उसको मालूम नहीं होता, न पता रहता है उसका इस प्रकार से आत्मरति है। दशकं धर्म लक्षणम, वो आत्मक्रीड़ है, वो अपने जैसे सबको तैयार करता है। वो समाज का हितैषी होता है। ये तो खाली अपना पेट भर लिया, अपने में मस्त है, लेकिन समाज के काम का नहीं है। वो समाज में वो भाग लेता ही नहीं, वनवे ट्राफिक है उसका। और यहाँ तो ओपन द्वार है बिल्कुल, ओपन चीज है कोई भी आओ, कोई भी जाओ, कहाँ भी जाओ।

- उसे फिर से यह शरीर प्राप्त नहीं होता है, शरीर प्राप्त होता है। लेकिन ज्योर्तिमय पिंड है, उसका शरीर ज्योर्तिमय हो जाता है।
  रूप तो खोल मात्र है, अंदर वही है, और मैं ही वही हूँ। स्वरूप चिन्तन के इसी भाव में मगन रहते है। ज्ञानियों का यही भाव है, यही ज्ञान है।
  एक सेल से आप, अनेक सेल में देह पाये है।अब आकुंचन के द्वारा ,उसी सेल रूपी बिंदु से देह को प्राप्त करना है ज्योर्तिमय देह।
  आत्मज्योति यह इतना सुंदर है कि उसमें लीन होने से सब कुछ आनन्दमय हो जाता है। पुण्य और पाप से परे हो जाता है। तल्लीनता (उसमें / उसके) को प्राप्त करना, उस आनन्द में मगन रहना, यही ध्येय है।
  यह आत्मज्योति है वह ही कल्पतरु है, सब ऋद्धियाँ सिद्धियां इससे सम्भव है।
  ज्योति के रूप में उसका ध्यान करना चाहिए, जपना चाहिए, इससे जो आनन्द प्राप्त होता है वही सच्चिदानंद है।उसे ही पकड़ना है।
  गुरु प्रसाद से दिव्य शक्ति कुंडलिनी जब वह भ्रुवोंमध्य में खड़ी हो जाती है तब सम्पूर्ण ब्रम्हांड प्रकाशमान हो जाता है।
  पलक मारने मात्र में जो समय लगता है, अगर उतना भी आपको मिल

जाय, ज्योति दर्शन हो जाय तो आपका कल्याण हो जायेगा।देखिए आप लोग उसी ओर जा रहे है।

दृश्य का उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। द्वैत से मुक्त होकर भगवान की अप्रत्यक्ष अनुभूति करते रहता है। एकत्व में आने के बाद, स्थिरता को अपनाना पड़ता है। जब वह अपने आप में लीन हो जाता है-तब योगक्षेमं वहाम्यहम, स्वयं होने लगता है।

अभ्यास इतना करो कि आत्मज्योति के सिवाय कुछ न रहे, यही परम ब्रम्ह है, यही अहं ब्रम्हास्मि है।

ये जो अखण्ड ज्योति है, सारे ब्रम्हांड में फैल जाती है। एक ज्योति के सिवाय ब्रम्हांड में कुछ भी नहीं है। स्त्री या पुरुष तो बाहरी रचना है, भीतर एक ज्योति के कुछ नहीं है।

आपकी बुद्धि में सत्य के सिवा कुछ नहीं रह जाता, वो जैसा सोचे, जैसा चाहे, वैसा होता है। आत्मा को देखकर, आत्मज्योति को देखकर, आत्मज्योति में उसका प्रवेश हो जाता है। माने परम शक्ति,आपको प्राप्त हो जाती है। सारा हित (अपना,समाज,राष्ट्र का) इसमें निहित है।

लव मात्र भी ज्योतिदर्शन हो जाय, तो प्रत्यवाय नहीं है, अर्थात वो घटता नहीं है, बढ़ता चला जाता है।

जिससे (पद्धति) आप लोग अभ्यास करते है, और ज्योति दर्शन हो रहा है, उसे हमने धर्म कहा है। जब से आप दर्शन करते है,उस घड़ी से किये गये कर्मों का प्रारब्ध नहीं बनता।

मैं सब कुछ गोल्डन लाइट में देखा हूँ। मैंने अपना मूल शरीर देखा, इस शरीर का कहाँ से आदि और अंत है, शारिरिक अवयवों का कार्य संचालन सभी देखा है।

शरीर को अपना मानकर देखते रहोगे तो संसार ही दिखेगा। जब इसे अपना न मानकर देखोगे-तो सर्वत्र परमात्मा ही दिखेगा।

एक बार भी ज्योति स्वरूप आत्मा का दर्शन हो जाय, उसकी तुलना में

दस, दस अश्वमेघ करने वाले भी नहीं आते।
उसका कोई नाम नहीं,ॐ को ही कहा गया, वो आत्मदेव है-जो अपने अंदर स्थित है,स्थिर है। स्वयं ज्योति है, सूर्य सा वर्ण है। हमारे अंदर बाहर ऊपर नीचे है, हम उसके अंदर है।
सूर्य माने ज्योति माने ज्ञान।आत्मा रूपी सूर्य जब प्रकट हो जाता है-तो क्या नहीं हो सकता? वो जैसा बोलेगा वैसा होगा, वो चलेगा तो दुनिया चलेगी। केवल संकल्प मात्र से सब कार्य होते है।
Light of god surrounds me-यह सत्य है। यह सत है, यह परम ब्रम्ह है।
ये तुरीय अवस्था है,उसका शरीर प्रकाशमय हो जाता है। ये वो शरीर है, जिसे न आग से जलाया जा सकता है, न शस्त्र से काटा जा सकता है, न हवा से उड़ता है, न पानी से भीगता है।
मैं या अहं के समाप्त होने पर,ज्योर्तिमय पिंड या एबव टाइम एंड स्पेस, अनहद, या सेंटर ऑफ पीस- के ऊपर की स्थिति प्राप्त कर लेता है।
जो ज्योर्तिमय पिंड में चला जाता है फिर उसको क्रोध नहीं आता है।
अंदर बाहर सब जगह ज्योति है। वो ज्योति हमको दिखाई नहीं देती, लेकिन बिल्कुल दिखाई देती है। बिल्कुल सत्य है-आत्मा स्वयं ज्योर्तिभवती।

- ऐसे ये नौ केंद्र है, जो कि अंग्रेजी में कहा गया है कि-अनकांशस कंट्रावर्सन, दूसरा कांसस कंट्रावर्सन, तीसरा मोटर सेंसरी, अकेजिया, आर्बिटेरी, वाकब्यूलरी, विटलरी और एरिया इस तरह से ये नवनिधि है। निधि जो है, धि नाम बुद्धि के है, नि नाम निश्रेयश के है।
  ये जो बुद्धि, इस प्रकार से ज्ञान विज्ञान के द्वारा योग्य सत्पुरुष या आचार्य के द्वारा अभ्यास करके जब साधक सहस्त्रदल कमल पहुंच जाता है, साधक जब परमोत्कर्ष को प्राप्त होता है। तब ये सारी सिद्धियां ये पावर

शक्तियां, और ये (नव) निधियाँ, माने जो जमा है, केंद्र में जो मस्तिष्क में जमा है, ये सब के सब कुछ प्राप्त हो जाता है। ये प्राप्त हो जाने के बाद यही तो ब्राम्ही विचार है, यही ब्राम्ही शक्ति है, और ब्राम्ही कला। ये जो ऊर्ध्व त्रिकोण है, वो प्राप्त होता है और वो महान हो जाता है।

या वो सदाशिव ऐसा कहा गया है, जब वो परमोत्कर्ष को पहुंच जाता है, ऐसे साधक को सदाशिव कहा गया है। षष्टम भूमिका में शिव कहा है और सहस्त्रार भूमिका में सदाशिव कहता है।

हां, मनुष्य कृतार्थ तभी होता है कि जब सत्पुरुष के बताये हुए मार्ग में अनुसरण करके और उस तरह से अभ्यासरत होता है, तभी वो कृतार्थ होता है। इसलिए कृतार्थ होने के लिए कार्य से विमुक्त होना है और चित्त से भी विमुक्त होना है।

कार्य बोले- ऐसे सात भूमिका ये बताये है: ज्ञेय शून्य, हेय शून्य, प्राप्याप्राप्य, चिकीर्षा ये कार्य विमुक्ति है। और चित्त विमुक्ति जिसको कहते है, ये चित्त की कृतार्थता, गुण लीनता, आत्मस्थिति। ये सात प्रान्त है, ये सात भूमिका है। ये सात भूमिका से, परे जाने पर आत्मस्थिति होती है, जब, आत्मसाक्षात्कार होता है।

१. ज्ञेयशून्य-जिसको जान लेने पर कोई जानना बाकी न रहे। २. हेयशून्य - जिसको छोड़ देने पर और कुछ छोड़ना बाकी न रहे।३. प्राप्याप्राप्य - जिसको पा लेने पर और कुछ पाना बाकी न रहे।४.चिकीर्षा - गुप्त कर्मों से, कोई भी करना बाकी न रहे। ५. चित्त की कृतार्थता-चित्त की कृतार्थता माने सत्पुरुष को पा लेने पर, उनको योगोपविष्ट: मार्ग में ग्रहण कर और अपने जीवन को उस प्रकार से सफल बनाने के लिए, रत हो जाना।, कृतार्थ (कृतार्थता) - सत्पुरुष के बताए हुए मार्ग को संदेह, शंकारहित होकर के उसको धारण करे। और क्या करे - ६. गुणलीनता-सत, रज, तम गुण जो है उसको लय करे आत्मा में। माने बुद्धि को शुद्ध कर और प्रकृति में लय करे। और बुद्धि और प्रकृति दोनों शुद्ध होकर के आत्मा में

लय करे। ७. आत्मस्थिति - (क्र.६, का) यहीआत्मस्थिति है। यही आत्मसाक्षात्कार है, तब ये दीया जलता है। स्वामी रामदास जी ने कहा- वनहि चेतवारे चेत..चेततो, केल्यानी होता है, रे, आती.. तुम्हारे पास लकड़ी जलाने का है, तुमको कुछ शुद्ध करना है। तो लकड़ी जलाना पड़ता है, आगी को चेताना पड़ता है, आगी को चेता करके, माने लकड़ी सूखी है, जब तक लकड़ी है नहीं जलाओगे, तब तक जलेगी नहीं। इसलिए लकड़ी को जलाना पड़ता है, जलाने से लकड़ी जलती है, करने से होता है इसलिए प्रथम कर्तव्य है ये लकड़ी को जलाना और अपने ज्योति प्रकट करना चाहिए।

और वो ज्योति,वो है सुषुम्ना - सुषुम्ना को प्रज्ज्वलित कर और अंतरमार्ग में प्रवेश कर और आत्मज्योति का दर्शन करना है। यही चित्त का कृतार्थ होना है और यही आत्मस्थिति है, यही साक्षात्कार है। इससे बढ़कर और कुछ पाने को बाकी नहीं, यही सम्यक सार है, यही सार है। इसी का नाम है, संसार। सब आ गया।

और भी कहा है, बुद्धि समाधि के योग से सूक्ष्मता को प्राप्त होती है। बुद्धि की सूक्ष्मता की सीमा, साक्षात्कार है।

- लोगों ने दिया है, हिंदी में कहावत है, फूस का तापड और उधार का खाव कितना दिन चलेगा। ठंडी खूब पड़ती है, घास का आग लगा दिए फुर्र। और उधार का खाना कितना दिन चलेगा। तो कितना भी कोई दे, वो हाथ नहीं आता। इस पर एक कहानी याद आई हमको-विष्णु और लक्ष्मी में एक चर्चा हुई। लक्ष्मी जी कहती है कि देखो हमारी बोलबाला है दुनिया में। मैं सबको बिल्कुल समान चाहती हूँ, सबको देती हूँ, घर घर हमारी पूजा होती है। क्योंकि मैं सबको देती हूँ, सबको मैं सुखी रखती हूँ। तुम्हारे भक्त तो सब भूखे है और नंगे फिरते रहते है। हाँ बोले ठीक है, बाबा। नहीं मेरे भक्त है बोले कोई भूखे और नंगे नही फिरते है, सब मस्त रहते है, मैं

नहीं मानती। चलो अपन देखे, मेरे भक्त को चाहिए नहीं, मेरे भक्त है कुछ चाहिए नहीं बिल्कुल नहीं चाहिए। और ऐसे भी है मेरे भक्त भी नहीं है, मेरे भक्त भी नहीं है, हम उसको देना भी चाहे वो लेगा नहीं, वो नहीं लेगा। तो बोले ऐसे कैसा चलो देखते है, दोनों ने मनुष्य रूप धारण करके साधारण मनुष्य रूप बना करके मिडिल क्लास के लोग जैसे होते है। लक्ष्मी जी कहती है आनन्द मगन है सब, विष्णु जी सुनते नहीं। भक्त जा रहा, विष्णु ने क्या किया, एक नौ लखा हार रत्नों के सोने के, जिस मेड़ से वो जा की जगह जिस मेड़ से वो जाने वाला है तो, विष्णु ने क्या किया, जिस रास्ते से वो व्यक्ति जा रहा था, रख दिया, ऐसे बिछा दिया पूरे मेड़ पर ताकि उसका पैर पड़ेगा ही, इतना बिछा दिया लंबा तो पैर पड़ेगा ही, पड़ेगा तो जरूर देखेगा, क्या चुभा क्या है, हाँ, लक्ष्मीजी बोले ठीक है।

अब दो व्यक्ति वहां उस रास्ते से गुजर रहे थे, एक भक्त है और एक साधारण। भक्त जब चला है, भक्त ने कहा कि भई, अपन जा रहे है गांव में कुछ ऐसे भक्त लोग है जो कीर्तन विर्तन करते है चलो आज रात को यही अपन मुकाम करते है।और भजन कीर्तन करके आगे निकल जाएंगे, तो वही से बाईफरकेसन लिया और चला गया। लक्ष्मीजी देखे हमारे भक्त जो होते है न उनको चिंता किसी बात की नहीं है। उनको चिंता है कि खाली हम जहां भजन कीर्तन हो तो वहां जाएंगे रात अच्छी बीत जायेगी। खाने पीने को मिलता ही है जहां रहेंगे, भजन पूजन करेंगे तो पूछेंगे लोग। देखो ये मेरे भक्त है ये अपना भजन पूजन में रंगे हुए है। यानी कर्मठ लोग, कर्मठ अलग चीज होते है बिना पैसा काम नहीं करते भला। मेरे भक्त होते है उनकी ये आवश्यकता नहीं है। ये उसी में मस्त रहते है, भक्ति पूजन में रहते है। हां बोले बात तो ठीक है।

दूसरा बोले जिनको जरूरत है, नौकरी चाकरी जा रहा है ढूंढने के लिए, इसको आवश्यकता है। देखो हार वही पड़ा है, वो क्या करता है जब पास पहुंचता है, जैसे पांडेजी का घर आ गया, वो क्या करता है बंद कर देता है आंख को, देखो बोले अंधे कैसे चलते है, भई अंधे लोग कैसे चलते है। फिर

चले एक मेड़ आया, वहां पर बाइफर केसन था, जो उसका पैर गया इधर अरे बोले सीधा रख, तो वो जो मेड़ था जिस पर हार रखा था, वो तो छूट गया और दूसरे मेड़ से वो चला गया। लक्ष्मीजी को भगवान बोले देखे, प्रारब्ध में नहीं है न, वो आ रहा था न यही रास्ता है न उसकी, मैंने डाल दिया न वो वहां। उसको नहीं है, ऐसे बाप दादा तुम्हारे रख दिया है, भर दिया है, हिसाब से जन्म भर बैठ के खा सकता है, लेकिन दिया नहीं है वो घर में रहकर नहीं मिलता है वो औरों का हो जाता है। ये दो तरह के हम, जो आप, हम सब में है। ये आप समझ सकते है, कि हम कितने अच्छे है, क्या बुरे है , क्या नहीं, जो बोयेंगे वही हम काटते है। इसलिए कभी घी घना कभी मुठी चना, कभी वो भी मना। इस कहानी से कितना अच्छा अपने को उपदेश मिला। कभी घी घना, सबका सहायक रहना, मर्यादा पालन करना। जब तक समाज में रहना, आपको कुटुंब में भी रहना है, समाज में भी रहना है, राष्ट्र में भी रहना है। कभी धार्मिक कार्य में साथ रहना, कभी राष्ट्र के कार्य उसके भी साथ रहना है। इस प्रकार से ऐसे बहुत से नियमों में रह करके अपना जीवन यापन करना, जीवन व्यतीत करना है। जैसे कभी, घी घना होता है सब अच्छा माल खाते है। कभी मुठी चना भी होता है प्रवास में निकलते, कभी ऐसे भी होता है कि सिधोरी बना हुआ है दिन भर खाने को नहीं मिलता। ऐसा भी प्रसंग आता है कि अपने पास है लेकिन उसको खोलकर खाने का समय नहीं मिलता। कभी घी घना, कभी मुठी चना, कभी वो भी मना। ये समझकरके धैर्य के साथ में, निश्चय के साथ में, अपने कल्याण के लिए। मान खोकर के, अरे ये दुनिया है रूठ जाती है फिर से करो, ऐसे करते करते, आनन्द होगा, कल्याण होगा, आपके जीवन चरित्र उत्तम होगा, और घर में भी प्रिय होंगे, समाज में भी प्रिय होंगे, सब लोग आपका चाहता है। आप आदर्श हो जायेंगे, समाज में। कोई ये कहने की बात तो नहीं है। जहां तक हो सके।कहाँ से चले थे, नव भक्ति, हां नवभक्ति।

ये भक्ति है, भक्ति है माने सेवक, अपने सेठजी को प्रसन्न करने की जो पद्धति है, वो पद्धति आपको मालूम होना चाहिए। नवधा भक्ति-नव में एक कोई भी धारण करो। भक्ति माने सेवा करने की पद्धति, कैसे सेवा की जाय, वो चीज सब कुछ, कोई सतगुरु, सत्पुरुष से पूछ करके, सतगुरु को पहले टटोल लो, समझ लो, जान लो, और फिर उसके द्वारा, अपने घर में रह करके अपना कल्याण करो। आपका जो आपका इष्ट है, उसको प्राप्त कर सकते है, जो चाहिए आपको, असम्भव कोई चीज नहीं है, सब कुछ सम्भव है। इसी पर मैं, ये मानव प्राणी सृष्टि में सबसे श्रेष्ठ प्राणी है। इसमें ज्ञान है और ज्ञान ही श्रेष्ठ है। और उसके बाद ज्ञान का बुद्धि है माध्यम, माध्यम है बुद्धि। ज्ञान का माध्यम क्या है? ये बुद्धि। ये बुद्धि पूर्व से आप, सांसारिक संसर्ग आपत्ति विपत्ति, दूर होकर के और अपने आप में जो आनन्द, स्वानन्द जिसे कहते है, ये परमानंद है। इसमें आप सदा आप मग्न रहेंगे। सारे दुःखों से छुटकारा मिल जायेगी। आज के लिए इतना पर्याप्त है। इत्यल्म।

माने कान्सट्रक्टिव डिसट्रक्टिव, कान्सट्रक्टिव डिसट्रक्टिव, इसी में हमारा ये सब सारा जीवन चला जाता है। माने सतोगुण और तमोगुण। ये सतोगुण है, तमोगुण है। रजोगुण माने सक्रिय एक्टिविटिस, तुम्हारे मूवमेंट , तुम्हारे एक्टिविटी। रज माने एक्सन, एक्टिविटी, एक्टिवनेस। तमोगुण और रजोगुण, तो ये जब तक ये है आप, कुछ भी नहीं है, आप नाम लिया करो, जो कुछ किया करो, सारे बातें जो है। तो तात्पर्य ये कहना है प्रथम ये नहीं होना चाहिए। ठीक कह रहा हूँ न, आप लोग डॉक्टर है, अभी मैं बोला हूँ। ये सब देखा हूँ मैं, मैं आपको गवाही दे दूंगा। गोल्डन लाइट में हमको सब दिखता है, डॉ व्ही. ऐ. शिंदे आपको पढ़ाये है। एक्जाम लेने के बाद बुलाये उनको, नही तो चलिए मैं चला हूँ जहां से। दो साल के बाद वो उत्तर दिए हमको शुक्ला, सी. के. शुक्ला। उसने जो कहा था, हेलिक्स देखने के बाद, तभी पुस्तक निकाले, डॉ खुराना । अभी डॉ आर. पी. पांडे गये अभी।

अभी बुला लो, आज तो नहीं आयेंगे, वो उनके लड़के को बुला लो, उनसे कहा गया भई ऐसा ऐसा हमको दिखा। पिक्चर बताया उनको, कई पिक्चर देखा मैंने, चादर फैला हुआ है, गोल्डन लाइट में। हमको दिखा है, कई पिक्चर दिखा है हमको। गोल्डन लाइट में दिखता है हमको, मैं कुछ काम नहीं करता। सब दिखता है हमको, बिल्कुल। ऐसे मैंने हेलिक्स देखा, उसका फंक्सन देखा। और सुना इंग्लिश में -इन आल देयर आर 64 कॉम्बिनेसन। बॉडी को देखा है, बॉडी में, अपना काम होता है, हिंदी में कहा। क्रोमोसोम देखा 1981 फर्स्ट टाइम देखा जो मैंने श्रीनगर में, क्रोमोसोम जो है, इसमें ऐसा ऐसा है। माने क्काइल्स देखा और जो क्काइल्स ऊपर है, ये ऐसे चमकदार दूध के जैसी दूध के, एक चमकदार था, माने थाउजेंड ऑफ माने, एक चमकदार याने पानी है, उन्होंने बताया, ये क्रोमोसोम है। मैं झूठ कभी बोलता नहीं, आचार्य जी, अर्चना, मेरा जीवन, ऊ हूँ, कोई नहीं जान सकता, न कोई समझ सकता है। और ये मुझको 75 में दिखा ये क्रोमोसोम है।और ये तब की बात है, उसके बाद हम चले आये थे, तो ये अवयव सब दिखते है, हमको अपने आप होता है। तो तात्पर्य ये कहने का ये बाह्य संवेदना शुन्यत्व पहले होता है इसका नाम प्रत्याहार है। प्रत्याहार, तब आपका जो मन है, मन बुद्धि चित्त अहं माने मैं जो आप है। मैं मैं करता है जो आप है। तब क्या होता है, धारणास योग्यसा मनसः। तब धारणा करने योग्य।

- ये परमानंद / ब्रम्हानंद, है ये आनंद कभी दूर नहीं होता। ये परम् ही आनंद है। यही सत्, चित, आनंद है। तत्वात्मा चित्त मन बुद्धि आनंद से भर गया। याने किसी से पकड़ना नहीं ये सब कुछ आप है। ये क्रियाशील है। फिक्सेसन ऑफ माइंड, एक तत्व में चित्त फिक्स करना, ये आधुनिक काल में, यहाँ से शुरू करते है जो कि अंतिम (समाधि की ओर आ जाती है) समाधि माने शुरुआत, धि नाम बुद्धि के।अभी आप अनेको में समाहित

रहते है ये, अनेक चित्त जो तुम्हारा है, अनेक पति जो है तुम्हारा, और तुम सबके दास हो, उस अनेक में से निकालो एक कोई, एक को फिक्स करो। एक तत्वा अभ्यासा तन्निरोधाः- व्यास जी का सूत्र है ये, हाँ ऐसा है।ऐसी करुणा ये..ज्ञानदेव का ये कहना है। एकतत्वा बुद्धि उद्धरहि मनः, ये सुना है। आपको शब्द जो मिला हमको आज, भूल नहीं सकता हूँ आपको। उसका कोई बैरी रह नहीं जाता। अहिंसां प्रतिष्ठितायाँ सत्य, कोई बैरी नहीं..कोई रह ही नहीं जाता।अतिशय अद्वितीय, कौन रह जाता है, हमीं तो है सब जगह। हमारे तो है सब रूप है। सत्य सत्य प्रतिष्ठायाँ क्रिया फलाश्रयत्वं । जैसे क्रिया करता है उसका फल पीछे पीछे चला जाता है। जैसे गाय जब बियाती है, चाट चूट के बछड़े को खड़े कर देती है, ऐसे बछिया बछडा खड़ा हो जाता है, गाय चली चला उसके पीछे दूर तो रहना नहीं है, यहाँ दूध पीना है, तो बछिया या बछडा जाता है बराबर जाता है और थन को ही मुँह लगाता है। ये सब उसके कर्म राशि है पुनर्जन्म के, उसको सिखाना नहीं पड़ता, कौन है, क्या है, ऐसा। थन है,वो बछडा वही जाता है, जहाँ वो थन है वही वो मुँह लगाता है, वही चुकुर् चुकुर् चुकर् अपना पीना शुरू कर देता है। गैय्या चली कि चला वो उधर पीछे पीछे। ये है सत्य, क्रिया फलाश्रयत्वं .-आप जो करेंगे उसका फल तत्काल है, उसके पीछे लगे ही हुआ है, तत्काल माने लगे हुआ है, पीछे पीछे। ये हम कहते है किस्मत की बात है मालिक के हाथ है अपनी क्या बिसात है। इसलिए वही कहता हूँ मैं, वो क्रिया सक्रिय है उसका फल उसके पीछे पीछे, कहीं भी जाओ। हम कहते है यहाँ लोग, लोग समाज के व्यक्ति, लोग सबको कसते है। लोग समाज को कसते है, अपने आप को नहीं कसते, मैं अपने आपको कसता हूँ, मैं लोगों को, लोग को नहीं कसता। लोग से हमारा कुछ लेना देना है नहीं, हम अपने आपको कसते है, जो हमारे अंदर है। ऐसा जो परम है, आत्मा ऐसा जो परम है। संस्कृत में लिखा

है-सत्य प्रतिष्ठायाँ क्रिया फलाश्रयत्वं । ये क्रिया ये, जो क्रिया करेगा उसका फल तत्काल है, उसके पीछे लगे ही हुआ है, जैसे सूर्य और उसकी किरण, सम्बन्ध विच्छेद नहीं है। चन्द्र और उसकी किरण, सम्बन्ध विच्छेद नहीं, चन्द्र और किरणें दोनों एक है, इसी तरह से हमारा क्रिया सत्य जो है, जो कुछ हम कर्म करते है आत्मानुसंधान में, तो मैं जो और आत्मा है, ये दोनों एक है।संबन्ध विच्छेद नहीं है, उसका क्रिया, क्रिया फल तत्काल है। उसका फल क्या है - प्रकाश। इस तरह आप जायेंगे जो उसकी क्रिया है, तो उसका फल क्या है - प्रकाश। जैसी बछड़ी खड़ी हुई और बस थन को मुँह लगाये पीये बस गाय चली, माँ चली वो चला, ये है सत्य। बताइये सत्यवादी कौन है? अहिंसा, अस्तेय, चोरी, यहाँ कोई देख न जाय, यहाँ कोई देख देख न ले। कौन देख न ले, कौन देख न ले। खुद अपने में चोर है, और कहता है मैं चोरी नहीं करता हूँ। सर्वरत्नोंपस्थानं ..जिस दिन ये स्थिति बनती है वो अंतिम स्थिति है। सारी दुनिया है, वसुधैव कुटुंबकम। सारा वसुधा उसका है, होना है। कहीं भी जाय वो, कहीं भी जाय, वो ज्यों के त्यों है, उसकी जो आवश्यकता है, होगा, होता है। योगक्षेम वहाम्यं..कृष्ण कहता है, वो कृष्ण है, वो मैं ही हूँ, वो वासुदेव स्वरूप है वो, वासुदेव है वो। वो सब उसमें है, सब उसका है। सारा विश्व जो है, ऐसा जो सर्व व्यापक जो है, ऐसा जो है, तो मांगना कहाँ जानता है, कहाँ मांगना है और कहाँ छुपाना है, कहाँ अभाव है, इसलिए जो आवश्यकता है, तत्काल उसको मुहैय्या सब है। सब उपस्थिति है। ब्रम्हचर्य बताया, जिसका मन और बुद्धि आत्मतत्व में लीन है। प्रेम प्रेम सब कोई कहे प्रेम न चिन्हें कोय आठों पहर भीगें रहे (भींगे रहे) प्रेम कहावे सोय। जैसे कामिहि नारी पियारी जिमी, लोभी जिमी प्रिय दाम। तुलसीदास जी है, और ये तो है कबीर दास है, कबीरदास। तिमि रघुनाथ निरंतर ही प्रिय लागो मोरे राम। रघुनाथ माने आत्मा, ये आसक्ति है, अंतर में चौबीस घण्टे लगे है, बस आंनद, आत्मानंद

में मस्त रमा है, डूबे हुए है। इसलिए ये बताया प्रेम प्रेम सब कोई कहे, पुराण में आते है कामी पुरुष रात होते ही, याने कब अपने कामसक्ति के लिए पहुँच जाता है, नारी पियारी। कामिहि नारी पियारी जिमी लोभी जिमी प्रिय दाम, चमड़ी जाय लेकिन दमड़ी न जाय, ऐसी होना चाहिए। प्रेम प्रेम सब कोई कहे प्रेम न चिन्हें कोय आठों पहर भींगे रहे,आठों पहर माने चौबीस घण्टे प्रेम कहावे सोय। हाँ, प्रेम जो ऐसा चाहिए शीश दक्षिणा देय, लोभी शीश न दे सकें और नाम प्रेम का लेय। दोनों नहीं होते, बाबा। ये दुनिया हमारे समझ में - हमारे कीर्तनकार, हमारे पौराणिककार हमारे कथाकार उल्टा समझाते है। उल्टा नहीं ये तो स्थिति, अंतिम स्थिति है। ये तो अहं ब्रम्हास्मि हो गया, ये सोअहंअस्मि है। इसके बाद फिर कुछ नहीं है, कुछ नहीं है,तब अहं ब्रम्हास्मि। बी स्टिल एंड नो आई एम गाड। जहाँ स्टिल आ गया वहाँ कुछ नहीं रह गया। स्वरूप शून्यं इव समाधि। स्वरूप भी नहीं रहता, तो कार्य करने के लिये है, प्रज्ञानं अहँ ब्रम्ह, ये प्रज्ञानं, ये प्रज्ञावस्था है। प्रजहाति यदा कामांसर्वान्पार्थ मनोगतान, आत्मन्येवात्मना तुष्टः स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते। सब जो है नष्ट हो गया, उसके एक भी कामना नहीं रहा। एक भी संकल्प नहीं, एक भी कामना नहीं है। आत्मने आत्मनाः तुष्टः, सोहम्अस्मि, अपने आप को देखता है उसी में मस्त, उसी में लीन हो गया। एक ही सत् है और कुछ नहीं, एक ही तत्व है और कुछ नहीं एक, मन, एक तत्व। स्थितप्रज्ञ .. तब वो प्रज्ञावस्था में स्थित हो गया, वो उस स्टेट में आ गया है, उसके लिए स्टेट हो गया वो (उसमें वो स्थित हो गया वो) सर्वस्थो प्रज्ञानं, ब्रम्हचर्य ये है। प्रेम जो ऐसा चाहिए, शीश दक्षिणा देय..।अहं मैं, संशय, तो यहाँ तक संशय पीछा करती है, जी हाँ। शोक, मोह, भय, हरष, दिवसं, निशि देश काल तहां नाही, तुलसीदास यह दशाहीन संशय निर्मूल न जाहि। टिल डेथ, कितना, उत्तम ये समझा दिया गया है। ये स्थितप्रज्ञ माने स्थित, बड़ा प्रज्ञावान है,अरे काहेका प्रज्ञावान है,

प्रज्ञावान होता तो एक जगह से हिलता नहीं।वो तो शरीर में वहाँ है स्थित हो गया,और सारा दुनिया दिख रहा है, बैठे बैठे, सारी दुनिया में अकेला है और कौन है। कुछ नहीं रह जाता उसके अंदर,कुछ नहीं रह जाता। डिवाइन ओशन ऑफ लाइट में रहता है,वो ओशन ऑफ लाइट। ऐमंग्स द हेटिंग वर्ल्ड, अभी हम कहाँ है? एमंग्स हेटिंग वर्ड। ये ब्लेसिंग है, ये बलेस्ड, ब्लेसिंग, आर दोज हू आर फ्री फ्रॉम हेट्रेड इन दिस हेटिंग वर्ल्ड, तब हेट्रेड जाती है, अन्यथा नहीं। जब तक संशय है,जब तक उसकी घृणा जा ही नहीं सकती, मैं हूँ मेरा बाप हो, मेरा बाप का बाप हो। अपरिग्रह स्थैर्य अनेक जन्म.. अपरिग्रह स्थैर्य जन्म कथंता संबोधः, अनेक जन्मों का बोध हो जाता है, उसको, है मुझे है। लेकिन आप लोग पचा नहीं सकते, उस बात को,आप दुनिया को बताते रहते है।हम बोलते है, लैंग्वेज बोलता हूँ,कहाँ पढ़ने गए,.. इट कंसल्ट इटसेल्फ सो वन्स माइंड ओनली।आप लोग पचा नहीं सकते, दुनिया को बताते रहते है हमारे ऐसे है, हमारे ऐसे है।अरे बताने को क्या है,वो बताते है।याने उनकी इज्जत हम करें।इस आत्मा की ओर उसके बाद कहाँ है?इस आत्मा का उसके पास कहाँ है? , आता है तो आने दो,कहता है,कोई ऐसी कीमती है,आ गया।लेकिन इसके प्रति उसको..है,ये है स्वार्थी।तो ये पांच नियम है जो संयम है,और अहं ब्रम्हास्मि हो आप।मुझे क्षमा करेंगे,अनुभव के बोल है। समाधि ये शुरुआत है।.. स्वरूप शुन्यं इव समाधि, ये शुरुआत है,प्रारम्भिक अवस्था है। तत् माने वह इस प्रकार से..(निर्भास) हो जाता है, बैठे बैठे शरीर शून्य हो जाता है गुण नही है वहाँ पे। ये तत्व है। कुछ नहीं रह जाता, चैतन्य स्थिति है। सांप बैठे, बिच्छू बैठे, मच्छर काटे, मक्खी काटे, कोई बैठे, कोई बोले, नगाड़ा बजे, कुछ नही उसके कान में आता। स्वरूप जो है ओशन, ऑफ लाइट, ये भी नही रह जाता। इस प्रकार से उसकी बुद्धि आत्मस्थ हो,आत्मा में है, बुद्धि नही रह गई, बुद्धि अंदर जाकरके चूर हो जाती है।

यही कैवल्य है। सत्व पुरुषो.. शुद्धि साम्ये कैवल्यं,यही कैवल्य है, यही मोक्ष है। गुरु बिन कौन बतावे बाट,बड़ा कठिन यमघाट,अब समझे,यम माने यमराज नहीं।आदमी मौत से बहुत डरता है। आपका कहा हुआ है मुझे याद है - डू दि थिंग्स यू फेयर, डेथ ऑफ फीयर् इस सर्टेन।.. बी केयरफूल वी कांट..मैं तो दिखता नही, यहाँ तो डिवाइन ओशन, ऑफ लाइट, बस। कबीरदास कहता है, क्या कहता है, एक दोहा है।

- एंड माने फल। कोई काम करोगे तो फल मिलेगा ही।

विद्यमान है, वर्तमान है (हर जगह) अभ्यागत है, कोई भी हो, सब के लिए आशीष है। यशश्वि भव, यशश्वनि हो, कीर्तिमान हो, कीर्तिमान स्थापित हो। कलाविद् हो, विद्याविद् हो, कलाविदुषि हो, उत्तरोत्तर उन्नति हो, प्रगति हो, आदर सम्मान प्रतिष्ठा बनी रहे, कुल में समाज में राष्ट्र में ख्याति हो प्रसिद्धि हो और सम्बन्ध बना रहे। भंडार भरपूर रहे, कभी कमी न हो। अखंड धारा बहती रहे। कभी खाली न हो, कोई आये तो खाली न जाय। आनंद हो, कल्याण हो, जीवन सफल हो, सौभाग्यवती भव, सुहाग बना रहे। कल्याण हो, आनंद आनंद।

पनघट पे पनिहारी लौट चलो, लौट चलो, पाँव पड़ूँ तोरे श्याम.. बिलख रही है मात यशोदा नंदजी दुःख में खोये, कुछ तो सोच अरे निर्मोही ब्रज का कण कण रोये, लौट चलो लौट चलों पांव पड़ूँ तोरे श्याम। (यह गीत चल रहा है) बस। (बोलते ही गुरुभाई के द्वारा तुरन्त ही बंद कर दिया गया)।

आप रुक जाइये, मैं खडा हूँ पकड़ के कटौरआ, वो बोले आज्ञा हुई है, आपको राजभोग, आपको राजभोग मिलेगा, आप राजभोग ले जाइये, चुप रहा। थाली भर के दिया चार पांच आदमी खा सकता है। हमारे पास थे भउरा, वो पकड़ के हमको नीचे ले गये। पकड़ के, हाँ सहेलियाँ थी उनकी (माँ राधा माँ की सम्भवतः) व हाँ। अविवाहित लड़कियाँ, जवान

बिल्कुल सुंदर, सुंदर (सम्भवतः माँ राधा जैसी), अरे घेर लिये न हमको। हमको आप दीजिये हमको इनका नहीं होना, हमको आप दीजिये, हमको इनको नहीं। तो बाबा ने क्या किया एक रुपया हमारे फाउंटेन पे में लगा दिया था, तो हमने वो चिल्लर करा के रखे ६४ पैसा और ऐसा फेंक दिया।

उन्नति हो, प्रगति हो, दोनों जोड़ी (एक गुरु परिवार) प्रेम से रहो, लड़ाई नहीं करना, झगडा नहीं करना, प्रेम से रहो,अरे तुम राधा कृष्ण हो हमारे लिये, अरे क्या बताऊँ मैं।

रामायण मे है, दिया न -करहुँ, प्रणाम जोरि जुग पानी, ये है राम कहत है। तो सियराममय सब जग जानि, करहुँ प्रणाम...। ऐसन हम, हम करिस है सब राधेश्याम है, ये सब राधेश्याम है, हमरे सब राधेश्याम है और कोई नही है। हमार लड़ाई आज तक किसी से नही है। जन्म से लेकर आज तक किसी से लड़ाई, किसी से झगड़ा नही, किसी से वैमनस्य नहीं, किसी से लड़ाई नही कुछ। हम चेहरा देखि के, वो हमारा अपमान करत है, गाली देत है, अपमान करत है, उल्टा पुल्टा बोलत है। सब आचरण करत है हमरे सामने, अपने आप को मारत पिटत है, सब करत है। हमें मारे के दौड़े रहे, हम मुँह देखि के और कुछ नहीं बोले, ये हमारी परीक्षा है। भक्त, भगवान, भक्त की परीक्षा लेते है। हम परीक्षा में है भैय्या। हम कुछ नाही किसी से, हम नाहीं बोली, हमरे ये कुछ नाही है। का कहते है ना ये, महरारुन के..हमरे ये तो कुछ नहीं है बाबा। आप तो भंडारवान भाग्यवान हो न, धनवान हो, बलवान हो, इज्जत मान मर्यादा। हम का है,कुछ नाहि, जियत है मुर्दा सरीख, मुर्दा जैसन रहत है ऐसे रहत है। हमारे का है का बा है, कुछ नहीं है, कुछ नहीं है, कुछ नहीं है।

- ये जड़ तत्व है।प्रत्येक रिलीजन में प्रकाश ही है, प्रत्येक रिलीजन में वही है। फिर उसके बाद में सब उसको बोध हो जाता है, फिर वो सजस्थ

(सहज अवस्था)हो जाता है, फिर तो सहज सरल है। अच्छा बहुत अच्छा, एक गुत्थी तो सुलझ गई, ऐसा वो है आ जाती है, परम, तब वो परमहंस हो जाता है। लेकिन कोई संकल्प करता है। उसमें कहाँ पर ऐसा, निर्भर तो है ही नही। हाँ ये कितना बढ़िया संधिकाल हो जाता है। मैं समझता हूं।अब ये टेप है। मनोविज्ञान, ऐसा माने अंश। ये पूर्ण। हां। इसी को बताये न, रियल क्या अनरियल क्या है? तब ये, उधर तब घुसते है, ये भीतर में है। कितना बढ़िया सूत्र है। ये बोलचाल की भाषा में तो, ये है, ये परम जो है न, बस, और न हो सके, तो कम से कम ये आदत तो डाल लो, आदत तो डाल लो, जैसे सबकी है आदत डालते, ये भी आदत डाल दो। ये इस पर.. हम जरा दो, अस्मिन, दर्शन में ये है।
डिवाइन ओशन ऑफ लाइट में, मैं किताब में दिया हूँ, मेरा अनुभव है। इसलिए वो किरण को पकड़ के रहिये और सूर्य में, क्या? वो ही आपके अंदर बाहर है, वही आत्मा है, सूर्य जैसा तो वो आपके अंदर बाहर है, आपके अंदर बाहर है,वही आप है।वही आप है, लेकिन मैं अहं शब्द प्रयोग में नहीं करता हूँ, कहीं भी नहीं मिलेगा ये। लेकिन वही आप है। मेरी किताब में है, दिव्याम्बु निम्मजन पढ़िये आप, है। एकदम ब्युटीफुल् आकर्षक, इतना सौंदर्य आकर्षक, है वो मैं खत्म हो जायेगा, मैं क्या बताऊँ आपको। ये यजुर्वेद में है मंत्र, हिरण्यगर्भ - ये हिरण्य माने पांडुरंग जो कांति है, पांडु जो रंग है, वो जो पांडु नही है, वो स्वर्ण, सोने, होने की तरह है, उसके गर्भ, माने उसके गर्भ में, आप उसके बीच में, चारों तरफ वो दसो दिशा में वही, वो प्रकाश है। किताब पढ़िये, मैं समझा देता हूँ, आपको, मेरा अनुभव है वो। संवर्ताग्रे, संवर्त माने, सम्यक रूपेण से, आगे पीछे दसो दिशा में, चारों तरफ वही है। भूतस्य जातः-वही अनंत, वही अनादि, वही परमात्मा, ये सारे भूत इससे उत्पन्न हुये। पतिरेक आसीत - वो सबका पति, सबका पति वो है, जगतपति कहते है ना, पति माने स्वामी। और पालक भी होता है,लेकिन वो स्वामी होता है, पति होता है।

दिखता कुछ और है स्वामी तो वही है। भूतस्य जातः पतिरेक - पति, एक आसीत, माने सारे जग का एक ही पति है, माने एक ही, एक ही ईश्वर, जो हिरण्य गर्भ के रूप में, आपके वो सगुण है। हिरण्य माने याने कमल जैसा, वो जो कामबीज है वो सगुण है, जो कि दर्शन होता है। सगुण का दर्शन होता है, निर्गुण का नहीं निराकार का नहीं होता, साकार का होता है, वो जब अपने आपको साकार करता है, तभी आपको दर्शन होता है। निराकार का, दृश्य ही नहीं। ये दर्शन में हो जाता है हमको- जो किसी ने जाना नहीं, वो जाना जाता, जाना जाता, जाना गया है, नहीं। तो निराकार तो आत्मा, वो तो अरूप है, बिगिनिंगलेस एंडलेस है। जाना गया केवल साकार - सगुण क्योंकि ये अपने आपको ज्योति रूप में प्रकट कर देता है, आपकी बुद्धि में।और केवल बुद्धि नहीं आप उसके अंदर है। एक आसीत,आसीत माने बहुत पहले ऐसा जो था, वो। सबसे पहले सृष्टि के पहले ऐसा जो था, वो, आपको इस प्रकार से, पांडुरंग कांति दिव्य तेज झलकति. तो दिव्य तेज ऐसा होता है-आकर्षण मैं क्या बताऊँ, आपको। पतिरेक अर्थ, सत् आधार, उसी को सत् कहा। ये वही शक्ति, सत् माने शक्ति, महाशक्ति। कर्तुम् अकर्तुम सः सक्तः। सब का आधार वो है। धारणात् धर्म इतिरिच्यते, धर्म मेरे पास है, परिभाषा मैं बोलता हूँ। मेरे पास है, ब्रम्हचारी ये बिल्कुल बराबर है। तो क्या है, क्या कहना है, सत् आधार, वो सत् ही सबका आधार है। शक्ति ने सबको धारण किया। अगर शक्ति नहीं, तो आप कोई चीज नहीं पहन सकते, किसी भी ये धारण कर सकते है क्या? नहीं। शक्ति ने ही धारण किया है इसको,आपने नहीं किया, शक्ति ने, वो शक्ति माने आप।

लेकिन हम अपने आप को अलग समझते है और वो शक्ति को अलग समझते है, ये जो भ्रांति पैदा हुई है, आज। वो भ्रांति उत्पादक जो सारी पोल के अंदर है न पुस्तके, लेन देन सब। क्योंकि अनुभूति तो है नहीं है कुछ, ना एक्सपिरेयंस है, ना एक्सपीरियेन्स है, कोई चीज मालूम नहीं,

क्या है किताबी, कि मनमानी अपना जोतते है। वो आधार पृथ्वी, अंतरिक्ष, पाताल से लेकर, पृथ्वी को लेकर अंतरिक्ष तक सबको धारण किया है वो। अब ऐसा जो महान देव है, विश्वपति ऐसा जो है, जो विश्व का प्राणी वो जगत याने जगतकर्ता जो है सृष्टिकर्ता है, ऐसा जो एक ईश्वर है। ऐसा देव-तस्मै देवाय..अब वो, दूसरा है ही नहीं। अब दूसरा कौन सा देवता को नमस्कार करें, या नमन करे। प्रातः स्मरामि देवस्थ सवितुर्भगुर आत्मन, वरेण्यं ततधियो योनः चिदानंदे प्रचोदयात। सत्, चित्, आनंद, आत्मा को सत् कहा गया। वरेण्यं ततधियो योनः।

धीमान जो है याने धीमान् का क्या काम? माने आपमें आत्मा है, वो जो परम् है, निष्काम कर्म करने पर है। इसको तो हमने छोड़ दिया और बाहर में आप भटक रहे है, यही हमारी भ्रांति है। चिदानन्दे प्रचोदयात-चित् माने बुद्धि में एक उस आनंद को, आत्मारूपी सूर्य जो है, ऐसा बढ़कर देव और कोई दूसरा देव है?

कबीरदास ने अच्छा गाली दिया मालूम है, आपको। राम माने आत्माराम, राम पियारी छाड़ के करे और का जाप वेश्या केरा पूत जो कहै कौन को बाप-कितना बहुत बढ़िया गाली है ये। इसको तो छोड़ दिये, अय् इसलिए आज हमारी दुर्गति है। आज जो निरक्षर बताये अभी, डाक्टर साहब बताये, सब समझ गये, न। ये हमने सब कहा है, और मैं तो हूँ वही बैठा हूँ। सन् १९५६ अ की बात है, मैक्समूलर ने कहा था, हाँ १८५६ की बात है, १८५६। पहले वो उनसे पूछती है, ऐसा कौन सा देश है जो सर्वोन्नति स्वर्ण युग जिसे कहते है, तो बोले, माने बताते है - भारत। ये साक्षर है, याने सभी, यहाँ पत्तल भी जब खींचों माने संस्कृत बोलते है माने आत्मा बोलते है। आज भी होने लगते है।

तब सब साक्षर थे और आज हम निरक्षर, नय, जो कभी ढले नहीं, गले नहीं, घटे नहीं, बढे नहीं, ज्यों के त्यों रहे, ठीक है, बाहर तो हम निरक्षर है।अभी जो साक्षरता फैला रहे है, इससे क्या होने वाला है? इससे कुछ बनने वाला है, कुछ होना नहीं। तो ये रास्ता बनाये रखना, ये है, सही स्ट्रेट मार्ग है आपको दिये जो है।

ये तीन चीज है-क्षर, अक्षर और निरक्षर, ये तीन शब्द.. है संसार में। आत्मा। अद्वय अक्षर - अद्वय वो है जो ऑलमाइटी है, अक्षर जिसको ऑलमाइटी कहते है, याने एक। योगी लोग अक्षर माने एक। परिवर्तनशील है हमारे सामने है जो,अद्वय नहीं रह जाती, ये जाना गया, ये जाना गया। ये दर्शन का है। वैसे उपनिषद का दर्शन, वेद का अलग है, वेद में है, नहीं नहीं अंतर कोई नहीं एक ही बात है।शब्द में फर्क है, वेद जो ग्रंथ हमारा है वो ज्ञान है। ज्ञाता कहा है, सर्वज्ञ कहा है, न। वेद में क्या है सर्वज्ञ है। ज्ञाता माने ज्ञान, ज्ञेय और ज्ञाता, तो ज्ञाता और ज्ञान माने ज्ञानी। ज्ञाता, ज्ञानी और ज्ञेय। तो जैसे ये अक्षर है यहाँ पर, ऐसे वो ज्ञानी, जिसको आत्मज्ञान हो गया वो ज्ञानी है। और ये ज्ञेय है क्या ज्ञेय है माने, ज्ञेय ये जाना गया है, ये कोई पद्धति है। अपिरिवर्तनशील, ये आत्मा है, क्योंकि वो अनादि है। इसलिए इसको ज्ञानी कहा, इसको ब्रम्हज्ञान कहा। इसलिए कृष्ण गीता में है, कहा कि ज्ञानी और तत्वदर्शी में और ज्ञानी में भक्त प्रिय है। ज्ञानीभक्त मुझे सबसे अधिक प्रिय है, क्योंकि वो तत्वदर्शी होता है। तत्व एक आधार है विश्लेषण करके सामने रख देगा-वो आचार्य होता है। ब्रम्हवेत्ता दो प्रकार के है -एक आत्मरति, और एक आत्मक्रीड़। एक अपना पेट भरके मस्त रहता है भगवान सेवा करे तो मिलेगा, भाग्य में होगा तब मिलेगा। और एक अपना कैप्टन बनता है, उप कैप्टन बनता है, सारी दुनिया को खेल में वो सिखाता है। ये बहुत अंतर है, हाँ। इसीलिए ये बताया - ब्रम्हविद्या वरिष्ठाः,आत्मक्रीड़। ब्रम्हवेत्ताओं में वरिष्ठ कौन है? (आत्म क्रीड़) होना चाहिए। ये सब समान है।

- ये आत्मशक्ति के लिए है, आत्मशक्ति को डेवलप करना। वो तुम्हारी शक्ति है, शक्ति को विकसित करना, डेवलप्, माने आत्मशक्ति कोविकसित करना। उस विकास से तुम्हारा सारा जीवन दिन ब दिन उत्तम, रूप से स्वास्थ लाभ होते हुए और केवल स्वस्थ होते हुए नहीं,

आपका जो प्रापंचिक कारोबार है वो भी अपने आप होने लगते है। ये ज्योति जो आपको दर्शन होता है, उसका जो प्रभाव है, वो पड़ता है माने क्या कहते है उसको समाज पर - प्रभावों किन्चयमुच्यते, उसका जो प्रभाव है, अचिंत्य है। आप जज ही नहीं सकते, कितना है, क्या है, क्यों है। ये अपना ऐसी शक्ति है,मालूम अनहोनी होनी कर देती है,और होनी को अनहोनी कर देती है।जो कांट्रेडेक्टरी है, यही साधु संतों के काम है। ये शक्तियाँ आपको मिल जाती है, ये आत्मा की शक्ति है, ये शक्ति है। खाली ज्योति दर्शन आगे आप मत जाओ। खाली ज्योति दर्शन करके छोड़ दोओ, उसका प्रभाव पड़ता है,समाज में।आदमी के जीवन में उसका उत्तम प्रभाव पड़ता है।और मैं इसको कह रहा हूँ, ये सब बराबर होता है। एक व्यक्ति को जो मिल सकता है, प्राप्त कर सकता है, हरेक व्यक्ति चाहे तो हो सकता है, वो प्राप्त कर सकता है। ये मेरा मत है, ये विज्ञान है। मैं ईश्वर विश्वर नहीं जानता, मैं ईश्वर का नाम नहीं लेता। मैं भगवान का भी नाम नहीं लेता हूँ, आप लोगों को मालूम है। प्रत्येक व्यक्ति का ये जो है का सेंटर है, याने छोड़ दिया सेंटर वो तब वर्ल्ड। याने, ईश्वर इस वेरी पोटेंशियल, पोटेंशियलि डिवाइन, नाट पोटेंशियल। ईश्वर इस वेरी पोटेंशियलि डिवाइन। शक्ति से पूर्ण है,दिव्य शक्ति है,वहाँ कचरा नहीं है,यही प्रभाव है।ये प्रसेंस जो कहते है,इसमें से काम होता है। इस शरीर में से प्योरिफ़ायर होने से काम होते है, इसी को ही डेवलप् करना है। मेडिकल साइंस में एक नाम है, ऐनाटानिज्म, वेटाविज्म,और मेटाबालिजम्, ये ऐरर ऑफ मेटाबालिजम् है, ये इंफेक्शन नहीं है। मेटाबाविज्म क्या होता है, जहाँ जहाँ जीव को पैदा करके पहुंचा देना है, वो नहीं पहुंचा पाता। जो शक्ति चाहिए पहुंचाने को, वो नहीं पहुंचा पाता। तो ऐरर ऑफ मेटाबाविज्म, ऐसा। ये प्रेक्टिस होते चले जाते है, वो भी ऐरर ऑफ मेटाबाविज्म है, वो इंफेक्सन नहीं है, लेकिन लोग ऐसा डरते है उससे, इंफेक्शन वो नहीं है। वहाँ केपटेलिस्ट है, जो चीज चाहिए वहाँ

निर्माण होने के लिए, हम अंदर जाते है, फूल फल खाते है इंफेक्शन के साथ में खाते है,सब वहाँ पहुँचते है ताकि वो दूर हो जाय। क्योंकि प्रोटिंस लेना है वहाँ से, प्रोटीन से ऐंजाइम् निर्माण होते है। तो प्रोटीन जो चाहिए वहाँ काम करते है, लेकिन वहाँ डर वो काम बनता नहीं। तो जो शक्ति चाहिए वहाँ वो लेना चाहिए, वहाँ बिना वो काम होता नहीं। तो ये कैटेलिस्ट वो वहाँ पहुँच जाता है मेटाबाविज्म जो चाहिए। और उसके जाने से झटपट झटपट वो काम होने लगता है,थोड़े काल में जो प्रोटीन चाहिए शरीर को,वो वहाँ बन जाता है। और वो,वहाँ पहुँचा देते है। और ये केटेलिस्ट का कुछ भी खर्चा नहीं होता, न कम होता, न नीचे होता है। न कुछ करता है, है, उसका प्रसेंस काफी है। उसका वहाँ पहुंचना, वर्तमान में रहना (विद्यमान रहना), उसके प्रभाव से,सब काम होता है। ,प्रभावों अचिंत्यमुच्यते, इस शरीर में शक्तियाँ, नाना है।मन एक शक्ति है, बुद्धि एक शक्ति है। अहम् एक शक्ति है, अहं माने जो आपमें है,आरोप है मैं मैं,ये आरोप है। ये जो शक्ति है,पूर्ण शक्ति है। यही कच्चा मैं, और पक्का मैं है। बाहर तक है तो कच्चा मैं है, अंदर चले गये तो पक्का मैं। आप लोग अंदर चले गये, जीरो रोड में आप पहुँच गये, माने पूर्ण, पूर्णता होने को भीतर जो पथ है, उस पर जा रहे है, आप।तभी तो हाई थिंकिंग यही अर्थ है।,भीतर जो नहीं चले गये,आते है तो सेंटर विकसित करो ना,माने जितना चले उतना ही,अब आपके विचार ये होना चाहिए, उत्तम विचार होना, अपने लिए भी समाज के लिए।तो तात्पर्य ये है केटेलिस्ट से जो कार्य हो रहा है, देता है न लेता है, उसका केवल पहुंचना ही काफी है। वहाँ पे प्रसेंस काफी है,सब वो अपना काम झटपट करके अपना वो पहुंचा देता है। तो हम लोगों को भी ऐस ऐ केटेलिस्ट रहना चाहिए। केटेलिस्ट का काम क्या है? नहीं करते हुए भी सब कुछ करता है और सब कुछ करते हुए भी कुछ नहीं करता है। केटेलिस्ट पहुँचे तभी तो होता है, अगर नहीं

पहुँचे तब, तो कुछ नहीं होता है। लेकिन वो कर्ता भी नहीं है, आया गया कुछ भी नहीं, खाली पहुंचना ही काफी है। उसके प्रभाव से सब है। तो आत्मशक्ति ये प्रभाव है, प्रभावों अचिंत्यमुच्यते। क्या नहीं हो सकता है इससे? इस शक्ति से क्या नहीं हो सकता है? सब कुछ हो सकता है। मार के जिला देते है, किसी चीज का नाश करके, पुनर्रचना कर सकते है, और वो रहे भी।ये सत्य है, लेकिन वो बहुत दिनों की तपस्या के बाद है, बहुत दिनों की साधना के बाद है। एक दफे आपका द्वार खुल गया, जन्म जन्म खुल गया, वो नहीं बन्द होता है। तो तात्पर्य ये है हमारे कहने का, ये आत्मशक्ति इस कारण से आप इतने काम करते है आप नहीं जानते है। आपके जीवन में जो कार्य है जो संकल्प है। करते है सब सामाजिक बंधन है, सामाजिक लज्जा सामाजिक रुढियाँ है, सब पालन करते है, पालन करना पड़ता है। पहले क्या करते थे, और अब क्या है? कितना ये अंतर हो जाता है की नहीं? कोई ना नहीं कह सकता, जितने है यहाँ पर। मुँह देखके नहीं बोलना चाहिए लेकिन ये सत्य है। जाने अंजाने हमारा जो जीवन है, कितना अच्छा परिवर्तन हो जाता है कि, अगर ये नहीं होता, तो आप लोग हमारे पास जमा नहीं होते। क्या होता है ये मैं नहीं पूछता, एक बार मैंने कहा था, कि भाई दे दो, बच्चे है दे दो आप लोग,.. दे दो। लेकिन हाँ या नहीं, कितना सुंदर लिखा है।

- माने तब एस्ट्रल बॉडी तब प्राप्त होता है।वो बॉडी माने उसको इलुमिनेटिंग बॉडी कहा, और उसकी बुद्धि जो है इतनी प्रखर हो जाती है, कि भूत, भविष्य आपका ज्ञान हो जाता है। और वो काल है, सुषुम्ना कालं भवति। ये लक्षण पैदा होते है, उसमें, लक्षण माने अभी जो बताया है, अंदर से ऐसा दिखता है, ऐसा दिखता है, ऐसा ऐसा, और ये शरीर जो है, मृतवत हो जाता है, और ये हाथ पैर ठंडी हो जाती है फिर धीरे धीरे आइस बर्फ जम गया वहां, मालूम होता है। ये सब मालूम होता है जैसे आइस सरीखे।

शक्ति फिर धीरे धीरे ऊपर आता है, और ये हाथ पैर जड़ हो जाते है फिर आप हिला नहीं सकते उसको, बोध है ज्ञान है, खिसक रही है वो भी बोध है, योगबल है जो, ये योग है ऐसा।ये सब मालूम है लेकिन अभी तो कुछ नहीं है, ऐसे करते करते फिर सुषुम्ना माने मेरुदंड में घुस जाती है, और घुसकर धीरे धीरे ऊपर आती है और जैसे जैसे ऊपर आती है जहां मेरुदंड में आया ऐसा मालूम पड़े, सारा शरीर पत्थर हो गया। ऐसा एक बिल्कुल गोला बन गया, अब मरे, बिल्कुल मैटर जैसा एक मॉलीक्यूल जो होता है, तब माने मृत होता चला जाता है इसी प्रकार से उसका अनुभव होता है, बस अब हम मरे। मैं अपना अनुभव बताता हूँ, बिल्कुल सत्य है ये सब, मरता नहीं है, ता माने आत्मा, मर माने शरीर, ये है, लेकिन मरता नहीं, ये अनुभव है। किताब में दिया है, सबके पास है। सब बिल्कुल सत्य है, एक एक बात सत्य है, बैठे है हम। ये सत्य है ये लक्षण तब होते है, ये बाहर के लक्षण है और ये भीतर के लक्षण है। माने लक्षण में दो चीज पाये जाते है, कि दुःख अब मरा, जो बताया न अतीत अनागत, तो हेतु और परिणाम माने देह की अवस्था भीतर है, देखा जाता है क्या मिलता है ये लक्षण होते है। माने ये शिथिल होते चला जाता है, और बिल्कुल जड़ हो जाता है, दुनिया कहेगी डॉक्टर कहेगा मर गया, लेकिन मरा नहीं। अब ये क्या हो गई देहावस्था हो गया, और एक है रूप स्थिति, माने ज्योति। वो ज्योति इतना प्रचंड इतना प्रखर होता है, अखण्ड मंडलाकारं, इसका हमें बोध है-ये सत्य है। क्या तत्व निरूपण है हमारी पुस्तक में लिखा है आप देख लिजिये, वो झूठ नहीं है, मैं कभी झूठ नहीं बोलता, सपने में भी नहीं बोलता। व्याप्तं येन चराचरं वही तब ये लाइट इतना बढ़ जाता है, सारा यूनिवर्स मस्त लाइट ही लाइट है, तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः। सर्वेपि सुखिनः सन्तु सर्वे सन्तु निरामयाः सर्वे भद्राणि पश्यन्ति मा कश्चिद दुःख भाग भवेत।ॐ स्वस्तिनो इन्द्रों .....। ये सब दिव्य लोग है, ये आपकी

रक्षा करें, आपको, इंट्यूशन माने ऐसा करने से ऐसा है, उपदेश देवे समय समय पर, समय पर आपकी रक्षा करें, और आपसे बातचीत करें, और आपकी रक्षा और आपको वो सम्हाले। ये जो वैदिक आशीर्वाद मंत्र है ये, और क्या।ॐ....ब्रम्ह शान्तिः सर्व ब्रम्ह शान्तिः.... शांति रेव शांतिः, शांति भी शांति, शांत हो, इस प्रकार, सामा, सा मा माने दो, द्वंद मेघ पानी बरसता है पृथ्वी उसको ग्रहण करती है, तब बीज अंकुरित होते है माने दो जहां मिलते है तीसरी की उत्पत्ति होती है, ये भी शांति माने विघ्न भी उत्पन्न न हो, दो के मिलने पर भी विघ्न उत्पन्न न हो। शांतिरेव शान्तिः, सामा, इस तरह से पृथ्वी की मिट्टी को विघ्न कहा गया ये जो सा हो गया, और मा, मेघ हो गई। बारिश वो बरसता है और जब, पृथ्वी ग्रहण करती है, नाना प्रकार के माने जो बीज पड़े हुए है, शांत होते है। सामा माने द्वंद, ये गीता में है, सामा शान्तिः रेव शान्तिः, माने ये सब विघ्न ज्ञान रूपी अग्नि से दूर हो जाय। ॐ शान्तिः शान्तिः।

- वर्तन माने आचरण, कहते है न इसका वर्तन ठीक नहीं है। उप प्रत्यय लगने से क्या हो जाता है। वो सन्मुख हो जाता है। माने वो सत्य है। कर्मनी शब्द में उप प्रत्यय लगने से, माने वो सत्य है, कुछ नहीं भाई, बोध है सत्य है। वो संस्कार आपमें पड़ा नहीं है, और वो कहते है कुछ नहीं लेकिन कुछ नहीं, वो सत्य है। तो ऐसे ही वर्तन है, वर्तन याने उसको चाहिए, उन्नत में है ये है, कल्याण हो गया..।

  वो, पंच करावा नेटका, आदि माने पहले, तो पंच करावा नेटका, माने वो बताया न उसको, वो ऊपर पहुंच गया। पंच माने स्थूल धातु है मिला दिया और त्व लगने से प्रर्कषेण, जिसमें फंसे है, कामनाएं क्रोध हुआ लोभ, मोह, भय आदि उत्पन्न होते है। इसको समझ करके, पहले वो ज्ञान करे, इसको जरा विकसित कर, माने उसको समझ करके अपने वश में करे। उसको समझ करके प्रयोग करे। ये प्रपंच है, नेटका माने नीट एंड क्लीन,

बौद्धिक है। उसको पवित्र करिये आप, जैसे जहां दूर रहना चाहिए, यहां तहां किस प्रकार से बोलना चाहिए या जाना आना चाहिए या करना चाहिए, ऐसे वो करे। प्रपंच माने ये शरीर जो आपको मिला है, मन बुद्धि चित और अहं के साथ। मन बुद्धि और अहं, पंच तत्व के साथ में, ये तीन और मिल गये, ये आठ हो जाते है। इसको बिल्कुल नियमित रखना चाहिए और संयमित रखना चाहिए। अपने पर संयम नहीं तो किसी पर नहीं होते। मर माने अनन्तर, अब यहां मर्म आ गया और अनन्तर माने अंतर रहित साधना हो माने शरीर के मन, बुद्धि , इंद्रियों को जरा भी अंतर नहीं देना, समझपूर्वक सावधान, सावधान। मुंह बन्द करो न। अगर सावधान नहीं है, अगर आप सावधान नहीं है, पंडित जी कहते है पुरोहित जी सावधान, अस्माकं मङ्गलं कुर्ववन्तुं। माने हम लोगों के, या हमारा- मंगल जीवन व्यतीत हो। मंगल जीवन बने, मंगल जीवन हो, मंगल जीवन करे, इसका ये अर्थ होता है। तो मंगल जीवन माने क्या? सदा उन्मुक्त रहें, सदा आनन्दित रहें। अखंड है, अखंड अहं बोध है ये सत्य है,अनुभव की बात है। वर्तन माने आचरण, तन मन तनना, तारना, ये बुद्धि जब विकसित होती है, ऊपर की ओर जाते है तब। सत, असत निर्णय करते हुए, या तो सत निर्णय करते हुए, सत है ये असत है, ये सत को धारण करना चाहिए, असत को छोड़ देना चाहिए। इस प्रकार से अपनी भाषा, अपनी करनी, अपना जो कर्तव्य है, अपने आचरण है, ये पढ़ना चाहिए। दूसरों को पढ़ने की कोई आवश्यकता नहीं है।..तब होता है।

स्वामी रामदासजी भी यही कहते है-पहले स्व हेतु, स्व जो हेतु है क्या है?हम जो संसार में जो आये है, हम कैसे है संसार में, ये अपने आपको समझना चाहिए। अभी बता दिया, जो अपना कार्य है, वही स्व हेतु है अपना जो कार्य है। माने वहां जा रहे है, कोई कार्य है, घर में पूछ लिजिये। कोई...। आपको अपने कार्य करने में और औरों के कार्य करने में भी, करने की आवश्यकता है । तो परम, धन है, परमार्थ। परम, माने ये

आत्मा, आत्मा, आत्मा ही परम है। आत्मा को साक्षात्कार करें, यही परमार्थ है। अर्थ माने विषय, अर्थ माने हेतु, अर्थ माने प्रयोजन, अर्थ माने धन, अर्थ माने द्रव्य, अर्थ माने वास्ते, अर्थ माने लिये, इतने नाम है क्या। तो ये क्या चीज है? ये सब अर्थ में जन्म का हेतु जो है, ये आपने जाना नहीं तो आपने कुछ नहीं जाना। इसलिए विवेक बुद्धि तत्व आदि, सत असत, माने सत को अपनाएं।

ये सात भूमिका है अपने जीवन में।पहले शुभेच्छा, दूसरा विचारणा, तीसरा तनुमानसा, मन और ये तन, तन माने ये विस्तार तनना, त्रायते, ये सब तान है, याने विस्तार, फैलाये है ये जग में। मैं और विस्तार, फैलाये है, सब क्या है भोग है।कौन क्या है, कैसे, क्या है, क्या बंधन है, क्या रहस्य है, क्या तत्व है, ये सब सोचना है, ये सारे। तन माने विस्तार, सारा विस्तार जो है अपनी किसकी है, किससे है, कैसे है? आपने प्रतिज्ञा किया क्या किया, मूल क्या है, प्रतिपल और ये समझ में आ जाना। तो मूल क्या है ये सब मूल है। जब हमारे विस्तार है याने हम ही इसके मूल है। ये सोचो, सोचिए इसका चर्या जो फल है, देखने का है और सोचिये, विवेका ये विवेक बुद्धि है, हंस नीर क्षीर न्याय, ये षष्ठम (या परम) अवस्था है। इसके बाद आपको अर्थ जानना चाहिए। (अर्थ सोचिये) आपको लाभ है,...।

आप जहां जा रहे है, जाते जाते आपको बौद्धिक भी लाभ होता है, आत्मिक शक्ति भी मिलती रहती है आपको, शांति मिलती है, बल मिलता है, धैर्य होता है, आपके आचरण में भी फर्क है, आपमें अशुद्धिपना जो है वो भी दूर होता है।और असत्य बोलने की भी, माने आप्रिय लगती है, क्या है असत्य बोलना जरूरी थोड़ी है, ये अच्छा नहीं लगता। असत्य बोलने लग जाते है तो वो है आपकी अपनी जीविका पर जोर लगाकर बुलवाये या तो चुप रह जाते है।ये लाभ होता है, इससे (दीक्षा से)। विघ्न जो होते है, ये सब समझ में आ जाने लगते है। और विवेक बुद्धि जाग्रत होती है, षष्टम भूमिका में लेकिन वहां पर असत्य नहीं होता है। ये (यहां) क्यों होता है?

तनुमानसा माने विचार किया, माने तानना है, करे या न करे खाली तन नाम, जो विस्तार तो है ये,. माने जाकर..क्या है, प्राप्त होती है कैसी है? इतनी नहीं है।

आपका जो है चतुर्थ जो सेंटर है, यहां चेतना शुरू हो जाती है, उसका नाम है, सत्वापत्ति।सतोगुण है ये शुद्ध होने लग जाता है।और सतोगुण जो लक्षण है ये सब होने लगता है, सत्वापत्ति याने सत की ओर। सतोगुण जो है, आत्म समाधि में, आत्मस्थ बुद्धि होने लगती है याने केवल सत्य की ओर, सत्व की ओर, सत्ता की ओर आत्मसत्ता की ओर घुसना चाहती है और आगे बढ़ना चाहती है, ये अपने आप, याने बुद्धि को ये प्रेरणा मिलती है वहां से, कि और आगे बढ़े, अपने आप ये प्रेरणा होती है कि और आगे चलें। ये सब विघ्न है, अर्थ माने जितने विघ्न है यहां जीत है। यहां उसको कहते है कि फला व्यक्ति ने किया, दूसरा उसको कर ही नहीं सकता। राम ने सेतु बाँधकरके लंका गया दूसरा कर ही नहीं सकता। यहां से तीर मारते है लंका में जाके गिरता है। आज अमेरिका ने एक चीज बनाया है, विषयांतर तो नहीं हो रहा है, उसको, विंटर न्यूक्लियर कहते है, उन्होंने न्यूक्लियर बम बनाया। याने छोड़ दिया तो विंटर हो जाय सब बर्फ हो जाय खाली, यहां पर जो जो खड़े है, सोचिये।

तो तात्पर्य ये है इसको ज्ञान कहते है, उसने किया दूसरा कर ही नहीं सकता। उच्चतम स्थान उच्चतम व्यक्ति के लिए सदा रिक्त है। इसके बाद कौन...बारी आता है।...संशय है, हम इतने संशयी है कि बस उसको संशय है.... खाली ..व्याधि, व्यान, संशय, प्रमाद, मैं जानता हूँ जी, मैंने बोल दिया, सब समझता हूँ। ये प्रमाद, मैं बड़ा पूजा पाठ करने वाला हूँ, मैं ऐसा करूँ ...ये है, अपने जीवन ..।

अविरति, उसमें रति नहीं है, आप कितने भी बोलते रहिए, वो क्या बोलता है, बाबा कुछ समझ नहीं, अभी तो लोग आते है सुनने के लिए। फिर ऐसे ऐसे बोल बोलने लग जाते है।...अव माने नाहीं, न माने विशेष, याने कुछ भी स्पर्श होता नहीं, क्या बोल रहा है ये और बाहर जाके निंदा करते है,

ब्लफ मारते है। न जाने पर भी और भी ..ये सब चला जाता है। बस सुनते ही मेरा समाधि लगा दो, पार वो हो गया। इसलिए शनैः शनैः उपरमेत, धीरे धीरे (अभ्यास हो) प्राप्त करो, अलब्ध भूमिका, भ्रांति दर्शन ये चमत्कार फमत्कार दिखते है जादू वादु,.. इतना इतना बोलते है वो खिसक जाता है। क्या है ये सब, हेय विद्या है, उसमें आदमी घुसता है ।

- सत, वेद में दिया है, नासदि सूक्त है। ना वो सत है,न वो असत है, वो सत भी है असत भी है, न सत है, न असत है। तू जैसा है-तुझे वैसा नमस्कार है। वेद में दिया है क्या दिया है? सहस्र शीर्षा पुरुषः-हजारों सिर वाला पुरुष। सहस्त्राक्षः, हजारों आंख है, सभी जगह है, कहाँ नहीं है? पात माने सभी जगह है सर्वत्र है, सर्वज्ञ है, सर्वशक्तिमान है। औमनीप्रजेंट, औमनिसियेन्ट, और औमनीपोटेंट। तो इंग्लिश में सभी बोलते है, हिंदी में सभी बोलते है। लेकिन उसका क्या कोई गुणधर्म हमारे में है, कुछ मिला? कुछ कर सकते है? वो कहता है, भगवान ने सब कुछ दिया है, हां बाबा दिया, तुम उसको उपयोग कर सकते हो क्या? है, अगर उपयोग कर सकते थे तो आज फिर हमारी हालत या ये दुर्दशा होती क्या? हिंदुस्तान की ऐसी दुर्दशा होती क्या? या मानव समाज की दुर्दशा होती क्या? हिंदुस्तान नाम एक, पार्शिएलिटी होती है, मानव समाज की ये दुर्दशा होती क्या? जिस विध्वंश की ओर हम जा रहे है। ऋग्वेद, तो रिग माने विधान, वेद माने ज्ञान। ॐ जिसका नाम है, परम ब्रम्ह है,जिसका नाम है-सत।जो ऑलमाइटी है ऐनर्जी है, जो कि कॉस्मिक ऐनर्जी कहते है, इट कम्स फ्रॉम दि डिवाइन तो ये डिवाइन ऐनर्जी है, डिवाइन माने गॉड। तो ये डिवाइन / गॉड जो नेचर जो है, ये आपको प्राप्त करना है। डिविनिटी क्या चीज है? आप क्वालीफाईड हो जायेंगे उसके, जो भगवान के गुण है, जिसको आप भगवान कहते है, भगवान के छः गुण होते है, षट गुण ऐश्वर्य सम्पन्न भगवान-ज्ञान, वैराग्य,भक्ति, शक्ति, ऐश्वर्य और ये मोक्ष। ये छहों

को देने में जो समर्थ है, ये छहों को करने में जो समर्थ है उसको भगवान कहा। भगवान उसको नहीं कहा, वो कहे वैसा होता है-कर्तुम अकर्तुम अन्यथा कर्तुम-वो समर्थ होता है। उसका सोचना काफी है, उसका बोलना काफी है। सब बराबर होते चला जाता है, इसलिए बताया गया है, यही अनकांसस कंट्रावर्सन और कांसस कंट्रावर्सन, वो बोलता है वैसा ही होता है, वो उल्टा बोलता है सब सीधा होता है, वो सीधा बोलता है उल्टा होता है।और कभी कभी उसका ऐसे भी जवाब मिल जाता है। बगैर जाने, मिलता है बोलता है बराबर जवाब मिलता है। बाद में देखो, अपने को ऐसा सूझ आई अपन ने ध्यान दिया नहीं, क्योंकि हम इतने फंसे है बाहर। बाहर में इतने अट्रैक्ट इतने अटैच्ड है हम, इतने है बाहर याने वर्डली अफेयर्स में सूझबूझ मिलकर भी हम उसको ऐवाईड करते है, नेगलेक्ट करते है -अह ऐसा तो होते रहता है, आते रहता है, कौन देखता है? अपने आपको, हम इस प्रकार से, हम अपने आपको दमन करते है। तो एक ऋग्वेद है, अंदर जानना है अपने को। क्या जानना है? कि जो हजारों सिर वाला है, हजारों आंखों वाला है, हजारों हाथ पैर वाला है । सब जगह,अंदर बाहर, सब जगह वही है, दूसरा तो कोई है नहीं। पृथ्वी से लेकर के ,अंतरिक्ष में दिव्यलोक पर्यन्त उसी का ही पसारा है, और कोई नहीं है।और इतना होकरके आज तक किसी ने देखा नहीं, समझा नहीं, पाया नहीं और कितना लंबा चौड़ा और कबसे है और कब से नहीं, कब तक है, ये कोई आज तक नहीं जाना। ना आपके वेदधारी जानते है, ना आज आपके साइंटिस्ट जानते है। सिद्ध है, साइंटिस्ट जो कह रहा हूँ मैं, इधर उधर नहीं जाना है, हमको आज, क्यों? तत तिष्ठत दशांगुलं, मराठी में दिया है -ऐसा आत्मा जो परम है, परम आत्मा-दशांगुल वसला, तो उधरा नहीं दशांगुली वसला, तू वसुला है, तू बसुन है, कुठे,अरे नसून, बसून और बसून, नसून, वो बैठा है होते हुए हम नहीं जानते।वहां जाओ, वहां जाओ,

वहां जाओ, इतना हि हम जानते है। दशांगुल जो पंच प्रदेश है आप डॉक्टर बैठे हुए है, ये हमारे जो सेरिब्रम है, दूसरा डॉक्टर बैठे है, वो दस अंगुल परिमाण है। हरेक आदमी के दस अंगुल परिमाण उसका सेरिब्रम है, वृहत मस्तिष्क और इसी दशांगुल पर प्रदेश में इसी दशांगुल, पर तुम्हारा क्या नाम, केंद्र में या स्थान में वही जाकर दर्शन होता है। कैसा दर्शन होता है,...मेरी भाषा में है क्या डिवाइन, डिविनिटी मेनिफेस्ट इटसेल्फ इन दि शेप ऑफ लाइट। आत्मा ज्योति स्वरूप है: वो, ही, सबको सिखाते हैं, हम, बराबर होता है, सब मस्त है आज, जितने भी है, सब मस्त लोग हैं । उसमें कोई मेरा, साला भी नहीं मामा भी नहीं। लेकिन उसने लिखकर भेजा है समझने रिकार्ड है, हमारे पास टेप है, आपको सुना सकते है कभी भी। मेरी बड़ाई नहीं उस तत्वों की बड़ाई है। मैं और आपमें कोई फर्क नहीं है। तो तात्पर्य ये है, ऋग्वेद-वेद माने ज्ञान। वो उस ब्रम्ह को, ब्रम्हपद को प्राप्त करने के लिए आपको विधान मालूम होना चाहिए। अगर वो विधान मालूम नहीं कहीं के भी नहीं है। एक तो ये है, दूसरा, मैं अंदर नहीं जाता हूँ। दूसरा क्या दिया है, यजुर्वेद। यजः यजन, ण प्रत्यय है। यजन माने यज्ञ होता है, यजन माने यग्ण ये यग्ण नहीं, भु, भुर्व, स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात, ॐ स्वाहा, ये नहीं है। ये नहीं है, वो क्या है?तुम्हें आत्मयज्ञ करने आना चाहिए। पांच प्रकार के यग्ण होते है। द्रव्ययज्ञ, अन्नयज्ञ, वस्त्रयज्ञ, पृथ्वीयज्ञ, और आत्मयज्ञ। पांच प्रकार के यज्ञ होते है, तो ये चार यज्ञ है बंधन के कारण है। और पांचवा जो यज्ञ है, निर्बन्ध होने के लिए है बंधन से छूटने का है। अभी तो आपने भगवान कहा, भगवान के छः गुण होते है कौन? मोक्ष, ये देवी देवता आपको टुकड़ा दे देंगे खाने के लिए, आपको मुक्ति नहीं दे सकते। रामायण आप, कितने बार रावण जन्म लिया, कितने बार राम ने मारा, कहाँ मोक्ष हुआ, अगर मोक्ष होता तो रावण फिर से, राम फिर से आता

क्या? आज दशहरा है,बताइये हमको, हमने कभी सोचा क्या, रावण बहुत हो गया हम चले तुम्हारे धाम को, कितने बार रावण, रावण, बोले चौदह चौकड़ी राज किया, चौदह बार,चतुर्युग बीता, चौदह बार। त्रेता में मैं चौदह बार रहा, जीवित इसी शरीर में, बताइये आप कितने लाखो साल रहा होगा, अब सोचिये आप। ये जँचता है क्या बुद्धि को, तात्पर्य ये कहने का है, ये सब सोचने का विषय है, ये रूप क है, इसमें संस्कृति भरी हुई है, क्योंकि हम संस्कृति की ओर नहीं जाते है। हम क्या करते है, कहानी, बहुत पंडित जी बहुत,अच्छे कहानी बोलते है, ऐसा बढ़िया कहानी बोलते है सब, लोट पोट हो जाते है। हम खाली कहानियों से खुश है। औरों की कथनी, कहानी माने औरों की कथनी काल्पनिक, रूपक में इतिहास है, रूपक में चरित्र है। और कहानी केवल कल्पना, सृष्टि कल्पना, जिधर कल्पना, मैं करता है। हमारे एक और दुर्बलता, दुर्बल होने का कारण है। अब यजुर्वेद में यज्ञ वो कौन सा यज्ञ है? आत्म यज्ञ इसमें पंचाहुति। पंचाहुति माने, अन्न, मेघ पानी बरसता है, फल फूल उसमें उदय होते है, उद्भिज। बीज बोते है सब कुछ पैदा होते है वही उससे पैदा होते है। अपने अधिकार के लिए, जीने के लिए केवल खाना है, जीमने के लिए नहीं खाना है जीने के लिए खाना है, जीने के लिए खाने में बहुत कम लगता है। बहुत कम लगता है और मनुष्य आरोग्य सबन्ध रहता है, और मस्त रहता है। बीमारी का कारण केवल खाना होता है, अधिकतर। हम नहीं कहते वही कारण है, अधिकतर मनुष्य को व्याधिग्रस्त होने का कारण केवल भोजन है और दूसरा भी है, आहार निद्रा, खूब खाना और खूब सोना। उ क्या चीज है युक्ताहार विहारस्य और मेहनत करना, बस, एक जगह लग गए चौबीस घण्टे और डॉक्टर बुलाओ बुखार आ गया। युक्ताहार विहारस्य ये युक्ति है, मेहनत उतना करिये जितना ये बल है। जितना बोझा सह लेंगे उतने ही आपको दिया जाय,

उतने आप उठा के ले जाये। एक क्विंटल थैला पीठ में रख दे हमारी, हम दब जाये, तो ये भी हम सोचे समझे, करनी हमारी हो। नौ बजे सोना माने नौ बजे सोना, पांच बजे उठना माने पांच बजे उठना। भोर समय पर जागना, समय पर जागना, तब योगो भव, योग माने आत्मसाधना नहीं, योग माने उद्योग, योग माने भोग, योग माने योग। योग के तीन प्रकार की है, एक तो आत्मसाक्षात्कार के लिए इस प्रकार से रहकर तैयारी करे। या तो उद्योग करे या फिर भोग भोगना है, सम्पन्न धन हो, चाहे लौंडी बाजियां हजारों कौन ना कहता है, तब ये भवति दुखः, तब ये दुःखों का होने या मिटने का और मिटाने का है तब आप समर्थ और सक्षम होते है। तब सब योग्य, समय पर योग्य कार्य, योग्य, अपनी योग्यता न भूलते हुए अपनी योग्यता की सीमा में रहकर जितना मालूम है उतना ही काम करना चाहिए जितना मालूम है उतना ही कहना, नहीं मालूम है समझ लेना जान लेना इसका नाम है सत्य। मैं सब जानता हूँ, ये बात सब, ये अहंकार है। अब यजुर्वेद में, यज्ञ करना है तो आत्मयज्ञ कैसे करना है? सतगुरु चाहिए, सत्पुरुष चाहिए, कैसा यज्ञ किया जाय? माने वो यज्ञ है। तीसरा अथर्ववेद है, अथर्व नाम प्राण का है, इस शरीर में प्राण है भारतीय संस्कृति के आधार से इसको दस प्राण माना गया है, प्राण अपान समान उदान व्यान ये पांच है, फिर ये कृकर, नाग, देवदत्त, धनंजय, कूर्म। प्राणों के कार्य, प्राणों की शक्ति न रहने पर, क्या? नाना प्रकार के विघ्न, नाना प्रकार की व्याधियां हो सकती है। इसे अर्थववेद में मंत्र और औषधि ये शरीर को बहुत काल पर्यन्त रखने के लिए, और उसमें ये युक्तियां बताई गई है। दवाई बताई गई है, मंत्र और औषधि दोनों है, माने प्राण इस शुद्ध शरीर में रहकरके दीर्घ काल आप जीवित रहें और संसार में कार्य करें और औरों के हम कार्य करे। तो अर्थवा नाम प्राण का है। चौथा सामवेद, सामा माने ..नहीं झूठ बात है, ग, म, प, ध, म, रे, द, प, म, ग, म, ग, रे, सा, नि, सा, ग, म,

प, न,...ये नहीं सामा। सामा माने दो, एक इंद्र और दूसरी पृथ्वी। इंद्र मेघों का राजा इंद्र पृथ्वी, इंद्र मेघों का राजा हो गया, और राजा होकर, पौराणिक मतानुसार बादल को कहता है तुम जाकर पानी बरसो, पृथ्वी पानी को धारण करती है तीन दिनों तक वो रजस्वला रहती है हल नागर नहीं चलाया जाता। चौथे दिन नागर, बीज जब बोते है जब जंगली बीज अंकुर हो जाते है तब, किसान लोग हल चलाते है। माने सा और मा ये दो के सिवाय तीसरे की उत्पत्ति नहीं। प्रकृति और पुरुष के सिवाय दूसरे की उत्पत्ति नहीं, जड़ और चेतन के सिवाय दूसरे की उत्पत्ति नहीं, न ब्रम्ह और शक्ति के सिवाय कुछ दूसरी उत्पत्ति नहीं। ब्रम्ह कोई दूसरी चीज है न शक्ति कोई दूसरी चीज है। न जड़ कोई दूसरी चीज है, न चेतन कोई दूसरी चीज है, एक ही है। आज सब सिद्धांत सिद्ध हो गये है, साइंटिस्टों ने सिद्ध कर दिया है कि मैटर ही ऐनर्जी है और ऐनर्जी ही मैटर है। मैटर ही लाइट है, लाइट ही मैटर है। सब वही है, यहां से वहां तक। ये 500 साल पहले तुलसीदास जी ने लिखे है लेकिन हम लोग 5000 साल खाली 5000 साल, एक ने लिख दिया, उसी को हम। अरे कान, कान कौवा ले गया, कौवा के पीछे दौड़ेंगे, कान को नहीं टटोलेंगे, ये हम ऐसे ज्ञानवान लोग है, ये हमारे पास चार प्रकार के नाम आपके पास आए ये वेद नाम ज्ञान। सामः दो के सिवाय तीसरे की उत्पत्ति नहीं है।अथर्वा नाम प्राण का है, प्राण आपको मालूम होना चाहिए। प्राणों को लेकर कुंडलिनी ऊपर, अहहह, प्राण को लेकर किताब में दिया है। सब एक एक अक्षर को, एक एक शब्द को आंखों में, तेल कानों में ऐसा खोलकरके लिखा गया है वो। वो जो पुस्तक जो लिखा है वो कहानी नहीं है, उसको पढ़ने के लिए दस जन्म क्या, बीस जन्म चाहिए समझने के लिए। पढ़ने को क्या है, दो घण्टे.., फेंको न हमको क्या है। तो तात्पर्य ये है, ये चार वेद है, चार वेद माने ये चार बातें, कबीर दास बोलते है, चलो वह देशवा, उस देश को चलो,

कबीरदास बोलते है, कौन सा देश अमर वह देशवा, वो देश अमर है, जहां मरता नहीं कोई, अमर है, वो बिल्कुल देव हो जाता है, दिव्य हो जाता है। उस देश को चलो, बोले तुम गये थे, हां हम जाकर आये, दास कबीर ले आये सन्देशवा, चार शब्द कहीं चलो वह देशवा, तो चार शब्द माने क्या? ऋग वेद, यजु वेद, अर्थवा वेद, सामा वेद, ये चार शब्द का ज्ञान अगर मनुष्य को हो जाये, ब्रम्हा हो जाता है। वो प्रकांड विद्वान हो जाता है, इससे बढ़कर और विद्वान कोई नहीं, माने महान हो जाता है। महान है आत्मा वो महात्मा। वो महात्मा होता है तब वो ब्रम्ह विद होता है।ब्रम्ह विदवर होता है, ब्रम्ह विद वरियान होता है, ब्रम्ह विद वरिष्ठ होता है।ब्रम्हविद जो होता है उसको वली बोलते है, अवधूत कहते है, न सुना है तो आज सुन लो, लिख लो, ब्रम्हविद माने वली माने दोष रहित मुक्त जिस तरह से तुम्हारे क्या नाम दत्तात्रेय भगवान उसको अवधूत कहा निष्पक्ष, निष्पाप चौबीस गुरु बनाया, क्यों चौबीस गुरु बनाया? तो ब्रम्हविद माने वली, मुस्लिम धर्म में, ब्रम्ह विद वर, किसको कहा उसको हम लोगों ने, उनने कहा फकीर। फ़क़ीर माने फे से फांका, का से कारूं, ये से यारे इलाही, रे से रहमत। इलाही से प्रार्थना करना सब पर दया करना सबकी मदद करना। ऊंच है न कोई नीच है न कोई जात है न कोई पात है, न कोई दूसरा, सबकी मदद करना सबकी सहायता करना। सबकी भलाई चाहना और सबकी भला करते करते, अपना जीवन यापन करना। खुद नहीं खायेगा लेकिन दूसरों को खिलायेगा, दस दिन भी होगा तो भी दस दिन भूखा रहेगा, लेकिन उसको खिलायेगा। देशे काले पात्रे तव नानं...सौ आदमी मरता है तो उसको मरने देना, लेकिन सौ का पालन करने वाले को मरने नहीं देना।

- अव्यवस्थित्व, कभी खुश कभी नाराज कभी क्रोध कभी बड़ा अच्छा कभी कुछ याने अनप्रिडिक्टिव नेचर। स्वभाव आदमी उसको, फोरकास्ट कर

ही नहीं सकते। कोई ज्योतिषी भी नहीं बता सकते, न कोई पहचानने वाला है। कोई नहीं बता सकता है, जो व्यक्ति अव्यवस्थित है, अनव्यवस्थित है, कि क्या नहीं क्या करेगा ये। ये नौ प्रकार के, एक वर्ग है नौ वर्ग में बाँटा गया है, इनको विघ्न कहा है।

तो तनुमानसा, मानसा माने शरीर और जीव, जीव क्या है, ये शरीर क्या है? ये शरीर जो है तत्वों से बने हुए है।भारतीय संस्कृति से पांच तत्व कहा है। और इसमें अंतःकरण है, चौबीस तत्व है और एक जीवात्मा है।तो ये आत्मा जब ये आत्मा मिट्टी में, आत्मा रूपी पानी जब मिट्टी में आकर समेत हो जाता है, वो मट्मैला हो जाता है। और जैसे प्रकृति में आ करके स्पर्श हुआ, माँ के गर्भ में गया, और शरीर बनने लग गया, और जब जन्म लेता है, तब सारे दुर्गुण, विकार सब उसमें आ गये, बाहर से।

जीव यद्यपि शुद्ध है, बिल्कुल है, उसमें कोई विकार नहीं है, लेकिन आरोप तो है, आवरण तो है उसके ऊपर, तब डिसायर, वासना रूपी आवरण हमारे, पुण्य पाप जो आवरण है ये, शुभाशुभ जो कर्म हमारे यहाँ आवरण है, इसको खाली हटाना है, बाकी तो कुछ हटाना है नहीं। योगाभ्यास और कोई चीज है। तनुमानसा, ये संस्कार जो है, बंधन जो है, ये सब मन से है, मन ही सबको पकड़ता है। तो मन क्या चीज है? अहं क्या चीज है? बुद्धि क्या चीज है? चित्त क्या है? इनको मालूम होना चाहिए। इसको अंतःकरण कहते है, करण माने टूल्स, हथियार, ये भीतर है ये बुद्धि के साथ में जुड़े हुए है, सब। और ये बाहर का पंच कर्मेंद्रिय, पंच ज्ञानेंद्रिय, पंच तन्मात्रा, पंच महाभूत, अंतःकरण (मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार) चार ये चौबीस हो गया, प्लस जीव माने आत्मा, ये पच्चीस हो गये, ये शरीर हैं, आपके ये आप हैं। तो इनका भेद अच्छी तरह से करें और समझे। शब्द ब्रम्ह निष्णातः, ये शब्द ब्रम्ह है, मालूम होना चाहिए, अध्ययन होना चाहिए, तब उस ओर उतरने का अधिकारी होता है। आत्मानुसंधान के लिए तब अधिकारी होता है। तो आत्मा क्या है, जीवों

ब्रम्हों नापरैः, ऐसी उक्ति है, जीव ही तो महान है, दूसरा कोई नहीं है। ये जप तो हमने छोड़ दिया मैं आत्मा हूँ, मैं महान हूँ। मैं दुःखी हूँ, लंगड़ा हूँ, मैं लूला हूँ, मैं अंधा हूँ, पापी हूँ मैं, ये हम सोचते है। ये जपने के बाद, जैसे ही हम जपते है, वैसे ही हमारा परिणाम होता है। हम जैसे सोचते है, वैसे करते है, जो हम करते है, उसी परिणाम को हम पहुँचते है। तो ये जीव जो है, उसका भी बोध होना चाहिए आपको। सत्य क्या है, सत्य तत्व क्या है? सतगुरु के पास रहकर अध्ययन करना चाहिए। ताकि इन तत्वों का फिर से तुम्हें लोभ और मोह न हो, लालच न हो, और न भय रहे। तो भय न रहने के लिए एक ही बात है जब तक ये जीव का साक्षात्कार, ये आत्म साक्षात्कार नही होता, तब तक भय दूर नहीं होता। ये सब धीरे धीरे कम हो जायेगा, लेकिन भय बना रहेगा।

तो तनुमानसा, मन और तन और ये तन और मन मिलकर इनका जो विस्तार है। क्या विस्तार है, पत्नी है, पुत्र है, धन है, वैभव है और जो कुछ विस्तार है संसार में जो है। कल जो बताये लोकेष्णा, पुत्रैष्णा, वित्तेष्णा, सब मेरे माने, मैं जैसा कहूँ वैसा हो,और सब हमारे हो जाय। ये इष्णाएँ है इसको अच्छे से समझ लेना चाहिए। समझ लेने के बाद, ये जीव जो है, ये सदा निर्विकार है, इसमें कोई विकार है, ये विकार बाहर से है। हमारी सारी इंद्रियाँ जो है अंदर से ठेस दी गई है, अंदर कुछ भी ज्ञान नहीं होता। आत्मबोध है, आत्मा ही शक्ति है, वो शक्ति से ही आप सब काम करते हो, कर रहे है। लेकिन उस शक्ति को आप लोगों ने सिर्फ पढ़ी पढ़ाई, सुनी सुनाई, इतने में ये काम नहीं आता है, बाकी नहीं है।

अनंत शक्ति है, आपमें- स्वयं ज्ञान, अनंतं ब्रम्ह, आप महान है, अनंत है, ज्ञान अनंत है (सत्यं ज्ञान मनं तं ब्रह्म) और ये सत्य है। क्योंकि आप जैसा चाहे वैसा रचना हो सकता है। सोचते है वैसा हो जाता है, विचार करते है वैसा हो जाता है। भई ये काम करना चाहिए, ये कोई मिल जाय तो बड़ा ये उतर जाता है, जी हाँ, ये सत्य है। तो आपको जीव का बोध होना चाहिए

और तत्वों का भी सत तत्व क्या है? सत्य क्या है, असत्य क्या है? मालूम होना चाहिए, बिना सतगुरु के बोध नहीं होता, ये विचार करना और विचार करने के बाद तन और मन और उसका विस्तार। कि सत्य क्या है असत्य क्या है? तो सत्य आत्मा है, आत्मा को छोड़कर सब असत्य है। माने ये सब परिवर्तनशील है, दुःख है, दुःख सुख दोनों एक है। मिल गया तो बड़ा खुश हो गया, चला गया तो रोने लग गया। तो जन्म होने के बाद इस स्तर पर आते है, रोज ही। इस भूमिका में आने पर, वो सदा ही लेकरके मरते दम तक वो रोता है। वोही व्यक्ति प्लीज केवल हँसता मुदित रहता है, बाकी सब रोते है, यहाँ से वहाँ तक, जो इस मार्ग में झुंकते है और जिसको समर्पित बुद्धि कहते है, वो समर्पित कर देता है, कर देती है, अन्यथा झूठ बात है। आपने पढ़ा है वो किताब, आज से मैंने बिल्कुल समर्पित कर दिया उसने ये सत्य है। करोड़पति है वो, बहुत व्यवसाय है, और वो साधु है, मैंने साधु पद दिया उसको। उसका सुषुम्ना खुला है, अंदर आता जाता है, खूब बोध होता है, बातचीत होता है, बातचीत में सदा उसका कारोबार हुआ है। वहाँ लाखों रुपया खर्च हो चुका था, वो सब पानी में, सब हो गया उसका। अपने पर भरोसा होना चाहिए, अपना भार अपने आप को काटना चाहिए। सिर्फ रास्ता मिलना चाहिए। अपने को खाली रास्ता बता दो, हम अपने चले जायेंगे- ऐसा पूछा जाता है, न। तो इस तरह से तनुमानसा, इन दोनों का जब मिलन हुआ, इसके जो व्यापार है ये कहाँ तक है, ये उसको मालूम हो, ये विचार के बाद में, सत्य और असत्य की प्रतीति, अब कैसा हो, तब सतगुरु के पास पहुँचता है। मिल गया, आदेश हुआ, अभ्यास किये, सेंट्रल कैनाल में घुस गये, याने सुषुम्ना मार्ग में सेंट्रल कैनाल बोलते है, उस कैनाल में घुस गया। आना जाना शुरू हो गया, आनन्द होने लग गया, उसका आर्थिक जो है अभाव जो है अच्छा होने लग गया। परिवार में अभाव जो रहते थे, वो भी धीरे धीरे अनुकूल

होने लग गया, और उसको भी आनन्द होने लग गया। तात्पर्य ये है ये तो लाभ तत्काल होने लग जाता है, और अंदर जो कुछ बोध होते जाता है, वो सब आत्मा है। वो आत्माशक्ति से जो कुछ दिखता है, उस आत्मशक्ति से दिखता है। सारा संस्कार जो है वो मन में है, मन में वो प्रकट होता है, है अंदर जमा है, मन रूपी आईना में वो प्रकट होता है। और जब दिखता है तब सूर्य, जो आत्मा है आत्मारूपी तेज, उस तेज में वो दिखाई देता है, उस तेज में न हो तो कुछ भी न दिखे, आँखें तो अच्छी है। ये कुछ भी नहीं दिखता घर में। अंदर जाने के बाद इस प्रकार से, ये रहस्य है। आत्म रूपी तेज जिसको हम सूर्य और ये जो चन्द्र है तो सूर्य की तेज से, सब कर्मों का जो संस्कार, ये मन रूपी दर्पण में सब दिखाई देने लगते है। ये है, यही भोग है, इस प्रकार से वो भोगते हुए चला जाता है। ये सब भोग है, ये कुछ नहीं होना चाहिए, कि हम पहुँच गये, वो तो फिर खत्म हो गया। नहीं ये सब भोग है, दिखना भी भोग है, सोचना भी भोग है, स्पर्श करना भी भोग है, याद करना भी भोग है, ये सब प्रकार के, आठ प्रकार के भोग होते है। ये सब भोगना है।

तो तात्पर्य ये है कहने का, कि तनुमानसा ये थर्ड सेंटर इससे भी आगे निकल करके जब वहाँ से चले तब सत्वापत्ती, ये चौथा हम आते है। सतोगुण जो है याने आपत्ति उसमें जो है उसमें वो प्राप्त हो जाता है। याने यहाँ से सब उत्तम समाधि माने, उत्तम बुद्धि आपकी यहाँ होती है। इसके तब आपका सोचना समझना करना धीरे धीरे सतोगुण का उदय यहाँ होता है। बाकी ये तमोगुण है,रजोगुण है फिर सतोगुण है, लेकिन ये तीनों मिले है।

मूलाधार में, तमोगुण प्लस प्लस प्लस, और रजोगुण प्लस प्लस, सतोगुण प्लस, इस हिसाब से आप वहाँ है। विचारणा में, स्वाधिष्ठान में जो हम आते है तो रजोगुण प्लस प्लस प्लस, तमोगुण प्लस प्लस, और सतोगुण प्लस। हम जब तीसरे में आते है तो अब उल्टा हुआ, सतोगुण प्लस प्लस,

तमोगुण केवल प्लस, और रजोगुण प्लस प्लस। इस तरह से ये विभाग ऐसा हो जाता है, फिर भी तमोगुण है। अब हम चौथे केंद्र में आते है, अनाहत चक्र में आते है यहाँ आत्मा शुद्ध होता चला जाता है। संस्कार जो दुर्गुण है वे गुण में परिवर्तन हो जाते है, वही मनुष्य आप है, वही सब बातें है आपमें है, वही अंतःकरण है वही शरीर है, वही सब कुछ है लेकिन वो शुद्ध हो जाता है। अब अवगुण जो है ये गुण में परिवर्तन हो जाता है। और जो अंतःकरण जो अभी कार्य करता था बाहर वही अंतःकरण यहाँ भी काम करता है - वो गुण हो गया अब।अब वो गुण को प्रकट करता है और गुण का ही, क्या करता है प्रचार करता है और प्रसार करता है। वो धूतपाप हो जाता है माने कहने का तात्पर्य ये है कि संस्कार रूपी बोझा जिसके कारण हम जीते है ये क्षय होते चला जाते है। क्षीण होते चले जाते है, क्षीण होते होते शुद्ध सतोगुण, सतोगुण आधिक्य हो जाता है। सतोगुण यहाँ तीन तीन हो जाता है। रजोगुण प्लस प्लस, तमोगुण प्लस, (सतोगुण, प्लस प्लस प्लस) अब उल्टा हो गया बाजी देखिये। हम जब इसके आगे चले। सतोगुण होने के बाद जो उदय हो जाता है, तो ये व्यक्ति समाज का एक आदर्श व्यक्ति हो जाता है। एक आदर्श व्यक्ति हो जाता है, वो समाज का भी है और घर का, और न समाज का है न घर का, ये दोनों कंट्राडिक्टरी होते है ये परस्पर याने जैसे जैसे आकृष्ट हो जाये और सतोगुण उदय हो गया तब आत्मस्थ हो गया। इसको ये कहते है योगस्थ, अब ये व्यक्ति योगस्थ होकर के कर्म करता है। योगस्थः कुरु कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा धनञ्जय।सिद्ध्यसिद्ध्योः समोभूत्वा समत्वं योग उच्यते। ये योगस्थ होकरके समत्व में आ गये, इस तरह से ऊपर है इसमें आ गया, तो दोनों में आ गया, तो दोनों में वो रहता है। लेकिन न किसी का है और सबका है। घर का भी है, समाज का भी है, घर का भी नहीं है, समाज का भी है। लेकिन दोनों में वो समान रहता है सिद्धि असिद्धि, हानि लाभ दोनों

उसके लिए बराबर हो जाते हैं, अपना पराया बराबर हो जाते हैं। जब चौथे केंद्र में आते हैं अनाहत में जब आते हैं, यहाँ वो पहुँचता हैं तब ये बातें होती हैं। तब उसका कार्य जो होता हैं, सबके लिए समान होता हैं। उसका अपना पराया कोई नहीं रहता। फिर परमार्थी होते हुए वो परार्थी होता है। अपना स्वाद अनुभव करता है लेकिन परम जो अब प्राप्त किया वो औरों को अध्ययन और अभ्यास कराता है। अपने जैसे सबको तैयार कराता है और कुछ भेद भाव नहीं रहता, वो क्षरण होते चला जाता है। तो आत्मबल, आत्मशक्ति प्राप्त होते जाता है जिसको कहते है ईश्वरीय शक्ति, ये ईश्वर की देन है। कहते है न, ईश्वर की देन है ये ईश्वर की देन है, देन में आकरके ऐसा होता है। और न किसी का है न किसी के है, सब यहाँ। हम नहीं जानते इसलिए किसी बड़े का नाम ले लेते है, आदमी चुप हो जाता है। तो तात्पर्य ये है तो चौथे केंद्र में आते है उसका नाम है - सत्वापत्ति। आपत्ति माने स्थिर हो जाता है, सतोगुण। उसके सब कारोबार जो है, संसार के भोग ये सब भोगते हुए सबके बीच में रहते हुए आनन्दपूर्वक इस शरीर में त्याग करके, और फिर से श्रीमन्त के यहाँ वो जन्म लेता है, या योगियों के कुल में जाके जन्म लेता है। और वहाँ से फिर उसका कारोबार आत्मशक्ति का प्रचार और प्रसार संसार में। माँ के पेट में वही से शुरुआत हो जाती है।

तो इसी जन्म में आपका सब मिल गया जिसका नाम है - धन, आत्मा रूपी धन है बाकी ये सब ऋण है। तो ये आत्मा रूपी सूर्य से सब अंधेरा मिटता चला जाता है। और अपना जो क्लेश जो है ये मिट जाते है, हमें अपने क्लेश को मिटाना है और कुछ करना नहीं है। आत्मा, आत्मशक्ति हमारे में है, इसलिए हम बोलते है उठते बैठते चलते आते जाते सब। ये तो देह है एक आलय है, ये चलता फिरता मंदिर है। वो मंदिर नहीं है, संगमरमर का महादेव खडा है वहाँ। ये मंदिर चलता फिरता है, चलती फिरती है। इससे तुलसीदासजी ने एक चौपाई में कहा रामायण में, मुद्

मंगलमय संत समाजू, जो जग जंगम तीरथ राजू। वो तीर्थराज। वो नहीं है, के मकर संक्रांति आ गये, सारे तीर्थ में वहाँ जाते है नहाते है बड़ा फल मिलता है। हम तो नहाये कुछ नहीं मिला। तीर्थराज ये है प्रयागराज ये है ये त्रिवेणी संगम है, ये याग माने यग्न, याग माने आत्मयज्ञ, ये यज्ञ है प्रयाग माने क्या? तीर्थ कहते है याग को, तो यग्न है प्र माने प्रर्कषेण आत्मयज्ञ। आत्मयज्ञ करने पर तब त्रिवेणी संगम में स्नान होता है, स्नान हुआ, ये त्रिवेणी संगम में स्नान होने के बाद ये सारी शक्तियाँ जो, प्रकृति कि सारी शक्तियाँ जो है आपको सब प्राप्त हो जाती है। समय समय पर वो शक्तियाँ उदय होती है अपना काम होते जाते है। तो ये षष्टम(आज्ञा) केंद्र में जाके ये होता है, लेकिन यहीं से शुरुआत होता है। चौथे केंद्र से ये सब शुरू हो जाता है अनाहत चक्र है तो सत्वापत्ती ये केंद्र है,अभ्यास करने पर धीरे धीरे धीरे हम यहाँ आकर पहुँचते है। और हम ही है और दूसरा कोई नहीं है।

इसलिए तनुमानसा जो है, आपके जो विस्तार है विस्तार को देखिये और सोचिये विघ्न कहाँ कहाँ कौन सा विघ्न नहीं बनता, हम अपने आपको पहचाने, कौन कौन विघ्न है आता। दूसरा संबल दो सबको, जो रात दिन आते है जिनको चाहिए उनको सबोध आप देख रेख करिये। जहाँ तहां पहुँचीये। छोड़ नहीं देना, देखना छोड़ दिया भई तुम्हें, नहीं नहीं देख रेख रखना चाहिए। सहजं कर्म कौन्तेय, सदोषम अपि न त्यजेत, ये सहज कर्म हो जाता है आपका। दोष दिखाई देता है भाई हमारा, देखना वेखना दोष नहीं है ये, ये औरों को प्रमाणी करना है औरों को सिखाना है। संसार में कैसा रहना है, कैसे होना है, कैसे व्यापार करना है, लोगों के साथ में कैसे व्यवहार रखना है- ये व्यवहार है। इस तरह से ये बाहर भीतर ये दोनों एक है।

सप्तम भूमिका में पहुँच जायेंगे तब आपको बाहर भीतर एक दिखाई देगा। अभी हम सारे भ्रम में पड़े है, सारे क्या बताऊँ हम, आज स्थिति मेरी

कैसी है। इस तरह एक सिक्का के दो बाजू होते हैं । दोनों बाजू बराबर है तो वो व्यापार बाजार में चलता हैं । कोई भी अस्वीकार नहीं कर सकता है। सिद्धांत ऐसा होना चाहिए कि कोई भी स्वीकार करे-हिंदू हो, मुसलमान हो, क्रिश्चियन हो, पारसी हो, जैन हो, बौद्ध हो, कोई भी हो, कैसा भी संप्रदाय हो। तुम ऐसा ऐसे शब्द ऐसे अनुभूति होना चाहिए कि सब कोई उसको स्वीकार करे। जब वो मुद्रा के वो दोनों बाजू बराबर हैं । सब कोई उसको स्वीकार करता है। संन्यास ले लिया हर आदमी संन्यास लेने को तैयार नहीं। अब गृहस्थ ही गृहस्थ है भई हम संन्यास लेंगे तब करेंगे, तो आपको भी कोई स्वीकार करेगा नहीं। स्वीकार करेंगे हैं । तो दोनों बाजू के लिए क्या होता है, कि हमारे यहाँ पहले तीन ही आश्रम पहले थे, चार नहीं थे, ये शंकराचार्य ने लाया, चौथा आश्रम संन्यास, तीन ही थे। ब्रम्हचारी, गृहस्थी और वानप्रस्थी। वानप्रस्थ ये तपस्या है। दो बाप एक घर में नहीं रहते थे, दो बाप नहीं रहते थे, एक ही बाप रहता है घर में। वो क्या करते थे लड़का समर्थ हो गया, शादी कर दिया, हाँ भाई हम चले अब, एक बनारस में चल दिये गाँव द्वार, भोजन पानी व्यवस्था हो जाती थी और पति पत्नी वहाँ रहते थे भजन करते थे।जप करते थे, अनुष्ठान करते थे, या और जो रहते थे और ऐसे बीच में, ब्राम्हण हो क्षत्रिय वैश्य ...हो जनेउँ बीच में रखते थे। मैत्री ये धर्म हो जाता है यहाँ। क्षत्रिय होय तो तलवार बीच में रखते थे,और वैश्य हो तो क्या करते थे, एक सोना, सोने का... और बीच में रखते थे वो। कि देखो, कुछ नहीं... तपस्या करेंगे ये शपथ है। वो लक्ष्मण रेखा बीच में है। इस प्रकार से दोनों एक साथ रह करके जब तक जीवित रहते थे, तब तक ब्रम्हचर्य को धारण करके और योगाभ्यास करते थे। तीन ही आश्रम थे पहले। तो एक घर में दो बाप नहीं होते, एक बाप बिल्कुल बराबर है। मैंने इसको अनुसरण किया है। लड़के सोलह साल के थे मैंने कहा तुम मित्र हो।... तुम्हारे ये सब, हमारी कोई

व्यवस्था नहीं कोई ठिकाना नहीं, ये अलग हो गये हमसे, दे दिया ठीक है।

- पचाते जाइये इसलिए मैं जो बोलता हूँ। जो आयेगा फौरन वो निकल जायेगा, ऐसी ईजी ईजी सहज निकलता है। लेकिन जो बैठकर जबरदस्ती करते है, इधर उधर, वो तो बहुत मार खायेगा। और उस दुनिया में वो, फिर हँसी होती है, इस दुनिया को मालूम तो है नहीं, वो नाम रखते है, पगला हो गया, पगला हो गया, अरे मारो इसको, कोई पूछता नहीं, न सेवा करता। ये दुनिया का तुम सेवा करते हो, तो ये दुनिया तुम्हारी सेवा करती है। जड़वत पड़े रहते हैं लकड़ी सरीखे, कोई नहीं पूछता। तो तात्पर्य ये है तब जाके षष्टम भूमिका में वो पहुँचता है, पंचम भूमिका क्रास करके जब वहाँ जाते हैं। ऐसे जो अनेक साधक हिंदुस्तान में भारत में, सब जगह, सब लौट जाते हैं। यहाँ से। इस देह का बड़ा, तन का जो मोह है, इसका छोड़ना तो उसको, सब छुट गया लेकिन देह छोड़ने को तैयार नहीं। क्योंकि ये देह दूसरे देह में भेजा जाता है, न तो यही देह ठीक है। मरते समय में, इस देह में रहकरके याने स्ववश, लेकिन परवश् रहा, इंद्रियों के वश में बना रहता है, सारा आयु पर्यंत। कुत्ते जैसा जीवन इसमें व्यतीत किया इस शरीर में आ करके, इसलिए कुत्ते के जन्म वो लेता है। कुत्ते के जन्म में पहले, माने जीवन मिलता है पहले, मिलता है कि नहीं, लेकिन भेजा जाता है। कहते हैं, न कुत्ता बड़ा स्वामीभक्त हैं, सभी कुत्ते स्वामीभक्त नहीं हैं, जी हाँ। तात्पर्य ये कहने का संचार होता है, जिसमें संचार कर दिया गया, वो बिल्कुल मनुष्य, इस तरह से मनुष्य, आत्मा जो है, कुत्ते में रह करके बिल्कुल मनुष्य जैसे वो कुत्ते का कारोबार हो जाता है। ऐसा है, समझता है, बोली समझता है, कुछ भी बोली बोलो, ये सब समझता है।

  तो तात्पर्य ये कहने का, असंसक्ति के बाद में, ये कोई काम देता नहीं है। सब साफ, साफ, साफ हो गया, तब संत हुआ। मरण जब जीत लेता है,

मरण जब जो केंद्र है उसके ऊपर वो चले जाता है, तब मरण भय से दूर होकर अभय हो जाता है, षष्टम भूमिका में वो अभय हो जाता है। सतोगुण सम्यक शुद्ध हो जाता है, पूर्ण शुद्ध हो जाता है। माने ये सारे ये जो भय है, अभय में परिवर्तन हो जाता है। और ये इंद्रियाँ जो तुम्हारी, अंतःकरण जो तुम्हारे, जो कि संसार में, फंसाते थे दुख देते थे, वो बदलकर के अब सुख देने लग जाता है। वही उस समय सब समय में दुःख दे रही थी, अब आनन्द देने लग जाते हैं। अपना जीवन आनन्द में ही व्यतीत होता है, फला फला आनन्द में और उनको भी आंनद में, स्पर्श होता है। तो ये संत पद है ये, और जब ऊपर आता है। तो मुस्लिम धर्म में सूफी धर्म में उसको पीर कहा है, षष्टम भूमिका में, पीर तो ढूँढने से नहीं मिलते। लेकिन मुसलमानों में बड़ी अच्छी चीज है जो कि लेने लायक है। दरिद्दर् हो गया तो फकीर है, पैसा हो गया उनके पास तो अमीर है और मर गये तो पीर है, माने कहीं भी हार मानने को तैयार नहीं, कितना बढ़िया चीज है ये। तात्पर्य ये है तब वो हंस होता है।

पीर माने अपना हंसावस्था, सो अहं अस्मि वो मैं हूँ, अहंसा माने वो मैं हूँ, तब अपने आपको देखता है, अपने आपको समझता है। और कहाँ कहाँ उसका अनेक जन्मों का भी बोध होता है उसको, और जो दूसरों लोग है उनका सब वो समझता है वहाँ कौन क्या था, कौन क्या था, कौन क्या था, सब वो समझता है, तब वो उदासी हो जाता है तब वो साक्षी हो जाता है। खाली देखता है, वो बोलता है, ये रहस्य है कि मौन रहस्य है यहाँ कोई किसी का नहीं। मौन हो के देखता रहता है अपना, अनुभव को वो भोगता चला जाता है। तो षष्टम केंद्र में रहकर बहुत भोगना पड़ता है, ये सिद्धावस्था है। ये शान्त्यावस्था है माने बाहर का सारा कारोबार शांत हो गया। अब भीतर का बाकी है, अनेक जन्मों का जो अपने को भोगना है, वो अपने को दिखता है। कहाँ, कौन, किधर क्या, सब दिखता हैं । इसमें अनेक हजारों साल बीतते है, हजारों जन्म बीतते है। मुक्त होने जिसको

कहते है, निर्वाण अवस्था जिसको कहते है, हजारों जन्म लगते है, साधारण बात नहीं है। ये मोक्ष है, ये मुक्ति है ये, कहा करो, समझा करो। कुंडलिनी उठ गया, कितना बोलते हैं, बोलते रहते हैं कीर्तन गाते रहते है, नहीं नहीं कीर्तनकार है बढ़िया, कहने को ये कीर्तनकार है बस ये।
हम तो समाज को विकसित करते हैं। षष्टम भूमिका में आये वहाँ पर हाथ हिला दिये, उसको पीर कहते हैं, यहाँ तक हम बोल सकते हैं, ये षष्टम भूमिका है। प्रत्येक व्यक्ति गुरु के आदेशानुसार बंद न करें, करो अभ्यास लेकिन दस मिनट, दो मिनट। पागल नहीं बनाना चाहिए, सिक्के के दोनों बाजू रखिये ताकि हम पहुँचते भी जाएं, आंनद मिले। ज्ञानेश्वर ने लिखा है कि हेय शब्द ..संवादिये , इंद्रियाँ घेवता भोगिली, इसी शरीर में रहकर इंद्रियों को मालूम न पड़े और ये आनंद को भोगो।
ये देह को तोड़ना नहीं, देह को सुखाना नहीं, देह को तपाना नहीं, पलायन तो करना ही नहीं जहाँ हो वही, माने सतत् अभ्यास थोड़ा थोड़ा थोड़ा, शनैः शनैः उपरमेत, ये गीता है। चींटी की चाल से चलना है, माने बंद नहीं करेंगे, बंद करेंगे तो भी अभ्यास तो होगा, बंद नहीं होता, कि ये जीरो रोड है न ये बंद होता ही नहीं है। तो चींटी की चाल चलने से, कछुआ की चाल चलने से, बड़ा आनंद रहेगा। ये तो आपका जन्म जन्म बन गया, जन्म जन्मांतर के लिए आपका जीवन बन गया। सम्यक जीवन यहाँ से है ये है, ये संजीवन सम्यक जीवन, ये जीवन जीवन है। सैंट्रल कैनाल में घुसे बिना, बाहर जितने है वो जीवन नहीं। वो जीवन तो कष्टमय है। इसलिए इंद्रियाँ धेवता, भोग है, इंद्रोयों को पता भी न लगे, याने तुम्हारे शरीर में है। माने संसार में रहकरके आप जितेंद्रिय हो जायेंगे। और सब जो सुख दुःख है, सुख क्या है दुःख क्या है आपको न मालूम हो, इन दोनों को भोगते हुए आप आनन्द मिलता रहता है। मौला आदि अनेक संतों ने अनेक मार्ग से, अनेक पद्धति से और बता रहे है, गोल तो एक है, मार्ग अनेक है। लेकिन एक ही बात है ये छोड़ने से समझ आती है, अनेक जो आप में है।

ऐसा पकड़ो ऐसा चिपक जाओ, जैसे मकोड़ा.. को पकड़ता है, मकोड़ा जैसे पकड़ ले, उसे खींचे तो मुंडी टूट जायेगी, लेकिन वो छोड़ेगा नहीं। इसलिए ये छोड़ने के लिए नहीं कह रहा हूँ, दो मिनट, दस मिनट, एक मिनट, कुछ नहीं है तो चलते चलते याद कर लेना, बस हो गया, बस अपने काम में लग जाना। एक दफे वो जीरो मार्ग मिल गया आपको, वो नहीं बंद होता है, अनेक जन्म में वो चलता है। इस तरह ये छः भूमिका तक ला दिया आपको, और सात भूमिका जो है, वो तो जब छः में आयेंगे, तो सातवां से उसका संपर्क बन जाता हैं। वो साधक स्वयं समझता हैं, हमको बोलने की कोई आवश्यकता नहीं हैं। क्योंकि वो एबव टाइम एंड स्पेस हैं, देश और काल से परे है। ये श्रंखला गीता में दिया है। इन्द्रियाणि पराण्याहुरिन्द्रियेभ्यः परं मनः। मनसस्तु परा बुद्धिर्यो बुद्धेः परतस्तु सः। वो तुम्हीं जानो तुम्हीं समझो ये हमारे बोलने का काम नहीं है। षष्टम भूमिका तक कोई भी बोलता है उसके आगे कोई नहीं बोलता। स्वानुभूत्या विराजते।

देहो देवालयं प्रोक्तो, देहो देही निरंजनःअर्चितःसर्वभावेन, स्वानुभूत्या विराजते। तन, मन, धन, इन तीनों से उसकी अर्चना करना चाहिए माने साधना करना चाहिए। उसको प्राप्त करना चाहिए, उससे मिल जाना चाहिए, मिल क्या जाना, वो तुम्हीं हो। स्वानुभूत्या विराजते, उसके पास स्वयं के अनुभव है, ये सब बातें वहाँ है। वो हमारा बोलने का काम नहीं, वो स्वयं साधक जान लेता है। ईश्वर का रिस्पांस मिला है, उसका बाकी, में आदान प्रदान होता है, वहाँ तक सही है। सेल्फ इस विदिन, अखण्ड ज्योति रूप है, वो आपके सामने आ जायेगी बस। सारा ब्रम्हांड उसी में है, उसके सिवाय कुछ नहीं, मेरा अनुभव है, किताब में दिया हूँ। अब उसके परे और जायेगा तो वो है एब्सलूट वो निर्गुण निराकार स्वरूप है। इससे ऊपर आज तक कोई गया नहीं, इसी को पर्मोत्कर्ष कहते है। तो पर्मोत्कर्ष जो है, उसे पाने के लिए, जानने के लिए, बार बार आपका जन्म होता है। अपना जन्म होता रहता है। जन्म से क्या लाभ है? अब हम क्या

बतायें आपको, लाभ न होता, तो ये शब्द ही नहीं रहता, ये हाँ, और ये मूल संस्कृति है, भारत के।

- मैं बहुत लोगों से पूछा हमें जैसा, मुझे जो उत्तर चाहिए था, कुछ नहीं पाया। उनसे मैंने यही पूछा। कि भई ये गायत्री का क्या मतलब है? तीन गैय्ये है, एक एक गाय का तीन नाम है। तो कहते है, हाँ भाई बिगड़ा नहीं है। तीन पदानि युक्तानि सो गायत्री।तीन पद है जिसमें उसे गायत्री कहा, तीन पद हैं, पूछा भई कौन कौन से तीन पद हैं। तो एक ने हमको कबीरदास का दोहा बताया ये, पोथी पढ़ पढ़ जग मुआ पण्डित भया न कोय, ढाई अक्षर - प्रेम से पढ़ा तो पण्डित होय।पूछा भाई, ये ढाई अक्षर क्या है? वो ही प्रेम, प्रेमा ढाई अक्षर है।

हमको शहडोल में एक मिले, सतप्रेम की जय, एक नया पंथ निकला है, सतप्रेम की जय, सत् माने क्या? प्रेम माने क्या? हमको समझा दो, वो नाराज हो गये। खैर चलता है, जिस उक्ति के प्रत्युत्तर नहीं, उस युक्ति में उत्तर नहीं मिलता। नाराज हो जाते है, चलता है, माने अन्यमनस्क खिन्न मन होकर के नहीं समझा सके हमको। लेकिन मैंने कहा ये ठीक है, ये अक्षरों में, वो अ उ आधा म है, इसमें अढ़ाई अक्षर हुआ। लेकिन ढाई अक्षर हो गया कबीरदास ने ढाई लिखा है ठीक है। लेकिन हम विज्ञान की ओर जब आते है जब हम देखते है, जो आदमी दो हाथ और अढ़ाई हाथ का होता है उसको बौना बोलते है। ये डेढ़ फुट है माने अठारह इंच दो हाथ माने छत्तीस इंच और छः ब्यालिस् इंच। चालीस ब्यालिस् इंच ऊँचा जो आदमी होता है, उसे बौना कहते है। वो तो बौना हो गया, हमने कहा। ऐसा नहीं कुछ और भी हो सकता है, तो बोले आप बताइये, मैंने कहा हां हां ठीक है। हमारे जो सूझ है आपके सामने रखता हूँ, ये सूझ के लिए है सोचने के लिए है,इसको कोई सही मानकर न चले, सबके लिए एक विचार करने के लिए है। समझने के लिए मैं बोल रहा हूँ, तमाम बातें है, आप लोग विचार करके उत्तर देंगे।

मैंने कहा उसका नाम है ढाई अक्षर माने - अ, उ, म, मिलकर ऊँ बनता है। तो ऊँ जो हम देखते है, उसमें तीन गुण का है, तीन माने त्रिगुण, सत् रज तम, इनसे सम्बन्धित उकार है ऐसा वो सम्बन्ध होता है ऐसा। उकार माने सम्बन्ध और अर्ध चन्द्रमा और एक बिंदु माने अर्धमात्रा, वो महाशक्ति है।अर्धमात्रा करके, अर्धमात्रा स्थिता नित्या, वो नित्य है, शुद्ध है बुद्ध है, मुक्त है, परमानंद है, वही ऊँ कार है।तो सारा जग ऊँ है, और कुछ नहीं। ऐसा बताया गया, तो मैंने कहा ये, साढ़े तीन मात्रा है, माने प्रत्येक व्यक्ति अपने हाथ से, साढ़े तीन हाथ होता है। कितना भी लम्बा हाथ है भाई छः फुट, सात फुट है, अगर उनके हाथ से उसे नापा जाय तो साढ़े तीन हाथ का ही होता है। एक बालक भी अपने हाथ से अपने आप को नापे तो साढ़े तीन हाथ होता है, इसको मैंने विज्ञान माना। और अ उ म ये समझाने के लिए है। वो ढाई अक्षर हो गया, और ये जो आपके सामने जो वर्णन कर रहा हूँ ये साढ़े तीन हाथ का व्यक्ति है, दुनिया में आप कहीं भी जायेंगे आप, एक व्यक्ति जो है अपने हाथ से साढ़े तीन हाथ का वो ऊँचा होता है, इसको मैं चला।
अब ये जो ऊँ है, तो इसको प्रमाण करने के लिए हमारे भारतीय संस्कृति में, एक ग्रंथ है, जो कि लिपिबद्ध की गई है, उसका नाम रख दिया गया, उस ग्रंथ को नाम दे दिया गया - ऋग्वेद, दूसरा दिया गया यजुर्वेद तीसरे नाम दे दिया गया, अथर्ववेद चौथा नाम दे दिया गया, सामवेद।और इसको हर कोई आते है मैं धन प्रार्थी हूँ, मैं योग प्रार्थी हूँ, मैं, सब ठीक है मैं धन प्रार्थी हूँ। वेदाध्यायी हो या ब्रम्हचारी हो। तो मैंने उनको ये पूछा जो ये ग्रंथ लिखा है, तो न न न, ये लिखा नहीं गया ये अपौरुषेय है, हमने कहा अपौरुषेय कैसा? ये लिखे हुए कागज में कैसे आया? अपौरुषेय माने वो अपने आप मिला, आकाशवाणी से जैसे वो किसी को प्राप्त हो जाता है, इस प्रकार से मनीषियों के दिये कार्य के अभ्यास से वही परम आत्मा, वही परम पुरुष वही महेश्वर, वही ईश्वर परमेश्वर, वही उपदृष्टा, अनुमन्ता,

भर्ता, भोक्ता, निर्गुण, निराकार, वही अपने आपको ज्योति के रूप में लाकर के और ध्वनि के रूप में प्रकट होकरके आवाज दिया, ये जो ध्वनि है, ये जो अक्षर है, उसी की मुनियों ने सुना फिर याद हो गया और वही फिर वो कण्ठ से कण्ठ, मुख से मुख वो पढ़ाते गये और चलता गया। पहले तो कागज थे नहीं, लिखने वाले थे नहीं, क्योंकि किसी ने सोचा नहीं, किसी ने मनन नहीं किया, कब कहाँ ,कोई प्रमाण नहीं है कोई संचय नहीं और किसी प्रकार का। वो वेद है और उनके नाम इस प्रकार से दे दिये गये - ऋग्वेद, यजुर्वेद, अर्थववेद और सामवेद।अब प्रश्न ये आता है इनके पढ़ लेने से, आज हमने पूजा किया, इनके मंत्र हमको ये बताया। पढ़ा, ऊँ सहस्त्र शीर्षा... त्यत तिष्ठती दशान्गुलं। अब हमारे ये सामने मंत्र आया तो सिर में, रास्ता घूम गया। कि भई वो जो पुरुष है, अपौरुषेय माने जो अपने आप में है, उसे जन्म नहीं दिया किसी ने, न पैदा हुआ है। उससे सबकी पैदाइस है, मानी ज्ञानी मानी भूतानि गायन्ति येन जातानी श्रीमन्ते ... सत् ब्रम्ह। उसको ब्रम्ह कहा माने महान उससे और कोई महान नहीं, माने लासानी। दूसरा कोई नहीं एक अद्वितीय है, उससे अलग और दूसरा नहीं है।

सबों ने वर्णन किया है, क्या दिया हैकि - ब्रम्हानन्दं परम सुखदं केवलं ज्ञान मूर्तिम द्वंदातीतं गगन सद्दशं........ सद्गुरुं तं नमामि। इस प्रकार से सबों ने वंदना किया है। किसकी वंदना किया है, यं ब्रम्हा वरुणेंद्र रुद्र मरुतै...सुरासुर... तस्मै नमः, उस देव को नमस्कार करता हूँ, जिसका वर्णन इस प्रकार से दिया गया है, जिसका नाम है - ऊँ, वो ऊँ अ, उ, म वाला नहीं है। ये वो ही आकृति त्रिगुण मया, वो ऊकार से सम्बन्ध है जिसको ये अद्वैत सिद्धांत वादियों ने इसको माया कहा और उसको ब्रम्ह कहा है तो ब्रम्ह और माया का सम्बन्ध, यद्यपि डाक्टर लोग भी कहते है, और इस बॉडी को और इस आत्मा का .. है, ये निकल जाने के बाद किसी काम का नहीं। ये प्वाइजन है दूर से अलग अलग किया है, ऐसा न होता तो

कोई न मरता हम मरने न देते। तो ये चीज उससे ये सब उत्पन्न हुऐ है, ऐसा मेरा स्वयं का ख्याल है और ये प्रमाण भी है।
वो जानने लायक है क्या जानने लायक है, जिससे ये सब की उत्पत्ति है, अस्तित्व में भी है और उसमें विलीन हो जाती है और जिसके निकल जाने पर सब विध्वंस है कुछ भी नहीं रह जाता है तब विद जिज्ञासा तब विद वो जानने योग्य है। अगर तुम्हें जिज्ञासा है जानने की तो ये जानने योग्य है वो क्या जानने योग्य है - तत् माने वह ब्रम्ह, माने महान, वृहत धातु से बना है। और विद जो धातु है वर्धमान, आप अपने आपको उस परम तत्व को धारण करने पर नीच से नीच रावण से भी बदतर आप अपना जीवन व्यतीत कर सकते है, और वो राम से भी उच्चतर आप जीवन व्यतीत कर सकते हैं, वही परम तत्व को धारण कर लेने पर। वो कौन है, परम तत्व है, और ये नाम हैं। वृहत नाम है जो बताया आपको। उस नाम वो एक अक्षर वाला ब्रम्ह है, वो अक्षर नाम है। अक्षर माने... है वो, अक्षर माने अव्यय जो कभी खर्चा होता नहीं वो बढ़ता ही है और कभी उससे नुकसान होता नहीं उसको धारण कर लेने पर। वो भी सतगुरु चाहिए , सद्गुरुं तं नमामि भावातीतं, तुम्हारे भाव से तुमको समझना चाहिए, त्रिगुण रहितं, तो इन आँखों से इन हाथों से पैरों से भोग सम्भोग तक, योग से भोग सम्भोग तक, एकआदमी भगवान बना था सब गप्पे हैं, हैं को ठीक करना है। इसमें कुछ भी सार वार नहीं है। एक विद्वान आदमी खूब वाचाल है, विद्वान उसको लोग बोलते है, पूजते है और एक ऐसा विषय ऐसा सामने रख देते है जिसमें सारी दुनिया पहले से और मर रही है उनको और मार रहा है उसमें। अब यहाँ से निकलके दूसरे देश चला गया, मैं निंदा नहीं करता हूँ।, मेरी उनकी बातचीत है मुलाकात है, और वो निरुतर हुए हमारे प्रश्न पर बहुत साक्षी है, और ये दुर्ग की बात है, छोड़ों विषयांतर हो रहा है।
तो तात्पर्य ये है ये पुरुष सूक्त है, जो कुछ वर्णन किया जो नाम लिया वेदों के -अपौरुषेय है, वो अपौरुषेय कौन सा वही वो पुरुष है। जो कि जिसका

कोई आकार नहीं कोई गुण नहीं है, कोई मूर्त नहीं है, कोई स्वरूप नहीं है, कोई आकृति नहीं है, वो कुछ नहीं लेकिन सब कुछ है,वो। वो जाना नहीं गया, अ माने नहीं, वो जो पौरुष है वो जाना नहीं गया। वो क्या कर सकता है और क्या नहीं कर सकता है जाना नहीं गया। परस्पर विरोधी है ऐसे कांट्रेडेक्टेरि कहते हैं। उसको वो कैसा है कि बिना पैर चलता है, बिना हाथ सब काम करता है वो, बिना आँख देखता, बिना कान सुनता, बिना मुँह खाता, बिना मुँह बोलता है, ये योगी है। योगी लोगों ने इसको ध्यानावस्थित्, ध्यान की अवस्था में, ध्यान योग के द्वारा उसमें प्रवेश कर, अपने आप को माने मिलाकर, तन्मय होकर तन्मय माने उस जैसा होकर, तल्लीन होकर के नहीं, तन्मय माने राम श्याम है, श्याम राम है, नहीं नहीं, राम ही श्याम है और श्याम ही राम है। ये स्थिति को प्राप्त किया अभ्यास करके तब वो समझ में आयेगा, वो कृष्ण क्या है और राम क्या था। ये हम खाली आजकल लेक्चर बाजी करते है, उसमें कुछ रखा नहीं है। हम ऋग्वेद, ऋग्वेद का मंत्र पढ़कर हमको सुनाया, आपसे हम कुछ जानना चाहते है।

ऋग्वेद, ऋग् धन वेद ये ऋग् शब्द की उत्पत्ति कैसी है, जिसको मराठी में रुग् कहते है। रु जो स्वर है सप्तम स्वर है, अ आ उ ऊ इ ई, रू, रु का अर्थ क्या है? दो प्रकार का है, एक तो उपहास और एक ब्रम्हहास। रु का धातु जो है उसका अर्थ अलग है, रु का अर्थ क्या लगाते है: जाना, पाना, हिलाना, उत्तेजित करना, माने गर्म करना, काम में लाना, काम से लगा देना उसको, जिसमें गति नहीं है गति से लगा देना, काम ले लेना उससे और आक्रमण करना और भाव बोलना और क्या घर्षण करना माने उसको घसना अच्छी तरह से, नहीं सुनता तो दे धक्का और रोकना। ये केवल रु जो स्वर है, सप्तम स्वर जो है, रहस्य जो वर्ण माला नहीं है ये इतना आप, अर्थ मुझे मालूम है, इसको रु कहते है।अब ये ग, कैसा है, प्रत्यो+कु, ये सूत्र है, जकार् का जकार होता है, और जकार का यकार

होता है, यही युज, युज् माने दो जोड़ना, युग माने दो, दो को जोड़ देना युज हो गये। तो जकार का गकार हो गया इस प्रकार से वो जो शब्द है, वेद, उसका ऋग्वेद में क्या है? ऋचाएँ है, ऋचा है, ऋचा कैसा बना? ऋच है, मूल धातु है ऋच लेकिन ऋक् लगने से वो, ऋचा हो गया, ऋचा हो गई वो, ऋचा माने ,स्तुयन्ते गायन्ते स्तुति की गई है, गायन की गई है। किसकी स्तुति की गई, किसकी याने किसका गुण गायन किया गया है। ये इस अपौरुषेय जिसको अमूर्त कहते है, आलमाईटी कहते है, महाशक्ति कहते है, परमेश्वर, महेश्वर, ईश्वर, आत्मा, परमात्मा, इनका जो नाम दिया गया है, उसकी स्तुति की गई है। तुम्हारे क्या नाम, मुस्लिम धर्म में भी उसको अल्लाह नूर है, पर्शियन जो है क्या कहा उनने हमारा भगवान अग्नि है, वेदों में भी मिलता हमको, ऊँ अग्नि इडे पुरोहितम्। पुरोहित, अपना आगे जो हित चाहता है, उन्होंने ये अग्नि नाम ब्रम्ह कहा, इस ब्रम्ह का नाम है ऊँ है,ॐ को धारण करते है। इडे नाम खोजते है ढूँढना, आपको ढूँढना पड़ता है। ढूँढना पड़ता है, ध्यान करना पड़ता है ध्यान नाम दौड़ने का है, ध्या माने प्रत्यय लगने से तब वो दौड़ होता है, हिंदी में कहा है क्या धाय धाय आवत है रे, माने क्यों दौड़ दौड़ आते हो। ध्यान और प्रत्यय याने अभी आपको जाना है, भविष्यत् अन प्रत्यय लगने से भविष्यत् का बोध होता है, काल का बोध होता है। हम अपनी भाषा ही नहीं जानते, किसको क्या समझायेंगे, किसको क्या, मैं पढ़ रहा हूँ, मैं भी विद्यार्थी हूँ। मेरी हिंदी भाषा भी नहीं है,आप लोगों से सीखा हूँ, सीखना चाहता हूँ और अर्थ जानने हमको आप समझायेंगे बाद में।

तात्पर्य ये है ऋग् शब्द का क्या अर्थ है? ऋग् का क्या अर्थ होता है, ऋग् का क्या अर्थ होता है बताइये हमको, विधान, ऋग् का क्या अर्थ होता है विधान, विधान माने सिस्टम, प्रणाली,पद्धति मेथड याने मेथड ऑफ वरशिप यहाँ वरशिप कहेंगे, सर्विस कहेंगे, सर्विस तो संसार के लोगों की जो कि जाती है वो सर्विस है। लेकिन ये जो आलमाईटी है उसको जाने-

उसको वरशिप कहते है। मेथड ऑफ वरशिप जो है वो जो सिस्टम है, प्रणाली है, युक्ति है उसका नाम है विधान।अरे भई किस विधान से आप अपना कार्य कर रहे है, किस विधान से ये बनाया गया है। तो विधि शब्द है विधि से अन प्रत्यय लगने से, अकस्मय ये विधान हुआ, विधि नाम बुद्धि, धी नाम बुद्धि, माने विशेष बुद्धि से, जिस बुद्धि को अनुभव है, ज्ञान है, ये विशेष है उसके कि वो ज्ञानी है। इसका ज्ञान है वो है ज्ञानी ये ब्रम्ह तत्व का ज्ञान है जिसे वो है ब्रम्ह ज्ञानी। तो ये ब्रम्ह ज्ञानी के पास ही उसका विधान आपको मिल सकता है, इस तरह से उस ऋज् शब्द का अर्थ होता है विधान। वो विधान आपको मालूम होना चाहिए। मालूम होना चाहिए माने ऋग हो गया, आपको बोध होना चाहिए। वो आपको सीख लेना चाहिए, आपको जान लेना चाहिए, विधिपूर्वक कार्य करना चाहिए, तब सफलता मिलती है। वेद, वेद माने कोई ग्रंथ का नाम नहीं है विद धातु से ये, विद शब्द से व्युत्पति है, वेद माने ज्ञान। विद माने टू नो, जानना, जिज्ञासा। विद,अगर जानना है, जिज्ञासा है, जानने के तत ब्रम्ह ये जो तत्व है, ये जानने के जिज्ञासा है, टू नो, जानने योग्य।और जो जान लिया उसका नाम है, वेद, वेद माने ज्ञान। ये ज्ञान जिसको हो जाय, ये ज्ञानी है। उसी को ब्रम्हज्ञानी कहते है, उसी को न्याय सत्ताधीश कहते है।

- तो ये जो है परिवर्तन होते रहते है, शक्ति वही है, ये लक्षणा है, तो ये विकसित हो गई। निर्णय शब्द कहा ने नय नाम झुकने का है, अब कहीं भी झुकने का समझ बाकी न रह गया। याने कहीं भी चूक न हो। निर्णय, नाही झुकने का अर्थ अब कहीं भी नहीं, ये दोष है और ये दोषी है, बस खत्म। खत्म हो गया माने सत्य है वो ।..माने दूसरा, हम इतने व्यस्त है कि एक समस्या हल हुई नहीं, हुई नहीं कि दूसरा सामने आ गई। तो ये सत्य इस प्रकार से हो, होते हुए सत्यमय जीवन होते हुए, सन्मार्ग में रहते हुए जीवन में न, क्या कहते है उसको, संगति न होने से, समूह माने सँगतियाँ

हमारे इस प्रकार से अच्छे न होने से, सत्य मय जीवन, सत्य के भित्ति के अंदर, सत्य के रोज सामने, बोध होता जाता, सत्य से बल मिलता चला जाता है, और सत्य से लोग प्रभावित होते चले जाते है। इसलिए ये सत्य है, ये मन में और टिकने का, सत्य मन में नहीं है, एक समस्या हल नहीं हुई दूसरी आ गई, और कोई कारण नहीं है। मेरी समझ से जो कुछ भी है, समस्या का है, बोल रहा हूँ, तो इन शब्दों में उनका अर्थ है। इससे सब होता है, न्यायाधीश है। ईश माने समर्थ, अधि माने सूक्ष्मातिसूक्ष्म निर्णय करने में जो समर्थ है, माने ये दोष है, ये दोषी है। अधि का अर्थ है, सूक्ष्माती सूक्ष्म, जहाँ तक हो निर्णय हो पहुँच जाय, ये दक्ष है।और न्याय माने नाही, माने समाप्ति। अय माने भविष्य माने ढूंढते, ढूंढते खोजते खोजते खोजते खोजते, अब नहीं कोई जगह आगे जाने के, एक ही ठिकाना, ये यही है, इसका नाम सत्य है।और सत्य अधिशय है, हाँ जो कुछ कारोबार है जगत में। तो ये दृश्य के दो परिणाम होते है, या तो उलझने का या सुलझने, यही कारण है मोक्ष के। माने सुलझने का, अर्थ मोक्ष अभी बताया। माने तत्व बोध। उलझने का सुलझने, यही तो है। ये ऐसा मेरी छोटी सी, बुद्धि में,माने रचना बुद्धि के जो कुछ हम बोलते है। तो कभी न कभी, ये काम आयेगा ही।

आत्मा सामने है देख पाते है, देखिये एक ही पहाड़ा में ये पद्धति पढ़ाई जाती है, ये तीनों बातें है, दो दूनी चार, दो तिये छः, दो चौके आठ, एक का पहाड़ा तो होता नहीं, वो एक ही, जब एक ही हो गया तब समाप्त हो गया। अब देखिये दो दूनी चार, क्या किया दो में दो जोड़ा, दो और दो का गुणा किया- चार हो गया। और दो से दो घटाये तो शून्य। याने सत्य की उत्पत्ति किससे है - शून्य से। माने तीनों प्रकार है, ऋण किये दो से दो घटाये शून्य आता है उसमें। दो और दो मिला दिये चार हो गया।और गुणा कर में लाया, चार हो गये। और जोड़े एक एक एक तीन और एक चार हो गया। ऐसे दो से दो घटा दो, शून्य आ गया। सत्य / सत, की उत्पत्ति शून्य से है। माने एक हो गया। माने आत्मा एक है - वेदांत है ये। आत्मा एक है, ये

वेदांत हो गया। वही शून्य की ही तो कीमत है। सारे ये जो बनाया गये, शून्य से ही तो बनाया गये है। शून्य, एक करके आप उसकी रचना कीजिये। ऐसे गोल बना दिये, और गोल का ऐसे जोड़ दिये, एक हो गया। ऐसे गोल बना दिये, बाये तरफ ऐसे गोल घुमा दिये तो नौ हो गया। वो शून्य बना दिये, आधार में तिर्यक है जो टेढ़ा कर दिये, आधार बन गया नीचे और एक गाँठ कर दिये शून्य बना दिये, और ये पूँछ लगा दिये तो बन गये दो बन गया। याने शून्य से सबकी उत्पत्ति है। वो गोल में तो सब है। वो ही शून्य देखिये, शून्य ये एक है। एक दशमलव हो गया, एक बटा दस हो गया। जीरो पाइंट देकर एक हो गया, इकाई दहाई जहाँ दहाई पर एक बन गया, ठीक है न। वही इधर् रख दिये, वही शून्य एक, दाहिने तरफ रखा जाय तो दस हो गया। वो ही बाये तरफ दशमलव करके (शून्य के) रखा जाये तो एक बटा दस हो गया। तो सारे खेल शून्य से है। तो सारे खेल उसी का है। एक महाशक्ति है, वो महाशक्ति सर्व व्यापक है, उसका दर्शन भी हो जाता है, बिना कारण, जो सर्व व्यापक है। और उसमें भी अभिव्यक्ति है ये ज्योति है। तो ज्योति माने खाली उसी का नाम है, और ज्योति माने पूर्ण / शून्य, ज्योति माने प्रकाश, ज्योति माने जिसको जिसके द्वारा हम चलते फिरते रहते है, ज्ञान है, ज्ञान शक्ति है वही निराकार है। ये कई अर्थ होते है। ये मानव शरीर बिल्कुल अलग ही प्राणी है, बाकी सब भोग योनि है। मानव प्राणी अपने भोग को काट सकता है।अगर कोई सतपुरुष मिल जाय, उसको विकसित कर सकता है। ऐसा पुस्तकों / खुद को, वो अध्ययन करता है, इसमें जो विद्या है, आत्मविद्या है, शब्दों का कोई अर्थ ही नहीं होता, उसके पास, अधिमान्, वो कार्य है, ब्रम्ह है वो सिद्ध हो गया। वो सिद्ध होते चले जाता है।..लेकिन ये है वो बना रहा उसमें, तो सिद्धियाँ बढ़ती है, ये सिद्धियाँ से क्या होता है उसको, ये रियल हो जाती है। पूर्ण विकास होने के लिए बहुत जन्म लगते है उसको बहुत....। ये भूलोक में माँ के गर्भ में नहीं आता अब। यहाँ से स्वलोक को जाता है, अंतर में।

- समत्वं योग उच्चते; ये योगस्थ हो करके, मध्य में आ गया, ऊपर नीचे दोनों में है। वो बीच में आ गया, तो दोनों में वो रहता है, लेकिन न वो किसी का है और वो सबका है, न वो घर का है, लेकिन वो घर का भी है, समाज का नहीं है, समाज का भी है। ये दोनों जगह है वो समान है सिद्धि-असिद्धि, हानि- लाभ, दोनों उसके लिए बराबर हो जाता है, अपना पराया दोनों बराबर हो जाता है - जब चौथे केंद्र में आके, अनाहत में आते है, तब ये बातें होती है। तो उसका कार्य जो होता है सबके लिए समान हो जाता है। उसका अपना पराया कोई नहीं रहता, फिर परमार्थी हो गया, होते हुए भी वो परार्थी होता है। अपना स्वार्थ वो नहीं करता, लेकिन परम जो प्राप्त किया तो औरों को अध्ययन और अभ्यास कराता है। अपने जैसे सबको तैयार कराता है, उसमें भेदभाव नहीं रहता है। वासना, क्षीण, क्षय होते चले जाता है और उसको आत्मबल, आत्मशक्ति प्राप्त होते जाता है। जिसको कहते है ईश्वरीय शक्ति कि ये ईश्वर की देन है। कहते है न ईश्वर की देन है, ये किसी की देन है, देन मिला तब ये ऐसा होता है। और न किसी का है, न किसी की है, अपनी ही है, सब। हम नहीं जानते इसलिए किसी बड़े का नाम ले लेते है आदमी चुप हो जाता है, आ।

  तो तात्पर्य ये है कि चौथे केंद्र में जो हम आते है जिसका नाम है: सत्वापत्ति सतोगुण वहाँ आपत्ति / आसक्ति माने स्थिर हो जाता है, सतोगुण। और सतोगुण से सब कार्य आप संसार में सब कार्य है, जो भोग भाग है बाकी है सब भोगते हुए सबके बीच में रहते हुए आप आनन्द पूर्वक इस शरीर को त्याग करके और फिर से श्रीमंत के घर में जाकर जन्म लेता है। या योगीयों के कुल में जाकर जन्म लेता है, और वहाँ से फिर उसका कारोबार वो, ये आत्मशक्ति का प्रचार और प्रसार वो संसार में, माँ के पेट में आते के साथ में, वहाँ से शुरुआत हो जाती है। तो इसी जन्म में आपका सब,ये संस्कार आपको सब मिल गया, जिसका नाम है धन आत्मा रूपी धन है, बाकी ये सब ऋण है, ये सब धीरे धीरे, आत्मा रूपी सूर्य से ये सब अंधकार मिटता

चला जाता है। अपने आप मिटते है सब सारा, और ये सब क्लेश दूर होते चले जाते है। हमें अपने क्लेश को मिटाना है और कुछ करना नहीं। तो आत्मशक्ति हमारे में इसलिए हम बोलते है, उठते है बैठते है चलते है आते जाते है, सब। ये तो देह - एक आलय है, ये चलता फिरता मंदिर है। वो मंदिर नहीं, कि झगड़ कर बना दिये, वो खडा है वहाँ। ये मंदिर चलता फिरता है, चलती फिरती है। जैसे तुलसीदासजी ने, एक चौपाई में कहा, रामायण में - मुद् मंगलमय संत समाजू, जिमी जग जंगम तीरथ राजू। ये तीर्थराज वो नहीं कि मकर संक्रांति आ गई। सारे, तीरथ वहाँ जाते है, सब कोई जाते है वहाँ नहाते है, इससे बड़ा फल मिलता है। हम तो नहाये हमें कुछ नहीं मिला। तीर्थराज ये है, प्रयागराज ये है, ये त्रिवेणी संगम है। ये याग माने यज्ञ, माने आत्मयज्ञ, प्रयाग माने क्या? हिंदी में कहते है, याग, को, ये यज्ञ है। प्र माने प्रर्केषेन ये आत्मयज्ञ है। आत्मयज्ञ करने पर तब त्रिवेणी संगम में स्नान होता है। ये त्रिवेणी संगम में स्नान होने के बाद, ये सारी शक्तियां जो, प्रकृति की सारी शक्तियाँ जो है आपको प्राप्त हो जाती है, समय समय पर वो शक्तियाँ उदय होती है और अपना काम होते जाता है। ये षष्टम केंद्र में जाके होता है, लेकिन यहाँ से शुरुआत होता है। चौथे केंद्र से ये सब शुरू होता है, अनाहत चक्र है, तो सत्वापत्ति ये केंद्र है। अभ्यास करने पर धीरे धीरे धीरे हम यहाँ आकर पहुँचते है और हमी है, और दूसरा कोई नहीं है। इसलिए तनुमानसा, आपका जो विस्तार है, विस्तार को देखिये, और सोचिये इनमें कहाँ कहाँ, कौन सा नहीं बनता, कौन बनता। हम अपने आप को नहीं पहचान रहे है, कौन कौन रहा वहाँ पर, कम कमाई है। दूसरा जन्म के है सब वो। ये लोभी लालची है उनको सौपों तो हम देखरेख करेंगे, जहाँ तहाँ पहुंचे। छोड़ने का नहीं, विषय छोड़ दिया भाई, नहीं नहीं देख रेख रहना चाहिए। सहजं कर्म कौन्तेय, सदोषं अपि न त्यजेत। ये सहज कर्म हो जाता है, आपका। दोष दिखाई

देता है आपका हमारा ये भी दोष, दोष नहीं है ये। ये औरों को प्रामाणिक करना है औरों को सिखाना है संसार में कैसा रहना, कैसा व्यापार करना, कैसा अपने घर में रहना और लोगों के साथ में कैसे व्यवहार करना - ये व्यवहार है। इस तरह से ये बाहर भीतर ये दोनों एक है, जब आप सप्तम भूमिका में पहुँच जायेंगे। तब आपको बाहर भीतर एक दिखाई देगा। अभी हम सारे भ्रम में पड़े है। सारे, क्या बताएं हम आपको, हम आज स्थिति मेरी कैसी है। ये सब एक सिक्का के दो बाजू होते है, दोनों बाजू बराबर है, तो वो व्यापार बाजार में चलता है कोई भी हो, वो उसको, स्वीकार करता है। तो सिद्धांत ऐसी होना चाहिए कि कोई भी स्वीकार करे, हिंदू हो मुसलमान हो -क्रिश्चियन हो पारसी हो जैन हो बौद्ध हो कोई भी हो कैसा भी हो कैसा भी संप्रदाय हो, तुम ऐसे रास्ता, ऐसे शब्द, ऐसे अनुभूति हो तुम्हारी, कि ये सब कोई उसको स्वीकार करे। जब वो मुद्रा आपकी दोनों बाजू बराबर है, तब सब कोई उसको स्वीकार करता है, संन्यास ले लिया हर आदमी संन्यास लेने तैयार नहीं, और गृहस्थ ही गृहस्थ है, भाई हम संन्यास लेंगे तब करेंगे तो आपको भी कोई स्वीकार नहीं करेगा नहीं। स्वीकार करते है, तो दोनों बाजू रखने के लिए क्या होता है। हमारे यहाँ पहले तीन ही आश्रम थे, चार नहीं थे, ये शंकराचार्य ने लाया चौथा, आश्रम संन्यास, पहले तीन ही था। ब्रम्हचारी, गृहस्थी और वानप्रस्थि; वानप्रस्थ ये तपस्या है, दो बाप एक घर में नहीं रह सकते थे, दो बाप नहीं रहते है, एक ही बाप रहता है घर में। वो क्या करते थे, बेटा समर्थ हो गया, शादी कर दिये, भाई हम चले ।

- ये रहते है न, उसका डिवाइन कहा जाता है फिर। ठीक है न, फिर आप उसको ऐस्प्रोलाइज नहीं कर सकते। माने क्या कहते है, जो है, आप लोग, जड़ एनालाइसिस, दिलाते है, बेकार है वो। अगर रिसीवर नहीं है, उस तरह से सिद्धहस्त नहीं है, तो आप से हो सकता है क्या? (नहीं) तो ये हमारे

तात्पर्य है, जो धीर है, जो अभ्यास करता हैं, वो ज्ञानी बनता जाता है। सूझ बुझ उसको मिलता हैं, इंट्यूशन होता हैं, प्रिडिक्शन होता है, प्रीकौगनिशन ये सब बातें होती है, महान होता चला जाता है।और बाकी जितने नशे, हैं, वे सब घटिया और बदमाश और लुच्चे हो जाते हैं, ये सब इंस्पेक्टर साहब, बैठे है यहाँ पर।और आप डाक्टर है आप जानते हैं, इस बात को, फिर आप, एक्सपर्ट हैं, सब डाक्टरर्स है यहाँ पर। अगर मैं बराबर है न कहता हूँ, मना करिये हमको सब। इससे हमारा जो संस्कृति जो हैं, योगाभ्यास जो है, इसी से विकसित होता है। और वो अकल्प है, वो कोई भी करे वो होता है, अचानक भी होता है, अचानक भी शक्ति मिल जाती है। अचानक लोगों को दिख जाता है, अचानक हो जाता है, अरे देखो मैं देखा था और वो बराबर हो गया। वो सब, कारोबार में, बोलते हैं, न कभी कभी।, क्या बात है, ये, ये सब ऐश्वर्य है। ये शरीर भी ये पूर्ण है, महाअनंतशक्ति भरी है । आपमें, अनंत शक्ति अदृश्य है, सबमें, ओह् अकूत अथाह शक्ति है।

बोध वो कैसे करना पड़ता है? हाऊ टू यू एबाउट दिस। प्रेक्टिस मेक्स मेन परफेक्ट। सो विदाउट ऐ टू गुरु नन हैस फाउंड गॉड। ये काट्रेडिक्टेरि। ये, राम रामाय नमः, नमः शिवाय नमः, फला शिवाय, ढिकाना शिवाय, इससे कुछ होता नहीं। ये ठीक है, आधार है, मन बहलता है, इधर उधर जाता है, याद आती है, तो उसकी जगह है,इसका नाम ले लिया। ये इस तरह है। ये इतना जरूर है, कि इतना काल पर्यंत, राम राम करने से, ढोक बज जाते है, फर्क नहीं कुछ है। लेकिन वो राम के पीछे, जो कुछ है तब होता है। ऐसा कौन, किसके पास रामायण नहीं है, लिखा है जिस घर में रामायण है वहाँ हनुमान जी है। लेकिन, जब हनुमानजी है तो ये फिर सब बातें क्यों होती? हम यही पूछते है। ये सब प्रलोभ है कि आप रामायण पढ़े, और अपने आपको उस मोल्ड में मोल्डिंग करें। हनुमान जी वो देख रहे है, डर रहा है, ताकि आपके पास कोई संरक्षक है, आपकी रक्षा करने

वाला है, न घर में, ये सब युक्तियाँ है, मनीषियों के हमारे ऋषिगण, जो बड़े लोग हुए है, बड़े होशियार थे, कि अंजाने में भी आपका, माने उस महान तत्त्व, परम् तत्व, महाशक्ति को आप अंजाने अंजाने में भी आप उसमें रिलाय करते है, आप भरोसा करते है और आपका काम होता जाता है, यही है भावना। तो भक्ति जो करता है, मेरी तो भक्ति है, तो भक्ति का बेस क्या है? माध्यम क्या है? भावना, ये भावना है, इससे उनका काम होते चला जाता है। ये है भारत में, ये भारतीय संस्कृति ये है हमारी। हम मूर्ति पूजा नहीं करते, इस मूर्ति पूजा में ये रहस्य है। रामायण हमारे घर में है, सब ठीक है, हनुमान भी हैं, लेकिन इस तरह कार्य है, माने आपको कुछ न कुछ करना होगा। वो खाली रामायण रखने से, हनुमान, वो काम नहीं करने का, रामायण में क्या है - वो, उसमें अपने आपको पढ़ने से धीरे धीरे, होता है। अगर आदमी जैसा सोचता है वैसा हो जाता है तो रामायण पढ़ेगा तो कुछ न कुछ बनेगा कि नहीं, क्या? कुछ न कुछ आचरण में आयेगा की नहीं, तो जब आयेगा तो फिर संरक्षण, अपने आप (आपमें) वो होते जायेगा ही, बस इतना ही। सुरक्षा चाहिए उसको, वो संरक्षण मिलता चला जाता है, काम बनता चला जाता है। माने संस्कृति कितनी, माने इतनी इजी गोइंग है, लेकिन समझने और समझाने वाला होना, तब ये होता है। इसलिए जो हमारी संस्कृति है इस देश में है साइंस।

वो मैं नहीं...अगर वो प्राप्त है तो वो करे, दुनिया क्या कहती है, आपसे ही प्राप्त करते है, आपको ही गालियाँ देते है, अपमान करते है, और खुद ही नहीं जानते आजकल ये बड़े भक्त है। होशियार है माने। ये है इस ओर भय नहीं, यही सब विधि है, अपने आपको बलवान बनने के लिए है। अपने आपको, इंट्यूटिव पावर, प्रिडिक्टीव पावर, पैरमाउन्टी पावर डेवलप करने के लिए है। ब्रम्ह सत्य जगत मिथ्या, वो वेदांत है। वो बहुत दूर है, उस ओर कोई जाता नहीं, उस ओर वो कोई शक्ति नहीं और उसकी कोई आवश्यकता है। वो केवल लेक्चर के लिए है और प्रवचन के

लिए है, और धर्म के नाम पर पैसा जमा करने के लिए है। धर्म की व्याख्या ही नहीं जानते, वे लोग। धर्म शब्द की व्युत्पति क्या है? इसकी ईमोलाजी क्या है? ये हम नहीं जानते, मनमानी सब, सम्प्रदाय रिलीजन लोग जो है, मनमानी, खींचातानी, करते है, ऐसा है। और मराठी में एक कहा गया है: बड़ी दुकान से, जबरन मारे न रोवन देव।जो जो हुआ है, मांगते जाता है, चल बे रोया साले और देता हूँ, ये है।विद्वान माने ये लोग है। तो ये जो दुनिया जो है, यहाँ व्यापार है, ये व्यवसाय है। ऐसे है, ये बुद्धि हो गया है, व्यवसयात्मिका बुद्धि, ऐसे रखा गया है, और ये है गीता के अंदर, समान है ये। यही कृष्ण ने अर्जुन को कहा, उनने धनुष बाण उतार करके रख दिये, ये बाबा है, ये दादा है, काका है, ये गुरु है,ये बड़े भाऊ है, ताऊ है, ये नाना है, ये काका है, आचार्य है, सब। और काँप गया वो,तब कृष्ण ने समझाया, वो तो चैलेंज है। वो चैलेंज करते है, क्षात्र धर्म है तुम्हारा, चैलेंज स्वीकार करना है वरना, तुम नपुंसकों में तुम्हारी गिनती हो जायेगी। चैलेंज किया है तुम्हें ऐसेप्ट करना होगा, तुम अपने आप युद्ध तो नहीं कर रहे हो, उनसे। और वेदांत ये है, कि कृष्ण जो था, अगर आप मानते है, राम कृष्ण आदि को तो अच्छा है, (विराट) दिखा दिया उसको रूप, देखो ये तो सब पहले से मरा हुआ है, तू तो खाली निमित्त है। उसमें वेदांत जिसको कहते है, वो है सत्य, सत् सत। सत शब्द से सत्य को जो रियलाइस किया गया, सत् माने वह डिवाइन एनर्जी है, कास्मिक एनर्जी नहीं डिवाइन एनर्जी। वो आँख खोला, और वो आँख खोलकर के अर्जुन को सब दिखा दिया - कि आलमाईटी है, वर्ल्ड सोल जिसको, (कहते है) जगदात्मा, कोई, क्रियेटर, है। कर्तुम अकर्तुम अन्यथा कर्तुम (स)सक्तः। वो सब कुछ करने में समर्थ है। करते हुए नहीं कुछ करता, नहीं करते हुए सब कुछ करता है। अन्यथा, अन माने नाही, यथा माने ये जैसा है वैसा मैंटेन् है, मैंटेन् भी करता है, सब कार्य में समर्थ है - वो आलमाईटी है। और अब हम कहें ये

है, यू है, त्यू है कहा करो, आप । हम भी सुनते है अब, आप लोग सुनते हो, और लोग सुनते है। तो ये जगत में इसमें जो मिथ्या है, उसको वो साफ कर देते रहता है। माँ बाप से लेकर के, सुप्रीम कोर्ट तक, क्या देखा जाता है, नियम, को, जो बनाये गये है, राष्ट्र हित के लिए, समाज हित के लिए, गरीब व्यक्तियों के हित के लिए, वो तोला गया, कैसा तोला गया, कौन कौन इसमें है, (सब) और दोषी ढूंढे जाते है और दोष और दोषी दोनों एक हो गये, फिर मिलन हो गया। तो ये व्यसायत्मिका व्यसाय वाले पथ के है ये। जो समय समय पर, माने जो आया वो अधिकार में वो बदलता है। अधिकार में जो सामने आये वो बदलता है, वो चाहे कोई भी देश हो, ऐसा गीता में हम पढ़े है, जैसा मोह है। निश्च्यात्मिका बुद्धि तो आत्मा की ओर है, और कोई आत्मा न माने, वो डिवाइन पावर है। वो निकलने के बाद आपके शरीर में से ये शरीर, को ले जाते है, जला देते है। इसलिए वो है आपका हाल चाल है, सब बातें है क्योंकि अभी बताये सब इसको कर्तुम अकर्तुम अन्यथा कर्तुम स सक्तः, समर्थः। सब कुछ करते हुए, कुछ भी वो नहीं करता। नहीं करते हुए सब कुछ करता है, परस्पर विरोधी है, कांट्रेडीक्टेरि फार्म में है। अन्यथा, अन माने नाही, यथा माने मैंटेनिंग,वो मैंटेन् भी करता है, अनंतकाल से सृष्टि पड़ी हुई है, कोई नहीं जानता, कब से है और कब तक रहेगी ये, गणित लगा रहे है, सब ठीक है, सब आनन्द हैं। इसलिए बाबा जो योग्य है, समाज में रहना, समाज के लिए रहना है, परिवार में रहना, परिवार को भी समाज में लेकर चलना है। ये समाज के साथ भी रहना है, राष्ट्र में रहना है,राष्ट्र के साथ भी चलते रहे। अपनी संस्कृति के सब कैरियर है। फिर भी तपस्या तो चाहिए, इससे अच्छा बोलना, अच्छा सुनना, अच्छा देखना, अच्छा करना, और अच्छा करवाना, सदा सही विचार करते रहना, इस प्रकार से, जीवन व्यतीत करना। सब आनन्द है, आनन्द मंगल रहे, कोई जो है चिंता करता रहे,

अपने हाथ में तो कुछ नहीं है, इतने अगर सोचकर इसमें, अपना हाथ में नहीं, वो करता है। किसी को घुमाना नहीं, किसी को कपट छल वो ना करे, अगर ये बना रहे तो आनन्द ही आनन्द रहता है। कि लोग, स्वयं व्यक्ति है जो सुख दुख का कारण है और कोई नहीं है ऐसा ये जो शास्त्र है, जो हमारे पास पुस्तक, अब आजकल के ऐसे धर्म तो होना नहीं, वो सब जो अर्थ किये है जो बराबर नहीं है, जाती और धर्म, इसका अर्थ जो किया गया है। जैसे जैसे हम कमजोर होते गये, वैसे वैसे सब कटते चले गये। क्या अर्थ हम बतायेंगे वो प्रैक्टिकल साइड है, अनुभवगम्य है वो। आचार्य ही नहीं वो अनुभव कहाँ से आयेंगे? विषय ही नहीं है अब, याने स्कूलो में कालेजों में विषय ही नहीं है।मैटर ही है, पुस्तकीय है बस। सब आंनद मंगल रहे, कल्याण रहे, फिर मिलेंगे, आशा ही तो जीवन है। उठिए आप यश्श्वी होकर आइये, कल्याण हो जीवन सफल हो। आनन्द हो, आनन्द हो, कल्याण हो, जीवन मंगल हो।

- तो भाव वाचक हो गया इससे भारतीय आप ये ही कारण है, हम भारतीय है। (भारत बन गया)। पहले श्रद्धा, पशु है कि आदमी है, कोई है, समान भास, आभास होता है, वो ज्ञान है,उससे बड़ा भास और कोई नहीं है, माने बोध हो माने ज्ञान, अब आभास हुआ, भासमान होने लगा, अभी तो खाली आभास हुआ। सेन्स में आया फिलिंग, सेन्सेसन हुआ, सेन्स किया उसने फिलिंग नहीं। गति करना अब व्याकरण से है पदान्तस्य पद है, पदान्त शब्द का अर्थ है-सकार, व्याकरण ग्रामर है। तो पदान्त जो शब्द है वो स्वर बन गया, षटकोण का ष बन गया, सूत्र है, तो भाष हो गया। जब भाष हुआ तो क्या हुआ, भासमान, बोलने को कहते है, बोली अभी नहीं, बोलने की वो तैयारी है, आपको वो आभास हुआ। अभी वो परिष्कृत नहीं है, बोलने की तैयारी है तो भासमान।

  अब शक्ति मिली, भास / भाष, कैसे बना है, भ व वस, इसमें अकार है

उसमें अकार है।अकार सवर्ण मिल गया तो भास / भाष, बन गया। सकार का सकार है, भास बन गया।और वो शक्ति है, उनसे आप ट्यूनिंग है, भाषा जो है स्थिर बन गया। तो माने वो शक्ति है। तो ब्रम्ह (भव) माने वो ज्ञान भी वही है, और सक्रिय है, माने बोध भी है और माने ज्ञान भी है और सक्रिय है माने कार्य में भी रत है। और शक्ति के महाशक्ति के, जिस शक्ति से आज जिसे भाषा कहते है, जो बोलते है आप, जो बोली आप बोलते है माँ की बोली, माँ के रहते पेट में, संसार में, वो बाद में वही ज्ञान है। लेन देन से है, इस तरह स्कूल में पढ़ो न पढ़ो, ये देखो, करो तो फिर बिना पढ़े सबको- ये अनुभव, ये बोध शुरू हो जाता है बढ़ते हुए। तो भाषा केवल हम शब्द पढा रहे है। आप मेहनत भर किये, याद भर किये, उनके पास है ज्ञान है। गुरु गोविंद सिंह जी के, कहना है, ये कि जो प्रभु से मिलबो चाहो खोज शब्द का करो, तो शब्द माने भाषा। शब्द जो है हम जो बोलते है वो शब्द में तो शब्दार्थी ही, हमको मालूम नहीं, तो क्या खोजे, ठीक है, न। शब्दार्थ ही अपने को मालूम नहीं है तो क्या खोजेंगे? इसलिए मैंने, उस समय ये याद किया था, कि ये है उनसे ये मिलता है।अभी जो हम, ये बोलते है, ये सब ,लोगों के बनाये वाक्य है,अरबी हो, हिंदी हो,संस्कृत हो,ये जो कुछ हम सामने रखते है फिर जो कुछ हम बोलते है, उसमें हम मिलाकर बोलते है ताकि सब कोई समझ सके, जान सके। क्योंकि हमारी समझ भी है, आपको भी समझ है, अगर दोनों समझ लिये तो इसके फलस्वरूप होता है, अर्थ भी हो गई, इसमें आनन्द आता है। इसलिए हम तंग नहीं करते किसी को नहीं तो अगर मैं पूछना शुरू कर दूं, तो सब भाग जायेंगे। किमोलॉजी अगर पूछेंगे तो सभी भाग जाएंगे। तो, हमारा काम है जितना हमारा समझ है,आपके सामने रख देने की है, और वो बराबर है शुद्ध है, या त्रुटि है, या बराबर है या नहीं है। आप लोग पढ़े लिखे है, विद्वान है, और आप लोग हमसे, अच्छी तरह से जानते है। कल

के दिन शुद्ध कर देंगे, संशोधन कर देंगे, इसलिए हम बोलते रहते है, ये मैं विद्वान हूँ, ज्ञानी हूँ, ऐसा नहीं है हम अपनी समझ जो है आपके सामने रखता हूँ। ये आपको अगर ये बराबर है तो याद होगा, ये है न।ये है हमारा, इसलिए हमारे पास कुछ नहीं है। हमारा जो कुछ है आप लोगों से है। जो जैसा चाहे सीखने मिले, हम कुछ, अगर बार बार होता है, मैं सच हूँ। वो भी प्रेम से, लड़ाई झगड़ा नहीं, मेरा आज तक किसी से लड़ाई झगड़ा नहीं, किसी से नहीं।

तेल्हारा तीस साल बाद गया, ये भानु गया था न वो देखने के लिए। तीस साल बाद गया, वो जाकर आया वो, घूम घामकर आ गया, मैं अकोला में था ठहरा था जुमड़े, थे वहां। तो जब वो लौट के आते है, शेगाँव से, मेरे साथ में, अशोक, तो उस समय वो क्या देखता है, ४५ लोग है आये है, तेल्हारा से है कार में, संत आदमी हमारे साथ चलिए अभी तेल्हारा, सेठ साहूकार ब्राम्हण, औरतें है. सब लोग, तीस साल के बाद भी, हमारा। (तेल्हारा के थे सभी, सुनके पंडित जी आ गये बस)। वो घबड़ा गया मिलके आ गया बस, रात को ग्यारह बजे, आ गया बोला ट्रेन से और काम था । क्योंकि हमारा शिष्य है, सी, एम है वहां पर,...करके, फिर हम छतीसगढ़ में गये, दुर्ग में रह गये। ये कहीं भी आप जाएंगे यही मिलेगा।

औरंगाबाद अभी गये, जिसके यहां हम थे, वो सुने और दौड़कर. आये। ..मेरे पास एक तुका है, पहुंच गये, मिलने आ गये। ..जो कुछ है देखते है क्या रहा है, तो ये कहीं भी मिलेगा आपको, जाइये। ..कहीं भी मिलेगा वो, पूछा है इसलिए बोला, नहीं पूछता तो काहे को बोलते, तो ये हालत है, देखिये आप, कहीं भी आप जायेंगे, मेरे दादा तो है ही नहीं, कैसे जगह हो, यहां कुछ होता है चले आओ।..कभी भी, ये आनन्द है,आनन्द है।

उसने हमको जब छोड़े, कि जाओ, संन्यास ले जाओ। अब तो सब लड़के वड़के, नाती नातिन सब हो गये है। जाइये आप, तब जीवन में 72-73 में, मैं घर छोड़ा। लेकिन फिर भी ये दिवाली के आसपास, में धनतेरस से

पहले, जहां वो रहती थी, वहां से वो आती थी। वो लक्ष्मी प्रसाद मिश्रा को लेकर आती थी, उनको कपड़ा लत्ता, चूड़ी गहना, जो है जो कुछ साल भर का जो लगता है, उसको लाकर हम रख देते थे, कभी भी, जब तक वो जीवित रही। और मेरा फिर गृहस्थ आश्रम सिर्फ, दस साल,..करके दस साल, ज्यादा नहीं, मैं कंकाल आदमी हूँ, मेरे पास कुछ भी नहीं है, यहां सब ओपन है। कोई पूछे तो हम बताते है, धन, संपत्ति से भी और जो आध्यात्मिक है। लोग कपड़ा लाते है। घड़ियाल बजाओ, शंख बजाओ, राम रामायण हुआ, राम रामायण, मैंने बोला अरे भई, अरे वो राम कौन सा है? दिखा तो दो हमको, लेकिन सब चुप हो जाते है मेरे पास, वहां तो दूसरा सुन न सके। यहां तो लिख के देते है, बैठो सब कोई-हरि ॐ तत्सत परमात्मने नमः - यहां से ये शुरुआत है सब सुनते है। सब सुनते है, दीक्षा हो न हो। ठीक है सुन ले, जो करेगा उसको मिलेगा,जो नहीं करेगा उसको नहीं मिलेगा। लेकिन आज जिनके जिनके कान में पड़ रहा है ये, अगर समय आने पर उसको अगर वो याद आयेगा, तो बराबर होता है। वो मंत्र दिया है वो जो सुना है वो सहायक हो जायेगा। ये बात उतना ही सत्य है।

क्योंकि मैंने पहले किया हूँ, उसके बाद बोल रहा हूँ। इसलिये वो धन है, हम कितना भी बाटेंगे ये बढ़ता जायेगा, कम नहीं होने का। और धन सब कुछ कम होते है, ये धन नहीं, होने का है, ये है सरस्वती, आत्मा को सरस्वती कहते है। स्व, रस, (सतीः)। रसौ वै सः, ये सूत्र है,ये श्रुति है। वही आत्मा रस है। एक प्रकार का रस आत्मा है। हमारे गौतम जी को देखो न, हमारे शुक्ला जी को देखो न मस्त है, मस्ती है, आनंद है। और वो क्या है, ऐनाटामिकली दैट इस कॉल्ड, एंडॉर्फिन एंड ऐलकलिन, आदि जिससे वो आदमी मूडी बना रहता है। अभ्यास करता है, चिन्तन करता है, ध्यान करता है, जो उसके जो ओपीसीयर्ट्स जो है वो क्षरण होते है, सेप्रेट, होते है और ईधर से वो रिसीव करते है, और आदमी मस्ती में आता है। इस

प्रकार से व्यक्ति है। आल डॉक्टर्स, वेल नोन, आई एम, अननोन.। हम तो भई, अनपढ़ आदमी हूँ, मैं कुछ पढ़ा लिखा नहीं। लेकिन मैं ये गोल्डन लाइट में दिखता है, और सुनने में भी आता है, हाँ आ,अंग्रेजी में हिंदी में अरबी में, संस्कृत आदि में हमको आता है। जैसे कोई बोल के जाता है इसलिए मैं पूछता हूँ न, कि भई ये बोलता है कौन? ये हम पूछते थे, कोई तो मिले, नये पुराने सवाल जवाब देने, वो बोलता है कौन वो हमको बताओ। वो निकलने के बाद कुछ नहीं पूछते है, वो ले जाते है, जला देते है। इसलिए पूछता हूँ, वो कौन है? वो है इसी से सब, बोली है। वो बोलता है कौन? वो बताओ। उसी की खोज में जाना है और वो, ही मस्ती है, ठीक है।..,ये मस्ती है। बाकी चीज नकली है ये न, ये सब चढ़ती और उतर जाती है। और ये उतरती नहीं, ये सिर्फ चढ़ती है। और जब पूरा अपना, सेरिब्रम को जब कवर करेगी, क्या, जब कवर करेगी पूरा। फिर तो वो, फिर तो समाधि कहते है। सम्प्रज्ञात समाधि असम्प्रज्ञात समाधि ये विषय अलग है, उसमें शक्ति आ जाती है। वो बोलता जो वैसा होता है, वो सोचता वो वैसा होता है। वो नशा नहीं, ये नशा नहीं, गालियां देता है।

- जो है अब किये गए कर्मों का अब वो जल गया, वो नहीं बनेगा और बाकी जो अब है, ये भी जलता चला जा रहा है, उस ज्योति से। भर्जक भस्म कर देने में समर्थ है, हिंदी में कहते है न, भाज देव, भाज देव, कहते है कि नहीं माने भूंज देव, माने भूंजा कम भूंजा गया, तो ये वो अर्थ है। जला दिया, जल गया तब उसे प्राप्त होता है, आत्मज्योति दर्शन होता है। देवस्य-इस देव से बढ़कर कौन सा देव है,आत्मदेव, ये आत्मयज्ञ है। वो अग्नि, वो शक्कर, घी डालना वो यज्ञ नहीं है, ये यज्ञ आत्मयज्ञ है, आत्मा का आहुति देना पड़ता है। श्रद्धा से, श्रद्धा और भक्तिबलपूर्वक ये आहुति देना पड़ता है। तब ये तमाम बातें होते है, देवस्य ये देव, आत्मदेव को, इस प्रकार से आपको सब प्रकार से तन, मन, धन से जुट जाना चाहिए,और प्राप्त कर लेना चाहिए, इस पद को, इस पद को ही परमपद कहे। धीमहि ये धीमान

लोग, ध्यान में, ध्यान के द्वारा, जो मैंने आप लोगों को ध्यान करने को बताया है, यही उपाय है। ध्यानं निर्विषय मनः इस ध्यान से मन में निर्विषय हो जाता है, सारे आवरण, दूर हो जाते है, और सूर्य का उदय हो जाता है, आत्मा रूपी सूर्य, उस तरह से जब वो उदय हो जाता है जग में, वो सूर्य दर्शन कर लीजिये आप अपने आपको को देख लो ये है आप। ये है ध्यान, ये ध्यान में लाना चाहिए। ये धीमान धारण, धीमान लोग, बुद्धिमान लोग, योगी लोग ध्यान में, ध्यान में ला करके ये सारा तत्व हमको सामने सामने रख दिया, सीखा दिया और दे गया।

और आज उन्हीं के नाम से हम बिकते है, उसी का नाम है-गोत्र। ये सब योगी थे, फलाना गोत्र, ढिकाना गोत्र, ये गोत्र। गोत्र माने क्या योगी पुरुष, भूल गये, उनके हम संतान है, उनके नाम से हम आज बिकते है, आत्मशक्ति कहाँ है हमारे पास में। धियो योनः ना अस्माकं त्रिगुण दुखं सम करोति हमारे तीनों दैहिक, दैविक, भौतिक तीनों ताप ये दूर हो, हो जाते है इसके द्वारा, उस ओर हमारी बुद्धि, बनी रहे। क्या प्रार्थना करता है, उस ओर हमारी बुद्धि बनी रहे, इधर उधर न जाय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, इधर उधर हमारी बुद्धि न जाय, उस प्रकाश में बनी रहे, बस। वो क्या चाहता है, मेरी बुद्धि उस ओर बनी रहे। चाहना हो, तो ये चाहना हो, ये गायत्री मंत्र का अर्थ है, उसका नाम है ॐ, और उसका रूप है, ज्योति:यही मेरा सिद्धांत है, जो सबको दे रहा हूँ, सारे सम्प्रदाय, दुनिया में जितने सम्प्रदाय, हमारे पास है-यही सिद्धांत है, ये वैदिक धर्म है, जो कि आज सारे सम्प्रदाय ने चोरी करके लिए है, और केवल शब्दों का रूपांतरण करके और हमसे द्वेष करते है, क्यों द्वेष करते है, इसमें वो नाम से बिक रहे हैं, ये गुण प्रगट होना चाहिये-कौन से गुण? जो आत्मा रूपी शक्तियां हैं, आत्मशक्ति,अष्टसिद्धि नवनिधि ये अपने आप में प्रगट हो जाते है। अन्यथा इस ओर कोई नहीं आयेगा-यही आत्मा है, यही आत्मशक्ति है। और ये शक्ति अष्टसिद्धि स्वयं के लिए, अणिमा, गरिमा,

व्यक्ति के लिए है और नवनिधियाँ जो है, नवतुष्टियाँ ये समाज के लिए है। ऐसे आज हम समाज से विभक्त है, आज हम समाज, समाज से जो विभक्त नहीं, वो भक्त हैं। आज उल्टा हो गया, आज समाज हमारा भक्त हो, और मैं विभक्त होऊँ। हम समाज से केवल अपना सेवा चाहते है, हम समाज की सेवा नहीं करना चाहते हैं। मैं बोल दिया हूँ, ये बोलता हूँ, तो बैठा करो, रोना धोना मत किया करो। रोज बोलता हूँ, कोई सुनते नहीं हैं,आके चुपचाप बैठा करो पीछे, जो कोई भी हो, मेरा बाप हो, दादा, काका, मामा, मामी। आज हम ये जरूर कहते है कि जो विभक्त नहीं वो भक्त है। समाज से हम विभक्त नहीं, लोग कहते है, सिर्फ कहते है।आप समाज का कुछ भी करो, बना नहीं सकते आप,आप अपना हेतु नहीं लेकर जाते हैं समाज में। आप समाज से कुछ करवा लेना चाहते है, हम समाज से सेवा करवाते है। समाज की सेवा आज नहीं हो रही। समाज की सेवा तभी हो सकती है, अभी आपसे जो कहा, तब वो भक्त कहलाता है। जो समाज से विभक्त नहीं है, वो भक्त है। आज हम विभक्त है समाज से, इंडिविसुअल,आज इंडिविसुअलटी है, यही कानून है, यही कायदा है और हर आदमी यही है। इसलिए कोई किसी को पहचानता नहीं है, और कोई किसी का सहायक नहीं। सोचने कह रहा हूँ, मैं आप लोगों को, ये सोचने की कह रहा हूँ मैं। आपको मैं समस्या कह रहा हूँ,आप सोचिये।

ये हमारी संस्कृति है, यही वैदिक धर्म है। तो, वैदिक धर्म में ये दस वर्ग थे, जाति बना दिया गया।जाति नहीं थे। ये जाति जब हम भ्रष्ट हुए,आत्मयोग से जो हम भ्रष्ट हुए, तब हम अपनी अपनी टोलियां बना लिये। महाराज माने क्या? उस काल में वैदिक काल में, महाराज बोले समाज में, बस्ती में, जहाँ के बसाहट में लोग रहते थे। पूर्व ग्राम और महाराज आदि जो हुए ये लोग थे महाराज। उनको महाराज आज हम कहते है, राट शब्द से राज बना है। वो महान, वो आत्मा महान है, आत्मा, यसस्य महात्मा, वो महान आत्मा। विराज माने विराजते है, जो सबके अंतःकरण में विराजे हुए थे,

इस शक्ति से, सबके अंतःकरण में स्थान पाया, लोगों ने स्थान दिया, इस तरह से उनको महाराज पद दिया,और उनको पूछ करके समाज के सारा कार्य चलते थे, भला बुरा जो कानून कायदा कहते है, नियम संयम आदि द्वारा, जो प्रायश्चित आदि कराते थे, उनके द्वारा, भारत देश के तमाम लोग उनको ये पद दिया था। उत्तम राजपद दे करके, उनको महाराज कहके सम्बोधन किया, उनके द्वारा ये सब समाज का कारोबार चलता रहता था। और वो लोग भ्रष्ट हो गये, वे लोग भ्रष्ट हुए, क्या भ्रष्ट हुए, दास दासी के साथ में भ्रष्ट हुए। अब जो भ्रष्ट हुए तो उनकी शक्ति चली गई, योग शक्ति से जैसे भ्रष्ट होते गए। आत्मशक्ति से जैसे विघटित होते गए, उनमें, दूसरा जो क्षत्रिय है, ये क्षात्र वृत्ति वाले थे, इनको कह दिये बाबा तुम बैठे रहो, तुम कानून कायदे छुड़ाया करो, राज मैं करता हूँ अब, राजदण्ड मैं रखूंगा। प्रायश्चित करा देने का कार्य, मैं करूंगा, तुम खाली न्याय चुकाया करो, बाकी मैं सब काम करवा देता हूँ, इस प्रकार से क्षात्र वृत्ति वाले है, इनको क्षत्रिय आज कहा गया, वे राज सिंहासन पर वे विराज गये। भय उत्पन्न किया आतंक उत्पन्न किया, ब्राम्हण ने भय और आतंक उत्पन्न नही किया, क्षत्रियों ने भय और आतंक उत्पन्न किया। इनका आतंक है जो इतना बढ़ गया योग से भ्रष्ट हो गये इसको द्विज कहते है, द्विज जो होता है, सवर्ण होते है। ब्राम्हण, क्षत्रिय, वैश्य, ये तीनों सवर्ण है, ये तीनों का जनेऊँ संस्कार होता है। तो ये तीनों समान है, साधर्म है, इनका, इस तरह से ब्राम्हण है, क्षत्रिय, वैश्य हैं। ये है वो लोग भी योगमार्ग से भ्रष्ट हुए, वो भी दास दासी के साथ आये, वो भी गये। तब वैश्यों ने आकरके महाराज बने, सिंहासन पर आकर बैठ गये, लालाजी बैठ गये। लालाजी ने कहा कि ला, ला, ला। ये है जो ला, ला शुरू कर दिये। माने जो कोषाध्यक्ष थे, कोष बढ़ा दिया, मैंने यहां। गये क्षत्रिय भी गये, महाराज भी गये, महाराज माने ब्राम्हण भी गये, इस प्रकार से।

जिसके पास पैसा है, वही राज करता है, आज बनिये लोग कहते है, वीणा तो हमारी खरीदी हुई दासी है, हम जब चाहे तब खरीद सकते है, जैसा

चाहे वैसा काम करा सकते है। और आज वही है धनिकों से पैसा जमा करते है, और अपना काम करते है और धनिक लोग से जहाँ काम हुआ कि जम्प करता है बाजार का भाव, चला वो भाव बढके। आज इतना ऊंचा भाव होने का क्या कारण है, यही कारण है। ये सब लालाजी है। लालाजी चले गये, पर वे सीखा दिये गुण। अब जो लालाजी है पद में आते है,कहते है साहब अंदर है,वहां, माने रख यहां वजन। एक रुपया रख दिया, इससे क्या होता है, अच्छा भाई दो, इससे क्या होता है, अरे कम से कम जमाना दस दस का है, कम से कम दस तो रखो, दस या दस। कहने का मतलब ये है कि नीचे से लेकर ऊपर तक, आ, सुरसा। हनुमान जब लंका जाने लग गये, तब देवता ने भेजा सुरसा को, हनुमानजी को रोकने के लिए, तो हनुमान जी सामने आ गये, तो सुरसा ने आ किया, तो हनुमान जी थोड़ा छोटा हो गये, आ किया तो और छोटे, ये फाड़ी सुरसा हनुमान छोटा होके मुंह में घुसके जब तक वो मुंह बंद होता नहीं तब तक निकलकर बाहर आ गये। तो आजकल सुरसा बन गये, सुरसा। ये है कि कितने भी जाय, कम है। आप बताइये, ये इंडिविसुअल, ये इंडिविजुललिज्म है ये, इंडिविजुललिज्म, ये मैंने माने आपके सामने रखा है ये।

- तो गायत्री ये चीज है उसमें सात पद है, ये सेवन सेंटर्स है, ये सात चक्र है, इनको भेदन करना चाहिए। अगर चक्र भेदन करना नहीं आता, तो वो योगी नहीं। प्राणों के केंद्र, प्राणों के स्थान, प्राणों के कर्म, प्राणों की गतियाँ, प्राणों के विपरीत गतियाँ और ये केंद्र जो है, सात केंद्र, छः केंद्र मालूम नहीं, वो योगी नहीं हो सकता है। वो दीक्षा देने के लिए असमर्थ है। ऐसे कनफुकियाँ गुरु उनको कहते है, स्वयं का ज्ञान नहीं और वो क्या ज्ञान देगा। दीक्षा देने के लिए वही समर्थ होता है जो सत पद का जिसे बोध हो। सत पद ये है जिसके द्वारा सब कुछ उत्पन्न हो और पालन हो और लय हो।और अपने आपको बोध हो ज्ञानी हो।और असिपद माने प्रमेय ज्ञाता,

ज्ञानी और ज्ञेय। जिसे ज्ञेय का बोध है, विज्ञान सिद्ध होना है। और जो वो ज्ञाता है, ज्ञाता का ज्ञान हुआ हो उनको ज्ञानी कहते है। इन दोनों के बीच वो मध्यस्थ होता है। वो एजेंसी कर सकता है, वो कमीशन एजेंट हो सकता है, दूसरा नहीं हो सकता। क्योंकि ज्ञाता का भी बोध है और ज्ञेय का भी बोध है, वस्तुओं का भी भेद है। मगर जो कुछ करेगा वो चलेगा, लेकिन वो निरपेक्ष होता है। उसका रूप क्या है वो निरपेक्ष है।कुछ न मांगना, कुछ न लेना, वो समाज की सेवा कर सकता है, वो समाज से निरपेक्ष हो सकता है। तो जो समाज से विभक्त नहीं वो है भक्त, हम ऐसो को भक्त कहते है, वरना आज जो जमाना है, आज जो हमारी परिस्थिति है देश की, और जो कुछ चल रही है मानव समाज में-वो है प्रत्येक व्यक्ति स्वतंत्र है। कोई किसी का आधार नहीं कोई किसी के आधार से आता भी नहीं, कोई किसी को मानने को तैयार नहीं और कोई किसी के सुख दुःख में साथ देता भी नहीं। मरता है मरने दो, सारा प्रॉपर्टी हमको मिल जाय तो अच्छा है। पड़ोसी चले गये कि वो भी हमारा हो जाय। पड़ोस का जो चीज है, तुम्हारे अंदर घुसना चाहो तो तुम्हारे अंदर जो है, पड़ोसी को पूछो वो हा कहे तो, बिकेगा अन्यथा नहीं। ये ऐब हो गया, अब कहाँ सहायक कोई है, कोई सहायक है, कोई सहायक नहीं, तो इंडिविसुअलविसम, आज है, अब सोचिये, आप अपना कल्याण कहाँ है, किधर है, कैसा है तो वैदिक धर्म में ये बताया, वैदिक धर्म में बताया कि गायत्री मंत्र दिया, कि गायत्री मंत्र का अर्थ अब आप समझे, ये आपके सामने रख दिया। इसलिए ये जो सत पद है, प्राप्त किये हुए होना चाहिए। अपने आत्मा से कहना चाहिए, कि मेरी बुद्धि तुम्हारे तरफ बनी रहे तो बहुत अच्छा है। नहीं तो आजकल क्या है, कौन सा बना है, मराठी में श्लोक है न, सदा सर्वदा योग ..तुझा, तुझे कारणे देह माया परावा। सुंदर मिठाई विठाई साफ वो ..और योग सिखाई, मेरा मिठाई, और तुझा कारणे देह माया।

- सत्संग माने किताब नहीं, वो तो प्रसँग है। सत् माने आत्मा, डिवाइन एनर्जी, दिव्य शक्ति। अनेक जन्मों के पुण्य जब एक साथ उदय होते है - तब इधर कोई झुकता है। तब उसका भाव उस ओर झुकता है। ये सहज नहीं है, हर एक का काम नहीं है।

  हमारा कम है, हम बाहर है ऐसा सोचना ही नहीं - बस आप लगे रहिये बाहर का कम होता चला जाएगा। जैसे जैसे आप भीतर जायेंगे, बाहर का भी कम होते जायेगा। बाहर का अभी बहुत है, भीतर की अभी शुरुआत है।

  मनुष्य को स्वावलम्बी होना चाहिए अर्थात आपका जो अपना है, आप है, आत्मा है, अपने पर अवलम्ब रहना चाहिए। सारे भोग भोगते हुए, सारे बंधनों से अलग करके, आप इसी जन्म में आगे निकल सकते है।

  अपने आप को अपने ही पद पर फिर से नियुक्त करने के लिए, माने रिसर्च में लग जाना चाहिए। नियुक्त भी नहीं युक्त होना हैं। अभ्यास और कुछ नहीं - हम अपने आपको भूल गये है, अपना जो स्टेट्स है, स्टेट है, उसे भूल गये है। अभ्यास से आप स्व स्थान पर आ जायेंगे। अपने पद पर फिर से पहुंचना अभ्यास है।

  अपने बाल बच्चों के बीच, स्त्री से व्यवहार रखते हुए भी, मैत्री भाव रखकर ऐक्य रखकर, अपने आपको न भूलें। अपने आपके लिए समय निकाल करके थोड़ा बहुत प्रयास करें।

  एकांत में बैठकर, चित्त शुद्ध कर, जो प्रक्रिया आपको दी गई है, साधना करने के लिए उसमें लग जाओ। फिर वो जो सुख है वो अपार है। उसका अंत नहीं। सत्यं ज्ञानं अनंतम् ब्रम्ह,आप महान हो जायेंगे। ये महानता आपमें आई कि आप जितना देना चाहें, जितना आपको कल्याण करना है, होता जायेगा। लेकिन कभी कम नहीं होगा। बराबर आते जायेगा, चारों तरफ से। तो जो प्रक्रिया है - ये है धर्म, ये है अपना धर्म।ये है, स्व धर्म। वासना रूपी मेड़ है, रुकावट है, वो भी अभ्यास से दूर होती जाती है।

आप केवल औरों के लिए कार्य करते है,सब लोग आपसे कार्य लेते है। सब (घर, धर्म, समाज, राष्ट्र वाले) कहते है, हमारा करो और अंत में कह देते है, हमारे / मेरे, लिये क्या किया? कोई ये नहीं कहता कि तुम्हारा कुछ काम हो तो हम सहायता करें।
हमें अपनी सहायता स्वयं करनी चाहिए, हमको अपने लिए स्वालम्बी होना है। उस शक्ति से अपना उद्धार करते हुए। तो ये है स्व धर्म, स्व माने आत्मा। आत्मोत्थान के लिए जो प्रक्रिया चाहिए, आपको वो अवश्य मिली है। सारे कार्य संसार के लिए करते है, उसी प्रकार से अपने लिए भी कुछ करिये। गुरुदिश मार्ग से ज्ञान प्राप्त कर, सहज अभ्यास करें तो इस शरीर में ही जो तीर्थ है, वहाँ स्नान होता है। तुर्यावस्था में, आज्ञा चक्र में त्रिवेणी संगम होता है।
जो सदा ही इस प्रकाश में स्नान करता है, उसको गंगा, यमुना, पुष्कर से क्या प्रयोजन? इतना बड़ा तीर्थ आपके अंदर है, कि आप सबको उस पार पहुंचा सकते है। तीर माने पार, थ माने रहने को। इस पार सब दुःखी है, मृत्यु के ग्रास में फंसे हुए है, विकराल काल के गाल में फंसे हुए है।
अभ्यास से मृत्यु केंद्र में पहुँच, मृत्यु के सिर पर पैर रखकर, हम पहुँचते है - बैकुंठ।यहाँ सब समाप्त हो जाता है, तर्क, विचार, मैं, मेरा, तेरा। यहाँ मन, बुद्धि, चित्त, अहं आदि कुंठित / समाप्त, हो जाते है। छलांग मारकर ऊपर जाता है, यहाँ ४८ मिनट पर्यंत समाधि लग गई, अर्थात उतने काल पर्यन्त अगर बुद्धि आत्मस्थ हो गई। तब अर्थ, धर्म (धारणा चाहिए जो दूसरों को सिखा सके), काम (कामनाएं भी पूर्ण हो) मोक्ष (बंधनों से छुट जाय) ये चारों मिल जाते है उसको। ये रघु शब्द का अर्थ है। (रघुवीर) वीर माने प्रेरक।
वीर माने प्रेरक, जो प्रेरणा आत्मा में रहकर प्रेरित करती है, उस प्रेरणा को धारण करके, वो बुद्धि आत्मस्थ होकर के जब कार्य करती है:- तब धर्म किये धन न घटे जो सहाय रघुवीर, तुलसी पंछिन के पिये घटे न सरिता नीर।

सुषुम्ना में घुसने पर जो सरस्वती नदी है, उसमें स्नान (आज्ञा चक्र में इडा, पिंगला, सुषुम्ना नाड़ी के मिलन से पूरे शरीर का ज्योति में प्रकाश में प्रकाशित होकर दिखते रहना, दिख जाना, त्रिवेणी संगम जो वास्तविक है) करने पर, ये है, शिव तीर्थ। शिव माने कल्याण, मलरहित हो जाता है। ये है कल्याण।

तो आज्ञा चक्र में आने के बाद या तुर्यावस्था में आने के बाद, धन कभी घटता नहीं है, चाहे आप कितना भी बाँटे।

वो धर्म जिसमें आप स्व / आत्मा, के भाव में आकर, सत् (सत्य, सत्ता, आत्मा) को धारण कर, अभ्यास कर अपनी भूमिका दृढ़ करते है।

फिर सुषुम्ना में प्रवेश कर, स्व स्थान में आकर, मृत्यु (विशुद्ध चक्र में) को लाँघकर, उस पार (आज्ञा चक्र में) पहुँच जाते है, वो धर्म - जिसे हम महाकारण शरीर / एस्ट्रल बॉडी, बोधमय शरीर / साइकिक बॉडी, या ज्योर्तिमय पिंड / क्लाइमेक्स, अल्टीमीट, याने आत्मा जो परम है, को प्राप्त कर लेते है।

तब अकार, उकार, मकार - ये तीनों मिल जाते है। जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति - ये तीनों जब मिल जाते हैं, याने तमोगुण, रजोगुण, सतोगुण, पर जब संयम हो जाता है। तब आप उस शरीर में जाते है, जहाँ - आत्मा स्वयं ज्योर्तिभवति।

तुम्हारे अंदर ही वह (गोल) प्रकट होता है, उसका आविर्भाव, प्रादुर्भाव वहीं होता है - ये मस्तिष्क में होता है। तत् तिष्ठति दशांगुलम - परिणाम जो हमारा वृहत मस्तिष्क है।

वहाँ (वृहत मस्तिष्क) पूर्ण का पूर्ण होता है। अगर ये आत्मा, आपमें है पूर्ण न होता, तो पूर्णत्व की ओर आप जा भी नहीं सकते। और पूर्ण का नाम भी नहीं रह जाता।

तो अभ्यास (सद्गुरु से प्राप्त विधि, संरक्षण सतत् व मार्गदर्शन से, कृपा) करके आने के बाद एक ज्योति के सिवाय कुछ भी दिखाई नहीं देता।

तो साक्षात्कार होने के बाद या आज्ञा चक्र में या तुर्यावस्था में आने के बाद, धन कभी घटता नहीं, चाहे आप कितना भी बाटें।
चतुर्थ अवस्था (अनाहत में) सत्वापत्ति इस अवस्था में चरित्र का निर्माण होता है। साधक पूर्व स्थितियों की उपलब्धियों से उबर कर, सतोगुणी होते चला जाता है। पंचम अवस्था (विशुद्ध चक्र,गले में) असंसक्ति , साधक वासना रहित होकर अपना व सबका कल्याण करता है। षष्ठ, छठा अवस्था (आज्ञा चक्र, ललाट) पदार्थाभाविनी में- योग्य क्या है, बोध हो जाता है। साक्षी भाव से निष्पक्ष, निरपेक्ष होकर समाज के काम का हो जाता है। सप्तम (ब्रम्ह रन्ध्र, सहस्त्रार में) तुर्गया अवस्था में योग्य क्या है बोध रहता है, एकनिष्ठ / पक्का, बना रहता है। साक्षी भाव की स्थिति में स्थित रहकर, समाज(राष्ट्र, विश्व) के काम का हो जाता है।

- मनुष्य कृतार्थ तभी होता है कि जब सत्पुरुष के बताये हुए मार्ग का अनुसरण करके और उस तरह से अभ्यासरत होता है, तभी वो कृतार्थ होता है। इसलिए कृतार्थ होने के लिए, कार्य से विमुक्त होना है और चित्त से भी विमुक्त होना है। कार्य बोले ऐसे सात भूमिका बताये है: १. ज्ञेय शून्य। २. हेय शून्य। ३. प्राप्या प्राप्य। ४. चिकिर्षा।ये कार्य विमुक्ति है।
और चित्त विमुक्ति जो है। ५. चित्त की कृतार्थता। ६. कृतार्थ ७. गुणलीनता। आत्मस्थिति है। ये सात प्रांत है, ये सात भूमिका है, ये सात भूमिका से परे, जाने पर आत्मस्थिति होती है। जब आत्मसाक्षात्कार होता है।
ज्ञेय शून्य-जिसके इथिक्स को जान लेने पर कोई जानना बाकी न रहे। हेय शून्य-जिसको छोड़ देने पर, और कोई छोड़ना बाकी न रहे। प्राप्या प्राप्य-जिसको पा लेने पर कुछ पाना बाकी न रहे।चिकिर्षा-जो करने से कोई भी करना बाकी न रहे। चित्त की कृतार्थता-चित्त की कृतार्थता माने, सत्पुरुष को पा लेने पर, उनके उपदिष्ट मार्ग को ग्रहण कर और अपने

जीवन को इस प्रकार से सफल बनाने के लिए, रत हो जाना। कृतार्थ-सत्पुरुष के बताए हुए मार्ग को, संदेह शंका रहित हो करके, उसको धारण करे। और क्या करे। गुणलीनता-सत, रज, तम-ये गुण जो है, इसको लय करें, आत्मा में। माने बुद्धि को शुद्ध कर,और प्रकृति में लय करे। और बुद्धि और प्रकृति दोनों शुद्ध हो करके, आत्मा में लय करे। यही आत्मस्थिति है, यही आत्मसाक्षात्कार है। तब वो दिया जलती है।
स्वामी रामदास जी ने कहा है-वनहि चेतवारे चेत्य..चेततो, केल्याने होता है, रे,..। तुम्हारे पास लकड़ी जलाने का है। जो कुछ सिद्ध करना है, तो लकड़ी जलाना पड़ता है। आगी को चेताना पड़ता है, और आगी को चेताकरके - माने लकड़ी सूखी है, जब तक जलाओगे नहीं लकड़ी जलेगी नहीं। ऐसे लकड़ी को जलाना पड़ता है, जलाने से लकड़ी जलती है। करने से होता है, इसलिए प्रथम कर्तव्य है-ये लकड़ी को जलाना और अपने ज्योति- प्रकट करना चाहिए।और वो ज्योति, वो है सुषुम्णा। सुषुम्णा को प्रज्वलित कर और अंतरमार्ग में प्रवेश कर और आत्मज्योति का दर्शन करना है। यही चित्त का- कृतार्थ होना है, यही आत्मस्थिति है और यही साक्षात्कार है। इससे बढ़कर और कोई स्थान नहीं है। यही सम्यक सार है, यही सार है, इसी का नाम है संसार।
और भी कहा है, बुद्धि समाधि के योग से सूक्ष्मता को प्राप्त होती है, और बुद्धि की सूक्ष्मता की सीमा,- साक्षात्कार है। उदाहरण गुरुदिस्ट मंत्र कटर द्वारा, बुद्धि संस्कारित पेंसिल को कटर में घर्षण करते करते शनैः शनैः पेंसिल की नोक पैनी होती चली जाती है। और पैनी होते होते होते ऐसा समय आ जाता है। कि पेंसिल संस्कार वाली जो है, वो पेंसिल समाप्त हो जाती है। बुद्धि शुद्ध हो जाती है। कटर का भी काम समाप्त हो जाता है। याने संस्कार वाली बुद्धि शुद्ध हो करके और ध्येय, मंत्र रूपी कटर जो है, वो नाम संस्कार वाली, संस्कार से शुद्ध होकर बुद्धि, जिस नाम का धारण, जिस इष्ट का, जिस ध्येय का, लक्ष्य का, प्राप्त होना है। वो बुद्धि

प्रकृति में लय होकर और प्रकृति और बुद्धि दोनों शुद्ध हो करके और दोनों आत्मा, आत्मा में लीन हो जाती है - यही आत्मस्थिति है। इसलिए स्वस्वरूपानु संधान भक्ति इति भिज्यते। यही ज्ञानेश्वर ने भी कहा है - ये स्वस्वरूपानु संधान, हेचि भक्ति, हेचि ज्ञान। बस इतना ही तो है, अगर समझ में आ गया, तो। यही प्रथम कर्तव्य है। ॐ शांतिः शान्तिः शान्तिः। ॐ। मनोने तोंड़ा आन परे, तेहि वाचा वावरे, परि समाधि न मरे, मौन बुद्धि चि।

- भिद्यते हृदय ग्रंथि शिछद्यन्ते सर्व संशयः। क्शीन्ते चास्य कर्माणि तस्मिन दृष्टि परावरे। छिद्यन्ते सर्व संशया, छियन्ते चास्य कर्माणि तेषां दृष्ट परावरे। जब तक साधक इन केंद्रों को इन स्थानों को, ये योग में छह स्थान दिये है। मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपुर, अनाहत, विशुद्ध, आज्ञा चक्र, फिर सहस्त्रार -इन ग्रंथियों का जो भेदन करना नहीं जानता, वो कभी भी योगी नहीं हो सकताऔर कभी भी, योग माने धीरे धीरे वो योग सीखाने के योग्य भी अधिकारी नहीं, सम्पन्न हो सकता है। तो जब तक ये भिद्यते हृदय ग्रंथि शिछद्यन्ते सर्व संशयः। क्शीन्ते चास्य कर्माणि तस्मिन दृष्टि परावरे। माने मन में जो संशय है, जब तक संशय दूर नहीं होता, जब तक आप, छः ग्रंथियों के भेदन करते करते जब तक आप षष्टम ग्रंथि में याने सेंटर में नहीं जाते है, याने तुर्यावस्था में, आज्ञा चक्र में आते है, तुर्यावस्था में आते है। जिसको-स योगी सर्वज्ञ केवली, जिसको अरिहंत कहते है। स योगी सर्वज्ञ केवली, ये स्थान में पहुंचने पर, तब उसको तेषां दृष्टि परावरे। तब उसको भूत भविष्य वर्तमान का बोध हुआ, तब वो अरिहंत होता है। इससे संस्कृत में दे दिया गया है-भिद्यते हृदय ग्रंथि शिछद्यन्ते सर्व संशयः। क्शीन्ते चास्य कर्माणि तस्मिन दृष्टि परावरे। तब तक उसके जो कर्म है माने पंचम जो केंद्र है, विशुद्ध जिसको कहते है। जब तक, विधाती कर्मों का विनाश नहीं होता-तब तक आरोहण नहीं

होता, तब तक ऊर्ध्व गति नहीं होता, तब तक ऊर्ध्व रेतस नहीं होता, तब तक अधो रेतस, है। वो आदमी भयंकर से भयंकर खून कर सकता है, पंचम केंद्र तक जाने पर भी वो आदमी भयंकर हो सकता है, वो मर्डरर भी हो सकता है। लेकिन इस तरह विनाश करके विधाती कर्म जो विनाशी है। जिसमें जन्म मरण बना रहता है, जब तक वो विनाश नहीं होता, तब तक वो आरोहण होता ही नहीं। तब तक वो तुर्यावस्था में जा ही नहीं सकता, तब तक वो-, स योगी सर्वज्ञ केवली, या वो सर्वज्ञ नहीं हो सकता है। और वो सर्वज्ञ केवली तो फिर स- योगी जिसे निर्बीज समाधि कहते है। ये सबीज समाधि है, निर्बीज समाधि। उसमें कोई दृश्य नहीं है, न शांति।इसलिए ये विद्यते सारे ग्रंथियों का भेदन करते करते, विधाती कर्मों का विनाश होने पर, तब आरोहण, तब वो आज्ञा चक्र में पहुंचता है। तब वो स-योगी सर्वज्ञ केवली याने सर्वज्ञ कहते है, जिसे अरिहंत कहते है। कितने देखते फिरते है, लेकिन पहचानते नहीं, हम समझते है कि साधारण मानव है। और ये योग सिखाते रहते है। सबको अपना मार्ग में लगाते रहते है (मानव समाज को), उन्हीं को अरिहंत कहा उन्हीं को त्रिकालज्ञ कहा, उन्हीं को सर्वज्ञ कहा, उन्हीं को स- योगी, सर्वज्ञ योगी कहा गया, इत्यलम। इसी तरह से, कबीरदास जी ने कहा है या जिसको। कबीर दास जी ने भी कहा है, वो ये है-जिन खोजा तिन पाइया, मैं बौरी ऐसी भई, रही किनारे बैठ। रही किनारे बैठ, रही किनारे बैठ, जिन खोजा तिन पाइया। जिसने खोजा वो तो पा लिया है, और बिना गहरे डुबकी मारे के सिवाय कुछ होता नहीं है। वो डर गया, जो डर गया, वो आगे कहीं भी माने निकल नहीं सकता। वो तो अपने आप गया वो लोगों को भी ले गया वो। इसलिए जिन खोजा तिन पाइया गहरे पानी पैठ, मारे सीधे देखा जायेगा। लेकिन वो डर के मारे, मैं बौरी ऐसी भई, कि रहे किनारे पे बैठ, इधर अपनी अपनी है, अपनी अपनी रुचि है, आगे बस आनन्द है, आनन्द है। आनन्द है, आनन्द है, इत्यलम।

काया का पिंजरा बोले रे, एक सांस का पंक्षी डोले रे, तन नगरी मन है मंदर, परमात्मा जिसके अंदर, दो नैन है पाक समंदर-अरे पापी झूठ क्यों बोले रे। एक सांस का पंक्षी बोले रे, काया का पिंजरा डोले रे, एक सांस का पंक्षी बोले रे। ये संसार है एक सराय खाना, नहीं पल का यहां है ठिकाना, आने के लिए है जाना, ये पांच तराजू तोले रे, एक सांस का पंक्षी बोले रे, काया का पिंजरा बोले रे, एक सांस का पंक्षी बोले रे, मां बाप पति पत्नी का, दुनिया न कोई किसी का, ये जग है (मतलीबी का) जीते जी का, ये झगड़े है जीते जी का, अब जाग जगत में क्या सोये रे, एक सांस का पंक्षी बोले रे, काया का पिंजरा डोले रे, एक सांस का पंक्षी बोले रे, एक सांस का पंक्षी बोले रे। ज्ञान चक्षु समादाय, उद्धेरेति वन्निवत परम। निष्काम निश्चलं शान्तं, ज्ञान नेत्र समादाया -ये है ज्ञान चक्षु, दिव्य चक्षु। ये दिव्य चक्षु, पुरुषः परम ।..अभ्यास से जाना जाता है। अभ्यास वैराग्याभ्याम तन्निरोधः। मानव प्राणी सब समान है, प्रतिभा, समान है कुछ भी अन्तर नहीं है। प्रत्येक में पूरब से पश्चिम उत्तर से दक्षिण, सारे प्रकार के मानव प्राणी मात्र सब समान है। कोई अन्तर नहीं है। वो सबमें है जो परम है जिसको परमात्मा कहते है। सबमें विद्यमान है, सर्वज्ञ है,सर्वशक्तिमान है, सर्वत्र है, सभी तरफ है, सर्व शक्तिमान है,औमनीपोटेंट, लेकिन वो सबमें वो, अनुभूति नहीं है। उसी के बराबर भौतिक या आध्यात्मिक बिना अनुभूति के बिना सतगुरु के बताये हुए मार्ग से जब तक अभ्यास नहीं कि जाती है जब तक-ये अनुभव नहीं होता। ये है अभ्यास, इन छः ग्रंथियों के भेदन करने जो अभ्यास है। जब तक भेदन करना न मालूम हो, तब तक ,पंचम केंद्र के, जब तक बाहर है, पंचम केंद्र पार नहीं किये तब तक।सभी मानव प्राणी साधारण है, इसमें कोई अन्तर नहीं है। सभी बोलते है भगवान है, ईश्वर की कृपा है, ईश्वर की कृपा है सब करवाता है। बन गया तो मैंने किया,बिगड़ गया तो ईश्वर ने किया।बहानेबाजी, बहानेबाजी है।इस तरह

आप देखेंगे दो तरह के व्यक्ति है। दो तरह के प्राणी है, साधक और अर्थ में रहने वाला।, जिसका जो संकल्प है,अपना मृत्यु देख लिया,और देख करके ऊपर चला गया,उसका जो चित्त है एक ही चित्त है। और ये दूसरा जो सर्व, अधिकांस जो प्राणी है, मानव प्राणी मात्र है, सब आ गये उसमें।उनके अनेक वासनाएं है,अनेक चित्त है,अनेक इच्छा,अनेक कामनाएं है,एक के नहीं है वो, अनेक चित्त है। एक नहीं प्राणी,एक नहीं,एक शक्ति के ..उनकी इच्छा कामना वासना प्रबल है। उसमें निरंतर गिरते चले जा रहा है, काम क्रोध मद लोभ मान मत्सर आदि अवगुणों से, दोषों से ऐसे स्तर बढ़ते चले जाते है, ऐसे दीवाल पर आवरण पड़ जाता है,कि जहां एक हुए आत्मा उसमें ...।आत्मा जो शक्ति है, बुद्धि में उसके पास नहीं है। विशेष पद्धति से सतगुरु जो बताये है उससे आप करिये और अभ्यास है जब तक सत्व है और तत्व है।योगीजन को देखिये आप,योगीजन है को अतीन्द्रिय पदार्थ जो है,प्रत्यक्ष देखता है। ये जो सादिश है,सर्वज्ञता,सादिशय सर्वज्ञता का बीज है। पातंजलि योग दर्शन में सूत्र दिया है। निर्माण चित्तास्य मात्रा ..इनके अनेक चित्त है अनेक वासना, अनेक संकल्प है, दुनिया भर के कचरा भरा हुआ है। दुनिया भर के आवरण से जकड़ते चले गये, आदमी कुछ करने को तैयार नहीं।मिलने पर भी,देखने को तैयार नहीं,करने को तैयार नहीं।बस ये कहकर छोड़ देना पड़ेगा। लेकिन योगीजन, योगी के जानते है क्या कार्य है? प्रवृत्ति भेदे प्रयोजकं चित्तं एकं अनेकाषां। योगी के एक ही चित्त होते है। अनेक चित्त करते है लोग।तब विशुद्ध नहीं होती,अभयं सत्व संशुद्धि,तब तक आप है।.. तुम्हारी बुद्धि शुद्ध नहीं हो सकती। योग दर्शन में ये है। "क्षीणवृत्तेरभिजातस्येव मणेर्ग्रहीतृग्रहणग्राह्येषु तत्स्थतदंन्जनता समापत्तिः " ..क्षीण वृत्ति जब तक नहीं हो जाती, जब तक स्फटिक मणिवत आपकी बुद्धि नहीं हो जाती है। जब तक ग्रहण ग्रहनेषु ग्राह्य ये

जो तीनों मणि है स्फटिक की तरह है, सत रज तम आदि जो आपके विचार उदय अस्त भोग आदि जो होते है, ये कभी दूर नहीं हो सकते। ये क्षीण वृत्ति होने पर क्या होगा, जो कुछ ग्रहण करना चाहेंगे,उसमें समा करके वो जब चाहे,जिस चीज को समझना चाहे, उसको जानना चाहे, उसके बुद्धि में, वो बुद्धि स्फटिक मणिवत है, उसके अंदर आकरके उसका दर्शन होता है, उसका बोध होता है, उसका जो पद्धति है उसको बोध होता है।उस तरह छः प्रकार से ग्रंथि है इसी को कहते है। योगाश्च चक्र भेद योग। और यही आत्म साक्षात्कार है। और आगे निकल गया तो निर्बीज समाधि है। निर्बीज समाधि में कुछ भी नहीं रह जाता है। वेदान ...स्वरूप शून्यं इव निर्बीज समाधि। और निर्भाष एक भास रह जाता है। यहां तक उसको स्वरूप दिखता है जिसके पास, ये भी नहीं रह जाता है। ये बुद्धि भी शून्य हो जाती है, बुद्धि भी वही चली जाती है जहां से आई है वो। इस प्रकार से बुद्धि भी नहीं रह जाती है, केवल आत्मा रह जाता है। यही सत्व संशुद्धि है, यही आत्मा ...निर्बीज समाधि है। इसी को बुद्ध कहते है, कैवल्य कहते है, निर्वाण कहते है। ये है अन्तर जो साधारण मनुष्य है और योगी जो है, सत मार्ग है वो अभ्यास करके ये सत वस्तु है जिसने जो साक्षात्कार कर लिया है। वो सर्वज्ञ हो जाते है। तब वो कर्तुम अकर्तुम अन्यथा कर्तुम स सक्तः। इसलिए वो साधारण मनुष्य जो होते है उनके अनेक चित्त होते है, अनेक कामना, एक है ही नहीं। अनेक हो गये, अनेक चित्त हो गये, होता है। लेकिन सामान्य व्यक्ति,अस्मिता के सिवाय कुछ नहीं है। निर्माण चित्ताणी यस्मै मात्रा, उनके जो चित्त है अनेक चित्त,अनेक संकल्प है। एक पर भरोसा नहीं है। स्वयं पर भरोसा नहीं है। स्वयं पर भरोसा नहीं, वो किसी पर विश्वास कर सकता नहीं। स्वयं ही पर भरोसा नहीं, क्या भरोसा करेगा।आदमी सोचते कुछ, बोलते कुछ,और करते कुछ, बिल्कुल वो जैसा धोखे की टट्टी है।योगी का नहीं है, योगी का एक चित्त है।

- ये जो साधन है, साधना जो आपको मिली है। ये साधना से अंतिम स्वास पर्यंत अपने पर भरोसा किंवा सतगुरु पर भरोसा। सतगुरु भी वैसा, सतगुरु अनुभवी चाहिए। मंत्र दे दिया चला गया, ये नहीं, कनफुकीयां गुरु नहीं होना। सतगुरु, सत्ता जिसने धारण किया, सत् विशेषण है जिसमें, सत् शक्ति प्राप्त कर लिया है जिन्होंने - ऐसा कोई मिल जाये आपको उनसे दीक्षा लेना चाहिए। ये आपका कल्याण उनसे हो सकता है। जैसे अभी मंजू देशपांडे ने बताया, हो गया उसका काम, ये सब जगह है। इतना ही नहीं, अब क्या बताये आपको, ये है सतु दीर्घकाल नैरन्तर्य सत्कारा संवितो दृढ़ भूमि, ये विशेष है, नैरन्तर्य ये विशेषण है,और सत्कारा संवितो, विशेषण है, ये विशेष होना चाहिए आपमें अन्तर् रहित अभ्यास होना चाहिए। मैं कहता हूँ, दिन रात न कर सको, प्रत्येक स्वास न कर सके, 21600 स्वास होते है, इसको अजपा जप कहते है। बोलते है स्वास जपता है, अरे स्वास कहाँ जपता है, 21600 जप किये न एक ही दिन में तुम पहुंच जाते। वो तो स्वास चलता है इतना 24 घण्टे में इतने स्वास, श्वसन संस्था हमारी कार्य करती है।ऐसे निशदिन बहुत बढ़ता है,ज्ञान बहुत बढ़ता है, बीच में। ऐसा कोई आदमी नहीं है कि जिनके विचार अस्त एक सेकंड के लिए बंद हुआ होगा। सदा विचार उदय अस्त, उदय अस्त चलता है। उसका कल्याण हो जाय, अरे 3 दिन में कल्याण हो जाये, 3 रात्रि में काम हो जाता है, आपका। अगर ये 21600 अगर पकड़ा स्वास प्रश्वास में,स्वास प्रस्वास में अगर जप किये लेकर के। लेकिन गुरुदिष्ट बताये हुए मार्ग होना, उसके अंदर विशेष बातें है, इतना ही नहीं है। इसलिए कहने का तात्पर्य यह है जो काम करो भरोसा से करो या जिस पर है, जैसे वकील साहब है, वकील नाम साहब है, यानी वो जो करे उस पर हमको है, ऐसा भरोसा होना, या तो अपना भरोसा होना, बिना भरोसे के काम करता है, वो पीछे पछताता है। उसका काम भी बिगड़

जाता है, शरीर में दुनिया भर के रोग हो जाते है। और क्या हो जाता है, - देखा देखी साधे जोग, छीनी काया बाढ़े रोग। देखा सीखी लोग करते है, देखा सीखी सब काम करते है तो कोई मार्गदर्शन करने वाला नहीं, कोई मार्गदर्शक नहीं तो काया माने रोग से घट जाता है, दुबला होता है, धीरे धीरे, क्षय होता है, फिर मर जाता है, इधर का रहा न उधर का। इसलिए कहने का तात्पर्य ये है कि आपको आचरण करना चाहिए। जो आचरण करता है उसी को सफलता प्राप्त होता है। और आचरण माने भरोसा, या तो अपने पर, मूल चीज है, या तो सतगुरु पर। इसी को इंग्लिश में फेथ कहते है, उसी को आप श्रद्धा कहते है। फेथ जो होता है तो उस पर, प्रश्न नहीं उठता है, अनक्वेश्चंइंग कॉन्फिडेंस। साइड धातु है साइड(-)ये प्रिफिक्स है, प्रिफिक्स माने कॉन्फिडेंस है। तो तात्पर्य ये है हमारे कहने का सतगुरु को, दे दिया, दे दिया माने दे दिया। आप मंत्र पढ़ते है शिष्यत्व के, शिष्य, शरणागत आप शरण में आ गये। लेकिन शरण में आने के बाद क्या है? कुछ भी नहीं है। मेरा ये रह गया, मेरा वो रह गया, मेरा वो करना है, मेरा, अरे भैय्या, हमको क्यों सुनाते हो कि मेरा वो है मेरा वो है, मेरा वो है। यहां आने के बाद सब तेरा, ये यहां ही रख, यहां है तो। प्रश्न ही नहीं उठता, ये तो आदेश है, उपदेश नहीं, आदेश है।आदेश का पालन हो, नहीं पालन होता है तो अपने घर बैठों,नहीं आना।और आये भी,तो जो केवल बताये है वो केवल विषय रहना चाहिए।क्योंकि विषयातीत होना है आपको।और यहां है,तो सारे विषय हमको दो,मेरा ये है, मेरा ये है, मेरा वो है, मेरा वो है मेरा है मेरा। मेरा ये कर दो, मेरा वो कर दो। इसके लिए हम थोड़ी ही दीक्षा दीये है,आपको।आप अपने कल्याण के लिए दीक्षा लिये है।मैं आपके कारोबार क्या है मैं कभी नहीं पूछता, लेकिन ये होता है अगर आपको भरोसा है, तो आपका कार्य हो ता है।अगर भरोसा है तो आपका कार्य हो जाता है। ये एक नहीं अनेक हम आपके सामने रख देंगे

उनके मुंह से कहलवा देंगे। हो जाता है काम, कभी नहीं रुकता बराबर होता है। यही सत धन धा यही श्रद्धा है, इसी को कहते है, श्रद्धामयं यः पुरुषः यत श्रद्धा। ये है, श्रद्धा। इतना कहना काफी है, इसका जो विस्तार है आगे हम कभी कहेंगे। इत्यलम ॐ शांति, शांति।

साधना के बिना कुछ भी नहीं मिलता, कुछ भी नहीं मिलता। साधना के बिना कुछ भी नहीं मिलता, कोई भी कार्य हो। जीवन में हम साधना ही तो कर रहे है, जीवन में साधना ही तो मनुष्य करता है, लेकिन इतना ही है, हमें कभी पैसा जमा करे, खूब परिवार बढे, संतान खूब हो, पुत्र संतति कन्या संतति, हमारे हमारे सब रहे, और मेरी वाक्य जो निकले हमारे पास सब सलाह लेने आये, मैं सबसे बड़ा प्रतिष्ठित धार्मिक होऊँ, सब लोग हमारे पास आये पूछने के लिए। मेरा समाज में मान हो,आदर हो, प्रतिष्ठा रहे - ये सब साधना ही तो है, साधना बिना तो कुछ होता नहीं। उसका नाम है लोकेष्णा लोक में मेरा मान हो, लोक मेरी माने। मान हो माने माने ये उसका अर्थ होता है। ये साधना बिना तो होता नहीं। पड़ोसी का काम करता है मोहल्ला का काम करता है, धीरे धीरे वो सबके काम में आता है। जहाँ भी जाता है वो संसार में है, बस। तुकाराम महाराज जी ने भी कहा है, ये जेका यन्ज येका।.. माने...। रंज नाम दुःख का है, दुःख से कातर हो गया है, दुःख से इतना कातर हो गया, कि ये बिल्कुल, मूर्छित हो जाता है, एक मूर्च्छा अवस्था में आ जाता है। मूर्च्छा अवस्था माने जहाँ कोई सूझ बुझ नहीं है। कुछ भी नहीं रह जाता, उसके पास। इतना शिथिल होकर नीचे गिर जाता है। बिल्कुल उसमें है ये, याने उसमें निकल नहीं पाता है। चारों तरफ से एक बीतता नहीं दस आता है। एक बिता नहीं सौ आ जाता है, नाना विघ्नों में घिरा हुआ रहता है। निकल नहीं पाता है, ठीक है की नहीं सब, बैठा, वो निकाला फिर बैठा। याने चारों तरफ से घिरा है, पच रहा है। मूर्च्छा से आँख खुला नहीं दे बत्ती। इससे निकलने के लिए वो सोचता है। ऐसो को लोकेष्णा प्राप्त है, ऐसो को जो ये कहता है,तू मेरा चिंता मत कर,

चल मैं तुम्हारे साथ हूँ, प्रसन्न है, खुद भी प्रसन्न है। इस तरह से जो सेवा करता है, ऐसे जो पीड़ित लोग है, यथार्थ पीड़ित है तो लोकेष्णा तो है लोक में उसका मान तो होगा। लेकिन मान नहीं चाहता। अंतर रहित होता है, साधना ये है कि उनको मान नहीं वो कुछ लेता देता नहीं। न कुछ लेना देना है माने कोई हेतु नहीं, हेतु रहित जो सेवा करता है। तो उसे साधु बोल रहा है, साधु उसको कहते है, किसको कहते है साधु? साधना नाम साधु, जना नाम ते, ते जना नाम, ये जन ये लोग। इस तरह साधना में जो रत रहते है कोई हेतु नहीं, निरपेक्ष वृत्ति से। ये साधु ही ऐसा कर सकता है। दूसरों को मान चाहिए, दूसरे लोग आते है मैं तुम्हारे वक्त पे काम आया था। गया उसका काम। मैं काम आया था, माने फिर धीरे धीरे वो रावण हो जाता है, केवल मेघनाथ बन जाता है। रावण तो नहीं हो गया, मेघनाथ हो गया। बार बार वो कहता है, मैंने किया था, मैंने किया था, मैंने किया था। तो मैंने किया था, पानी फिर गया। लेकिन न कहते हुए, कोई अपेक्षा रहित, मोह रहित होकर, और कोई संग रहित, ये मेरा है ये तेरा है, मेरा है मेरा नहीं। कहते है न रेडक्रास सोसायटी, कोई भी हो सेवा करना। उनके जो है कार्य करना। दोस आर डेंजरस, न, कोई भी हो, कार्य करना। ये उसको कहते है जिसकी कुंडलिनी जागृत हो गई है। कुंडलिनी तन्त्र का नाम है, वो एक शक्ति है हमारे शरीर में, वो सोई हुई है, दबी हुई है। सोई हुई तो नहीं, अगर सो जायेगी तो ये शरीर सड़ जायेगा, ये सड़ जायेगी। ये अगर सो गयी वो शक्ति, तो लोग उठा के फेंक देंगे, डाल देंगे। सोई नहीं लेकिन उसमें एक महाशक्ति है, महान शक्ति है उसमें भरी पड़ी है। उसको कैसे काम में लाना है हम नहीं जानते। साधना करने से इसमें जो है शक्तियां, अपने आप काम करती रहती है, करना नहीं पड़ता है। ये शक्तियां अपने आप काम करते रहती है। जिन जिन केंद्रों में है, वो अपने आप करते जाते है। सुषुम्ना मार्ग जो है खुल जाती है, ये शक्ति जो है ज्योति के रूप में,

कभी कभी बिना ज्योति के ऊपर नीचे संचार होता है। स्पर्श होता है, कोई चीज ऊपर जाता है, ऊपर जाता है, दिखता नहीं। एक तो आकृति है, ज्योति आकृति है, आकृति के बिना ऊपर नीचे संचार होते रहता है। ये साकार निराकार है ये। यही सगुण निर्गुण है, ये गुण है दोष नहीं। ये केवल गुण ही गुण है, दोष नहीं। दोष तो ये है जिनके द्वार नहीं खुला है, ये सुषुम्ना जो है उन्मुख नहीं हुआ,तब तक तो सारे दोष है, हमारे में। और एक दफे खुल गया, आना जाना शुरु किया। ऐसी इच्छा हो गई, शुभइच्छा।इत, छा, ये शुचा, शुभ, सकार वरधा धान..सकार त वाने त, सकारतु वन वे ताने, सकार चले वो। सप्त वर्ग है,इच्छा, शुभ इच्छा, शुभ कैसा बना, शोभ से बना है, शोभ से, शोभा अकार है स्त्री लिंग, ये शक्ति है, शोभा शक्ति है आकर्षण है ये शुभ हो, हमारे कृति हमारे वाणी, हमारी कृति हमारी वाणी, और हमारे चिंतन है ये शोभा,सबके लिए शुभ हो, हम जो पात्र है ये पात्र सबके लिए प्रिय हो, तो प्रिय तब होगा, जब निरपेक्ष वृत्ति से अपेक्षा रहित होकरके लेना देना छोड़ करके इस प्रकार से अपने आपको साधना कर, और मुख द्वार तब ये शक्तियाँ मिलती है। ये शक्तियाँ समाज के ऐसे, जे कार्य रंज कार्य ये, व्याप्त है जो आपणे है वैसे साधु है, वो साधु। ये साधु करके है, साधु माने कल्याण, अपना कल्याण हो गया। मल् रहित हो गया, मल माने वहाँ दोष नहीं, बिल्कुल दोष नहीं, ये गुण अपने आप साधु में ले जाकर सेवा कराता है। न वहाँ मान है न वहाँ प्रतिष्ठा है, न अपेक्षा है, कुछ भी नहीं रहता है - इसको साधु कहते है। साधु ये पद है, साधु से जाना जाता है कि ये शक्ति संपन्न है इसकी सुषुम्ना खुली हुई है। उसका चरित्र ही बताता है चरित्र माने चर्या, उसकी चर्या बताती है कि अपने आप की तलाश में है। चइ+ त्र, त्र त्राहतो महतो भयात्। स्वयं मुक्त है वो भय से मुक्ति पाने हेतु, वो स्वयं वो जाके स्वयं वो सेवा करता है। या सबकी वो सेवा करता है। ये है पहला - तब होता है, शुभ इच्छा, इत, छा, इत माने इत

ओर, इस दुनिया में, इस दुनिया में पहुँच करके भी, इस दुनिया में उसके सारे वृत्ति, सारे इच्छा कामनाएं, सब लोगों के कल्याण हेतु दुःख दूर करने हेतु, सुख दुख दूर हो। साधु की तरह, अपने जैसा सेवा करता है। क्यों उसमें भय नहीं, उसमें दोष नहीं, अभय है,सर्वगुण संपन्न है, उसको साधु कहते है। ये तुकाराम महाराज का कहना है। मेरी अल्प मति नाम बुद्धि से हमने सर्च किया। मेरा वो अनुभव है वो है-सत्। देव उदाहरण हमने छोड़ दिया, हम मनुष्य है, क्यों अपने आपको मनुष्य कहें, अपने आपको साधु नहीं कहें, न अपने आपको योगी कहें, न अपने को बड़ा है,न देव कहे। कि तात्पर्य ये कहने का, लोकेष्णा खूब नाम हो हमारे, उनके पताका आज तक है, तुकाराम महाराज के पताका आज तक है। ये ..है.. ये है परीक्षा में इनके अभंग आते है, स्नातक उनको कुछ नहीं समझता। रूप पाहता लोचने, सुख.. ये लोग जहाँ पे, ज्ञानदेव समाधि छोड़ करके बाहर आये, तो मुक्ता बाई जो है स्वयं से कहता है, क्योंकि मुक्ता बाई स्वयं मुक्त थी, निर्दोष, निर्लप्, पारदर्शक् ये सब कल्याण है। कहा वो क्या.. सुना तुमने क्या लाभ है, आंनद है कि नहीं। तो कहता है - रूप पाहता लोचने कौन सा रूप? देहि ध्याता ध्यान त्रृकुटि वेला सर्वगत.. रूप पाहता लोचने... सजनी किसको कहा ये सजनी जो है कौन सा सजनी है, ये है हिंदी में, याने क्या बोलते है, उसको ये मणि है, जागि ये है वो शक्ति है ऊपर तक जब वो उठती है वो कहती है जागी, मैं जग गई। मैं पहले जग गई, जागी, फिर वो ही जगाया फिर चेतन को जगाके उसमें जगी और जागी फिर सोयी नहीं। ऐसी जगी कि फिर सोई नहीं, आयु पर्यंत नहीं सोई, फिर नहीं सोई, हाँ सोई, अभी जो कहा वो जो शक्ति है तुम्हारे में एक दफे जगी है तब फिर वो सोयी नहीं, चलती रही, और अथाह,और अपने अखण्ड रूप से, चलती रही।आप सोये है लेकिन श्वसन पाचनसंस्थान काम कर रही है ये सब हो रहा है। जागे यही जगाये, जागी

फिर वो सोयी नहीं हाँ सोयी, सोती है कि ये शरीर की आयु है, सोयी लेकिन वही सुलाये, जिसको जगाकर सुलाये, सुला दी है, सुलाते सुलाते सुलाते वो निकल जाती है, मतलब ये है। सोयी यही सुलाये सोयी फिर जागी नहीं। वो शक्ति है, उसके अंदर वो ही आत्मशक्ति है, महान है, वो तुम्हारी शक्ति वो महाशक्ति है। सोयी फिर जागी नहीं, जगी नहीं होती तो यहाँ आप आते नहीं, बोलते, चालते नहीं तो वही चीज है। वोही आत्मशक्ति तुम्हारे में वही आत्मा है। आत्मशक्ति है, वेदांत में उसको आत्मा... वेद में उसको सतपुरुष कहा, व्यवहार में उसको सद्गुरु कहा, वेदांत में सत्पुरुष कहा। वेद में जात वेदस्य कहा, सत्पुरुष कहा, सतगुरु कहा। शक्ति एक है एक ही नाम है नाम ... अलग अलग है। और वो सतगुरु कहा, सतगुरु माने सत्ता है जिसमें। सत् है विशेषण,.. व्यक्ति का नाम है, विशेषण है सत्, सत् से संपन्न है ऐसा है जो ऐसा। क्या विशेषण है क्या विशेष है, गु शब्दस्य अंधकारस्या जकार अंधकार और ये काम, क्रोध, राग, द्वेष और अभिनिवेश पंच क्लेश, ये पांच क्लेश है। अविद्या कुछ नहीं जानते ये अविद्या है, यही नहीं सब जितने है, सब उनको मालूम है, कुछ नहीं जानते, ये किताबी विद्या है। अपने आपको वो नहीं जानता,.. महाशय कहने पर, कुछ नहीं जानता, बताने पर क्या वो कहता है कुछ नहीं जानते। आप मानते है जानते कहाँ है। तो तात्पर्य ये है अविद्या माने अविद्या कुछ नहीं जानते।अज्ञान अंधकार तमसाछीन्न तमोगुण प्रधान अपने ये सारी वृत्तियाँ है। कुछ भी वो नहीं जानते। राग ये अपना है और द्वेष ये अपना नहीं है। और मृत्यु के लिए सदा भयभीत ये पांच है। ये महाक्लेश है ये किसी को नहीं छोड़ता, चाहे पुरुष हो। वृक्ष लता आदि ये सबकी आयु है, पत्थर वत्थर सबकी आयु है। तो तात्पर्य ये है ये पांच क्लेश से बंधा हुआ है।तो गु शब्द अंधकारस्या अनुस्यात, माने ये जो अंधकार, वो तो केवल उसमें फंसा हुआ है।ऐसे फंसा हुआ है, वो, कि ये अंधकार में,

लकारों..जकारस्या तन्निरोधः,लकार से क्या होता है, ये सब निरोध हो जाते है। ये सब दूर हो जाते है। ये शक्ति प्राप्त होने पर, ये सारे सब निरोध हो जाते है,नाश नहीं होता है। आप चले जाइये, दुनिया भर के,आप बड़े है बड़ी दुनिया है, ये अलग बात है अलग चीज है।यही है वो दुनिया ये जो पांच है जो।

- जो दिखाई देता है जहां तक दिखाई देती है उसका नाश अवश्यंभावी है, इसी को-माया कहा।
  जिसे माया कहा है-यह अग्नि है,यह हाथ में आने वाली नहीं है। याने आपका जीवन, दूसरे का जीवन न होकर, नारकीय जीवन, संकटपूर्ण जीवन, संकटाकीर्ण जीवन।
  कृष्ण ने ऐसा कहा, मेरी एक शक्ति और है-वो परा प्रकृति है, परा शक्ति है। जो परा है,सबसे परे। वेदान्तियों ने इसको माया कहा। इसके पीछे क्यों दौड़ते हो, ये हाथ में आती नहीं और मनुष्य फंसता चला जाता है। ये परिवर्तनशील है।
  इससे निकलने के लिए योगमाया है।वो मिलने पर ही शक्ति है।
  जब तक सुषुम्ना खुलती नहीं, मूल केंद्र तक,जब तक पहुंचते नहीं-तब तक हमारी सारी वासनायें, सारी इच्छायें, काम क्रोध मद लोभ मत्सर रागद्वेष बने रहते है।
  योग माने सुषुम्ना शक्ति।
  इस माया से निकल करके और योगमाया जो है।जिस माया से सारे योग सिद्ध होते है। मानो हमारी इच्छा, कामनाएं, वासनाएं पूर्ण होती है। वो योगमाया-से, ये सारे योग अपने आप खुलते है।
  तो मन बुद्धि चित्त सहित पांच तत्व / क्षिति, जल, पावक, गगन, समीर / है। ये भी शक्ति है। लेकिन यह शक्ति हमारे बस की नहीं है, इससे हम कुछ नहीं कर सकते है। ये स्वयं अपने आप कार्य करती है।

इससे निकलने के लिए योगमाया है, वो मिलने पर शक्ति है।
सिद्धि करिये उस मार्ग में जाकरके जो सेंटर है, केंद्र है, वहां पहुँचों।
अपना स्टेटस बनाओ और अपनी शक्ति को विकसित करिये।
वो शक्ति से माया को दूर कर, पराशक्ति को प्राप्त कर सकें।

- हो गया, तो कभी भाई मेरा मान और मैंने किया अनुभव किया,तभी तो ऐसा संग हो सकता है,तब ऐसा संग होगा-ये है सत्संग।प्रसंग नहीं। ये है सत्संग- क्रिया योग भी यही है, ज्ञान योग भी यही है और भक्ति योग भी यही है। जैसा चाहे अपने आपको रख सकते है, और आज से कभी भी अपने आपको धारणा यही है,है कि नहीं, प्रेम यही है, क्या? है कि नही माने अपने आपको सारा सुधार यही है। मनुष्य जैसे सोचता है वैसे हो जाता है, ये सिद्धांत सत्य है। ये भौरा ठीक रोज आता है उसे बंद कर देता हूँ,भूं भूं करता है एक दिन ऐसा आता है भौरा है वो उड़ जाता है।उसने क्या किया भौरे को गुंजार को उसके शरीर में, क्या होता है वाइब्रेशन हो जाता है वो वाइब्रेशन जो धीरे धीरे मालुक्यूल्स जो है, चेंज होते होते वो भौरा हो जाइये, भौरा हो जाते है। माने पूर्व से हम भौरा थे लेकिन वासनाओं के पकड़े जाने से फिर शून्य है , वैसे भौरा नहीं रह जाता लेकिन उसका गुंजार जो है, गुंजार ध्यान में रखे, कोई दिन में आता है वो भौरा हो जाता है। इस चीज को आप आदेश में डालिये। दीक्षा में आदेश ये है। कर दिया, कर दिया, बन गया, बन गया, माने हो गया, हो गया।आपको क्या है?जन्म मरण सब रचना है है, बस।ये समझ खाली काम ये है।

- उनके पास कामधेनु गाय है,ये गैया जो है, ये कौन है मालूम नहीं लेकिन, ये गाय है इसके द्वारा ये सब होते है ऐसा है क्या? ठीक है, चार बजे तैयार हो गए जाने के लिए,आवाज देते है,घर में विदा होते है और गाय के पास गए,गाय का खोल दिये रस्सी,चल बोले और चल बोले गैय्या आंखें फ़ाड़

दी, और गैया आंखें फाड़ी जबर्दस्ती किये सब,खींचने के लिये, गैया को खींचा रस्सी पकड़ के, चल बोले मैं राजा हूँ मेरे पास चल यहां क्या कीमत है, तेरी, ये फकीर के पास में रहकर के वशिष्ठ जी को मालूम को हुआ ऐसा ऐसा है।वशिष्ठ जी भी आये, खड़े हो गये,चल बोले ये पाग़ल है, यहां क्यों खड़ी है।, बैठ गये अपने गुरुजी बाबाजी, गैया ने फिर जो,जैसा जैसा जप किये नीचे, उनमें से हजारों सैनिक तैयार हो गये, हजारों सेना तैयार हो गए और जो युद्ध हुआ और विश्वामित्र के सारे सैनिकों को जो भगाये और विश्वामित्र भी गाय को छोड़कर भागे, ये भागे कि मत्सर में आकरके, अरे बाप रे ये गाय है कि कौन है? भाग गये। कामधेनु थी। तो ये गाय क्या है? वशिष्ठ जी के,रिद्धि सिद्धि रूपी गाय थी, वो गाय देखने लायक थी लेकिन वो रिद्धि सिद्धि है, रिद्धि माने रित धन धी, रित माने सत्य, उनके जो सत्य पर, ब्रम्ह है जो प्रज्ञावान है जो वो और सिद्धि माने पावर,सत्य रूपी गाय में वो पावर जिसमें रख गया क्योंकि ऐसे लोग थे मार कर जीला देने में समर्थ थे,नाश करके भी ठीक कर देना, जिला देना,जिला देना वो समर्थ थे-इनको समर्थ कहते है।तो वो समर्थ, गुरु वशिष्ठ जी चार चीज, दोहने के ऐसे गाय को निर्माण कर दिया।सत्य और तपस्या से वो रख दिया।इसलिए वो गाय नहीं।थी,वो गाय लेकिन सत्य और सारी शक्तियां है,अष्ट सिद्धि नवनिधि ये सब उसमें थे,इसमें रखा और अपना शयन कर, वशिष्ठ जी को कुछ करना नहीं पड़ा। तब विश्वामित्र तपस्या के लिए उठे,और तप में चले गये।जो थे उनके पास में उनने धनुष बाण छोड़ दिया।वशिष्ठ जी के सौ पुत्र मारा उसने,वशिष्ठ जी कभी गर्म नहीं हुए।सौ पुत्र मार डाला,ताकि बुद्धा गर्म हो बुद्धा गर्म नहीं हुआ। एक दिन ऐसा हुआ कि विश्वामित्र फिर गया बुद्धे को मारने के लिए,धनुष बाण लेकर फरसा वरसा लेकर पहुंच गया,रात को ,वशिष्ठ जी कहते है अपनी पत्नी अरुंधति से कि विश्वामित्र सरीखा तपस्वी और कोई नहीं आज जो काल है वर्तमान,

विश्वामित्र जैसा तपस्वी और कोई नहीं सिर्फ एक ही उसमें अवगुण है क्रोध भयंकर है और वो क्रोध बदला लेने के सिवा कुछ नहीं,धनुष बाण और फरसा आज धनुष बाण और फरसा अगर वो छोड़ देता है तो वो ब्रम्हर्षि है।वो राजर्षि नहीं ब्रम्हर्षि है,उसने कितना परीक्षा लिये सौ पुत्र मार डाला,उनने कुछ नहीं कहा,क्यो कि हमारा काम बदला लेना नहीं।ब्रम्हर्षि होते है ब्राम्हण बदला लेना उसका काम नहीं।ब्राम्हण को कोई क्रोध करना उसका काम नहीं है ब्राम्हण कि न कोई कामना है,ब्राम्हण को कोई क्रोध है न मद है न लोभ है न मोह है न मान है न कोई मत्सर है वो तो एक मौन मूर्ति है,वो ब्रम्ह मूर्ति है,वो सबके लिए समान है,समर्थ होता है,वो सबके कल्याण के लिए एक जैसा होता है,अपना कल्याण कर,समाज का कल्याण जिससे होता है,वो आदर्श होता है।बस इतना ही उसमें दोष है वो सुन रहा था,तो फरसा वरसा धनुष बाण छोड़ और वो जाके चरणों में,जब गिरा-वशिष्ठ जी खड़े हो गये,अरुंधति भी खड़ी हो गई,अतिथि सेवा ,वो कैसे भी हो गया,पास में आया न।उठिए उठिए ब्रम्हर्षि उठिए ,ब्रम्हर्षि बोला कि विश्वामित्र के आंख में आंसू अभिषेक किया चरणों के वशिष्ठ जी के चरणों का अभिषेक किया,उठिए,उठिए। वो क्षत्रिय ब्राम्हण हो गया,ब्राम्हण कोई जाति नहीं ,ब्राम्हण गुण है।नौ गुण सम्पन्न होते है वो ब्राम्हण होता है-माने कुंडलिनी जगी हुई हो,तपस्वी हो,दाता हो,ज्ञानी हो,जितेंद्रिय हो,समर्थ हो,और सबको तुष्ट कर देने में,सबका दुख सुख,दुःख हरण करने में मानो वो जीविका में लगा देना,कर देना,करवा देना ये सब।तब नौ गुण सम्पन्न तब वो ब्राह्मण होते है।वो जो महाशक्ति सोई हुई है,आत्मशक्ति जो तुम्हारी वासनाओं से दबी हुई है,उसमें से हटाकरके वो शक्ति को प्रखर करना है,तब वो समाज से विभक्त नहीं है। वरना आज हम विभक्त है समाज से,आज ये इंडिविजुलिजम चला है,ये सत्य है। सोचिये सोचने को कह रहा

हूँ मैं,सब कोई सोचिये इस बात को।कोई किसी को नहीं पूछता है सिवाय अपनी हेतु कि मेरा हो,प्रत्येक व्यक्ति मेरा हो,मेरा हो।तो फिर तेरा तेरा रह गया कि नहीं,फिर तेरा चला गया कि नहीं।तो वो गाय,लेकिन श्लेषार्थ है गायत्री क्या मंत्र है वो गायत्री,जिससे विश्वामित्र परास्त होकर भाग गये और बदला लिया सौ पुत्र मारा,हमको ब्रम्हर्षि बोलो बोलकरके,तो बदला लेने की जो वृत्ति है तब तक है -वो अहंकार है।जब अहं है,तब तक बदला लेना है। विद्यिक्ति,विद्यिक्ति,ये तुम्हारे वृत्ति कभी जाती नहीं,इसको हम पालके रखते है।तो उन्होंने क्या कहा है,वो गाय है, इसलिए वो जा न सकी-गायत्री है।त्रीन पदानि युक्तानि सो गायत्री है, तब माने वो गायत्री है,वो गाय कैसी थी, चार पैर की नहीं थी वो,वो तीन पद है,वो-अकार, उकार और मकार,वो क्या था,वो ॐ था। गायत्री में प्रथम अक्षर है,ॐ,उस आत्मा का नाम है,ॐ है,वो निराकार ब्रम्ह का नाम है,ॐ है।दीक्षा देनी चाहिए तत त्वम असि।ये वेद के चार महावाक्य है।,तत माने वह,त्वम माने तू और असि माने है, वह तू है,ऐसा अर्थ होता है,नहीं। वह एक पद है, त्वम ये दूसरा पद है,असि माने जो है।ये सारा जो है,ये तीन पद है। इन तीनों पदों का ज्ञाता है जिनको वो ज्ञानी- होता है।तो पहले सद्‌गुरु के पास बैठकरके ये ज्ञान सम्पन्न कर लेना चाहिए।कि जड़ तत्व क्या है?चैतन्य तत्व क्या है? ये समझ लेना चाहिए।और जड़ तत्व और चैतन्य तत्व-शरीर में,ये कैसा हुआ,ये जान लेना चाहिए। ये अभ्यास से जाना जाता है,गुरु के आदेश का पालन जो करेगा, तब तत्वों का बोध उसको हो जायेगा।तत्वों का सिद्धांत तत्वों का विभाग, हो जायेगा। तो त्रीन पदानि युक्तानि सोई गायत्री,तीन पद है,उसमें वो गायत्री है।तीन पद है-अकार, उकार,मकार। और वो है जाग्रत अवस्था,स्वप्नावस्था और सुषुप्ति अवस्था।अभ्यास में क्या किया जाता है,जाग्रत अवस्था ये तमोगुण प्रधान है,ये जाग्रत अवस्था जो है तमोगुण प्रधान है क्योंकि अन्नमय देह है

ये।इसलिए तमसा,ये हमारी वृत्ति बनी रहती है,अज्ञान अविद्या राग द्वेष अहंकार और मृत्यु के लिए भय,हमेशा,बनी रहती है।तो जो व्यक्ति को अविद्या अज्ञान अस्मिता-मैं, और राग-मेरा है,दूसरा द्वेषी है दूसरों से द्वेष करना, अपने आप में अपने आपको समझे और अपने आपको बड़ा जाने,अपने आपको बलवान और जो कुछ है,बलवान बुद्धिमान, और दूसरों से द्वेष करना।और मरने का भय,सदा है मरण का भय।आप देखिए,एक दरवाजे को ताला लगा दिया,दूसरा दरवाजे को ताला लगा दो,वस्तु जाने का भय।क्योंकि बाहर है,पहले जो है ऐसे चलता था,लोहे के दरवाजे,फलाने के दरवाजे तो कैसे चोर घुसता था।जाने के बाद होता है,जाने का था।ये समझना है क्या,?भूल से आप समझे क्या?तो ये होता नहीं,ये बुद्धिवादी का कहना है ऐसा,इसका नाम है तर्क,यहां तर्क समाप्त हो जाता है। ॐ भू,भूः ,भुवः स्वः महः जनः तपः सत्यं-ये सात पद है, ये सप्त लोक है, ये सेवन सेंटर्स है ये,जो योग में दिया है - मूलाधार,स्वाधिष्ठान, मणिपुर,अनाहत, विशुद्ध,और आज्ञा चक्र और सहस्त्रार।ये नाम भेद है,सेंटर एक ही है,ये तत्व है। भूः माने पृथ्वी लोक, भुवः माने जड़ लोक, स्वः माने अग्नि लोक, महः माने वायु लोक, माने तत्व इसको कहते है,जनः माने आकाश लोक, और तपः माने विज्ञान लोक, और सत्य माने आनन्द, विज्ञान आनन्द दोनों, एक और सेंटर है, छोड़ दिया विज्ञान और आनन्द- आनन्द लोक,आनन्द से चले गए सत्यलोक होता है।नाम में भेद है,चीज एक ही है।तंत्रों में ये भूः भुवः स्वः मूलाधार, स्वाधिष्ठान मणिपुर है,और वेद में इसका नाम भूः,भुवः स्वः है,और कोई नहीं।एक व्यक्ति यहां है जो आता रहता है बहुत दूर है,चेले शाखा बहुत है।वो हवन कराते है।भूः भुवः स्वः-ये माया है,ये तीन लोक मायावी है,ब्रम्हा,विष्णु महेश ,ये इनके अधिपति है,ऊपर आप हवन देते है तो तीन लोक होते है,तो क्या होगा?तुम्हारा जो कुछ बंधन है,वो कभी ढीला होने

का नहीं।कीचड़ जो लगी है,तुम्हारे पास में वो,कभी छूटने का नहीं,और कीचड़ वो बढ़ती चली जायेगी। तो कल्याण कैसा हो?कल्याण माने मल निर्मल होना,मल कभी दूर नहीं को नहीं।,ये तीन सेंटर माया है,और माया में वो फंसता है,माया माने पापकर्म करता है और फंसता है, नरक में,नर्क स्वर्ग,नर्क स्वर्ग,नर्क स्वर्ग दूसरा उसका रास्ता नहीं।तो वो छुटकारा होने का नहीं,तुम्हारे वो हवन करने से नहीं होता है।ये भूःभुवः कहने से नहीं होता,हवन है सारा वासना इन्द्रियाँ इच्छा है जो तुम्हारी उनकी आहुति दो।योग मार्ग में आइए आप सद्‌गुरु के पास जाकरके दीक्षा लेकरके दीक्षा में जो आदेश मिला,उस आदेश का पालन करते जाना है।ये पांच तत्व है,दूसरा विज्ञान है और आनन्द है।वो आनन्द जो है, सदा सर्वदा होता है,अखण्ड है वो।हमें गुरु द्वारा मंत्र,सद्‌गुरु के द्वारा एक एक चक्र को भेदन करना पड़ता है।और भेदन करते वक्त सुषुम्ना जो बन्द द्वार है उसको खोलना पड़ता है,गुरु के बताए हुए युक्ति के द्वारा सुषुम्ना खुल जाती है,वो मुक्त हो जाता है,उसी दिन से मनुष्य मुक्त हो गया।जिस दिन से दीक्षा ग्रहण किया और तत्वतः उद्यत हो गया, लग गया, खोलने के लिए और वो खुल गया,और ज्योति दर्शन होने लग गया, उसी दिन से मुक्त हो गया।और वहां केवल आयु और शरीर, जब तक आयु है तब तक शरीर है।शरीर है आयु है माने जहां तहां अन्न जल ऋण धन भोगना है वो भोगना पड़ेगा। और इसके बाद कर्म का बंधन नहीं रह जाता, वो मिट जाता है । किये गए कर्मों का फल बनता नहीं,बाकी जो लेकर आया है, उसको भोगते हुए वो भी कर्म कटता चला जाता है।इस तरह से फिर आपको और क्या चाहिए? तो ये गायत्री मंत्र है,इसमें एक प्रार्थना है, तत्सवितुर- कैसा ध्यान करना चाहिए उस ॐ जिसका नाम है,तो ॐ नाम है तो नामी है, तो नामी को बताये वो सविता है, नामी क्या है सविता है, जैसे वसंत और जुमड़े अभी सशरीर बैठे है।क्या ध्यान करें हम?ॐ जिसका नाम है,

वो नामी है सविता नाम सूर्य का है, ये सूर्य नहीं, आत्मारूपी सूर्य की तरह है, वो ज्योति है सूर्य की तरह गोल, वो बिंदुवत है, जो गोल कहते है,उसको।बिंदु गोल होता है जिसका आदि अंत नहीं होता। सविता माने प्रकाशमय। अनन्त, हजारों सूर्यों का, सूर्य जैसा प्रकाश है, दीप्तिमान है, चारों तरफ से वलय है, किरणें फेंक रही है, उसी का नाम है-ॐ। सविता, प्रसविता उसका नाम है उसी से सब मिलता है ,सारे अणिमा गरिमा और ये तुष्टियाँ, बताये जो आपको नवनिधियाँ, ये सब उसी सत पर, ये गुण है।ये सूर्य रूपी आत्मा के ये गुण है। वो दर्शन होने के बाद और उसमें जाके रहने के बाद, स्थिर होने के बाद फिर, स्थिर होने पर,आज्ञा चक्र में स्थिर हो जायेंगे आप, ये सब गुण आपमें अपने आप प्रकट होते जाएंगे।आत्मा एक है, वह अद्वैत है,आत्मा दो नहीं होते है। इसलिए आत्मा का संकेत होता है, जैसे कि बोलते है-,मैं सोचा देखो आ गया,मैं बोला देखो हो गया,कभी कभी होता है नहीं,इसलिए आत्मा एक है। लेकिन वासनाओं से,हमारे जो वासना,कामना,इच्छा इतने प्रबल,इतने जबरदस्त है कि क्रोध, बदला, काम क्रोध मद लोभ इतना जबरदस्त है कि वो ऐसा पर्दा दीवाल पड़ जाते है, कि किरणें जहाँ के तहां। जैसे घने बादल आने पर किरणें नहीं चली आती है, ऐसे तुम्हारे घने बादल वासना के प्रबल होने पर आत्मा के जो गुण है वो विकसित नहीं हो पाते। नहीं तो, सब तुम्हारे में है तुम्हीं हो और कोई दूसरा नहीं। तो गुरुजी के द्वारा सब हुआ,ये तत्व तुम्हें मालूम होना चाहिए, पढ़ना चाहिए, सीखना चाहिए, लिख लेना चाहिए, नहीं याद आता है तो।ये तीन पद जो है, इनका ज्ञान होना चाहिए, वो ही दीक्षा देने में समर्थ है अन्यथा और नहीं। जितने है सब कनफुकियाँ गुरु है,लोभी गुरु और लालची चेला,होय नरक में ठेलमठेला।कोई होंगे,यहां,दीक्षा देने वाले बहुत है,कौन जाने। र्भगाः जिस ज्योति रूप से, ये अनन्त सूर्यों का सूर्य ये उदय हो जाता है। ये सूर्य उदय होने पर नाना

प्रकार के जीव मर जाय आदमी जल जाता है, सँश्लोक होता है आदमी मर जाता है, गर्मी सहन नहीं होती है, इस प्रकार से सूर्य का ये सूर्य उदय होने पर, शशदिव जैसा सूर्य जैसा, ये ज्ञानदेव ने भी कहा है-ये मैं नहीं कहता हूँ, इसलिए प्रमाण दे रहा हूँ। ये गायत्री मंत्र नहीं है सब, सूर्य उदय होने पर, र्भगाःऔर जकाः जला देने में समर्थ, प्राप्त करने में समर्थ। क्या है? तुम्हारी वासना रूपी पीड़ा वासना रूपी आवरण इच्छा कामना क्रोध मद मोह और ये सब जला देने में वो समर्थ होता है। वो जला देता है, वो उदय होने के साथ में, जल गया सब, तब तो उदय हुआ। ये जल गया, पश्चात वो सूर्य उदय होता है।आपको वो दर्शन होता है, आपके वासना फासना जितने जो प्रारब्ध,वो प्रारब्ध जो है,किये गए का,मतलब वो जल गया।

- अभिनिवेश माने मृत्यु का भय, मरता हूँ, बराबर अनुभव होता है, साधक को। अभी जितेंद्र ने बताया दो बार अपना डेथ को देखा, और गुरुजी को याद किया, वो निकल गया साफ।और भी वो बोला गुरुजी बराबर घट जाय, नाम लेते लेते, ये सब अनुभव हमारे पास है, ऐसा ऐसा है। खाली हम बोलते है, गुरुजी को, तब होता है। तो ऊपर जो जाते है, कभी अंदर बाहर, ये यहाँ तक अशांतता है। यद्यपि हमारे पास जो है, प्रतिष्ठा हो गई, फिर भी, उससे कुछ नहीं, छूटता नहीं। क्योंकि ये अल्पतता है, फिर भी भय है, मृत्यु भय है, मृत्यु भय माने..(विष विकार), काट करके के ऊपर ले जाना, तो आज्ञा चक्र तक है। आज्ञा चक्र में आने के बाद सिक्स्थ प्लेन में आने के बाद, ये है, शांत्यावस्था। तकवाले जी सेंटर ऑफ डेथ को, क्रास .. हाँ, कोई समझे या न समझे, बराबर होता है, हो सकता है। सब दिखता है ऐसा है ऐसा है ऐसा है। बराबर होता है, न भय न डर न डर। तो सबको अनुभव है, क्या? ये है शांत्यावस्था। तब शांत्यावस्था में होकर वो भय, विकार से ऊपर चल देता है, पहुँच जाता है। ये है शांत्यावस्था। [अरे, भई

विवाह कर लिये .. (.हा, हा, हा.. हंस रहे है) शांति अवस्था, हो गई, एक दो और कर लिए, अरे भई और शांति वो आ गई, (सब हंस रहे है) ।]

शांत्यावस्था इसको कहते है क्या? याने इड़ा, पिंगला, सुषुम्ना के संगम, वो त्रिवेणी का संगम, ईडा पिंगला सुषुम्ना का, के संगम में जब वो स्नान करता है।तब काक होंहि पिक बकहुँ मराला, मज्जन फल पेखिय तत्काला, कोई समझे न समझे। तब क्या होता है, इससे शांत्यावस्था प्राप्त होती है। फिर वो विशुद्ध कर देता है, उसमें रहकर सामर्थ्य आ जाती है। तब वो, जगत करता है जगत चाहता है। सत् रज और ज्ञान सतोगुण् की प्रतिष्ठा हो जाती है। सतोगुण जो है क्या? ये सिक्स्थ सेंटर में है।और जब आप आज्ञा चक्र में आ जाते है तो सतोगुण् जो है, अभयं सत्व संशुद्धि।षष्टम भूमिका में आने पर क्या होता है? भय से मुक्त होकर के और सतोगुण् में सदगुण आ गये। क्या कहते है? तुर्यगा, तुर्यावस्था। तुरीय माने तु माने फ, फ माने आप सिक्स्थ सेंटर माने आ गये। माने अंदर, अभय, की ओर आ गये। आ आ, शुद्धि माने सोचने से उसका काम होता है। सत्व, सत्वा, सत्व माने स्व माने अहं, संकल्प किया नहीं कि हुआ, जैसा चाहे वैसा हो जाता है। तो ये तुर्यावस्था है, यही शांत्यावस्था है, कि जहां..शब्द नही रह जाता, ये शांत्यावस्था है।

तो मनुष्य अपने अभ्यास से, विशुद्ध तक आ जाता है, वहाँ वो डरता है, ऊपर आने के बाद में ये शांत्यावस्था है, के बाद में सहस्त्रहार है, यहाँ से, परमावस्था में जाते है। परमा माने कबीर दास के शब्दों से, यहाँ तक आ गये, ये परम गति है, जिसको शांत..। ज्ञान नेत्र समादाय उद्धरेती वन्निवत्। वन्निवत् वो रहता है, आगी जलाओ, परम् निष्कलं, निश्चलम। निश्चलं हिलना डुलना नहीं,.. कोई गति नहीं, कोई नहीं, फिर क्या है? (पाजेटरी, अवस्था है)। वो ही महावाक्य है क्या है, अहं ब्रम्हास्मि। इससे और क्या चीज हो सकती है? इससे महान।अब इसको..माने इसी बुद्धि को ब्रम्हास्त्र कहा..। विशुद्ध में जाके सब शुद्ध हो जाती है, और ऊपर केंद्र में जा करके

वो पता लगा वो क्या है? वहाँ जाके दोष मुक्त है, बाकी सब शक्ति मिल गई, बताते नहीं लेकिन सब कुछ अपना है, सब कुछ में वो काम करते है, करते जाना है।

यहाँ, षष्टम भूमिका के ऊपर, षष्टम भूमिका और सहस्त्रहार में और चक्र है वो पहुँच जाता है, जो कि १२वां जो है। ऊपर एक चक्र है, ये गोलाकार है। वो द्वादश वहाँ है ये सोलह। खैर आठ आठ कोण, ये आठ दल वाला है। आठ कोण कहिए आठ दल वाला, परम अवस्था है, ये आठ, ये जो अपर सेंटर है, वो लोवर सेंटर के लिए मन है और ये अपर सेंटर के लिए मन है। और दोनों क्षुब्ध होके और शक्ति वहां आ जाती है, वो सोलह है, जो सोलह मात्रिका कहते है।

यहाँ भी सोलह मात्रिका है, विशुद्ध चक्र में भी सोलह दल है, लेकिन ये लोवर..। अपर सेंटर जो है ये सोलह है, (सहस्त्रार के लिए) षष्टम भूमिका बस वही, प्रवेश वही है। प्रवेश वही है षष्टम भूमिका के, नीचे से ऊपर। नीचे से ऊपर सुषुम्ना वहाँ तक है। वो सोलह दल कहा है।ये जो, बताये न आपको, विशुद्ध चक्र माने सोलह दल, दल को कहते है कोण। ये आठ दल है, याने आठ वर्टेक्स है, ये अपर सेंटर में है, है उर्ध्व गति। सोलह, हां।

अनाहत माने कांसस्, मुलाधार माने सब कांसस् है।अनाहत में आये कांसस में है, षष्टम भूमिका शांत्यावस्था माने ऊपर आया। हर कोई ये बोल रहा है बेकार बात है। अनुभव में नहीं है गुरुजी (एक शिष्य) ठीक है बाबा। बस, बस, बस।..,अच्छा इस तरह से हमारी गतियाँ है, अब अनाहत चक्र में, अनाहत चक्र जो है वो है षट्कोण है।वो जो मूल चक्र है वो त्रिकोण है, आधार जो है उसमें उसका त्रिकोण है। लेकिन उसका त्रिकोण उसमें ऊर्ध्व त्रिकोण है। मनश्चक्र बताया उसमें ऊर्ध्व त्रिकोण है।..जो है बताया, कोण से मतलब है, ये कोण नाड़ियों से सम्बन्धित है, नर्व से सम्बन्ध है। सब लोग मेहनत करते है, उसको..कहते है। उर्ध्व त्रिकोण है, उर्ध्व त्रिकोण के माने जब सुपर कांसस् में यहां तक हो जाता है तो उसका कार्य कैसा होता

है? हाँ, ब्राम्ही शक्ति, ब्राम्ही इच्छा / ब्राम्ही शक्ति और ब्राम्ही कला। नहीं। ब्राम्ही विचार, ब्राम्ही शक्ति और ब्राम्ही कला। ब्राम्ही माने महान।..। अब कहाँ से आता है कोई नहीं जानता है, कहाँ रहता है कोई नहीं जानता है। अपने में है वो ही बोलते है। ये ब्राम्ही विचार, ब्राम्ही शक्ति और ब्राम्ही कला। विचार माने जो कुछ स्फुरण होता है, वो कुछ नहीं जानता है, लेकिन स्फुरण होता है, विचार आता है,अपने आप होता है। और कला, मृत्यु के समय में सुषुम्ना में आ गये, तो ऐसा करके वो ऊपर चला जाता है, उतारना जरूरी है, तुम खाली ऐसा बैठा रहते हो, तुम खाली पड़े रहे, हो जाता है, ऐसा है।

माने स्योरली अपना जो डट के, स्योरली ये छत्तीस गुण से है, और छत्तीस गुण ये डट कर है, तो ये दोनो मिलकर ये शक्तियां मिल जाती है। ये नवनिधि जो है आके, ये आके उर्ध्वदल में होके कार्य हो जाता है।और ये शक्तियां आठ दल है, अष्ट सिद्धि और नवनिधि (अष्ट्सिद्धि- अणिमा, गरिमा, लघिमा, महिमा, प्राप्य, प्राकाम्य, इशित्व, वशित्व)

ये हम अभ्यास करके, इस तरह से सारा जो कुछ है, ये हो जाता है, सारा रहस्य, सारा खेल जो कुछ है, उसके अंदर है। इसलिए आप अभ्यास करते है, बराबर हो जाता है। हम ये त्रिकोण में जब आते है, अनाहत चक्र में दो त्रिकोण है, षटकोण बन गया।अनाहत में दोनों है, हां, इसलिए अनाहत चक्र में आने के बाद में, क्या हो जाता है? अवधूत हो जाता है। वो चाहे तो संसार में चला जाय, और चाहे संसार में वो रहकर के संन्यासी की तरह रहे। दोनों षट् कोण है माने, दोनों अपर सेंटर, वहाँ वो आता है। तो उर्ध्व त्रिकोण और चलन त्रिकोण-अनाहत चक्र षट्कोण बन जाता है। यहाँ दोनों कार्य है। उर्ध्व त्रिकोण का बताया, विचार है, शक्ति और कला। सारी शक्तियां जो है, सोलह, इस तरह ये सोलह है। ये नव त्रिकोण है सोलह प्रकार की शक्तियाँ है और सोलह मात्रिका है और ये शक्ति है,

सोलह मात्रिकाओं की शक्ति है। शक्ति के ही भेद है, सोलह भेद है, जो पूजा वूजा करते है, आप सोलह मात्रिका।

वो बताया और परम शक्ति चौथा कौन सा है? जो ऊपर आ गया तो परम शांत्यावस्था है, उसी को, परमहंस कहते है। परम शांति माने अनाहत। अनाहत माने संसार का कोई भी उस पर आघात प्रतिघात करने पर भी वो आहत नहीं होता है। अन, आहत क्या नाम है उसका, अन-आहत। कोई भी प्रकार का आघात या प्रत्याघात जो कुछ है, कोई होता नहीं। सिक्स्थ सेंटर में जो होते है, डिग जाते है।

लोवर सेंटर में वो कभी नहीं आता, उसी का नाम है - परमहंस। परम नाम है, ज्योति का स्वरूप है। वो क्या है(अवतारी), बाकी सब प्राप्त हो जाता है, उसको।...तो ये है। ये है परम शक्ति।

विज्ञान, ये यहाँ तक आ गया, ये पिनियल है न, ज्ञान नेत्र समादाय उद्धरेती वन्निवत्। परं निष्कलं निश्चलं शांतं ब्रम्हाः। वो, उसको, अब महान हो गया। आत्मा महान है। याने आत्मशक्ति बढ़ गई।आत्म शक्ति याने बिना सोचे अपना काम हो जाता है, उसकी कोई आवश्यकता नहीं।..पिनियल में है, इसी का नाम है परा शक्ति, अभी जो आप बोले थे। मगर उसमें जो शक्ति है बगैर बोले वो काम करती है। खाली इतना करता है पकड़ना, छोड़ना वो काम करता है,और बुद्धि निर्णय देती है, फला फला।

और वो जो शक्ति है, बाहर जाकर के जिसे पकड़ते है और जा रहे पकड़ने, पकड़ने जा रहा है, भय है और दुःख है या .. है। चांगदेव ने..., भय है और क्या है

और ये कर्म करता है उसकी कोई चाहना नहीं है। खाली कर्म करना जानता है। ये पंचज्ञानेन्द्रिय, पंच कर्मेन्द्रिय, पंच महाभूत, पंच तन्मात्रा, ये बीस हो गये और मन बुद्धि चित्त और अहंकार। बाहर जो है प्रकृति कहते है। प्र+कृति, है हमारे भी इसी शरीर में भी प्रकृति है हमारे भी, वो प्रकृत्ति को चित्त कहा है। तो ये संस्कार जो है, चित्त में जाकर के, फिर क्या है भूताकाश में है वो उतरती है। एक भूताकाश, एक चित्ताकाश, और एक

चिदाकाश। अभी हम सब भूताकाश में है, नहीं, ये सब बातें है। एक भूताकाश ये मन है, उसके बाद है चित्ताकाश, चित्ताकाश और भूताकाश जहां संस्कार सब जाके जमा होते है, तो वही अपर जो फोर्थ वेंट्रिकल जो हमारा है, यही ऑब्लाकार्डेनँगवुलर, फोर्थ वेंट्रिकुलर माने फेस, जगह फायनल है न। वो ज्योति जो कोण है, मन जो है बुद्धि में है, त्रिकोण है एक है मन, एक है बुद्धि और एक है चित्त।और विज्ञान ये यहां तक आया है अब, में आकर आप तो पढ़े है न, इनर बॉडी में, रहता है सोल। इसमें फंक्शन निकल आते है, हार्मोंश निकलते, क्या निकलते..खाली। दुनिया अभी तक खोज रही है,अरे बाप रे।

परकाय शक्ति, जीवनी शक्ति, वही ज्ञान नेत्र है, वही शिव नेत्र है।वही ज्ञान नेत्र, वो ही बताया, ज्ञान नेत्र समादाय उद्धरेत वन्निवत, जैसे अग्नि है लकड़ी फूक फाक के, लकड़ी जल जाये है, ऐसे जब वो वैसे जीवन उद्धार करना है, जीवन उद्धार है। वैसे आवरण पड़ा हुआ है,..तक योग है। वो आवरण हट गया, झट ज्योति दर्शन। उद्धरेती परम।

- करते करते करते, वो सार की ओर चला जाता है।
  जन्म होता है वो गठरी बांधकर आता है, वो गठरीहै, भोगतव्यबता।
  वो ज्ञान नहीं, उन्माद न होने देना,अपने आप को बचा के रखना।
  जन्म लेना / एक प्रकार का दोष है, तेरा, मेरा रहता है।
  होते होते होते, वो जो सत्य है सामने आ जाता है, सत्य सामने आ गया, समा गया।
  वही बुद्धि है, वही आत्मा है और वही आप है, वो सर्वव्यापक है। दशों दिशा में परिपूर्ण है।
  योगाभ्यास करते करते, आत्मा रूपी सूर्य प्रकट होती है। किरण जहां पहुंची वो स्थायी हो गया। (किरण में गुण है, प्रकाश) उसमें वो गुण है, गुण ही तो शक्ति है, वो अलौकिक हो जाता है।
  निर्णय, निर माने नाही अब कहीं आना जाना नहीं है,अब कहीं झुकने को

नहीं है, यही सत्य है।सत्य पर हम नहीं टिक पाते, किन्तु प्रत्येक व्यक्ति सत्यवादी है।

उचित माने बोलने का, जो बोलने को है। शास्त्र माने अनुभूत। वही परिणाम पर पहुंचता है।

सत्य से बोध होते जाते है। सत्य से बल मिलता जाता है, सत्य से लोग प्रभावित होते जाते है।

अब कहीं जाने की जरूरत नहीं, ये यही है, इसी का नाम सत्य है। सत्य अदृश्य है। सत्य के दो परिणाम होते है, उलझने के सुलझने के, यही भोग है यही मोक्ष है।

एक का पहाड़ा तो होता नहीं, वो एक है।

सब की उत्पत्ति किससे है? शून्य से। 2+2,4 हुआ, 2×2, 4 हुआ, घटाए तो शून्य हो गया।याने सत की उत्पत्ति शून्य से है। शून्य ही तो सार है। 12, 1 से 10 तक सारे खेल शून्य का है।

ज्योति माने प्रकाश के रूप में,ज्ञान शब्द है वो निराकार है। मानव प्राणी वो अलग ही है।अगर कोई सतगुरु मिल जाय तो वो प्राप्त कर सकता है।

वो गुण, ग्रहण करने के बाद शक्ति हो जाती है। वो सत्य है तथ्य है, वो क्या है? विकार रहित हो।

ये जो अग्नि है इसका नाम ज्ञानाग्नि है।इसमें सब भोग है, जैसे लकड़ी है अग्नि में जला दिए जाते है।

जिसका विषय भोग विलास में जमा है वो गया, दक्षिणायन वो यमलोक में जायेगा।

शरीर रूपांतरित होता है, लेकिन नष्ट नहीं होता। ये इसी शरीर से होता है, इस शरीर का कार्य मालूम होना चाहिए।

ये शुद्ध तपोबल है, इसमें हानि किसी को होने का नहीं।

अपने मस्तिष्क में जो संस्कार है, वो क्रोमोसोम है। क्रोमोसोम है जिससे बॉडी बनती है। ये 64 है, मस्तिष्क में ज्ञान कोशिका है उसमें है।

कई बार मौत आ जाती है, मरता वरता कोई नहीं।

एक दिव्य लोक में जाता है। एक यमलोक में जाता है, भोग माने क्या?

बुद्धि आपकी जब शुद्ध हो जाती है, वो क्रिस्टल फार्म में आ जाती है। ये दर्शन है। किया हुआ है जो अवश्य भोगना चाहिए।
अपनी जो संस्कृति है, ये विज्ञान सिद्ध है। हम तो अपने जैसे आपको, तैयार कर रहे है, इसलिए डर की क्या बात है? वो राष्ट्र ही नहीं जहां संस्कृति नहीं है।

- जो रुका हुआ है, फंस गया है, अड़ गया है उसको उसमें से निकाल देना, उसको मार्ग में लगा देना- ये दया धातु का अर्थ होता है। कुछ दे देना ऐसा नहीं है, कुछ मदद कर देना ऐसा नहीं है। पुष्टि किया है, आपको बलवान कर दिया न। (जीवन में अच्छी बात है वो वो करना चाहिए - एक आगुन्तक) अच्छी बात इससे बढ़कर क्या हो सकती है? अपने आप को जान लेना। माने सब क्षणिक है। अपने आपको जानना सीधी बात है। मनुष्य का जीवन अभाव पूर्ण, अपने आप को जान लिया, अभाव की पूर्ति हो जाती है। अंडरस्टैंड् माने ज्ञान। स्टैंड अंडर दि डिवाइन पावर। बुद्धि से हम जानते नहीं, बुद्धि से हम मानते है। मानना जहाँ है वहाँ धोखा है। ये जानना नहीं है, जानना तो प्रेक्टिकल साइड है। सारे संसार में किसी विषय को जानने के लिए, विषय के जानने वाले व्यक्ति के पास जाते है। या उनको पूछते है। इसी तरह से अपने आपको जानने के लिए, अपने आप को प्रश्न करिये, मैं क्या हूँ। कौन हूँ नहीं, कौन हूँ, में तीसरा व्यक्ति थर्ड व्यक्ति आ जाता है।और सो जाइये, सरल सीधा, न योग है, न भोग है, न उद्योग है। अहं तो बीज है जब तक मैं हूँ, तब तक संसार के सारे विषय, विकार है हमारे पास है। जब मैं आता है, तब कोई भी मनुष्य अहंकार में हो जाता है। इंद्रियाँ विषय की ओर जाती है, विषय से सम्बन्ध हो जाता है, विषय के अंतर्गत सुख दुःख निहित है, अंतर्गत है, वो सुख दुःख को पाने के लिए मन धारण करता है, माने स्वीकृति देता है। तो मन धारण करता है पकड़ता है उसको छोड़ता नहीं। जब तक परिणाम को प्राप्त होना चाहते है, परिणाम को देखना चाहते है। तब तक उसमें पड़े, रहता है। और मैं

जो है अहं जो है वो सब कुछ, करा देता है। इस तरह बाहर जो सुख दुःख होता है। इसी तरह से बाहर से सब कुछ होता है, और अपने आप बाहर से भीतर आने के लिए यही अहं को, लेकर जैसे पाते है ऐसी अस्तित्व में रह करके बोध होता है। कहते है न अपने आप को तो देखो, जी क्या बात कर रहे हो? क्या, कौन, कैसे, कैसे और कौन तो सब जगह है। लेकिन क्या, क्या माने, क्या कहने के बाद क्या होता है, तो कैसा और कौन ये दोनों ये क्या के अंतर्गत आ जाते है। अरे बाबा, मैं समर्थ नहीं हूँ, ऐसा नहीं बोलना। आप मुझको पढ़ने को लगाये है। ज्ञानेश्वर ने अपने गीता में लिखे है, समाधि साधन संजीवन नाम। समाधि, समा+धि बुद्धि जिसमें समाहित हो, वो है समाधि। वो एक कामन सी बात है।सम्यक्, आधि वो समाधि, बुद्धि जब आत्मा में समाहित हो जाती है, तब वो है समाधि, उसका नाम है समाधि। अब वो स्थिति जो है। अब, समाधि साधन, जब बुद्धि जब तक आत्मस्थ नहीं है, साधन है।साधना के द्वारा बुद्धि जब तक समाधिस्थ नहीं, जब तक वो जीवन जीवन नहीं, ये है सम्यक जीवन। तब जो आप कहते है, तब वो संजीवन है। जब हमारे जीवन में चरित्र निहित है, तब वो सम्यक जीवन है। अथवा ये जीवन, जीवन नहीं सब अभाव है। जहाँ अभाव है वो जीवन नहीं है। वो गुण बूंद हो गया, लेकिन छोटा हो गया। यहाँ हम भूल जाते है, जो कुछ नदी नाला और सागर भरा हुआ होता है, वो पानी का गुण एक बूंद में भी वही है और अथाह सागर में भी उस पानी का यही गुण होता है। लेकिन एक चीज यहाँ विवश होकरके, बाध्य होकरके कहता हूँ। एक चीज यहाँ पे, क्या आते है समुद्र में, लहरे। तो समुद्र के तरंग है कितरंग के समुद्र है? समुद्र के तरंग है, हाँ। समुद्र के तरंग है तो क्या होता है, आप भिन्न हो गये। भिन्न कैसे हो गये? कि बूंद को धारण किया गया समुद्र के द्वारा। और ये जो बूंद बाहर आता है, उसके कण के रूप में बाहर आता है। बूंद तब कहलाता है, जब वो कण के रूप में आता है। पूछते है न ये विकार कैसे आता है, ये कैसे होता है? ये अभाव जो आया, ये कैसे आया इसको नहीं जान सकते। जब वो है सब कुछ तो अभाव क्यों?

कोई जवाब नहीं आया। ये अद्वैत सिद्धांत शंकराचार्य सिद्धांत इनके सामने खड़े है। और आत्मा, प्रकृति है उत्तर भी दे रहे है, ये द्वैत हो गया। इसलिए तुम अपने सिद्धांत से तुम गये, केस खारिज। तब वो अभ्यास है, योगसूत्र में वो दिया है,सतु दीर्घकाल नैरंतर्य सत्कारा सेवितो (अभ्यास) दृढ़ भूमि। आज हमारी भूमिका बिल्कुल दृढ़ नहीं है। भूमिका है ही नहीं, एक भी भूमिका है ही नहीं। सब डावाडोल् है। मनुष्य अपने आपसे भय खाता है। भूमिका वो दृढ़ नहीं है, अभ्यास से होता है। वो भी दीर्घ काल पर्यंत, दीर्घकाल माने जब तक श्वास है, जब तक बिना श्वास नहीं होते, तब तक आपको अभ्यास करना है। विशेष श्वास से जीवित रहना है, ये समाधि है, समाधि में जाने पर बाहर का श्वसन क्रिया,रक्ताभिशरण क्रिया बन्द हो जाती है, फिर भी जीवित है। ये प्रश्न मुझसे किया गया, आदमी मर जाना चाहिए, आदमी मरता नहीं, श्वास रहता है। वो श्वास एक पार्टिकुलर स्थान पर पहुंचा देता है, इस तरह शरीर पात नहीं होती। इसलिए श्वास है जब तक आचरण में लाना चाहिए। जब तक बिना श्वास नहीं हो जाते, जब तक मरते नहीं, तब तक ये अभ्यास करना चाहिए, आचरण में लाना चाहिए। जो बताया गया है, जो आदेश किया गया है। आप दस मिनट करें, पांच मिनट करें, या एक मिनट करे, लेकिन करें। माचिस का एक स्टिक काड़ी जलाओ तो भी प्रकाश मिलेगा, चाहे दूर से एक लकड़ी जलाओ तो भी प्रकाश मिलेगा। प्रकाश मिलना है मिलेगा, अभ्यास से हानि न होते हुए लाभ ही होता है।अभ्यास एक विश्वास के साथ होता है।अभ्यास एक भरोसा के साथ किया जाता है, भरोसा माने सतगुरु का भरोसा, सतगुरु जैसा कहता है वैसा हम करते है। सारा भर से भार बना है। माने भारयति, माने हमारा भार ढोने वाला, भृत्य माने नौकर, चाकर। भृत्य है भृ से बना है याने चाकर माने हमारा भार, हमारा काम करने वाला, सुई से लेकर काम करने वाला, जहाँ तक हमारे होते है। वो सब जो भार होता है तुम्हारा सद्‌गुरु पर डाल देते है, सद्‌गुरु तुम्हारा नौकर हो जाता है। और सारा भार ढोता है, ये आप लोग समझते नहीं, कितना भार है, सारा जीवन का

भार है उस पर हो जाता है। इसलिए भरोसा चाहिए। अपने पर भरोसा नहीं है, तो सद्गुरु पर भार डाल देना। जो अपने पर नहीं है, सद्गुरु पर भी नहीं है तुमको, तो सारा ओष् पड़ गया। कहते है न पानी फिर गया, उसमें। कोई गोल ही नहीं है, कोई ध्येय ही नहीं, कोई ऐम नहीं। ऐमलेस जो होता है, उसका जीवन ऐसे होता है, जैसे डाल से पत्ता टूट जाता है, हवा लगा, इधर् से उधर, इधर से उधर वो होते रहता है। इसलिए जो तुमको मिला है, अभ्यास ये होना चाहिए। कहते है न लेट, टू लेट। तो बिना श्वास और विशेष श्वास, बिना श्वास। जब तक बिना श्वास नहीं होते, तब तक नित्य नियमित अंतर रहित माने कोई भी दिन को अंतर नहीं देना। दिन को अंतर नहीं देना, निरंतर कहा जाता है और प्रत्येक श्वास में ऐसा अभ्यास करना है, ये भी निरंतर कहा जाता है,अंतर रहित अभ्यास करना है। प्रत्येक श्वास में अभ्यास तो हम नहीं कर सकते, लेकिन प्रत्येक दिन कर सकते है, प्रातः भी कर सकते है शाम को भी कर सकते है, ये भी निरंतर कहा जाता है। कि भई एक बुखार आता था पहले, उसको आंतरा कहते थे, एक दिन वो आंतर देकर बुखार आता था। और इस प्रकार से तीसरे दिन बुखार आता था, अंतर देकर आता था। निरंतर माने वो सतत् रहे। जैसे हम प्रत्येक दिन सब काम करते है, सब काम करते हुए, ये भी रहे। जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग है करना चाहिए। अभ्यास इतना करो, कि दुनिया समझे की मर गया। डाक्टर भी आकरके देखे कि ये मर गया, लेकिन मरा नहीं। गुरुदिष्ट से जो अभ्यास करता है, वो मरता नहीं न कोई रोग राहि उसको कोई घेरता है, न होता है। होगा भी तो निकल जाता है। ये वो अग्नि है जिसमें सारे दोष दूर हो जाते है, जब मन के दोष जाते है तब शरीर के दोष तो ठीक हो ही जायेगा। प्रत्येक घटक में परिवर्तन हो जाता है, ऐसा है, शरीर शुद्ध हो जाता है। स्वस्थ हो जाता है, बलपूर्वक हो जाता है। और मन भी बलपूर्वक हो जाता है, बलवान हो जाता है। सारा भार सद्गुरु पर डाल दिया जाता है, सद्गुरु क्या करता है तुम्हारा भार ढोता है। भार ढोने वाला, भार वहन करने वाला।

- नैतिक लाइफ होता है, ये बड़ा दूर है। ये आत्मशक्ति के लिए है, आत्मशक्ति को डेवलप करना। वो तुम्हारी शक्ति है, शक्ति को विकसित करना, डेवलप्, माने (आत्मशक्ति को) विकसित होना। उस विकास से आपका सारा जीवन दिन ब दिन उत्तम, रूप से स्वास्थ लाभ होते हुए और केवल स्वस्थ होते हुए नहीं, आपका जो प्रापंचिक कारोबार है वो भी अपने आप होने लग जाते है। ये ज्योति जो आपको दर्शन होता है, उसका जो प्रभाव है, वो पड़ता है माने, इसमें क्या कहते है उसको समाज पर - प्रभावों किन्चयमुच्यते, उसका जो प्रभाव है, अचिंत्य है। आप जज ही नहीं सकते, कितना है, क्या है, क्यों है, कोई नहीं बोल सकता। ये अपना ऐसी शक्ति है, मालूम अनहोनी होनी कर देती है, और होनी को अनहोनी कर देती है। जो कांट्रेडेक्टरी है, यही साधु संतों के काम है। ये शक्तियाँ उनको मिल जाती है, ये आत्मा की शक्ति है, ये शक्ति है। खाली ज्योति दर्शन आगे आप मत जाओ। खाली ज्योति दर्शन करके छोड़ दोओ, उसका प्रभाव पड़ता है, समाज में। आदमी के जीवन में उसका उत्तम प्रभाव पड़ता है। और मैं इसको कह रहा हूँ, ये सब बराबर होता है।

  एक व्यक्ति को जो मिल सकता है, प्राप्त कर सकता है, हरेक व्यक्ति चाहे तो हो सकता है, वो प्राप्त कर सकता है, हो सकता है, ये मेरा मत है, ये विज्ञान है। मैं ईश्वर विश्वर नहीं जानता, मैं ईश्वर का नाम नहीं लेता। मैं भगवान का भी नाम नहीं लेता हूँ, आप लोगों को मालूम है। प्रत्येक व्यक्ति का ये जो है का सेंटर है, याने छोड़ दिया सेंटर वो तब वर्ल्ड। याने, ईश्वर इस वेरी पोटेंशियल, पोटेंशियलि डिवाइन, नाट पोटेंशियल, ईश्वर इस वेरी पोटेंशियलि डिवाइन। शक्ति से पूर्ण है, दिव्य शक्ति है, वहाँ कचरा नहीं है, यही प्रभाव है। ये प्रसेंस जो कहते है, इसमें से काम होता है। इस शरीर में से प्योरिफ़ायर होने से काम होते है, इसी को ही डेवलप् करना है। मेडिकल साइंस में एक नाम है: ऐनाटानीजम, बेटालीजम, और मेटाबालिजम्, ये ऐरर ऑफ मेटाबालिजम् है, ये इंफेक्सन नहीं है।

मेटाबालिजम् क्या होता है, कि जहाँ जहाँ जीव को पैदा करके पहुंचा देना है, वो नहीं पहुंचा पाता। जो शक्ति चाहिए पहुंचाने को, नहीं पहुंचा पाता, तो ऐरर ऑफ मेटाबालिजम्, ऐसा। ये प्रेक्टिस होते चले जाते है, वो भी एरर ऑफ मेटाबालिजम् है, वो कोर नहीं है, वो इंफेक्सस नहीं है, लेकिन लोग ऐसा डरते है उससे, कुछ नहीं होता, इंफेक्सस नहीं है। वहाँ केपटेलिस्ट है, केपीटीजील्सिम बना दिये है। जो चीज चाहिए वहाँ अंदर जाने के लिए, निर्माण होने के लिए, हम अंदर जाते है, फूल फल खाते है, मेडिसन के साथ में खाते है, सब वहाँ पहुँचते है ताकि वो दूर हो जाय। क्योंकि प्रोटींस लेना है वहाँ से, प्रोटीन से ऐंजाइम् निर्माण होते है। तो प्रोटीन जो चाहिए वहाँ काम करने, लेकिन वहाँ डर वो काम बनता नहीं। तो जो शक्ति चाहिए वहाँ जो एनर्जी चाहिए, वहाँ कहाँ वो होता है। तो ये कैटेलिस्ट वहाँ जाता है, पहुँच जाता है मेटाबालिजम् जो चाहिए,अब उसके जाने से झटपट झटपट वो काम होने लगता है, थोड़े काल में जो प्रोटीन चाहिए शरीर को, जहाँ कहीं, वो वहाँ बन जाता है।और वो, पहुँच जाता है।और ये केटेलिस्ट का कुछ भी खर्चा नहीं होता। ये केटेलिस्ट का कुछ भी खर्चा नहीं होता, न कम होता, न नीचे होता है, न कुछ करता है। है, उसका प्रसेंस काफी है। उसका वहाँ पहुंचना, वर्तमान में रहना (विद्यमान रहना) उसके प्रभाव से, सब काम होता है। प्रभावों किन्चयमुच्यते, इस शरीर में शक्तियाँ, नाना है-ये जो शक्ति है, मन एक शक्ति है, बुद्धि एक शक्ति है, अहम् एक शक्ति है। अहं माने जो आपमें है,आरोप है मैं मैं, ये आरोप है, ये जो शक्ति है, पूर्ण शक्ति है। यही कच्चा मैं,और पक्का मैं है, बाहर तक है तो कच्चा मैं है, अंदर चले गये तो पक्का मैं।आप लोग अंदर चले गये, जीरो रोड में आप पहुँच गये, माने पूर्ण, पूर्णता होने को भीतर जो पथ है, उस पर जा रहे है, आप। तभी तो हाई थिंकिंग यही अर्थ है। भीतर क्यों नहीं चले गये, आते है तो सेंटर विकसित

करो ना, माने जितना चले उतना ही, अब आपके विचार ये होना चाहिए, उत्तम विचार होना, अपने लिए भी समाज के लिए। तो तात्पर्य ये है केटेलिस्ट से जो काम होता है, न वो कुछ करता नहीं, न लेता है, न देता है, उसका केवल पहुंचना ही काफी है। वहाँ पे प्रसेंस काफी है, सब वो अपना काम झटपट करके, वो पहुंचा देता है। तो हम लोगों को भी ऐस ऐ केटेलिस्ट रहना चाहिए।केटेलिस्ट का काम क्या है? नहीं करते हुए भी सब कुछ करता है और सब कुछ करते हुए भी कुछ नहीं करता। केटेलिस्ट पहुँचे तभी तो होता है,अगर नहीं पहुँचे तब, तो कुछ नहीं होता है। लेकिन वो कर्ता भी नहीं है, आया गया कुछ भी नहीं, खाली पहुंचना काफी है। उसके प्रभाव से सब काम होता है। तो आत्मशक्ति- ये प्रभाव है, प्रभाव से सब काम होता है, प्रभावों किन्चयमुच्यते, अकिन्चय है। क्या नहीं हो सकता है इससे? इस शक्ति से क्या नहीं हो सकता है? सब कुछ हो सकता है- मार के जीला देते है, किसी चीज का नाश करके, पुर्नरचना कर सकते है, और वो रहे-ये सत्य है, लेकिन वो बहुत दिनों की तपस्या के बाद है, बहुत दिनों के बाद, साधना के बाद है। एक दफे आपका द्वार खुल गया, जन्म जन्म खुल गया, वो नहीं बन्द होता है। तो तात्पर्य ये है हमारे कहने का, ये आत्मशक्ति, इस कारण से आप इतने कार्य करते है आप नहीं जानते है। आपके जीवन में कार्य है जो संकल्प है। सब कुछ कहते है, करते है। सामाजिक बंधन है,सामाजिक मर्यादा, सामाजिक लज्जा, सामाजिक रुढियाँ है,सब पालन करते है, पालन करना पड़ता है। पहले क्या करते थे, और अब कर रहे है? कितना अंतर हो जाता है अपने जीवन में? कोई ना नहीं कह सकता, जितने है यहाँ पर, मुँह देखके नहीं बोलना चाहिए लेकिन ये सत्य है।आने जाने (में), तुम्हारा जीवन में कितना अच्छा परिवर्तन हो जाता है कि अगर वो परिवर्तन न होता, तो आप लोग हमारे पास जमा न होते। क्या होता है ये मैं नहीं पूछता, एक बार मैंने कहा

था, कि भाई दे दो आप लोग, बच्चे है दे दो आप लोग, साक्षात्कार के लिए दे दो, आप लोग, लेकिन कोई नहीं दिये। खाली वो..लेकर आये थे, यहाँ पे, ठीक है। कितना सुंदर लिखा है, गुरुजी से मिलने के पहले वो दीक्षा लेने के पहले गुरुजी के साक्षात दर्शन होता था घर में, आँख बन्द है तो भी दिखता है, आँख खुली है तो भी दिखता है, और पूजा किये उसने, फिर ऐसा मैं कहता हूँ, सब लोग करो, ये सब करो। कितना प्रभाव पड़ता है। क्या मिला तुमको, पूछते है न तुमको वहाँ पर क्या मिला? तो ये देखो ये है। ये माने, जहाँ काम होने लग जाता है, वहाँ हमारे गुरुजी पहुँच जाते है, चाहे सपने में हो, कि प्रत्यक्ष हो। जो नहीं पहुंचे, लोग कहते है उनके सूझ बुझ में मेरा काम हो जाता है।

माने केटेलिस्ट, सत्पुरुष कैसे होता है? केटेलिस्ट, एस ऐ केटेलिस्ट। केटेलिस्ट उस तरह वो रहता है-न वो कुछ करता है, न धरता है, लेकिन सब कुछ करते हुए नहीं करता और नहीं करते हुए सब कुछ करता है, वो सब कुछ होता है। ये सत् माने आत्मा, यही आत्मा परम है, यही परमात्मा है। इसलिए प्रत्येक सोल, ईच सोल इस पोटेंसियलि डिवाइन - माने तुम सब कोई अवतार हो, डिवाइन बीइंग, माने अवतार, रामकृष्ण आदि जितने है सब अवतार है, तुम सब अवतार हो। लेकिन जब, आजकल ऐसी भ्रांति ऐसी है, जहाँ के तहाँ फिर पहुंचे। ये लोग भी मनुष्य थे, हमारे जैसे, लेकिन उनको, ईश्वर कहा। ईश्वर माने- क्लेश कर्म विपाकाशयैर पराम्रिष्टः पुरुष विशेष ईश्वरः यही पुरुष विशेष, ये ईश्वर कहलाया, मायोपाधि है। इनका जो संकल्प है, मुझे मिल जाय तो मैं समाज कल्याण करूँगा। ये दुनिया में आके समाज का कल्याण करेंगे। ऐसे लोग ये डिवाइन पावर प्राप्त करें, डिवाइन पावर प्राप्त करने के बाद वो डिवाइन बीइंग हो जाते है। और समाज का ही काम करते है, बड़े बड़े राक्षस रावण कंश, ये बड़े बड़े राक्षस है, हिरणयकश्यपु हिरण्याक्ष, सब लोगों को सताया करते है। हम लोग तो कोई पैसा नहीं, भई समाज का उपकार

करेंगे, इसलिए ये रास्ता बताया गया, और चल दिया, ये डिवाइन बीइंग है। इसलिए इच सोल इस वेरी पोटेंशयली डिवाइन, कोई कम नहीं। सब डिवाइन पावर तुम्हारे में है, ये डेवलपमेंट् करना है इसको, इसी जन्म में मिला है आपको, सुषुम्ना खुला है, डिवाइन रोड है। डिवाइन इसमें जो मिलता है आपको, वो डिवाइन रोड है।डीविनिटि जो है गोल में ले जाके पहुंचा देता है, आपको। और इसी शरीर में रहकरके, बाल बच्चों के साथ रहकरके, यही कार्य होता है, और वो केटेलिस्ट होकर रहता है। बाबा मैं कुछ नहीं करता हूँ, वो ईश्वर कर्ता धर्ता रहता है। मैं ऐसा हूँ, मुझमे है,हो गया वो समाप्त। इसलिए वो कहता रहता है, कि भई मैं कुछ करता धरता नहीं, ये वो बार बार बोलता है। मेरे को सभी बोलते हुए सुना है, ये है, ये होता है, कैसा होता है, कोई नहीं जानता। कर्तुम् अकर्तुम् अन्यथा कर्तुम् समर्थः, इनको समर्थ कहा गया, इन लोगों को समर्थ कहा गया, ये नहीं कुछ करते हुए करता है, दूसरा आदमी होता है, उसके कर्म का प्रभाव नहीं बनता है। क्योंकि वहाँ हेतु नहीं है, अपेक्षा नहीं है। कल्याण करने के लिए वो आते है, और करके और रास्ता बता के वो चले जाते है। भई, मेरे जैसे तुम भी हो, वैसे हम सब लोग है। ये जो आपका बैकबोन है, इसके अंदर जो सेंट्र्ल केनाल है, उसमें घुस गये वृत्तियाँ आपमें, अब वो काम बन गया। इसी को कहते है न ये वो बना दिया। वो शक्ति है,अभी जो बताया मैंने, वो शक्ति केवल दी जाती है, उसमें मेडिसिन नहीं। और वो मेडिसिन है,वो क्या है, वो है असाइमेंट्, पेसेंट नहीं। मेडिसिन जो है वो पेसेंट है, पेसेंट ही मेडिसिन है, मेडिसिन माने मलाइन है। पेसेंट है जो मलाइन है,आजकल पेसेंट है वो मलाइन है, ये सेंट्र्ल केनाल में जो घुसेंगे फिर वो डिवाइन है।और डिवाइन माने दीक्षित हो गये।

मेडिसिन माने भय, फीयर् ऑफ डेथ।अखण्ड मंडलाकारां, ब्रम्हांड में यहाँ वहाँ सब जगह वो ज्योति है। तस्मै श्री गुरुवे नमः, इस तरह से यहाँ वो हो गया, क्योंकि यहाँ कोई अपेक्षा नहीं है। इससे बढ़कर संसार में और

कौन सेवा करता है बताइये? और कौन ऐसा सेवा करता है, साक्षात्कार के बाद, जैसे जैसे आप आत्मस्थ होते हो। खाली आत्मा का गुण विकसित करना, ये अध्यात्म मार्ग है। एक सिक्के के जैसे दोनों बाजू होते है वैसे ये दोनों बाजू होना ये। आत्म शक्ति नष्ट होने वाली शक्ति नहीं, अनुभव वाली शक्ति है। ये सत्य है।आप डिवाइन होते जा रहे है, धीरे धीरे उठिये आप। तात्पर्य ये है कहने का इस तरह से बैकबोन तैयार होना चाहिए, बैकबोन तैयार होने के बाद, लोग है वो कार्य करते है, भाई वहाँ जाओ, वहाँ जाओ, लोग है जो भेज देते है। तो संसार में तकलीफ कहाँ है? बगल में रास्ता है, आनन्द ही आनन्द है। तब ये जो है केटेलिस्ट, केटिलिस्ट है, अगर नहीं वो भार हो गया। इसी को सिद्ध पुरुष कहते है, इसी को साधु संत कहते है कि संसार में रहकर, कार्य करता है, कर्तव्य विमुख वो नहीं होता, आता है। कर्तुम् अकर्तुम समर्थः, बिना हाथ के काम करता है, बिना पैर वो चलता है, बिना मुँह वो खाता है।

- माने तब एस्ट्रल बॉडी तब प्राप्त होता है। वो बॉडी माने उसको इलुमिनेटिंग बॉडी कहा, और उसकी बुद्धि जो है इतनी प्रखर हो जाती है, कि भूत, भविष्य आपका ज्ञान हो जाता है। और वो काल है, सुषुम्ना कालं भवति। ये लक्षण पैदा होते है,उसमें, लक्षण माने अभी जो बताया है, अंदर से ऐसा दिखता है, ऐसा दिखता है, ऐसा ऐसा, और ये शरीर जो है, मृतवत हो जाता है, और ये हाथ पैर ठंडी हो जाती है फिर धीरे धीरे आइस बर्फ जम गया वहां, मालूम होता है। ये सब मालूम होता है जैसे आइस सरीखे। शक्ति फिर धीरे धीरे ऊपर आता है,और ये हाथ पैर जड़ हो जाते है फिर आप हिला नहीं सकते उसको, बोध है ज्ञान है, खिसक रही है वो भी बोध है, योगबल है जो, ये योग है ऐसा। ये सब मालूम है लेकिन अभी तो कुछ नहीं है, ऐसे करते करते फिर सुषुम्ना माने मेरुदंड में घुस जाती है, और घुसकर धीरे धीरे ऊपर आती है और जैसे जैसे ऊपर आती है जहां

मेरुदंड में आया ऐसा मालूम पड़े, सारा शरीर पत्थर हो गया। ऐसा एक बिल्कुल गोला बन गया, अब मरे, बिल्कुल मैटर जैसा एक मॉलीक्यूल जो होता है, तब माने मृत होता चला जाता है इसी प्रकार से उसका अनुभव होता है, बस अब हम मरे। मैं अपना अनुभव बताता हूँ, बिल्कुल सत्य है ये सब, मरता नहीं है, ता माने आत्मा, मर माने शरीर, ये है, लेकिन मरता नहीं, ये अनुभव है। किताब में दिया है, सबके पास है। सब बिल्कुल सत्य है, एक एक बात सत्य है, बैठे है हम। ये सत्य है ये लक्षण तब होते है, ये बाहर के लक्षण है और ये भीतर के लक्षण है। माने लक्षण में दो चीज पाये जाते है, कि दुःख अब मरा, जो बताया न अतीत अनागत, तो हेतु और परिणाम माने देह की अवस्था भीतर है, देखा जाता है क्या मिलता है ये लक्षण होते है। माने ये शिथिल होते चला जाता है, लाइसी बन जाता है और बिल्कुल जड़ हो जाता है, दुनिया कहेगी डॉक्टर कहेगा मर गया, लेकिन मरा नहीं। अब ये क्या हो गई देहावस्था हो गया, और एक है रूप स्थिति, माने ज्योति। वो ज्योति इतना प्रचंड इतना प्रखर होता है,अखण्ड मंडलाकारं, इसका हमें बोध है-ये सत्य है। क्या तत्व निरूपण है हमारी पुस्तक में लिखा है आप देख लिजिये, वो झूठ नहीं है, मैं कभी झूठ नहीं बोलता, सपने में भी नहीं बोलता। व्याप्तँ येन चराचरं येन चराचरं वही तब ये लाइट इतना बढ़ जाता है, सारा यूनिवर्स मस्त लाइट ही लाइट है, तत्पदं दर्शितं तस्मै श्री गुरुवे नमः। सर्वे विश्वनः सन्तु, सर्वे संतु निरामयाः, सर्वे भद्राणि पश्यन्ति मा कश्चिद दुःख भाग भवेत।ॐ स्वस्ति नो इन्द्रों .....। ये सब दिव्य लोग है, ये आपकी रक्षा करें, आपको इंट्यूशन माने ऐसा करने से ऐसा है, उपदेश देवे समय समय पर, समय पर आपकी रक्षा करें, और आपसे बातचीत करें, और आपकी रक्षा और आपको वो सम्हाले। ये जो वैदिक आशीर्वाद मंत्र है ये, और क्या। ॐ .... ब्रम्ह शान्तिः सर्व ब्रम्ह शान्तिः....शांति रेव शांतिः, शांति भी शांति, शांत हो, इस प्रकार, सामा,

सामा माने दो, द्वंद मेघ पानी बरसता है पृथ्वी उसको ग्रहण करती है, तब बीज अंकुरित होते है माने दो जहां मिलते है तीसरी की उत्पत्ति होती है, ये भी शांति माने विघ्न भी उत्पन्न न हो, दो के मिलने पर भी विघ्न उत्पन्न न हो। शांतिरेव शान्तिः, सामा, इस तरह से पृथ्वी की मिट्टी को विघ्न कहा गया ये जो सा हो गया, और मा, मेघ हो गई। बारिश वो बरसता है और जब, पृथ्वी ग्रहण करती है, नाना प्रकार के माने जो बीज पड़े हुए है, शांत होते है। सामा माने द्वंद, ये गीता में है, सामा शान्तिः रेव शान्तिः, माने ये सब विघ्न ज्ञान रूपी अग्नि से दूर हो जाय।ॐ शान्तिः शान्तिः।

- मैं तो कोई चीज नहीं हूँ। मैं तो कोई चीज ही नहीं है, मैं तो सिर्फ अहंकार है, तो मै तात्पर्य ये है कि मेरा जो कर्तव्य है-सामाजिक, ये सामाजिक कर्तव्य है। कि राष्ट्र जो है बनी रहे, राष्ट्र में जो लोग है वो भी बने रहे।और जो हमारी संस्कृति है - योग, आत्मसाक्षात्कार वाली जो योग है, वो बनी रहे। तो जब जिस राष्ट्र में संस्कृति नहीं वो राष्ट्र टिक नहीं सकती। पूजा नाम नम्रता, पूजा नाम बलिदान, पूजा नाम समर्पण। नम्रता, अति विनय, अनुयय विनय शील। ऐसे जो आप दीक्षित है तब बचे हुए है, आप कहीं भी नहीं है। मैं किसी को भटकाता नहीं उसमें से उठाता हूँ। ठीक चूहा ही मार लो ना, लेकिन चूहे के आँख देखा है कभी, नहीं, तो उसके आँख देखो।सिर्फ आँख देखा करो बस, अब, चूहा नहीं दिखना चाहिए। हो जाता है काम, कोई भी चीज रहे। ये तो एक आँख है ये अंतर्यामी। सहज बोलते है, लेकिन चूहे मारने से कुछ नहीं बनता, यही दोष हमारे में है,और कोई बात नहीं है।

- ये है वो गर्दन, गर्दन माने अहंकार। मौनँ सर्वाथ साधनम। सर्व माने पूर्ण,सर्व नाम ब्रम्ह का है। धर्मार्थ काम मोक्षणां।विज्ञान आनन्दमय कोष में होकर, वो विचरण करता है। अपना कल्याण वो करता है और जगत

का भी कल्याण वो करता है। आपका मर्ज होना है, आप बाहर सांसारिक कार्य में इमर्ज है। अभ्यास और कोई चीज नहीं,बुद्धि को निर्मल करना है। आत्मा की कोई भाषा नहीं वो मौन है। धनी होना है, तो धन बाहर नहीं है, वो आत्मा है। आत्मा माने क्या है? एक महाशक्ति है। वो चलते हुए नहीं चलता। वो पास भी है नहीं नहीं वो बहुत दूर है। वो सर्वान्तर्यामी है। आत्मा एक शक्ति है उसको विकसित करना है। घर्षण। कर्म करना चाहिए, जो भागते है वो बराबर नहीं है। जाग्रत माने, वासनाओं के बस में न आ जाय, कामनाओं के बस में न आ जाय। उस परमतत्व की ओर लक्ष्य लगा देना। जिस दिन ऐसे स्थिति हो जाय, पलक मारते ही काम होता है। संतों में योगियों में यही अंतर है वो दीक्षा नहीं देते, योगी दीक्षा देते है, वो आत्मक्रीड है, टीम बनाकर चलते है, अपने जैसे वो बनाते है। अगर संयमी है आप तो भूत भविष्य का ज्ञान होना चाहिए। त्रयं संयमात अतीत अनागत ज्ञानं। हमारे पास न नियम है न संयम है। आचरण होना चाहिए, वही सब कुछ करवाता है, वही सब जगह है, ऐसा होना चाहिए, तब ये होता है। अंदर बाहर ऊपर नीचे उसी में तो हम है, ये अभ्यास है, इसी को हमने सहजावस्था कहा है। धक्का लग जाय तो नहीं है ऐसा नहीं है। एकनिष्ठ होना चाहिए। कोई भी वस्तु दोषमय नहीं है, हम अपने दृष्टि से गुणमय और दोषमय बनाते है। हम ही जिम्मेदार है, इसके लिए। माने हम अपने ही शत्रु है अपने ही मित्र है।

- हजारों सालों से हम भ्रम में पड़े हुए है। अगर हमारे इस तरह से धारणा हो जाय तो हो जाय-ये क्रिया विहीन संवादिते। ज्ञानेश्वर महाराज कहते है बिना क्रिया बिना आघात पहुंचाए, किसी प्रकार से आघात न पहुंचाते हुए। जैसे पंचम सुर संवाद में प्रतिध्वनित होता है, ता थी करने पर। माने गुरुजी के, संकल्प मात्र से माने निष्काम करने मात्र से और निष्काम करने के बाद में जैसे ये धीरे योग शुद्धि में आंतरिक शुद्धि में युक्त में करते

है, उसी प्रकार जैसे राम प्रमेय पद में पंचम सुर उसका उदय होता है उस प्रकार उसका आशीष चाहिए, ज्ञान पूर्ण लक्षण वो वही ज्ञान..। क्यों वो जिस प्रकार से चतुर्थ को भी काष्ठ को छेद देने पर पंचम चतुर्थ से उत्पत्ति होती है वही चतुर्थ शुद्धि है। काम को भी ..को भी वही चतुर्थ केंद्र में हो जाता है। लेकिन यहां गुरुजी के माने तेरा माने गुलाम, तेरा माने दास और गुरुजी को मानने से क्या होता है ऐसा। यहां गुरुजी को क्या समझते है। यहां भय के सिवाय कुछ नहीं वो खा जायेगा वो, मर जायेगा ऐसा हो जाएगा। ये भय जब तक आपमें है ज्ञान मिलता नहीं। इस प्रकार से ऐसे उसका संशोधन करते है, क्या करते है उसके मन बुद्धि विषय में विकार युक्त में उसके आचरण में उसकी भाषा उसकी भाषण उसके बोलने की शैली ये सब सानिध्य में रहकर ये सब ठीक ऐसा, आचरण में लाने के बाद, फिर उसको संवाद ज्ञान उसको होता है। ये हमारे कहने पर ऐसे हो जाये कैसे? लेकिन जब ज्ञानेश्वर उसके भाई और बहन उठते चले आते है। और लोग जिसको आवश्यकता होगा लेकिन वो करने को तैयार नहीं। इसी प्रकार तैयारी करके उसके अंदर झांको और तन्मयता पूर्वक उसको करते है। लेकिन यहां, यहां न तो बोध है न कुछ नहीं। इसको बुलावे समाज को बुलाये देखो जी तुम मस्त हो तुमको क्या समझता है।अज्ञान इसको जो कहते है ये जो रहस्य है। क्रियाविहीन संवादिते बिना आघात वो होता है। जब तक शुद्धिकरण नहीं होता तब तक क्रियाविहीन नहीं होता। ऋजु माने सुषुम्ना को जगा लेना और उस महाशक्ति को खड़ी कर लेना। खड़ी करने के बाद ये गुण आप ही आप आ जाते है। क्या गुण, तपस्वी। तप माने क्या बुद्धि सामर्थ्य उसके बुद्धि में वो सामर्थ्य आ जाता है वो जैसा चाहता है जैसा वो बोलता है होने लगता है। मन पर, मन बुद्धि चित्त और अहंकार, सब पर वो अधिकार। नौ गुण सम्पन्न वो ब्राम्हण है। बगैर किये उसके सब व्यवहार होने लगते है ये सब सत्य है। जब तक

शुद्धिकरण नहीं होता तब तक ये नहीं होता। ऐसा जो मलेरिया है हमारे जन्म जन्म के वासना ये धीरे धीरे, इस मार्ग में अपने आप को जानने की जो पद्धति है, उसके द्वारा कम से कम ये जीवन रूपी पद्धति है, कम से कम 2 मिनट तो हो नुकसान तो होता नहीं। आगे तो...। इस दुनिया जो यह देश है, भारत।भा नाम ज्योति भा नाम ज्ञान का है, भा नाम प्रकाश का है।अंदर बाहर चारों तरफ से है इसलिए दर्शन नहीं होता। ये पहले से था,अभी भी है और आगे भी रहेगा। लेकिन ये ज्योति रूप में दर्शन होता है। और ज्योति में ये इस प्रकार सूझ बूझ मिलती है जिसको इंस्टियूसन कहते है। वो ज्योति में क्या मिलती है आपको ज्ञान प्राप्त होता है कैसा करना कैसे न करना, ये समझ में आता है। व्यवहार जैसे वो बोलता है वैसे वो कार्य करने लग जाता है, एकता ये है।आपका ज्ञान कभी भी कम नहीं, आप कहीं भी जाय आपको बोध होगा, ये सत्य है।आपके विचार जो है जो आपने संकल्प किया है वो कार्य आपका होने लगते है। और शक्ति, आपको वो शक्ति मिलेगी आपको, कि जाओ भाई नारायण नाम लेना, वो तर जायेगा। ये साधु ने आशीष दिया है, नारायण से नहीं होता, वो आशीष दिया है उससे होता है। लेकिन बात यहां तरण तारण की है अपने आपको जानने की है। कब तक आप किताबे पढ़ेंगे। स्थायी होना है। इसका नाम है राजयोग, हमने इसको खाली ध्यान योग कहा। उपनयन माने समीप। दो आंखों से बहिर्जगत का कार्य होता है, अंतर्जगत का तीसरी आंख से जिसे ज्ञान चक्षु कहते है। वो तीसरी आंख खोने ये संस्कार जिसको उपनयन संस्कार कहते है, कराया जाता है। उसके अंतर्गत तीसरी आंख को खोलेने को दीक्षा दी जाती है। ये तीसरी आंख अनेक जन्मों से है ये खोलने दीक्षा दी जाती है। गायत्री तीन पद युक्त है। उत्पत्ति, स्थिति और लय। ये जो शक्ति है, उसके तीन प्रकार के परिणाम होते है। ऐसी जो महाशक्ति है उसका बोध होना चाहिए। गायत्री में जो है, (ॐ भू भूवः स्वः

महः जनः तपः सत्यं करके) जो सप्तलोक है प्राप्त करना पड़ता है। छः जो है, -जड़, लोक, अग्नि लोक, वायु लोक। आकाश लोक, तपो लोक, और सत्यलोक। सत्यलोक वही परमपद है वही ब्रम्हलोक है। शाक्तों का शक्तिलोक, शैवों का सदाशिव, वैष्णो का विष्णु लोक है। गायत्री में जो तीन है, ऐसा माना जाता है, संध्या, जो सुबह दोपहर शाम करना चाहिए। लेकिन ऐसा नहीं है तीन माने तीन ग्रंथि (,ब्रम्ह ग्रंथि, विष्णु ग्रंथि और रुद्र ग्रंथि) जो है। उसको भेदन करना पड़ता है। जब तक इन ग्रंथियों का भेदन नहीं होता तब तक उसको, अतीत अनागत का बोध नहीं हो सकता। वेद मन्त्र, गायत्री इस तरह वेदों की जननी गायत्री है। वेद का अर्थ होता है ज्ञान का। भू, भुवः, स्वः, महः, जनः, तपः, सत्यं.. -इसी को मणिपुर, स्वाधिष्ठान, मणिपुर, अनाहत, विशुद्ध,आज्ञा चक्र, सहस्त्रार। वही देव है केवल नाम भेद है। गायत्री जो संस्कार ऐसी जो शक्ति मुझमें जो है, उसे जाग्रत करने के लिए हमें वो गायत्री मंत्र का किया जाता है। उस शक्ति को जो जगाना है इसलिए इस शरीर की रचना जो है अपने आप में पूर्ण है। क्यों पूर्ण है, शरीर में जो चौबीस तत्व (दस इन्द्रिय, पांच ज्ञानेंद्रिय-आंख नाक कान त्वचा जीभ, पांच केर्मेंद्रिय-मुँह हाथ पैर गुदा उपस्थ, पंच तन्मात्रा शब्द स्पर्श रूप रस गंध, पंच महाभूत-क्षिति जल पावक गगन समीरा, मन बुद्धि चित्त अहंकार) और 25 वां (माया के द्वारा भीतर जीव रूप से बाहर काल रूप से जो भगवान वासुदेव है वो वही 25 वां तत्व है) जो है उसी को जानना है।भव माने अपने आप होता है, यहाँ करना केवल इतना है की जो रास्ता आपको बताया गया है, ऐसा ऐसा बैठना ऐसा ऐसा ध्यान में लाना है और बस चुप हो जाओ, तो ऐसी तैयारी होनी चाहिए जिस प्रकार हम बाहर के अध्ययन अभ्यास की तैयारी करते है, उसी प्रकार तन्मयता तल्लीनता और दृढ़ निश्चय से आत्म पद को प्राप्त कर लेना चाहिए जैसा बताया गया कहा गया, दिया गया वैसा आप करे

तो, अन्तरमार्ग खुल जायेगा। और केवल बैठने से ही सब शुद्धता आती है, जिसको बाह्य संवेदना शून्यत्व कहते है, आपकी बुद्धि में जो दोष दुर्गुण है, वो बदल कर गुण हो जायेंगे । गुरु दिश मार्ग से सहज अभ्यास करे तो त्रिवेणी संगम होता है, एकांत में बैठकर चित्त शुद्ध कर साधना में लग जाओ फिर वो सुख है, अपार है । अभ्यास और कुछ नही अपना जो स्टेट है, उसे भूल गए है, अभ्यास से आप स्व के स्थान में आ जायेंगे बस आप लगे रहे , बाहर का कम होता चला जायेगा । ऐसी कोई जगह नही जहाँ वो ना हो, हम भी उसी के अंदर है, सारा जग सारा ब्रम्हांड उसी के अंदर है, अंदर बाहर वही है, ध्यान जो है, मानस गुप्त रूप से मनन करना है । मन निर्विषय हो जाता है, हमारे सामने एक आत्मा के सिवा कुछ ना रहे, हमारे जो विचार उदय अस्त होते रहते है, इस जड़ता को दूर करने के लिये हमे ध्यान करना चाहिये । जो आपने संकल्प किया, इस समय में ये करना नही जायेंगे तो ये होगा, जिसको हम कर्तव्य कहते है, वो हमे अंदर घुसने नही देते, जब तक ये बाह्य जग के लिए है हमे शांति नही प्राप्त होती ।

- जब तक हमारी बुद्धि ,मन और इन्द्रियों के द्वारा, वस्तु या विषयों के भोगों की आसक्ति में फंसी रहती है, तब तक वह असन्तुष्ट असुरक्षित परेशान रहता है।
  मन बुद्धि को विषयों से परे अपने आप मे केंद्रित कर देते है, तब हम पूर्ण रूप से संतुष्ट हो जाते है, यही संतोष है।
  बाहर की रुकावट है, संम्पत्ति मान, यह अंदर [आंतरिक प्रवेश, मन का प्राण का सुषुम्ना में संचरण रीढ़ की हड्डी की पोली नली में आते जाते रहना चक्रों के कमल दलों को स्पर्श करते रहकर दिव्य बनते जाना] जाने नहीं देता है।
  जब तक वासना है सिद्धि सम्भव नहीं। अनेकोनेक जन्मों के सूक्ष्म अतिसूक्ष्म संस्कार है।

संसार छोड़ने की आवश्यकता नहीं है अंदर से उसकी प्राप्ति की इच्छा रहने पर सुलभ हो जाता है।
मन का मैल निकाले बिना न साधना होगी न भक्ति[सिद्धि]।
मन से विकारों का ध्यान न हो ऐसा प्रयत्न करो।
अहम यदि आ गया, तो वह गिरता चला जायेगा।
कल्याण माने निर्मल (मन का विकारहीन होना, सरल) मलरहित।
जन्म जन्मान्तरों की बुनियादी वासनाएँ भरी हुई है, ये (विका रहीन) निर्विचार होने में बाधक है, मौन सहायक है, सावधान रहते हुए कार्यरत रहे।
यह सब अभिनय है, जो संसार के लिए कर रहे हो।
अपने आप को दृष्टा अकर्ता होना है।
वर्तमान में हुए की पा गए, रुको क्षण भर, देखो कि उसे तुम पाए हुए हो।
दृष्टा [अंदर से देखने वाला] दृश्य [देखने वाला बाहर की आकृति रूप रंग जड़ चेतनमय आकृति] रहित स्थिति, की सन्धि में आपको ठहरना है।
इस स्थिति में सदा रहने से साधक जो बोलेगा वह होगा, आनन्द [समाधि] की अवस्था बनी रहेगी।
योगमाया इसकी माया है, इसमें जो फंसा गिरता चला जायगा।
पुण्यपाप के बीज वासना है, वासनाओं का बीज अहं है।
यह सेंज संस्कार जब नष्ट हो गया,तब निर्बीज। निर्बीज माने अहं भाव नष्ट हो गया।
निर्वाण।वाण माने शरीर, उसे फिर शरीर प्राप्त नहीं होता है।
शरीर प्राप्त होता है, लेकिन उसका शरीर ज्योतिर्मय होता है। वह शरीर ज्योतिर्मय पिंड है।
एक सेल से अनेक सेल में देह पाए है,आकुंचन के द्वारा उसी सेल रूपी बिंदु से देह प्राप्त करना है, वह है ज्योतिर्मय देह।
यह बिंदु ज्योतिर्मय है।
उसके लिए तीसरी आंख अभ्यास के द्वारा खोलना पड़ेगा, दिव्य आंख खुल जायेगी।

- गुरुजी कभी कभी हल्का गेरुवा शर्ट पहन लेते थे, सामान्यतः वे सफेद कुर्ता धोती पहनते थे। उनके साथ रहने मात्र से लोगों में और वातावरण में आनन्द हो जाता था। उनमें अहंभाव बिल्कुल नहीं था, जैसे अहं को वो पचा लिए थे। गुरुजी अपने को प्रदर्शित नहीं होने देते थे, छुपा के रखते थे। अतिसामान्य रहते थे। ११ से ५ बजे तक तुलाराम कन्या विद्यालय में संगीत शिक्षक के रूप में क्लास में सभी बच्चों को संगीतगायन सिखाते थे। फिर महात्मा गांधी स्कूल में निजक्लास के रूप में शाम से संगीत की शिक्षा लगभग ८बजे रात्रि तक देते थे। वे पान खाते थे। कभी किसी से उनका विवाद नहीं हुआ एवं किसी के विवाद में पड़ने का उन्हें मौका भी न मिला, अपने आप में मस्त रहते थे। ये सन ७०से ८० के बीच की बात है। गुरुजी सिद्ध है करके कोई भी समझ नहीं पाया। दिव्याम्बु निमज्जन पढ़ने से पता चला की ये महान आत्मा रहे है। उनके सिखाये हुए संगीत की एक शिष्या जिनका नाम ममता चंद्राकर है आज रायपुर रेडिओ स्टेशन में असिस्टेंट डायरेक्टर के पद पर कार्यरत है।

  दीपक नगर में डॉ पाटणकर के निवास पर जब संगीत का कार्य ८-१० लोगों के साथ गाने बजाने का कार्य चल रहा था फिर अचानक वो बीच में उठकर जल्दी जल्दी निकले तो उस समय मैं था। बाद में इसका वर्णन गुरुजी की किताब दिव्याम्बु निमज्जन में पढ़ने को मिला की उस समय कुन्डलिनी शक्ति का ऊर्ध्वगमन सम्बन्धी, तब जानकारी हुई की वे समाधिस्थ महापुरुष रहे। ८-१० साल तक उनसे मेरी मुलाकात बीच बीच में सप्ताह में एक दो या तीन चार बार होती रहती थी। गुरुजी हारमोनियम एवं तानपुरा बजाते थे तथा गायन करते थे। गुरुजी संगीत सम्बन्धी घरेलू जो बैठक होती थी, प्रायः वहां जाया करते थे। सुषुम्ना मार्ग में गुरुजी के बताए मार्ग से ज्यादा लोगों का फायदा हो रहा है, ये मुझे दिख रहा है।जबकि क्रियायोग जो श्वास के नियंत्रण का मार्ग है, हर व्यक्ति के लिए कठिन है। (गुरुजी के सोचने मात्र से लोगों के सुषुम्ना में प्रवेश हो जाता है,

गुरुजी सुषुम्ना को प्रवेश के साथ ही कंट्रोल भी कर देते थे जहां तक बढ़ा दे जहां तक घटा दे। कोई भी आदमी तीन दिन में समाधिस्थ हो सकता है, लेकिन वो अस्पताल भाग जाएगा नहीं सम्हाल सकता, सहज सहज पचा पचाकर चलना ही ठीक है, ऐसे गुरुजी बोले है, यह जानकारी गुरुप्रसाद भैय्या के द्वारा गुरुजी के बारे में दिनांक ३.९.१८ को दास जी से नेहरू नगरभिलाई में निज निवास पर चर्चा चल रही थी तब उनके द्वारा बताई गई)। ।श्रवणकुमारदासजी, जो उस समय वायलिन बजाते थे, वायलिन शिक्षक एवं क्रियायोग साधक उम्र ८१-८२ से प्राप्त जानकारी अनुसार।।

- इसी प्रकार से एक भ्रांति वाला शब्द है, जैसे हमारे माता पिताजी ने मुझे, हमारा नाम वासुदेव रखा है। वासुदेव ये सामाजिक व्यवस्था के लिए कौटुम्बिक व्यवस्था के लिए अपने कार्य कला चलाने के लिए-ये व्यवहार है। व्याहारिक नाम है। यथार्थ में अगर वो व्याकरण दृष्टि से देखा जाय तो वासुदेव जो डिफनिशन या परिभाषा है। वो ये है-जगताः अस्मिन वासः चासौ देवा वासुदेवाः। जगत सारे जगत जितने गोल है, उसके अंतर्गत है, ऐसा जो सर्वव्यापक एक शक्ति है,वो महाशक्ति ओत प्रोत है। हर वस्तु, हर आकृति जितनी आकृतियां है वो चाहे यूनिवर्स, गोल हो लोक हो, दिव्य लोक, कोई लोक, जितने लोक है, जितने दृष्टिगोचर है और अगोचर है। गोचर अगोचर जितने लोक है, सब उसके अंतर्गत है, वो अंदर बाहर है, ऐसी जो महाशक्ति है, ऐसी जो दिव्य शक्ति है। जगतः अस्मिन वासः, उसके अंतर्गत ये सब वास है, सबको धारण किया है जिसने ऐसा जो देव है-दिव धातु से निष्पत्ति है, ऐसा जो देव है, दिव्य शक्ति जिसमें है, रिद्धि सिद्धि है अष्टसिद्धि है, वो दिव्य शक्ति सबको उत्पन्न करके पालन पोषण कर और सबको अपने में धारण किया है ऐसा जो देव है, चासव देवः वासुदेवाः वो वासुदेव का डिफनिशन है जो व्याकरण दृष्टया ऐसा है जो कहा गया है। ये उचित है। इसलिए ये व्यक्ति की पूजा नहीं है, ये तो

ऑलमाइटी की पूजा है, जिसे सत कहा गया है। हरि ॐ तत्सत परम आत्मने नमः। ऐसा जो आत्मा-जो परम है, वही परमधाम है, वही गोल है। सो, दि गोल मेनिफेस्ट विदिन। तो आत्मा ही गोल है वही धाम है, वही परम धाम है और वही परम ब्रम्ह है। और जिसका जैसा मत हो हमारा उससे कोई कहना नहीं कोई दोषारोपण नहीं क्योंकि हमको तो अपने ही अपने जो सत्य की खोज में लगा हूँ, लगे हुए है, और कोई, हम अपने ही भोग नहीं

पाते कहाँ फुर्सत है कहाँ हम तो अपने पाशों से आबद्ध है और ये पाश है- घृणा, शंका, भय, लज्जा, जुगुप्सा नाम माने निंदा, कुल, शील, ज्ञान, अष्टोपाशः लगे हुए है, हम अपने ही बंधन में बंधे हुए है। हम दूसरों के बंधन काटने में कहां से सक्षम हो सकते है। स्वयं अपने में, बंधन काटने में हम लगे हुए है। हर कोई आते है पूछते है, बात बता दो भाई, हम तो ऐसा ऐसा करता हूँ, ऐसा ऐसा चलता हूँ और ये स्थिति है। और ये होता है कैसा होता है, मुझे भी नहीं मालूम है।अगर आपको श्रद्धा है और भरोसा है, आपको विश्वास है, आप करेंगे, आपका भी कल्याण होगा। आप देखेंगे, परिवार में बहुत से लोग है, जो कि अनुयायी है और दीक्षित है, और वो अपना अभ्यास करते है, अध्ययन करते है अभ्यास करते है उनके कार्य सिद्ध होते है, भरोसा में प्राप्त होते है। जैसे कोई शास्त्र में कहा गया है, मनुष्यों को कहा गया है, इस प्रकार से ऐसा जो वासुदेव है, ऐसा माने जो आत्मा का देह है, आत्मा का नाम वासुदेव है, वही परमात्मा है, वही परमधाम है, वही परमपद है, वही परमाशक्ति है। इस शक्ति का जो अध्ययन और अभ्यास करता है वो दिव्य शक्ति सम्पन्न होता है। दिव्य लोक को प्राप्त होता है। और दिव्यत्व को और वो दिव्यात्मा है, जिसका नाम वासुदेव है। लेकिन ये व्यक्तिगत नाम नहीं और न ये व्यक्ति कि ये पूजा है।

- मेरे पास ये देवी है मेरे पास वो देवी है, मैं क्या परवाह करता हूँ, इनके गुरुजी, जो मैं बोलती हूँ वैसे ही करते है क्या रखा है।हां।
जिसके द्वारा मिला उसको ऐसे कहते है। ये है अहंकार। तो अहंकार वहां तक नहीं छोड़ती जब तक ऐबव टाइम एंड स्पेस न पहुंच जाओ।
एक ही रास्ता है मरता है शरीर अकड़ता नहीं, डिकम्पोजिसन होता नहीं शरीर। ये स्थिति जब तक नहीं आती जब तक परमावस्था में नहीं पहुंचते। मेरी किताब में दिया है एक अध्याय में पढ़ो उसको। तो जब तक आप परमोत्कर्ष को प्राप्त होते नहीं। इसी को निर्बीज समाधि कहा है।
सत्वपुरुषयोः शुद्ध साम्ये कैवल्यं। यही कैवल्य है बुद्धि जब शुद्ध हो जाती है। तीनों गुणों से रहित हो जाती है एक ही संस्कार जब रह जाती है। अभी कहा है वो। ये संस्कार एक भी सेल में एक भी दल में रह नहीं जाता है। पूर्ण शुद्ध हो जाती है बुद्धि एक भी संस्कार रह नहीं जाता है। तब वो बुद्धि प्रकृति में लय हो जाती है, प्रकृति माने सत, रज, तम-सत रज तम शुद्ध होकर के प्रकृति पुरुष में लय हो जाती है, लीन हो जाती है। तो वो पुरुष केवल रह जाता है इसलिए इसे कैवल्य कहा। पातंजल योगदर्शन के आधार पे तब इसको कैवल्य कहते है।ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।
जो कुछ होता है सब पूर्व नियोजित है प्री डस्टाइन।न जानने से हम भ्रमित हो जाते है जिसे भ्रम कहते है। माने मनुष्य स्वयं अपने विनाश का कारण है। वो कर्म करता है क्या करता है, सुसंगत होना। तो संगत उनके पास होता है जो साधु है। यथार्थ में ये योगी है,अपना कल्याण होता है और समाज का भी कल्याण होता है। समाज का इतना बड़ा ऋण है उससे कोई उऋण हो पाता नहीं है। जन्मों जन्म तक करने से होता है। तो संगत, सत्संग होना चाहिए, बाकी ये सब माया का संग है। इसलिए अपने वश में हो कौन सा, सत्संग-सतगुरु, सत्पुरुष को प्राप्त कर और फिर अपना भी कल्याण हो, उऋण हो, समाज का भी कल्याण हो, आदर्श हो कुल में भी हो, कुटुंब में भी हो, कहीं भी हो तब हमारा मान प्रतिष्ठा होगी। हम जब

कुछ देंगे तभी तो पाएंगे। पहले दो फिर पाओ, फर्स्ट डिजर्व देन डिसायर। पहले दिये नहीं तुम इच्छा रखो पाने की, कैसे हो सकता है? हजारों आंखे है तुम्हारे पीछे, तुम अपने को नहीं जानते लेकिन दुनिया आपको जानती है। इसलिए मनुष्य स्वयं अपने विनाश का कारण है। संग होना चाहिए, ये कामना वाले है दुख ही दुख होगा। और जो निरपेक्ष वृत्ति वाले है साधु है। गुरु अगर सर्वशक्तिमान है, सत्पुरुष है उनकी बात मानकर, उनके आदेश का पालन कर वो बुद्धिमान होकर दिव्य शक्ति सम्पन्न होकर और समाज को भी अपना गुण दे सकते है ये ब्रम्ह विद्या है। विद्या धनं सर्व धनं गुप्त धनं प्रधानं। ये देने से बढ़ता है घटता नहीं। बाकी जितने धन है चोर लूट लेते है, भाई बन्धु मार लेते है, आग लग सकती है जल सकती है। सब कोई ले सकते है, बाट सकते है। लेकिन ये गुप्त धन है और स्वानन्द जिंदगी जो है और भी लोग इसे देख करके, अध्ययन और अभ्यास करके वही परिणाम, आनन्दमय परिणाम सबको मिलने लगता है। इस प्रकार व्यक्ति जो है समाज का एक घटक है। अगर वो दिव्यशक्ति सम्पन्न है तो समाज में वो परिवर्तन लाने में वो सक्षम हो सकता है। समाज कितना दिया आपको, कितना उपकार है। इसी प्रकार से, इसलिए समाज से जो विभक्त नहीं वही भक्त है। ये भक्त नहीं, बाकी ये सब भगत है लंगोटी लगाकर। ये सब स्केपर्स है ये समाज को कुछ नहीं मिलता इनसे।

- पागल-जो गल गया उस रंग में, वह पागल है।
  पूजा-साक्षात्कार की प्रणाली या पद्धति जो कहते है।
  साहित्य-जिससे सबका हित हो, इस प्रकार से व्यक्ति का चरित्र है।
  लाइट ऑफ गॉड सराउंडस मी। लव ऑफ गॉड इन्फ़ोर्सेस मी। पॉवर ऑफ गॉड प्रोटेक्ट्स मी। वेयरएवर आई गो, 'ही इस'।।
  सम्यक-अर्थात सम+अक।सम का अर्थ है पूर्ण । अक का अर्थ है आश्रय, अर्थात पूर्ण के आश्रय से।

भारत-भा माने ज्योति, आ माने आत्मा, रत माने लगे रहना। अर्थात जहाँ के लोग आत्म ज्योति को प्राप्त करने में रत रहते है।
गॉड-गवर्नर ऑफ आल डायरेक्सन्स।दसो दिशा को जो गवर्न करती हो।
आत्मसाक्षात्कार- सः+अक्ष+कार । सः=वह अर्थात पूर्ण ब्रम्ह । अक्ष = देखना एवं संगम है। कार=कुरु (धातु से व्युत्पत्ति) कार या कारय या कार्य हुआ। अर्थ हुआ उस (आत्मा) को देखना या पाना या उसके आश्रित होना या उसके अधीन होना, जैसा आप कह ले।

- समाज ऋण से उऋण होने में असंख्य जन्म लगते है, आपको आदर्श होना है, इसलिए इसका नाम है-सत्संग। बाकी वो सब है- प्रसंग, उनसे भय दूर नहीं होता।

- आपमें ही है वो, वो शक्ति है, महाशक्ति है-उसे विकसित करना होगा। आप स्वयं अधिकारी है अपने आप के लिए। ये जो अग्नि प्रसुप्त है, उसे जलाना है, इसको पाना है। सतगुरु सत्पुरुष के आदेशानुसार, सानिध्य में अभ्यास करें। अपने आप को जानने की जो पद्धति है, वही भक्ति है।अंदर बाहर ऊपर नीचे दाहिने बांये आगे पीछे वही है, लेकिन दिखता नहीं है। हां सतगुरु के बताए उपाय से आप चाहें तो प्राप्त हो जायेगा।

- ये है कर्तव्य-अपने आप को जानना, अपने आप को समझना। इसमें जो आत्मा है, वही जीव है वही परम है। तो हमारा प्रथम कर्तव्य है, अपने आप को जानना।

- यहां पर मैं न रह जाता है न अहंकार रह जाता है बस सतगुरु के द्वारा दिया गया पद्धति, आदेश का पालन हो।

- स्वालम्बी-याने स्व जो आत्मा है, उस पर अवलम्बित होना है। वासना रूपी रुकावट है वह भी अभ्यास से दूर होती जाती है।
  मैत्री भाव रखकर, ऐक्य रखकर, अपने घर में अपने बाल बच्चों के बीच स्त्री से व्यवहार रखते हुए भी-अपने आप को (आत्मस्वरूप) न भूलें।
  अपने आपके लिए समय निकाल करके थोड़ा बहुत प्रयास करें।एकांत में बैठ, चित्त शुद्ध कर, जो प्रक्रिया आपको दी गई है। साधना करने के लिए उसमें लग जाओ। निरोध (रुकावट, वासना का)होता है, इसी जन्म में होता है रास्ता मिलता है और आप आगे चले जाते है।दीक्षा से अभ्यास से अकार उकार मकार(तमोगुण, रजोगुण, सतोगुण / जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति) इन तीनों पर संयम हो जाता है, जिसे ॐ कहते है।संयम हो जाने पर अनुस्वार बन जाता है जैसी सीटी बजती है,तब वह तुर्यावस्था में बिंदु बन जाता है।आप कहेंगे वैसा होगा। ये सत्य है।
  फिर वो सुख है वो अपार है ,उसका अंत नहीं,अनन्त है। आप महान हो जायेंगे। ये महानता आप में आई कि आप जितना देना चाहें, जितना आपको कल्याण करना है, वो होता जायेगा, लेकिन कभी कम नहीं होगा। बराबर आता जायेगा, चारों तरफ से, तो ये प्रक्रिया है-ये है धर्म। ये अपना धर्म है, ये है "स्व"धर्म।
  वो धर्म-जिसमें आप "स्व" (आत्मा) के भाव में आकर, सत (सत्य, सत्ता) को धारण (लघु शरीर भाव से परे) कर,अभ्यास कर अपनी भूमिका दृढ़ करते है।
  फिर सुषुम्ना में प्रवेश कर / घुसकर स्व स्थान (शायद यहां पर आज्ञा चक्र हो) में आकर, मृत्यु को लांघकर (विशुद्ध चक्र) उस पार (आज्ञा में) निकल जाते है।
  वो धर्म (है) - जिससे हम महाकारण शरीर / बोधमयं शरीर / ज्योर्तिमय (क्लाइमेक्स, अल्टीमेट) पिंड (शरीर) याने आत्मा जो परम है-को प्राप्त कर लेते है।

"स्व"धर्म (एक मात्र धर्म, वास्तविक धर्म, सम्प्रदाय रहित, आत्मिक) में रहकर अपना उद्धार करने की जो प्रक्रिया है,यदि आपका निधन भी हो जाय, तो भी श्रेयस है। तो भी आपका जीवन (यह जीवन) श्रेष्ठ है।और आगे भी श्रेष्ठ होगा।

अगला जन्म उत्तम श्रीमंतों के यहां पवित्र कुल में होगा, योगियों के कुल में फिर अगला जन्म होगा (योगी दिगम्बर से बड़ा कपड़ा रंगे रंग लाल से, वाकिफ नहीं उस रंग से, कपड़ा रंगे से क्या हुआ, योगी से बढ़कर और कौन है, योगी = महाशक्ति से जुड़ा व्यक्ति, अर्थात महाशक्ति की अभिव्यक्ति या वो ही महाशक्ति)

और जन्म से ही सब शक्तियां पाकर, आप बहुत विकसित हो जायेंगे। विकसित होकर आप जन्म लेंगे और अपना कल्याण करते हुए समाज का भी कल्याण करते रहेंगे।

ऐसा हो जाने पर आप कितना भी बाटेंगे, वो कम नहीं होगा, कभी घटेगा नहीं। वो तब नहीं घटेगा। धर्म किये धन न घटे, जो सहाय रघुवीर। तुलसी पंछिन के पिये घटे न सरिता नीर।।

बाकी अभी तो, ना..ना..ना, मैं वो मानने को तैयार नहीं कि जितना बाटेंगें उतना आ जायेगा आपके पास।

रघुवीर माने जो योगियों के हृदय में रमण करता है वो रघुवीर।

- ज्ञान गंगा बह रही है-ये त्रिवेणी संगम है। राजा राम जब राज्य करते थे, सिंहासन पर आकर बैठते थे। सारे योगी लोग और जितने जो मुकदमा छुड़ाते थे। न्याय प्रक्रिया जो होती रहती थी, लोगों की शिकायतें, लोग आकरके जो उलाहना देते है, पीड़ा सुनाते थे, जिससे वो तंग हो जाते थे। जो ऋषि मुनि है उनसे वहां उन योगियों के विचार, विवेक बुद्धि वाले वे लोग अपना मत सामने रखते थे। और मत रखने के बाद राजा राम सद्‌बुद्धि के दर्शन करते थे, याने न्याय सुनाते थे, माने योगी लोग जो है।

माने राजा जो है योगियों के अनुशासन में, अनुशासित रहते थे, और जो लोक है जो समाज के है इसको क्या कहेंगे,ये राजा के अनुशासन में रहते थे। राजा से लोक अनुशासित और राजा योगियों से अनुशासित तब वो-राज सुखकर, लाभकर, हितकर जिसको रामराज्य कहे है, हो सकता है। ऐसा मेरा मत है।

- आपको - बिना किये अभ्यास होता है, अनाभ्यास को अभ्यास कहते है इसलिए जितना अनाभ्यास करेंगे, बैठने का काम नहीं है, अभ्यास होता जाता है। ये कभी सुने थे - अनाभ्यास को अभ्यास कहते है।२. ये सभी के लिए चाहिए, अनाभ्यास योगी हाथ लिये चलता है। मुँह से नहीं बोलना है, सारा लेकिन जो रखता है। क्या करता है, ये क्या है? परस्पर विरोधी जो है अपने में है, सब का करता है, और सब कुछ करते हुए नहीं करता है। इन्हीं को ही समर्थ कहा गया, ये है जय जय हे रघुवीर समर्थ।

- जय जय हे रघुवीर समर्थ। जय होता है चरित्र। और कौन क्या बोलते है हमको मालूम नहीं।

- एक और है, पौरुष, आत्मविद्या, आत्मशक्ति। आत्मशक्ति को विकसित करने पर और अधिक बढ़ो, जैसा चाहे वो वैसा होता है। जैसा चाहे वो हर आदमी आपके लिए सब कुछ त्याग करने के लिए तैयार रहता है, सब कुछ करने को सब कुछ देने के लिए तैयार रहता है। तो ये पौरुष, है। पौरुषं माने पुरुषार्थ जिसे कहते है। पुरुषार्थ से क्या प्राप्त नहीं हो सकता? पुरुषार्थ से असम्भव क्या चीज है? सभी कुछ सम्भव है। पुरुषार्थ से, सभी लोग सम्भव है। यह जब जगन्नियंता जो है जगतकर्ता जैसा है, जग का करने वाला, बनाने वाला जब वो जाना जाता है उस पद को आप, उसको, उसकी शक्ति आपको मिल सकती है। उस पद पर पहुंच करके उससे

बातचीत हो सकती है। आप उससे जो कुछ चाहिए,आप प्रश्न करे उत्तर मिलता है। और वो बिना प्रश्न किये भी उत्तर मिलता रहता है। एक तो प्रश्न के उत्तर और एक बिना प्रश्न करके उत्तर मिलता रहता है। और ये सब बराबर भूत भविष्य वर्तमान माने इंट्यूटिव पावर, प्रिडिक्टिव पावर, (पर्मेस्क्टीव्) पावर। ये पौरुषं है। ये तीन प्रकार की शक्तियों से, ये पौरुष जो है, ये इसी का नाम है आशीष, यही आशीर्वाद है। और कोई सन्त मिल जाय, कोई योगी मिल जाय, कोई पहुंचे हुए मिल जाय। ऐसा कुछ डिवाइन बीइंग मिल जाय। और आपको वो मार्गदर्शन कर दे, मार्गदर्शन करने के बाद वो आशीष दे दे, आपका कार्य सिद्ध हो जाता है। विद्या के, पढ़े लिखे नहीं है, लेकिन भूत भविष्य वर्तमान के अंतर्गत सब कुछ वो निष्णात है और सब कुछ कहते है वो हो जाता है।

- वास्तव में ये दोनों बदल जाते है, ये मिट जाते है। और इसी आत्मशक्ति से, यही आत्मज्योति है, यही प्रकाश से, यही ज्ञान से, यही ज्ञान है, यही प्रकाश है, यही ज्योति है।

  वो तुम्हारे दिवाली में दीया जलाते है वो ज्योति नहीं है। वो ज्योति तुम्हारे घर में कुछ नहीं पहुंचाती, वो ज्योति से कुछ नहीं मिलता तुमको। वो बाहर अभिव्यक्ति है, वो क्षणिक है, सर्वं क्षणिकं, वो क्षणिक है। वो ज्योति से आपको कोई ज्ञान नहीं होता।

  ये ज्योति ज्ञान है, ये ज्योति प्रकाश है, ये ज्योति ज्ञान है। ये ज्ञान का दीप जलाओ जो कभी न बुझे, जन्म जन्म न बुझे। हमारे कहने का मतलब ये है, स्वल्पमपस्य धर्मस्य त्रायते महतो भयात...महान भय माने जन्म मृत्यु का जो भय है एक दिन, एक जन्म ऐसा आयेगा उसमें निर्वाण हो जाआगे। ये सत्य है। वाण नाम शरीर का है, बार बार जो मां के पेट में गर्भ में आते है नर्क में आके जो शरीर में लेते है। बचने का प्रयत्न करना चाहिए।

  अपने आप को देखो-मैं नहीं कहता आप संन्यासी बन जाओ, बैरागी बन

जाओ, या तुम समाधि में जाओ कम से कम थोड़ा तो करो। लेकिन ये दीया जलाओ दिवाली को जो आप जलाते है, और फिर क्षणिक है वो एक दिन जलाए तो दूसरे दिन जलाते नहीं। एक दफे, एक दिन भी तो जला दो, फिर बन्द कर दो कुछ नहीं करना। मत हो पागल हमारे जैसे या और लोग तुम्हारे जो जा रहे है, और है। आपका कल्याण होगा और दूसरा पौराणिक लोग आए कथा कल्याण पता न पता, हम क्या करे, बहुत लोग फिरते है, ज्ञानदाता किताबी। किताबी ज्ञान से कुछ नहीं होता।

मैं यही काम करता हूँ और मेरा जीवन इसी में है। मैं भटकता फिरता नहीं हूँ, मैं ये कार्य करता हूँ, कार्य कर रहा हूँ। इस कार्य में सौदा है ये अपना कल्याण कर दो बस।और कहना नहीं, मैं ये नहीं कहूंगा सब कोई समाधि में जाओ, बैठ जाओ पांच मिनट के बाद ,जितना हो सके, कम से कम।

लेकिन ये तो दिया जला लो, कम से कम एक दिन। इससे बढ़कर और क्या धन है,आत्मधन से बढ़कर क्या धन है? धनतेरस है तेरह दिया जला दीये। आप ये, अपने आत्मज्योति जो चिराग है, जलाते है जलकरके, घर में दिया जलाओ, एक बार तो जलाओ।आपके सैकड़ों जन्म के लिए यह कार्य हो गया। ऐसे लोगों को पुरोहित कहा गया। ये पुरोहित नहीं दोना झाड़ने वाले, ला दक्षिणा ला, ये पुरोहित नहीं है। ये पलायन मार्ग के है, ऐसा है। पुरा माने आगे हित हो-आगे आपका हित हो, आपका कल्याण हो, ऐसी उपाय बताये ऐसी आपसे और ऐसा कर्म कराये। मेरे यहां टेढ़े मेढ़े मन्त्र है ही नहीं, टेढ़े मेढ़े कुछ है नहीं, सब सत्य है, सीधा है। मैं ये काम कर रहा हूँ। जो आपकी इच्छा है सौदा बनाये, आपकी इच्छा है न जाय। एक बार कम से कम, दिवाली जैसे एक दिन ये दीया जलाये, अपने आप में ये दीया तो जलाओ।

ये कब तक हम बोलेंगे? और वो भी स्वेच्छा से आइये बस। डर, भयवश,

लालच, जिनको आना है सीखना है, स्वेच्छा से आइये बस। क्योंकि मैं न्योता कभी नहीं देता किसी को। हाँ, विषय हमारा जो सब्जेक्ट हमारा है, विषय जो हमारा है सामने रख दिया। ये कार्य मैं कर रहा हूँ, और इसके प्रमाण है सब जगह, हमारे पास किताब भी है, लोग भी है सब मौजूद है। और आज अच्छे लोग भी है, या, अगर आपको, अपने आप में जाना है अपने आप में रहना है। और ये माँ के गोद से बचना है तो कम से कम ये, आप, कई बार तो इसमें आना पड़ेगा। इसमें यहां बड़े बड़े कीर्तनकार है, ना मालूम कितने जन्म बीतते है, कितने साल बीतते है उनके। एक दिन की बात है। मैं जो हूँ मन्दिर में हाथी में फिरा था। चेतो। मैं वही से शुरू किया हूँ। मैं भी सिंहासन लेकर फिरा, चांदी के सिहांसन, चांदी के सारे बर्तन। लेकिन जब आसन लगाके बैठ जाते थे, चांदी के सिहांसन फासन सब चले जाते थे।

एक डॉक्टर साहब भारती होते थे, उनके घर में रहते थे डॉक्टर साहब जो है। मैं अपनी कहता हूँ, और यही कारण है अयोध्या में बताये न आपको, स्वामी राम प्रपन्नाचार्य वो हमको रोक रहे थे। आप हमारे पास रहिये, आप विरक्त हो जाइये। पत्नी है, एक लड़का हो गया आप मुक्त हो गये। गृहस्थाश्रम, से एक लड़का हो गया माने मुक्त हो गये। तुमको क्या चिंता करना है। ये है, बताया न आपको, घर छोड़ कर बैठ जाइये। बड़े, उत्तर हिंदुस्तान के प्रकांड विद्वान। हम लोग बाहर जाते नही, खाली अपने में रहते है। प्रकांड विद्वान वेदान्त और व्याकरण के।पंडित शिव कुमार शास्त्री पढ़ते थे, और शिव कुमार शास्त्री वही मरे, उनसे हारकर वही मरे। वेद पर हुआ शास्त्रार्थ-आस्तिक और नास्तिक के विषय में। पहले उसको नास्तिक दिये, राम प्रपन्नाचार्य को स्वयं थे आस्तिक में,उसमें हार गये। फिर तीन के बाद फिर से शास्त्रार्थ हुआ, उसको दिये आस्तिक अपना लिये नास्तिक, उसमें हार गये। ऐसे विद्वान है भारत में। अब है कि नहीं, नहीं मालूम। लेकिन अभी की बात है, सन 36-37 की

बात है।..और लाखों रुपया जमा है। और वो रहते थे एक मन्दिर है दो मूर्ति खड़ी है, एक बीच में है दो बाजू में है। बहुत बड़ाई नहीं करना है, ये आत्मप्रशंसा जो है।

कहने का तात्पर्य ये है अपना कल्याण तो करो, थोड़ा सा तो करो। मैं ये नहीं कहता घर छोड़ो बार छोड़ो, बाल बच्चे छोड़ो, कुछ मत छोड़ो, नाही। माँ बाप तो है ही लोगों में नाम है सब है, धंधा करते है, व्यापार करते है सब कुछ करते है, ऐसा है। आगे मत बढ़ो, भाई,इतना काफी है। कम से कम एक दफे ये दीया तो जलाओ, वो दिया जो है। बस इतना कहना पर्याप्त है।

घर में बैठो, उस दिन बता दिया-सोते समय ये आवाज देकर सो जाइये - मैं क्या हूँ? मैं कौन हूँ नहीं, कौन नहीं पूछना। मैं क्या हूँ।ये अनुभव के बोल बता रहा हूँ। मैं क्या हूँ,कौन हूँ नहीं। बस ये बोलकर के सोइये। देखिये आपके जीवन में 12 महीने में कितना परिवर्तन होता है।आपके बुद्धि में आपके सूझ में आपके बुझ में, ये सब बातें होती है। नाके ही दबाना है, पूंछे ही दबाना है, ऐसा कोई,अपने आपको पूछने में कोई हरकत नहीं। आप दुनिया को पूछते है। तुम्हारा नाम क्या है, तुम्हारे बाप का नाम क्या है, कहाँ रहता है? अरे ये तो पता है आदमी आते जाते रहता है, परिचय, इंटरेक्शन। अपना तो देख, बस, मैं क्या हूँ?

हमसे दीक्षा ही लेओ, हमारे पास आके अभ्यास ही करो, ये (नही है)। जिसको आगे निकलना है जिसको पूछना है वो आये दीक्षा लेय। और नहीं तो कोई आवश्यकता नहीं, बता रहा हूँ आपको। इसमें कोई हानि नहीं। कोई भय नहीं, कोई डर नहीं न कोई पराय है, न मग्न है न रहते है। आप जो कार्य करते है वो आप करिये, आराम से करने दीजिये, सोते समय आवाज लगाओ। इतने सरल रास्ता आपको दिया देखिए आप, न माला लेकर बैठना है कि राम राम राम। ऐसा भी नहीं है राम नाम जपना और पराया माल अपना। है कि नहीं, नहीं बैठे है राम राम जप रहे है, अरे

भाई रसोई बनी है कि नहीं, एक आ गया लंगड़ा और नौकरी करने का है, सर्विस जाना है, रोटी बनी है नहीं, और यहां पूजा करेंगे। ऐसा है, मैं मना नहीं करता किसी चीज मना नहीं करता।कितना सुंदर है।

कोई बन्धन नहीं,कोई भय नहीं कोई डर नहीं। बिगड़ेगा का तो है ही नहीं हमारे पास, आप जो करेंगे अच्छे करेंगे। एक ही शब्द है एक ही वाक्य है जो कहना है। एक बाहर निकलते तो है ही नहीं, सब जगह होता है। इमली खाओ इडली खाओ जिसको खाना है आप खाइये। बस इतना ही कहना पर्याप्त है। और मेरी शुभकामना है जो शुभेच्छा है सबके साथ में है: सबका कल्याण हो, सबको अच्छा स्वास्थ्य लाभ हो, सब अच्छे व्यवहार व्यापार करे जिसमें अपना भी कल्याण हो।

एक व्यापार है, एक व्यवहार है। ये जगत जो है व्यवहार से चलता है और व्यापार से चलता है।और अंदर जो जाने का है ये यहां न व्यापार है न व्यवहार है। ये तो सिर्फ अपने आपको जानना है। अपने आप में जानना है, यहां न हींग लगती न फिटकरी लगती। जब हींग फिटकरी लगती नहीं यहां कोई व्यापार तो है नहीं, हमको तो व्यापार रहित होना है। अपने आपको जानना है और बाहर तो व्यापार है, ये तो व्यवहार है व्यवहार में न कोई सच है न कोई झूठ है। ये व्यवहार है।

रि आउट एंड फ्री । ह्रीं नाम मन का है, चित्त का है या मन कहिये। ह्म नाम हरण करना। ह्म नाम हरण करना और ह्रीं नाम मन का है। मन को हरण करके उसको प्रसन्न करके, हम भी प्रसन्न रहे, वो भी प्रसन्न रहे और अपना कार्य जो है होता रहे। हम भी उनका काम करते है वो भी हमारे काम करते है।और फिर भी तैयार है अपना काम करने के लिए, आप जब आवाज देंगे, हम आ जायेंगे, सहायता देने, ये सब व्यवहार है। सारा दिन में निपटाओ, ये व्यवहार व्यर्थ है, व्यवहार ये डंडा मारना नहीं है। ये सत्य है। ऐसा है, बहुत लंबी चौड़ी बातें है ये सब ठीक नहीं है। इतना करना काफी है,आदमी को व्यवहार कुशल होना है, बस। कुशल

माने क्या? कुश+अल, कुश माने कुशा, वन पाइंटनेस। दस आदमी से बातचीत करता है, वो दस से बातचीत करता रहता है। वो सुनता है, दस आदमी से बोलते रहता है।आपसे बातचीत करना है आपके विषय में बोलना है, हा भाई तुम्हारा ऐसा, हा हा भाई ठीक है आप आइये, ऐसे होना। बस एक आदमी से बातचीत कर रहा है, वो पुकार है बोल रहा, कौन सुनता है चिल्ला रहा है कि बोल रहा हो। ये, आजकल ये है।आदमी को बस अवधान चाहिए।

अपने अवधान में रहेगा, उसको आप ही मिलता जायेगा। तात्पर्य ये है कहने का ये है, पागल नहीं होय, अपने आप को समझो अपने आपको जानो, अपने आप को ढूंढों। एक रास्ता आपके सामने रख दिया, बहुत बढ़िया है ये। न बोलने का जरूरत है न समझने का जरूरत है, इतना ही बोलना है और पड़े रहना।जाओ तो पड़े है। (बस आनंद हो, कल्याण हो, कल्याणमस्तु, विद्यामस्तु)

क्या परिवर्तन होता है? ये हमारी जो प्रकृति है, ये प्रकृति में केवल विकृति के सिवाय कुछ नहीं, ये प्रकृति जो है ये विकृति है। विकृति माने विकार। हमारी प्रकृति शुद्ध नहीं है। साधना में क्या है, सिर्फ हमारी प्रकृति को शुद्ध करना है, और कुछ नहीं। प्रकृति माने स्वभाव। ऐसा समझ में आये तो ये, स्वभाव, हमारा जो स्वभाव है। प्रत्येक व्यक्ति अपने ही स्वभाव के अनुसार अपना आचरण करता है और समाज में रहता है। लेकिन अपने हमारे जो स्वभाव है, ये सारे दोषपूर्ण है।और ये दोष प्रत्येक व्यक्ति में है। जो दोष है।

ये दोष है वासना। पहला है, कल्पना, फिर भावना, फिर वासना और फिर कलना। ये चार शब्द है। ये चारों में रहते है आप। ये राम को जिसने राम बनाया ऐसा जो वशिष्ठ गुरु हो गया। योगवाशिष्ठ है वो..।

कल्पना शब्द,कल्पना है, दुनिया भर के कल्पना करते है। यहां से दस दस सीढ़ी बांधते है। कल्पना कल्पना ही है। कल्पना क्यों करते है, एक

तो अनेक जन्मों का संस्कार पहले से है। और समाज में आकरके पढ़ते है लिखते है देखते है सुनते है। तो मनुष्य प्रलोभन में पड़ जाता है। क्योंकि इसकी थ्योरी जो कुछ मुझे मिला है, ये सब बहिर्मुख बनाये गये है। सब बहिर्मुखी है चाहे वो कोई भी सम्प्रदाय हो और कोई भी देशवासी मनुष्य प्राणी हो, उनके इन्द्रियाँ बहिर्मुख बनाई गई है। वो बाहर के ही प्रलोभनों में फंसेगा, वो। वो फंसेगा, फंसेगा मैं हूँ या मेरा बाप हो। वो बोला करे हम विद्वान है, हम पहुंचे हुए है, या हम बड़े त्यागी है, ठीक है। तो तात्पर्य ये है कहने का, ये देखने से संस्कार से, ये कुछ हमारे सामने कुछ चरित्र आते है। उसका चरित्र कहीं मिलता नहीं, लेकिन सारे विकारयुक्त है। सब दुनिया एक जैसी है, बन्धन ये बन्धन भय है ये, धोखा है। सारी दुनिया एक जैसा है।

लेकिन उसमें से निकलने के लिए प्रयत्नशील क्वचित लोग है। और प्रयत्नशील होने पर भी, मार्गदर्शक उनको नहीं मिलते। इसलिए दुनिया जो है-बहुजन समाज बहिर्मुखी है।क्वचित लोग अंतर्मुखी है। ये बहिर्मुखी अंतर्मुखी दोनों की स्थिति एक सा है। हमारी सारी इन्द्रियाँ बहिर्मुखी है ज्ञानेन्द्रिय, कर्मेन्द्रिय आदि आदि बुद्धि वुद्धि सब मन चित्त सब। मन बुद्धि चित्त और अहं ये चार, अंतःकरण कहते है। ये अंतःकरण काम का है। ये अंतर्मुखी वाले के लिए भी है और बहिर्मुख वाली के लिए भी है। हम जब तक बहिर्मुख है अंतर्मुख नहीं हुए है ना पाए है रास्ता वो, तब तक हम विकारयुक्त है। ये लांक्षन नहीं,ये आरोप नहीं सत्य है।

प्रत्येक व्यक्ति वासना में राग द्वेष में (है), दो ही शब्द है, राग और द्वेष। अविद्या, अस्मिता, अभिनिवेश। ये पांच क्लेश में बंधा हुआ है। अविद्या, कुछ भी नहीं जानता, बोलने में समझता, और बोलने पर भी नहीं समझता है क्यों बोल रहा है, ये भी उसको मालूम नहीं। अस्मिता-मैं हूँ, कौन है तो मैं हूँ, अरे बाबा मैं हूँ आपका नाम वाम तो है, नाम नहीं बोलेगा। ये अस्मिता, ये अहं जो है ये मैं। और ये है इगो मैं हूँ, मैं हूँ,कहते है

इसको इगो कहते है ये अहंकार है। अहं तो सबमें है लेकिन कार, माने कुर बना, मैं हूँ मैं हूँ, अपने आपको कर्ता मान लेता है। इसका संकेत मिलता है। क्योंकि बहिर्मुखी होने से ये सारे विकार -राग ये अपना है ये अपना नहीं है। द्वेष ये शत्रु है इनका नाश हो किसी प्रकार से। ये उजड़ जाये यहां से, न आये तो ठीक है, ये सब बातेँ पैदा होती है। कोई व्यक्ति ये नहीं कह सकता कि मैं ठीक हूँ। नहाकर आप शरीर से बाहर से पाउडर वाउडर तेल वेल लगाकरके आये ठीक है आप अच्छे है। अच्छा भाई क्या इत्र लगाये वाह वाह क्या बात है। बस इतना ही है बाकी तो कुछ है ही नहीं। आपके जीवन में कोई परिवर्तन नहीं। सारा विकार उसमें भी भरा, उसमें भी भरा है। अभिनिवेश फियर ऑफ डेथ। माने मृत्यु, मैं मरूं क्या, मर तो रहा हूँ। और मरना ही है सबको, एक न एक दिन। यही विकार है-ये पांच क्लेश है।

हमारे जो कर्म है तीन प्रकार के होते है। शुभ कर्म, अशुभ कर्म, शुभाशुभ कर्म, मिश्र कर्म। कृत कार्य अनुमोदित, एक तो करवाया जाता है, और एक तो करता, स्वयं करता, करवाता है और अनुमोदन करता है। ये तीन प्रकार के कर्म हमारे है,अबाध गति से होते रहते है। एक जो शुभ है, एक अशुभ है और एक शुभ अशुभ मिश्र है। करता है, करवाता है और अनुमोदन भी करता है। ये कर्म तीन प्रकार के होते है।

तो मनुष्य ऐसा बाध्य है ऐसा बध्य है ऐसा बन्धन में पड़ा है ऐसा जकड़ा हुआ है। ये हिल नहीं पाता।क्या करना भाई रोजी रोटी की बात है, ये जो सारा विकार है, ये बहिर्मुखी होने के कारण मानव इतना अपने आपको, माने कुछ भी कहना मुश्किल है। अपने आप से इतना क्या, क्या बताऊँ शब्द क्या बोलूं, माने उसका सारा जीवन अभावपूर्ण है। अभाव के सिवा उसके पास, ये कम है ये कम है ये कम है, ये नहीं ये नहीं, ये देना है वो देना है वो देना है खुद भूखे रहके देना है। ऐसा जिनको खाने का नहीं है वो नहीं दिया कर्जा लाकरके, क्षम्य है।लेकिन जिनके पास खूब है वो

नहीं देता। लेकिन नहीं न्याय सबको पिसते है। खाने को नहीं तो बर्तन तो दे दे, रहो भुखन हमको मतलब नहीं, ये भी स्थिति है, हम नहीं जानते, भई। तो ये पांच क्लेश है। अभिनिवेश, इस प्रकार भय बना रहता है। पक्का मकान सीमेंट कांक्रीट से है, ताला एक दरवाजे पर, दूसरे दरवाजे पर, तीसरे दरवाजे पर खिड़की भी वहां ऐसी की कोई पहुंच न सके। लेकिन घुसने वाला घुसता ही है। तो ये पांच क्लेश है।

और कर्म हमारे जो है, शुभ, अशुभ, शुभाशुभ। इस प्रकार से कार्यरत होकर, कर्म किया जाता है, करवाया जाता है। और अनुमोदन, बहुत अच्छा है मार साले को, देखा जायेगा, हां।मैं हूँ न, मैं खड़ा हूँ। क्या देखते हो। और जहां तुम आगे बढ़े, कि वो खिसके, ऐसी आज्ञा। बोली से भी संकल्प से भी जो कुछ करते है वो भी। एक शेर याद आया ऐसे जब होते है न-तो जहां में जहाँ तक जगह पाइये खिसकते खिसकते खिसक जाइये। काम होने पर, अरे भई क्या करे हमको ये मानसरोवर जाना था, हम इसलिए नहीं आ सके।

- तीन घन्टे सोये तो उनका काम हो जाता है, ऐसा है। हम लोग भोगी है इसलिए बारह बारह घण्टा होना सोने के लिए। और आजकल तो सब बिगड़ गये, बड़े बड़े हो करके सात बजे अगर न उठाओ तो उठते नहीं, नौ बजे तक। बड़े है घर में शादी कर दो तो बच्चे हो जाय, हाँ। लेकिन वो उठाये बिना उठते नहीं। और पढ़ने का नाम, गुण सफा साफ पढ़ते वढ़ते नहीं। ये वृत्ति आज हो गई, वृत्ति जो है अब बदल गई है। तात्पर्य ये है, हमारे कहने का तात्पर्य ये है कोई चिंता नहीं हम जब तीस साल याने जब आपको समझा रहे है अपना अनुभव। प्रीचर मत में प्रॉफेटस, क्या है शुद्ध करने में वाक्य वो, प्रॉफेट, प्रॉफेट माने सिद्ध। प्रीचर माने सिद्ध होना चाहिए। ये मोहम्मद हुए, क्राइस्ट हुए, ये गौतम बुद्ध हो गये, ये सब प्राफेट्स है। सोचिये आप क्या कह रहा हूँ। लेकिन प्रीचर जो है वो

प्राफेट् होना चाहिए। ऐसा सिद्ध पुरुष होना चाहिए,इसलिए मेरा सब स्वानुभव के आधार से हम बोलते है। कि नहीं, इस आश्रम में रहकर हो सकता है। क्यों हो सकता है ये 14 से 16 तक आंख उठा कर देखिये। 12 से देखिये,एकनाथ महाराज को देखो गृहस्थ है,नामदेव को देखो गृहस्थ है।गोरा कुम्हार है।

ज्ञानदेव उठाया, ये उठाया और हमको लाभ हुआ, मिल गया हमको, हां। देखो हमारे तीन सौ है,सब देव टाइप में है। ये देव नहीं नशा पीके पड़े है नाले में, नाले में नहीं पड़ना। आप बन्द कर दो अभ्यास, जी हाँ,आप देखिए वो शक्ति जाग्रत हो जाती है। तुम्हारी वाणी में शक्ति आ जायेगी, तुम्हारी कृति में शक्ति आ जायेगी। सतोगुण उदय हो जायेगा। ये चौथे केंद्र सतोगुण उदय है। सतोगुण माने जो चाहोगे वैसा होता है जिसको ऐसे ऐसे कहोगे वैसा होगा इसलिए ये वली का स्थान है। उर्दू में इसको वली कहते है, वली माने सिद्ध वही से सिद्धि मिल जाती है, आपको, सिद्ध माने पावरफुल। सिद्धि माने पावर, तब वो पावरफुल होता है, यहां से। सब गये है, ऊपर तक गये है, यहां दर्शन होता है आपको माने सब केंद्र तुम्हारे जितनी शक्तियां है।आंख बंद करो, खाली दो मिनट बैठो, हां, हां, ये ऐसा है, बन्द कर दो। अपना काम करो, ये सारी शक्तियां आपको मिलती है कहाँ जायेंगी?

क्योंकि हाईवे में सब अट्रैक्ट है, जितने रास्ते है गांव के ये सब हाइवे में आकरके मिल गये। इसलिए न कुछ करते हुए ये जितने तैतीस है ये सब हाइवे में है क्योंकि हाइवे में आप आते रहते है। ये सारे बैल लेकर खड़े रहते है हाइवे में, समझे ना, ऐसा मिलता है।ये सब सत्य है, मैं अपनी बताता हूँ आपको।

और बिना किये अभ्यास होता है।याने परस्पर विरोधी अनाभ्यास को अभ्यास कहते है। इसलिए जितना अनाभ्यास करेंगे, माने टालेंगे, उतने वो अभ्यास बढ़ता जाता है। ये कभी सुने थे,अनाभ्यास को अभ्यास कहते है।

ये कांट्रेडेक्टरी है, परस्पर विरोधी है। हाथ पैर नहीं चलता है, मुंह नहीं वो बोलता है, वक्ता है। प्रचार करता है, ये क्या है, परस्पर विरोधी है कि नहीं? हाथ नहीं सब काम करता है और सब कुछ करते हुए कुछ नहीं करता है। ऐसा है ये परस्पर विरोधी है। इन्हीं को समर्थ कहा गया है-ये है जय जय रघुवीर समर्थ, समझ में आया।

अब, तात्पर्य ये है कहने का-जैसे इस नारद भक्ति सूत्र केआधार से है। ईश्वर जिसको अपनाता है उसको सब चारों तरफ से उसको नँगा कर देता है। कुछ भी न रह जाता उसके पास तब ईश्वर वो अपना लेता है। तब वो ईश्वर की ओर झुक जाता है। ईश्वर के आधार से अगर देखा जाय तो ईश्वर जिसको नहीं अपनाता, उसके पीछे फिर धन दौलत, घोड़ा गाड़ी, दान दाती, मकान जमीन वगैरह सब बहुत देता है। और फिर जिसको ईश्वर ने जिसको त्याग दिया। वो फिर ईश्वर के नाम लेकर के, ईश्वर ने हमको सब दिया है, ईश्वर ने हमको दिया है। ईश्वर ने हमको सब दिया है, क्या कमती हम ईश्वर का भजन क्यों करे। ईश्वर ने हमको सब बराबर दे दिया है। ऐसे लोग कहते है ईश्वर की देन है, ईश्वर की देन है।लेकिन नारद भक्ति सूत्र किताब पढ़ेंगे अभी, तो उसको ही अपनाता है जिसके पास कुछ नहीं रहता, सब पहले छीन लेता है।

छीन लेने के बाद जब कुछ नहीं रह जाता है,असहाय जब हो जाता है, तब फिर सहायक वो होता है। तो इसलिए ये ईश्वर ने छोड़ दिया इन लोगो को, नहीं।

तो, जिनको ईश्वर ने छोड़ दिया ये लोग ईश्वर का नाम लेते है। ईश्वर ने सब कुछ हमको दे दिया, ईश्वर ने हमको सब कुछ दे दिया। जब ईश्वर ने इनको दिया है हमारे पढ़ने में भी आया है इतिहास में भी है।और महाराष्ट्र में भी ऐसा हुआ है।

कि ईश्वर जिसको दिया है वो जितना बाटते चला जाता है उसका भंडार उतना भरा रहता है। नहीं, कम ही नहीं होता। ये महाराष्ट्र में हुए है, दामा

जी पंत, खजाना भरा का भरा रहता, दान का दान पूरा, गृहस्थ आदमी कुछ न करते हुए, समझे न। तो ईश्वर ने जिसको दिया वो कभी कम होता नहीं। अब बहुत पुरानी उक्तियाँ है, दुर्योधन मालूम था न, उसका नाम था सुयोधन। उसके दुष्ट स्वभाव से उसका नाम दुर्योधन, ऐसा दुख देने वाला, उसका नाम था सुयोधन। भीम उसको बहुत प्यार करता था, याने कुश्ती में सुयोधन बहुत बढ़िया योद्धा था, बहुत ही उत्तम, भीम न बिल्कुल ढीला था। लेकिन सुयोधन बहुत ही चपल था और बल भी था उसको।

तो तात्पर्य यह है कि, दुर्योधन जो था उसके हाथ में चक्र था उसको, तो वो जहां हाथ लगता था, बांटता था उतना ही जमा हो जाता था। तो राजसूय यज्ञ हुआ, कृष्ण ने कहा भई मैं तो एक गौवी आदमी हूँ, राज वंश तो है ही नहीं। मां बाप जो है घर में बैठे है, मेरा भी नहीं है वो। तो मैं खाली पैर धोऊंगा, जो अतिथि आएंगे अंदर जाने के लिए। या जो अंदर प्रवेश करेंगे, प्रवेश मंडप में, मैं सबका पैर धोऊंगा तो उनने पैर धोया। अपने आप को अधिक छोटा बना दिया। पैर धोया सबका। क्योंकि उसको राजा मानते नहीं थे लोग, कृष्ण को कोई राजा नहीं माने, तो पैर धोया। और क्या किया दुर्योधन को भंडार के जो भंडार था उसके द्वार पे बिठा दिया, जो कोई यहां खिलाने पिलाने शुरू हुआ मांगेंगे आप अपने हाथ से सबको देना। वो खुश हो गया कि आज मैं इनका मैं इज्जत हवा में उड़ा देता हूँ, माने ये मांगे एक अपन दे सौ, भंडार खाली कर दूंगा। इज्जत चली जाय युद्धिष्ठिर के, धर्मराज के, ठीक है। जो बांटना शुरू किया, भंडार भरा है, जो बांटना शुरू, माने इतना बांटा गया,इतना बांटा गया कि माने बचा कि इतना बचा कि खाते खाते लोग तंग आ गये।लेके गये लोगों ने,तो भी भंडार भरा हुआ है। उसके बाद उसको ख्याल आया, अरे, अपने हाथ, फिर तो अपने आप, फिर वहां से भागा वो, याने जब सब खत्म हो गया था, जब भंडार ज्यों का त्यों भरा हुआ है तब उसको ख्याल

आया,अरे हमने क्या किया, गये इज्जत लेने, हम ही इज्जत दिये, इज्जत तो अपनी गई अपने से। तो ऐसा होता है, ईश्वर जिसको देता है, वो खत्म नहीं होता है। मैंने एक व्यक्ति को कहा उसको, मैं मदनूर में था जिला नांदेड़ में ताल्लुका भूल रहा हूँ, वहां का किस्सा बताएंगे तात्पर्य ये है मैंने कहा तुम्हारे पास जितना है वो दे दो ईश्वर ने दिया है तो ईश्वर ने दिया वो कभी कम नहीँ होता, कभी कम नहीं होता बात उतनी ही सच है, कभी कम नहीं होता।

जिस दिन हमको बोध हो जाय कि ईश्वर ने ही दिया है हमको फिर तुम्हारे में अहंकार करके नहीं रह जायेगा। जब अहंकार नहीं रहेगा तो तुम्हें बाहर कोई काम करने कि जरूरत नहीं। फिर तो खाली काम करना है, वो करना है, फिर हमको वहां मिलेगा, इसलिए हम काम करते है ये नहीं रह जायेगा।

इसी का नाम अहंकार है, कुछ मिलता है इसलिए हम काम करते है या कुछ मिलेगा करके काम करते है। ये दोनों बातें उसके मन से भीतर में नहीं रह जाता है, वो केवल काम करता है।

ये है सर्वोदयी है, इनका काम निष्काम कर्म योगी है, नहीं, बिल्कुल नहीं। ये तो जमा किये लोगों से, लाखों रुपये लाखो एकड़ जमीन लिये और बांटे जबरदस्ती और इतने क्रूर है व्यवहार में बता नहीं सकता आपको। आप इनकी जमीन में बोओ और, छीन लेते है फिकर नहीं करते कि इनके बाल बच्चे भूखे मर जायेंगे। ये सब सत्य कथा है मैं निंदा नहीं करता किसी के, कि मैं, मेरे पास सर्वोदयी नेता है हमारे पास है आज। चंद्रिका प्रसाद पांडे है अभी आने वाले है,वो रमण लाल शाह है उनके सब मित्र है। ईश्वर ने दिया है कभी कम नहीं होता है, ये सब बोलने की बात है। आप मन्दिर जाते है हाथ धोते है, सब हाथ धोते है, वो खाता नहीं है, कितना भी खिलाये वो खाता नहीं है। और हम तो खाते है। उसको अजीर्ण होता नहीं, मैं तो खाता भई, अजीर्ण होता है, मैं अभी खाऊंगा

अजीर्ण हो जायेगा। हम अभी खायेंगे अजीर्ण हो जायेगा हम खाते है। तो तात्पर्य ये है ईश्वर जिसको चाहता है कुछ नहीं रहता उसके पास में, ऐसे नारद जी प्रमाण है अपने।

इसलिए अब जो सिद्ध होता है ये कि ईश्वर की देन नहीं है ये। ये हमारे काम, क्रोध, मान, मत्सर, राग द्वेष आदि का अहंकार का, हमे ये चाहिए, अपने को चाहिए। ये संसार हमारे है, ये हमारे है ये सब हमारा है। इसलिए ये सारे संसार की रचना हमने ही किया और अपनी रचना में, रचनाजाल में हम फंसे हुए है। वरना कोई फंसा हुआ नहीं, जीवो ब्रम्हैव नापरः, इसलिए शंकराचार्य के मत से।

शंकराचार्य के यहां ये पलायनवाद किया इन्होंने। ये भय है, ये भय है, ये भय है। अरे भय कब तक है जब तक तुम्हारे अहंकार है।अहंकारी आदमी अज्ञानी है, जब तक बोध नही तब तक भय है, बोध होने पर क्या है।

आद्य शंकराचार्य को देखिए आप, वहां भय नहीं है। संन्यास लेने के लिए नदी में कूद गये नहाने मगर उत्पन्न किया, मगर ने पैर पकड़ लिया, मां आ गई। बोले अगर तू आशीर्वाद देती है, तो ये मगर मुझे छोड़ेगा, नहीं तो खा जाएगा माने काहे के लिए संन्यास के लिए। माने संन्यास लेऊ, आशीर्वाद दे तो संन्यास ले जब तक मैं जीवित रहूंगा। तुम्हारा हम काम करेंगे। तो एक शब्द दिये, संन्यासी तो आज छूते नहीं। नहीं नहीं मैं, ये वचन देता हूँ, कि मैं तुम्हारा अंतिम संस्कार, जीता रहा मैं करता हूँ।अच्छा जा बेटा, सन्यासी हो जा। मगर चला गया, माया का मगर, उनमें शक्ति थी, ब्रम्ह शक्ति थी, पकड़ तो लिया चला गया। नहीं, मगर का काटा हुआ आदमी बेहोश न हो जाय। एक भी खून नहीं कुछ नहीं कुछ नहीं बाहर निकले सब अच्छे है।

तो तात्पर्य ये है शंकराचार्य को सब कोई जानते है। मंडन मिश्र हार गये, शंकराचार्य राजा के शरीर में प्रवेश किये। ये शक्तियां है, लेकिन वो रहते

कहां थे वो, प्रचार करने के लिए झाड़ों के नीचे वो रहते थे,उन्होंने बंगला नहीं बनवाये। अपने शिष्यों के लिए वो मठ स्थापना किया और उनको वहां रखा। ऐसे चार दिशा में चार मठ है उनके, चार शिष्य उनने स्थापना किये। उसके बाद वो शक्ति खत्म हो गई। योग जो था, यौगिक शक्ति जिसको शंकर मानते थे कि ये शंकर है, करके शंकराचार्य हुए, वो, ये शक्तियां थी। लेकिन उन्होंने कभी सिहांसन पर चांदी के सिहांसन आदि चांदी के बर्तन, छुआछूत तो, वो छुआछूत तो दूर किये। और ये लोग छुआछूत को पाल रखे है। नहीं उनके नाम पर नहीं पाले अपने नाम पर पाले, उनके नाम पर कुछ है ही नहीं। मैं हूँ, इसलिए धर्म है, मैं हूँ इसलिए धर्म है, वरना भारत में धर्म नहीं रह जाता, यही तो पलायनवाद है न। योगाभ्यास तो है नहीं खाली धर्म धर्म, खाली रुपये जमा किये। बड़े बड़े मन्दिर है, एयर कंडीशन गाड़ियां है, एयर कंडीशन जेट विमान है, सोने चांदी के सिहांसन में चलते और उसी में खाते, किसी को छूने नहीं देते। विपरीत हो गया न। आद्य शंकराचार्य का कहना ये है-करतल भिक्षा करतल वासा, और नहीं उनके लिए आशा पाशा। याने मैं हूँ, हाथ में लेकर खाता हूँ, और जहां।

चलो बोला आगे बढ़ने के लिए उनकी भाषा देखिए पढ़िए न, खाली हम किताब पढ़ते है बस कीर्तन करते है सब खत्म हो गया है वो सब पैसा। तात्पर्य ये है सब पैसे ही के पीछे है, मान और पैसा, मान और पैसा, बाकी कुछ भी नहीं है। वो काम करने को कहीं नहीं बोले है आदि शंकराचार्य ने। लेकिन ब्रम्हसूत्र जब लिखना शुरू किए 16 साल के बाद आयु खत्म हो गई। तब व्यास जी प्रकट हुए तब 16 साल का और आयु दिये तब ये वेदान्त दर्शन आदि शंकराचार्य ने लिखा। जब 32 साल जब पूरा हो गया चले गये, डेथ हो गये। अब बताइये है कोई? सब झूठन ये किताब है उसका अनुवाद करना ये किताब उसका अनुवाद करना, इसको उसको देख के लिखना और कुछ नहीं। इसको उसको लेक्चर देना, सब

लेक्चरबाजी और कुछ नहीं। पञ्चदशी में लेक्चर बाजी और कुछ नहीं, सब सूत्र वेदान्त के है उपनिषद के, इसलिए उसको ऐसे। कहाँ देखें यहां, ये शक्ति अब कहाँ रह गई। समाज को क्या मिल रहा है इनसे, ये है पलायनवाद, अब समझ में आया कि नहीं। उन्होंने (आदि शंकराचार्य, ने) समाज को अपना सारा सुख दे दिया। और ये समाज से सुख ले रहे है, अब समझ में आया। तुम मरो, कमाओ करो और यहां हम बैठे है लाके सब दे दो। और वही हम जायेंगे, हाँ।

ईश्वर ने दिया है भाई, यहां नारद भक्ति सूत्र कह रहे है मैं नहीं कह रहा हूँ। कि जिसको अपनाता है उसके पास कुछ भी नहीं रह जाता है। इसलिए यहां वो ईश्वर आदि शंकराचार्य को अपनाये थे, करके उनके पास कुछ भी नहीं था। तब उनने समाज को ये देन दिया, अद्वैत सिद्धान्त का प्रतिपादन किया, सीधा डायरेक्ट।निंदा नहीं ये हम सत्य के खोज में है, हम सत्य बोल रहे है। संन्यासी बना बैठा है, मैं मरा बोलता हूँ।

मध्यप्रदेश में एक ही संन्यासी है, स्वामी आत्मानन्द। उसके सरीखा लर्नड कोई नहीं। एम, एस, सी, फर्स्ट क्लास साइंस पासआउट है वो। गोवर्नमेंट बुला बुलाके आई, ए, एस का पद फोकट में दे रहा था, नहीं। इसी में है अभी तक, वो रायपुर में है, आप लोग देखो है न रायपुर गये।

तात्पर्य ये कहने का अभी हो गए विपरीत हो गया कि नहीं, पलायनवाद हो गया, भागे कि नहीं असलियत से नकली को लेकर बैठे है।असली को छोड़ दिये ये सब पलायनवाद, भागना। उसमें जो नियम है बताइये आप उनका काम बस्ती में आना नहीं है, आज वो बस्ती में आते गादी वादी में बैठके सब बातचीत ओर तुम्हारे सामने बैठकर खाते है।और संन्यास सिद्धांत से वो मुर्दे है, हां बिल्कुल मुर्दे है, हां वो बोलते है बिल्कुल मुर्दे है, अपना वो पिंडदान श्राद्ध व्राद्ध कर दिये है अपने हाथ से, वो मृतक है मृतकवत है। उनके घर में आने का नियम नहीं, लेकिन आज है कोई नियम, बताइये आप। वो भागे हमारे पास से, बनारस से ये आये थे

मंडलेश्वर वे भागे हम तो सीधा पूछ सकते थे, तुम्हारे सब क्या होता है बोलिये और मेरा जीवन उसी में जा रहा है, खोज में। ऐसा भी नहीं है या तो तू गुरु बन या तो मैं गुरु बनता हूँ तेरा, ऐसा है।यहाँ बकवास नहीं करते,61 वर्ष हो गया खाली तुम्हारे क्या नाम वर्धा, बाबा का घर वो घर में रहके बोलते है ऐसा नहीं है। मैं दुनिया में बिना घर बार निकाला हूँ। ये दस साल हुए हमको घरों में रहना, बाकी सब मैदान है हमारा। ऐसे मठाधीश ने जवाब दिया था, ईश्वर ने दिया है माने उसमें से निकालो, आदेश देता हूँ, तुम्हारी इज्जत नहीं ले रहा हूँ मैं। हाँ आंतरिक है वो चलो आप मेरी कमाई हमको दे दो। और ईश्वर दे गये वो गये भाग गये, वो। यहां हम बोले एक दफे हमारे जितने चेले है सब करोड़पति है, सब तो नहीं लेकिन बहुतेक सब करोड़पति है। माने एक एक लाख रुपया जमा कर दो उसके ब्याज से मेरा सब काम होता है। सारे हिंदुस्तान में है, एक आदमी ले करके, अरे वो धन तुम्हारा है, जब तक जीवित है, जब तक ब्याज मैं लूंगा। मरने के बाद रकम तुम्हारे,तुम्हारे पास, लेकिन हिम्मत नहीं, ये है दमड़ी ये है चमड़ी, सोचिये आप। वो दमड़ी ने हमको त्याग दिये इसलिए हमारे पास दमड़ी वमड़ी नहीं, बहुत इच्छा है हमारी दमड़ी की, अभी भी दमड़ी हो जाय तो सब ठीक ठाक हो जाय, एक भी दमड़ी हमारे पास नहीं आती, भाग जाती है। तो तात्पर्य ये है जिसको ईश्वर चाहता है उसको साफ, सूफ कर देता है, और फिर अपना लेता है। ये नारद भक्ति सूत्र का प्रमाण है, नारद भक्ति सूत्र का किताब है। और उस व्यक्ति को लूटा, ये नकली साधुओ ने खूब लूटा, और मेरे पास इतना रोया कि मैं क्या बताऊँ मैं, इसलिए बाबा की याद आती है हमारे पास ऐसा है।इतने प्रसन्न हुए हमसे, वैद्य व्यक्ति था वो वकील था, कोई मामूली आदमी नहीं था, उसके पास बुद्धि है, तर्क है, सब है, ये किताब उनके पास है। इसलिए हमारा कहना है, गृहस्थाश्रम में ये सब हो सकता है।

कि हमने देखा है सन्त, महाराष्ट्र में सन्त ही सन्त तो थे उस काल में तो हम क्यों पीछे रहे। पचे उतना तक पचाओ, उसके बाद बन्द करो, अपना घर बार करो, पागल मत बनो पिशाच मत बनो। ये हमारा कहना है, आजकल यही हम बोलते है सब। जितना मालूम है उतना ही बोलो, जितना मालूम है उतना ही करो। नहीं मालूम पूछने में कोई लज्जा नही है। जो चीज नहीं मालूम पूछने में कोई लज्जा नहीं।

कि व्यक्ति जन्मतः मूढ़ है। मूढ, मूढ़, अविद्या कुछ भी नहीं जानता। और बताओ तो वही सीखता है, बताओ वही पढ़ता है, बताओ वही बोलता है। मां जैसी बोलती है, मां बाप जैसे लड़के बोलते है। माने लड़के की बोली भी उनकी बोली, मां बाप की है, अब ये समझ में आया न। ये सब मानने की बातें है, सब।

और ये जानने की बातें है, जान लेने के बाद वो मौन हो जाता है। वो जो बोलता है सही बोलता है,और उसके पास कुछ नहीं, रहता, ये ईश्वर ने चाहा है उसको।

और जिसे ईश्वर ने नहीं चाहता सारे पीछे चारों तरफ से सांप, बिच्छू, गोचड़, मकोड़े, चींटी चींटा ये सब लगे हुए है।

मैंने एक पिक्चर देखा था। एक पंख और उसके नोक है, और उसके डायरेक्शन में ऊपर आकाश है, बादल, एक सूर्य चमक रहा है, गोल्डन कलर का सूर्य चमक रहा है।और कन्ध है ऐसा टेढ़ा है, बिल्कुल जो अनुभव है सूर्य की तरह है, एक व्यक्ति, साधक एक मनुष्य उस कन्ध के आधे दूर तक, पकड़कर चल रहा है, लेकिन क्या है उसके कमर में एक रस्सी है, कमर में एक रस्सी बंधा है नीचे, उसे लपेटा है नीचे, जमीन पर आ गया। अब रस्सी पर क्या है मालूम, बिच्छू है,गोचड़ है, सांप है मकोड़ा है माने ये दंश करने वाले जितने जंतु है वो सब रस्सी पर लिपटे हुए है और ऊपर चढ़ रहे है। आधी रस्सी तक है, और वो कमर में है और वो बीच में अधर लटका है, अब ना ऊपर जाता है न नीचे आता है।

उत्कर्ष की ओर, हमारी किताब में नाम दिया है न परमोत्कर्ष। वो परम है वो, हमारा परम हो चुका है, इसलिए परमोत्कर्ष कहा है उसको। उसमें है उत्कर्ष की ओर, प्रत्येक व्यक्ति उत्कर्ष की ओर जाना चाहता है, ये है उसका मतलब। स्पष्टीकरण क्या है। प्रत्येक व्यक्ति उस उत्कर्ष की ओर सब कोई जाना चाहता है। लेकिन उसके कमर के पीछे जो डोरी है, वासना रूपी डोरी, उस वासना में कितने बिच्छू घुसे और साँप लटके हुए है, वो जाने दे तब ना, समझ आया की नहीं। ये जब काट के फेंको तब चले जाओ। या तो फिर वापस आ जाओ, गिर जाओ तुम भी मर जाओगे।

तात्पर्य ये है हो सकता है मिल जाय आपको, मैं बिल्कुल ये सोच करके समाज में उतरा हूँ मैं, मिलता है सब है मगन है मस्त है लेकिन पचाओ। क्योंकि वो देव है, ये, ज्यादा खायेगा तो अजीर्ण हो जायेगा क्योंकि ये मनुष्य है, देव तो है नही।और वो देव ऐसा है वो खाता नहीं इसलिए उसको अजीर्ण होने का डर ही नहीं, कितने भी चढ़ाओ, दिन भर लोग जाके चढ़ाए दिन भर लोग उसको दे वो खाता नहीं। दिन भर लोग उसको देते है। और ये, दिन भर खायेगा तो अजीर्ण हो जायेगा, तो डॉक्टरों को पैसा कौन देगा, बीमार होगा कौन देगा, कोई नहीं करता। तो ये ईश्वर की दी हुई है सब ईश्वर भक्त ईश्वर भक्त बोलते है, ये हमारे समझ में नहीं आया अभी तक। अच्छा प्रमाण मिल गया अपने को नारद भक्ति सूत्र में बहुत बढ़िया बताया है उनने। अब सोचने की बात है ईश्वर की देन क्या है और ईश्वर की न देन क्या है, नही, सोचो भई।आप लोग समझदार है, सब। माने वो ईश्वर मायोपाधि है। मायोपाधि ईश्वर सब देता है जो मांगों सब देता है। जिसने रिद्धि सिद्धि मांगा वो वही साँप बिच्छू बन जाता है, क्योंकि वो शक्ति जहां मिली फिर तुम सारी दुनियां को तंग करना शुरू कर दोगो।

चांगदेव ने यही किया, स्वामी रामदास जी के जो शिष्य था, जा रे तू भीख

मांगता है भिखमंगा भीख मांगता है जा रे तू दिन निकलते ही तेरी मौत हो जायेगी। कितने लोग मर गये उसके शाप से। लेकिन स्वामी जी भेजे अपने शिष्य को ऐसा उसने कहा, बैठ हमारे पास कम्बल बिछा दिया खाये पिये रात में, मेरे पूछे बगैर बाहर कदम न रखना, कम्बल के बाहर न निकलना कम्बल के बाहर पैर न रखना, कोई कितना ही बुलाये, तुम्हारा माँ हो बाप हो दाई हो कोई भी हो, शिष्य हो कोई भी हो, ठीक है अपना पैर बाहर न हो। चार बज गये पांच बज गये वो डर गया अब मरेंगे हम, छह बज गये, सात बज गये, आठ बज गये, दिन निकल गया नौ बज गये। अरे भई जा उसके दरवाजे पर जा, जय जय रघुवीर समर्थ, फिर आ गया।अरे हाँ भई हाँ है, तू आ गया, तू मरा नहीं, मरा नहीं तेरा कौन कोई गुरु है, हा है। हां दिखा, मैं देखना चाहता हूँ, गया जो गया। तो ये है सिद्धि ,सिद्धि पावर के लिए जो आदमी अभ्यास करता है,इस प्रकार से उसका नाश होता है। भला नहीं हो सकता संसार में उसका। इसलिए जैसे जैसे आप मुँह मोड़ेंगे, वासनाओं से जैसे जैसे मुँह मोड़ेंगे, वैसे वैसे आप शक्तिमान होते चले जायेंगे, और बिना किये आपसे लोगों का कल्याण होता रहता है। ये खास बात है, क्योंकि वहां मैं नहीं है, जहां मैं है, वहां अभिशाप है।

जहां मैं नहीं है उशाप है, उशाप याने मुक्त है, बन्धनों से मुक्त है।और जहां मैं है,अभिशाप है, ना मालूम कितने लोग उसको शाप देते है कितने लोग कोसते है, ये सब शाप है। इसलिए मैं जाना चाहिये, ये तत्व जिसने समझ लिया कि इसी से सब उत्पन्न हुआ है, जब उससे उत्पन्न हुआ, ये सारा विराट वही है जब विराट वही है तो हम क्या विराट में नहीं है क्या? हम भी तो विराट है, जो सबमें वही है हमारे में वही है, इसलिए दूर और दुराभाव कहाँ है, एक जैसे ही है सब। लेकिन ये अभ्यास के बाद होता है, कहने से नहीं होता है।

चल लड्डू मेरे मुंह में, चल लड्डू मेरे मुंह में, चल लड्डू, उसको अभ्यास

करना पड़ता है माने क्रिया करना पड़ता है, ये है क्रिया, आ, अब गया। क्रियायोग बिना कुछ नहीं होता न बाहर न भीतर। बाहर दुखदाई है और भीतर सबका अंतदाई है, सारे दुःखों को दूर करके, आपको मालूम पड़ जायेगा। तातपर्य ये है ये आनन्द है, यही आत्मानन्द है, यही नित्यानन्द है, यही ब्रम्हानन्द है, यही स्वानन्द है और यही आनन्द है। यही इंग्लिश में कहते है ब्लिश। सदा मस्त रहते है जगत में तब वो समाज के लिए आदर्श होता है, और परिवार के लिए भी आदर्श होता है। जिसके पास कुछ नहीं, लेकिन व्यक्ति आदर्श होता है जिसके पास सब कुछ है, वो उसकी सेवा करता है। लेकिन ये कहता है भाई, ईश्वर ने बहुत दिया, लेकिन ईश्वर नहीं देता है। ईश्वर ऋण चुकाने के लिए, आप जितना ऋण लेकर आये है, न, आपको उतना ऋण देना है। इसलिए आपके पास उतना धन का संग्रह हो जाता है और रहते हुए देते है, और चलते चलते सबको लिख के देते है। मतलब, वसीयतनामा और किसको किसको देना किसको कम ज्यादा देना, वो सब सामने आता है, तो देना है।

वो अपने आपको बचाने के लिये कहता है ईश्वर ने दिया है, ईश्वर जिस दिन दे देगा, तो आंनद हो जायेगा, वो कभी कम नहीं होता, हां। क्योंकि वो चंगा रहता है, मन चंगा तो कठौती में गंगा। काशी में एक ऐसा हो गया, एक पर्व ऐसा आया। जैसे पार्टी पर गये समझो, गंगा में गये, सब नहाये। एक अच्छा संपन्न परिवार, गए बाल बच्चों के, करोड़पति। गंगा नहाने गये, एक बड़ी लड़की थी, नहाये सोने के कंगन और कंकन बेलूर चैन वैन सब लगा था। गंगा में उतरे नहाये, हाथ पाँव धोते समय, एक कंगन उसमें से खिसक गया, रेती में चली गई। वो रोने लगी माँ बाप क्या बोलेंगे क्या नहीं पता नहीं। एक कंगन के जाने पर करोड़पति आदमी व्यक्ति क्या बोलेगा, वो डर गई। माने ईश्वर ने दिया है समझ गये न। माँ बाप हो जो कुछ हो माने ईश्वर का दिया हुआ समझे न। बाहर निकली फिर अंदर गई बहुत ढूंढ़ी। ढूंढने वालों को लगा दिये नहीं मिला। गंगा

की रेती है, रेती ऐसी बहती रहती है,आप खड़े हो तो पैर के नीचे रेती खिसक जाती है, इतना प्रबल धार है, नहीं मिला क्या करे। माँ बाप कुछ बोले नहीं, ठीक है, चले अब ऊपर जब आये, एक चमार (आत्माराम) बैठा था रास्ते में, ऊपर। अपना पानी कुछ डँगाल में कुछ नाती वाती, खीला वीला हथौड़े और चमड़े, कुछ खीले पुराने टुकड़े जूते सड़े गले लेकर के। वो रो रही, रोती हुए जा रही थी, अरे बोले बिटिया, काहे रोवत है,अरे बाबा हमारी अब बड़ी कुटाई होई अब घर में बाहर तो नहीं। का भा का भा, का भईल बा, ये बोली है। ये पूरी बोली है। हमारी, हाथ की कंगन जो है ये गंगा मैय्या ले गई, लेइल बा। अरे गंगा मैय्या कभी नहीं लेती, वो सब को देती है। बोले गंगा में अभी नहाये नही हो। गंगा कभी लेती नही गंगा तो देती है, ये जो है देना जानती है। लड़की बोली हमारी हंसी उड़ावत है, नही बोले, कंगन ढूंढे है? नहीं पाए, बोले हमारे कठौती में हाथ डालो। काठ का बर्तन पहले घर घर में था अभी भी है, पानी भरा है ये चमड़ा, हाथ डाल और ढूंढ, ढूंढ अब ,तेरे को कंगन चाहिए न, वो लड़की लोग है 12-14 साल के, वो काहे को सुनती है वो हाथ डाला ऐ हे हे कंगन, अरे ये है। कंगन मिल गया उसको कहाँ गुमा और मिला कहां। ये है मन चंगा तो कठौती में गंगा। ये कहावत किताबी नहीं सत्य कथा है। है तुम्हारा मन इतना शुद्ध है, निर्मल है? चंगा माने मलरहित। फिर ईश्वर इस तरह दे रहा वहां चंग है। ये मालूम हो जाय कि मेरा सब कारोबार ही ईश्वर ही करता है। तो फिर मैं करता हूँ, मैं कुछ है, ये करना सब खत्म हो गया। अब तो हमसे काम लिया जाता है, भाई मेरा काम है। जब आप निरपेक्ष वृति होकर है। मैं मेरा बाप जितने बैठे है कोई भी हो। है बोलते है न ये कहानी है, कहानी नहीं ये सत्य कथा है। मन चंगा तो कठौती में गंगा। मैं यहां नहीं है, अपने से मैं यहां नहीं है। ये सन्यास आश्रम नही ये पलायनवाद है, और आगे बोलना अच्छा नहीं , हम जानते है कि ये अच्छा नहीं है। अभी लड़की बैठी है इसलिए कुछ नहीं बोल रहा हूँ, मर्यादा

समझता है सब। तात्पर्य ये है यह है। बना है दाल भात बना है कोई बाम्हन बैठा है आया, ये किसी हाथ के खाते नहीं ये, कनौजिया नौ कनौजिया तेरह चूल्हे, ऐसा बोलते बोलते लग गया उसमें तो क्या हो गया, उसमें दाल जो है वो गिर गया, सारा दाल उल्ट गया, खाली भात भर रह गया, बोले महाराज सूखा ही भात मीठ लागत है। क्या, दाल ही नहीं तो क्या कहे कौन बनाये घन्टा भर। सूखा ही भात बोले अच्छा लगता है, बहुत मीठा। ऐसा है जो बच गया वो ही सही। तो पहले हमने अपने जीवन में ऐसा किया है, दाल भात सब एक साथ बनाते थे लेकिन जो पहले पक गया सो हम पहले खाते थे। जो चीज पहले पक जाय वो हम खाते थे। ऐसा क्यों, अरे भाई तब तक कौन बैठेगा? सब्जी पहले पकती थी दाल फिर रोटी। पहले बहुत अपने आप को सताये।

तो मन चंगा तो कठौती में गंगा। तात्पर्य ये है ये ईश्वर की देन जो समझे वो समझा, नहीं तो बगैर समझे लोग ईश्वर का नाम लेते है। ईश्वर की देन नहीं ये जन्म ऋणानुबन्ध है, ये ऋण है जो सब जमा है इसलिए। व्यवहार में वो धनिक है और वेदान्त में वो ऋणी है। या अधिक ऋणी है (जो) अधिक धन (धनी) है, दोनों बराबर है। हमें उऋण होने के लिए ये सब जमा होता है, ये सत्य है, और ये दे देने के बाद उऋण हो गए ये भी सत्य है। ठीक है। इसलिए ये नहीं कहना चाहिए ईश्वर ने हमको दिया हमको क्या करना का वेदान्त का। वो दोनों बाजू को तैय्यार करता है। तुम्हें दोनों बाजू को याद रखना है। ठीक है, जन्म रूपी ये सिक्का है इसके दोनों बाजू व्यवहार और वेदान्त दोनों से हमें मजबूत रहना चाहिए। इसलिए इतना ना खाओ की अजीर्ण हो जाय और बिल्कुल न खाओ की आप मरने को तैय्यार हो जाओ। ॐ युक्ताहारविहारस्य युक्तचेष्टस्य कर्मसु । युक्तस्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःखहा । योग भोग उद्योग, ये सब योग है, प्रकार भिन्न है। योग क्या आहार करे जो ये शरीर का पुष्टिकरण हो। व्यवहार जो हो नियमित हो सीमित हो, समझ कर हो, जो

आप कर्म करते है योग्य करिये। इतना काम करो कि आप तक जाओ इतना न करो कि आप बीमार हो जाओ, कर्म जो करते है, कोई भी कर्म जो करते है सामाजिक हो राजनैतिक हो पारिवारिक हो ये सब सीमित हो, जहां तक शक्ति है वहां तक करना फिर हाथ जोड़ लेना। ॐ युक्ताहारविहारस्य युक्तचेष्टस्य कर्मसु। युक्तस्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःखहा ॥

- रामदास का मार्ग मेरे से भिन्न नहीं है, रामदास शादी नहीं किये भाग गये, मैंने शादी किया और बाल बच्चे है।
  ये जैसा दिखता है ,वैसा नहीं है। इसमें जो अभिव्यक्ति है-वो महाशक्ति है, वह सर्वशक्तिमान है। सब जगह विद्यमान है।
  जो सत्य मुझे मिला, वही दीक्षा के रूप में दिया।
  बगैर खीझे अनासक्त भाव से मौनावस्था में रहने का प्रयत्न करो।
  गुरु को समर्पण ही आत्मा (सर्वव्यापक, सवर्त्र: गुरु = आत्मा = ब्रम्ह) को समर्पण है।
  जीवन काल में अंतिम सांस तक इसे नहीं छोड़ेंगे, क्योंकि ये आत्मदर्शन है, आत्म साक्षात्कार है।
  सब हमारे अंदर है, हम ही है, अपने आप को पढ़ो, जब तक प्रकाश न मिले। अंतर्मुख हो जाएंगे तो प्रकाश आ जायेगा।
  एक क्षण भी अहं ब्रम्हास्मि के बिना न बीते।
  अनेकों जन्मों के बाद होते होते कृष्ण हुए।
  सिर्फ बैठने की आवश्यकता है, अभ्यास तो करना ही पड़ेगा।
  जो योगी संसार को पेट में रखकर; अर्थात-ब्रम्ह से प्रकाशित माया को समेटकर, परमेश्वर रूप कारण में "दृष्टा दृश्य विहरित स्थिति। न भाव, न अभाव। न दिन है, न रात है। संधिकाल। सकल दृश्य जगत को अपने में समाहित करके:कार्य रूप अतिभाव जगत को लय कर लेता है। निद्रा और अज्ञान को त्यागकर सोता है:-जिसे जाग्रत समाधि भी कहते है।

जब अयं आत्मा का:दृढ़ निश्चयी बोध (प्रतीति नहीं) होता है, तब उसे आत्मसाक्षात्कार कहते है।
जब आप उस स्थान पर अखण्ड रूप से प्रतिष्ठित हो जायेंगे : तब सर्व खल्विदं ब्रम्ह, के समान हो जायेंगे और उसका अनुभव होने लगेगा।

● सत्संग-सत माने आत्मा, दिव्य शक्ति। उस ओर व्यक्ति झुकता है, तब उसका भाव उस ओर झुकता है।
स्वालम्बी-अपने पर जो, आप है।आत्मा है, उस पर अवलम्बन रहना चाहिए।
अद्‌भुत रस-ब्रम्हरंध्र में प्राण स्थापित होने पर सारा ब्रम्हांड ज्योति से भर जाना। जिसको वर्णन नहीं कर सकते।
समर्थ-वो जैसा सोचता है वैसा होता है, जैसा बोलता है वैसा होता है। उसका सोचना काफी है।कर्तुम अकुर्तुम अन्यथा कर्तुम ससक्तः। आत्मा की शक्ति को पहचानने, प्राप्त करने से हम समर्थ हो सकते है।
स्वर्णसन्धि-मनुष्य का जन्म स्वर्णसन्धि है, इसे नहीं गंवाना चाहिए। जीवन्मुक्त होने के लिए यह जन्म मिला है। नाना योनियों में, अत्यंज, अंडज आदि में भटकते हुए हजारों साल बाद, कभी मानव शरीर मिलता है।
देही-इस देह को धारण करने वाला याने आत्मा जो परम है।
वासुदेव-सारा जगत जिस सत्ता के अंतर्गत है, जो सत है। वही वासुदेव है। सत्ता=वासुदेव, सत=वासुदेव।वासुदेव ही प्रकृति है, प्रकृति-विराट रूप ईश्वर का। इसलिए जो कार्य होते है प्रकृति ही करती है। (प्रकृति की क्रिया का नाम धर्म है)
स्वधर्म-स्व माने आत्मा, आत्मोत्थान के लिए जो प्रक्रिया चाहिए, वो आपको (गुरुजी से) मिली है।
चंगा-मलरहित,मैं यहां नहीं है। अपने से मैं यहां नहीं है।
ब्राम्हण-नवगुण सम्पन्न व्यक्ति। ऋजु,तपस्वी, संतुष्टः, दाता, ज्ञानी,

जितेंद्रिय, क्षमा, शीलो,दयालुश्च, ।
शिष्य-ये संकल्प होना चाहिए, मर जायेंगे लेकिन छोड़ेंगे (सतगुरु आदेश में निमग्न) नहीं, तब वो चेला, चेला शिष्य है। वरना वो ठग है।
एकनिष्ठता-मनसा, वाचा, कर्मणा। गुरु और ब्रम्ह में एकात्मकता विकसित होना ही एकनिष्ठता है।
दीक्षा-जो सत्य मुझे (तपस्या से, जन्मसिद्ध) मिला वही मैंने दीक्षा के रूप में दिया। आपके पास रहकर, सूझबूझ देकर, आश्वासन देकर। आदेश / दीक्षा से प्राप्त अभ्यास विधि, दिया गया उस प्रकार से बुद्धि में रखकर अभ्यास में लग जाना चाहिए। और किसी प्रकार की चिंता नहीं करना चाहिए। (यही दीक्षा में है)
मोक्ष का लक्षण-उसको अंदर ही अच्छा लगता है, अंदर जाकर जो कुछ मिलता है उसे स्वजन परिजन को बताया करता है, कि बड़ा आनन्द आता है और सदा प्रसन्नचित्त रहता है।
क्योंकि उसे कोई चिंता नहीं। मोक्ष का यही अर्थ है लक्षण है। जब तक तीसरी आंख नहीं खुलती तब तक मोक्ष नहीं होता।
विदेह-माने अंतरमार्ग में उसकी सदैव लौ लग जाना।
धर्म-आत्म धर्म, वो है आचरण, चारित्र्य। सत्यम वद, धर्मम चर। निष्काम कर्म जब पूर्णत्व में आ जाता है तब धर्म बन जाता है।
आस्तिक-कई बार मृत्यु केंद्र पार करके। सारा वसुधा मेरा कुटुंब है, ऐसी वृत्ति जब हो जाय। तब तुम आस्तिक हो। वरना ठग हो।
सम्यक जीवन-एक ही मार्ग / आत्ममार्ग है, तुम्हारे जीवन में साक्षी चाहिए(स्वयं को प्रत्येक कार्य घटना परिस्थिति को, निरपेक्ष /आत्मा , होकर देखना)। चरित्र में भी साक्षी चाहिए। आत्मा जो समाधिस्थ हो जाती है, ये सम्यक जीवन है।
मन-आत्मा और अनात्मा के बीच रहने वाली विलक्षण वस्तु है। मन ही जगत है। सारे अनर्थों की उत्पत्ति मन से ही होती है। दृढ़ता से लड़ने पर

मन की शक्ति घटती है और एक न दिन वह अवश्य विजयी होता है।
बीज-हमने आत्म ज्योति का बीज बोया है। जो पूर्ण है। ज्योति इधर से आयी उधर गयी, ये स्थिति नहीं है। आपको उसमें / ज्योति में, रहना होगा।
गुरुजी-गुरुजी को याद करो और कार्य आरंभ कर दो। गुरुजी तुम्हारे रक्षक है, सेवक है, सारा सार गुरुजी शब्द में छुपा है। सब कुछ गुरुजी पर छोड़ दो। एक निष्ठा, खाली स्मरण करना है।
मुक्ति-आपकी बुद्धि निर्मल बनी रहे, औरों का कार्य होता रहे। आत्मानन्द प्राप्त हो। बस यही मुक्ति है।
दुःख-दुःख पैदा करने वाले तत्व लोभ, मोह, तृष्णा आदि भीतर विद्यमान है। बाहर से कुछ वस्तुएं देकर मिटाना चाहते है, क्या यह सम्भव हो पायेगा? दुःख नहीं जाता जब तक भीतर दुःख पैदा करने वाले तत्वों का अंत नहीं होता। मिथ्या दृष्टिकोण मिटे बिना दुःख मिट नहीं सकता। जिसे दुःख कम करना है उसे मोह पर ध्यान देना / मोहरहित शायद, होगा।
वर्कर-फल देने वाला वो / आत्मा / गुरुजी, है, तो कार्य से हम वर्कर है, वो स्वयं सफल विफल नहीं है। जिसका काम है, सफलता विफलता उसकी है। हम तो निमित्त है, वो ही कर्ता धर्ता है।
सत्वशुद्धि-पंच क्लेश-अविद्या,अस्मिता, राग-द्वेष, अभिनिवेश.मृत्यु भय । ये सब शुद्ध हो जाते है। मृत्यु भय चला जाता है। (सत्व नाम बुद्धि का हैं) इसी को सत्व शुद्धि कहते है। (तब ये ज्योति आयगी, जायगी। आयगी, जायगी)
मन का केंद्र-आज्ञा चक्र है,बुद्धि को मन को चित्त कहा गया है।सारा संसार हमारी बुद्धि में है। ये भेदन हो जाने पर शुद्धि हो जाती है।
पंडित-जो जीते जी मर चुका हो, पंच तत्वों का बोध हो, ज्ञान हो।
निर्जरा-हृदय माने मन, मन में जितनी हमारी वासनाएँ है, अनेक जन्मों के संस्कार है। ये मृत्यु केंद्र के बार बार भेदन से, जो विधाती कर्म है जो

बार बार जन्म लेना पड़ता है। ये सब जलते जाते है।यही निर्जरा है।
मूल स्थिति में चले जाना-साधक स्वल्पकाल में ही अपने मूल स्थिति में चला जाता है। वो मन्त्र है-दासोअहम।
संस्कार का न बनना-बुद्धि आत्मा के साथ संलग्न है (सब आत्मा है, आत्मस्वरूप है) तो मन पर दृश्य या ध्वनि का कोई परिणाम न हुआ या संस्कार बने नहीं।
सजीव देवालय-देह रूपी सजीव देवालय में आत्मा ही देव है। आत्मा जो दिखती नहीं, वह निरंजन है,वह तुम ही हो।
व्यवहार-हानि, लाभ, सिद्धि, असिद्धि, बराबर करके कार्य करो। यही व्यवहार है। मन बुद्धि चित्त से आत्मा में बने रहना है, मन वचन कर्म से व्यवहार करना ही व्यवहार है। व्यवहार करने आना चाहिए, आत्मस्थ रहकर। आत्मा रूपी सूर्य से दूर रहकर, व्यवहार कुशलता नहीं आ सकती।
समाधि-बुद्धि जो समाहित हो गई है आत्मा में, तब सम्यक जीवन शुरू होता है। ये कोई जीवन है, जिसमें पतन के सिवा कुछ भी नहीं है।
आत्म निवेदनं-आत्मा को अपने आपको सौप देना।ये मामूली बात है? आप जिसे शरण कहते है, ये शरण शरण नहीं, आत्म निवेदनं-ये है, शरण।
विश्व-माने श्वास लेने वाले प्राणी को ही, ये लोक को ही विश्व लोक कहा। जब तक ये श्वास आपके कंट्रोल में नहीं आता, अभ्यास के द्वारा। तब तक वो दरवाजा खुलती नहीं। जब तक आप मुक्त नहीं।
ईश्वर-कोई व्यक्ति,वस्तु पदार्थ नहीं है। वह तो है अखण्ड क्रिया, जो कि प्रकृति में अबाध गति से सतत चल रही है। ये है निरन्तर चलने वाली, उत्पत्ति, स्थिति एवं लय की क्रिया जो अनादि और अनन्त है।
परमात्मा-इस देह में वो परमपुरुष है, उसे साक्षी / उपद्रष्टा, अनुमन्ता, भर्ता, भोक्ता, महेश्वर, परमात्मा कहा, जिनका ये ऐसे नाम है। तो

परमात्मा माने आपमें जो है, वो परमात्मा है। वो अच्छे से अपने आपको सब जगह स्थापित किया। और विशेष रूप से अपना पूर्ण रूप से आपमें। आपमें अपने आप को स्थापित किया।और फिर से अलग हो करके, सबका सबको धारण किया। इससे वो विश्वपति हो गया। जब तक आप विश्वपति को प्राप्त नहीं होते, तब तक आपका शोक, मोह, भय जा ही नहीं सकता।

पांडुरंग-माने रूप और नाम जब एक हो जाते है। इन्द्रियाँ रूपी आवरण जो है गिर जाता है। बाह्य आकर्षण जो है जल जाता है।और जलने के बाद दीवाल नहीं उठती, पर्दा नहीं उठता, सब भस्म हो जाता है। भाव शुद्ध हो जाता है। ध्यानी माने रूप हो जाना। भाव शुद्ध हो जाता है। ध्यानी मनी, जब पांडुरंग हो जाता है, तब समाधि, समाधि है। (खाली जीने के लिए खाना है, अभ्यास करने के लिए ताकि विग्रह पैदा न हो, विचलित न हो, अपनी जगह से। थोड़ा बहुत मिला, खाये पीये और लग गए अभ्यास में)

- हम अपनी संस्कृति को भूल गए है, जिनके नाम से हम बिकते है।और क्या कहे, हम ये भी भूल गए है की, सत्यम वद धर्मम चर।

  कल्प कल्पांतर में आपके द्वारा किये गए कर्म का फल आप को भोगना ही होगा।छूटने का केवल का एक ही मार्ग-वो अभि माने आंतरिक है।अंतर्जगत हेतु कर्म किया जाता है-वो कर्म निष्काम कर्म है।

  आदमी साधारण होते हुए भी असाधारण है। क्यों सोचते हो हमसे कुछ हो नहीं सकता। ये रोना क्यों? मनोबली होते हुए भी अपने ही बल से आप दुखी है। इस अहंकार को क्यों नहीं शुद्ध सात्विक/आत्मिक, रूप देते। मानव जन्म कोई साधारण जन्म नहीं है - सब तुम्हारी इच्छा शक्ति पर निर्भर है।

  शब्द और किताब जहां समाप्त होते है, वहां से अभ्यास प्रारम्भ होता है,

इसी से आत्मयोग सर्वश्रेष्ठ योग कहा गया है।

ऐसा जो आत्मा परम है, अजर, अविनाशी है-उसका ध्यान करके अपनी बुद्धि को पैनी करना है। केवल आप ध्यान करे, भावना में आप निमग्न हो जाइये। आपके मन में वो जो "है"- वो / आत्मा, अपने आप को प्रकट कर देता है।

मन धारण के योग्य हो जाता है, तब आप कुछ नहीं करते -वो अपने आप होता है। बुद्धि पारदर्शकता (मणिवत शुद्ध, आर पार दिखने देखने वाला, कोई रुकावट, कचरा नहीं) को प्राप्त होती है, और आपका काम बन गया।

आत्मानुभव सिखाया नहीं जाता-किया जाता है, अंतःकरण पूर्वक ध्यान लगाने का प्रयास करना पड़ता है, यदि रत हो जाये तल्लीन हो जाये तो प्रत्येक आत्मा-परमात्मा बनने में सक्षम है। ये सतगुरु के प्रभाव से ही सम्भव है।

साधक को चाहिए कि मन को विकारों से मुक्त करने का प्रयत्न करे। मन का खटपट:जो मैं और तू,मेरा तेरा, संशय दुविधा-ये अभ्यास से जाता है। बैठे तो सब भुला देना चाहिए। अनेक जन्मों के नाना प्रकार के आवरणों को दूर करने, आत्मशक्ति को विकसित करने के लिए-अभ्यास करने की आवश्यकता है। जितना बन सके, जैसा सिखाया गया उसी प्रकार से स्मरण कर बुद्धि को लगाकर, बलपूर्वक अभ्यास करना है। आपको दिव्य होना है-तब अशांति दूर होती है।

सारा जगत वासुदेवमय है अर्थात वासुदेव ही प्रकृति है। इसलिए जो कार्य होते है वह प्रकृति ही करती है। आप कुछ नहीं करते उसको सहायक मिल जाती है (हमारे या किसी भी रूप में) प्रकृति / वासुदेव / विराट रूप ईश्वर का, अपना कार्य स्वयं करती है। इसलिए कर्ता कौन है? वही जो शक्ति है - जो करते हुए कुछ नहीं करता, नहीं करते सब कुछ करता है (अतः मैं कहाँ?, मैं और मेरा यही माया है, हम ही है सब

जगह, विराट मैं = एको अहं बहुस्याम, अंश माने = पूर्ण) उसको अनादि और अनंत कहा गया। सुषुम्ना खुलने पर फिर कर्म फल नहीं बनता।

गुरुदेव के शरणागत होकर-मन से विकारों का ध्यान न हो, ऐसा प्रयत्न करो। शिष्य को सदा अपने आचरण से अपने गुरु का कृपापात्र बनना चाहिए - जिससे उनसे कृपा के साथ, दया और अनुग्रह प्राप्त हो सके। बिना सतगुरु (कृपा दया अनुग्रह से सम्भवतः) के एकाग्रता और निरोध होना कष्ट साध्य (आज असम्भव जैसा) है।

आप दुख (बाह्य वैभव हेतु) में जी रहे है, उसी में अपने बच्चों को शामिल कर रहे है। बड़े हुए तो भगवान भगवान किया तो फिर ये कैसे मिलेगा? याने शिक्षण बराबर नहीं है, इंद्रियों की तृप्ति के लिए हम बाहर बाहर घूम रहे है। ये दुर्गति तभी जा सकती है-जब प्रत्येक व्यक्ति अपने आप को समझे, अपने को जाने : तब चरित्र का निर्माण होता है, ये दुर्गुण दूर होते है। वर्ना चरित्र ये पुस्तकीय नाम मात्र है। चरित्र=सत्यं वद, धर्मम चर। धर्म माने आत्मा, आत्म साक्षात्कार।

आचरण में लाओ तब अपना समाज का राष्ट्र का भी तरण तारण होता है। नमस्कार, नमस्कार, शाष्टांग प्रणाम, इतने से काम नहीं होता है।आत्मा सदा प्रकाशित है, सदा ज्योति में है। यही हमारा सिद्धांत है-अपने आपको जानो।

परजीवी-कमाओ तुम और खाये हम। हम कुछ नहीं करते और सब कुछ पाना चाहते है। सम्यक रूप से, पूर्ण रूप से-आप जो कार्य किये, यह कृति, संस्कृति है। जब आपकी कृति बराबर है, प्योर है,स्योर है-तो आपके सामने यह परिणाम आता है। समर्थ होकर औरों को पंक में से निकालने में समर्थ होता है यही विज्ञान है। अपने जैसे औरों को (आत्म क्रीड़) तैयार करता है। समाज के लिए अहैतुकी,अपेक्षा रहित, निरपेक्ष बुद्धि से कार्य करता है।

- वो जानता है, ये दोनों के मध्य में रहकरके, और दोनों के मध्य में रहकर के समाज जो भारतीय कुल परिवेश उनका कल्याण होना है, संसार करना है, उनका मार्गदर्शन करना-ये ज्ञानी का काम है।

ज्ञानी कहीं आते जाते नहीं, ज्ञानी कहीं आते जाते नहीं। आप कार्यक्रम बनाते है और ज्ञानी को ले जाते है, ले आते है। मुक्त रहते है। लोग उसे ले जाते है, लोग उसे पहुंचा देते है, लोग लाते है लोग ले जाते है, लोग आते जाते है, लोगों का सहारा होता है, वो न कहीं आता है, न जाता है। उनके माने शब्दों का फल है। तो ज्ञानी सदा मुक्त है, ज्ञानी सदा मुक्त है। क्योंकि वो अपने ज्ञान प्राप्त है। तो मौनुस्वारः जो कहीं व्याकरण का है, आज तक कोई जान नहीं सका। अनुस्वार है ये मकार का अनुस्वार हुआ। अनुस्वार वो तुर्यावस्था में वो अनुस्वार होता है। जाग्रत अवस्था, स्वप्नावस्था, सुषुप्तिअवस्था, चौथा जो अवस्था है, देहातीत अवस्था होती है, वो देह से अतीत अवस्था है, वो चतुर्थअवस्था है, तुर्या अवस्था है, वो तुर्यगा है कहते है। यहाँ ग नाम इंद्रोयों का है। इंद्रियों के गति अब क्षीण हो जाती है, इंद्रियों कि गतियां क्यों आत्म में स्थित है तो आत्मशक्ति से उस अवस्था से लेकरके, अनेक जन्मों के संस्कार का ज्ञान होता है। माने वो तटस्थ हो जाता है, साक्षी बन जाता है। इनके कहने का तात्पर्य ये है कि मकार वे तीन शक्तियाँ जिसमें है जो - उत्पन्न करना, उसका पालन पोषण करना, और बाद में भक्षण करना, उस पदार्थ को। संवेद्य और संहावय। उत्पन्न भी कम, पालन पोषण करना, और उसको धारण भी कर लेना। तो धर माने धृ धातु से है। धृ से, धारयति इति धर्मम। मकार जो सामने है, म पद है, और ये धातु है, तो धातु और पद के मनिष्ठ, धर्म बन गया। इसलिए धर्म बन गया, क्या है ये है आत्मा, यही आत्मा है। म भी आया है यहाँ पे, मकार से इसके अनुस्यात बन गया, उत्पति, स्थिति, लय। ये जो पद है,ये है परम। परम माने एक के सिवाय दूसरा नहीं यही वेद है, ऋग्वेद ऐसा है वहाँ। ये परमात्मा है, यही आत्मा है।

जब तक उसमें है मकार में है, इस कारण से उसका जन्म मरण, आना जाना, क्योंकि बार बार पृथ्वी पर जो आकर, हमारा अपना जन्म जो होता है, अपने उद्धार के लिए होता है।क्योंकि मानव प्राणी में एक विशेष ज्ञान दिया। ये, है - वो ज्ञान से अपना जो भला बुरा है जानता है, वो समझता है। लेकिन अल्पज्ञान है, अल्प शक्ति, अल्प बुद्धि है,अल्पमति है। क्योंकि हमारी इंद्रियाँ जो शरीर में बनाई गई है, वो बहिर्मुख कर दिया। अंदर जो छेद है, ठेस दिया गया। वो ठेसने से क्या होता है, वो है पर्दा, जिसका नाम है सुषुम्ना, हम आप सुषुम्ना के बाहर, हमारी सारी इंद्रियाँ जो है, ये सब सुषुम्ना के बाहर है।, सुषुम्ना मार्ग से बाहर होने से, इसमें अंदर कोई ज्ञान नहीं होता। इसलिए हमारे, ज्ञान नहीं होता। इसलिए हम भय से दूर नहीं हो पाते। हम लोग भय से दूर नहीं हो पाते। तो भय से दूर होने के लिए- योग जिसका नाम है, ये धारणा, मकार जो आत्मा है, वो जो आत्मशक्ति है। आत्मशक्ति को धारण कर, संकल्प कर, की ऐसी धारणा हमारी हो कि आत्मशक्ति को तो हम,आत्मा को हम प्राप्त कर ले। ये आत्मशक्ति को हम प्राप्त कर लेंगे, आत्मशक्ति से मैं संपन्न होऊंगा, आत्मा शक्तिमान होऊंगा। ये संकल्प लेकरके, सतगुरु, सतपुरुष के पास, सानिध्य में रहकर, सुषुम्ना को सन्मुख खोल, द्वार खोल, वो जो बंद है, वो खुल जाता है। वो मार्ग वो खुल जाता है, वो मार्ग उन्मुक्त हो जाता है, आना जाना लग जाता है। और ये आना जाना, जैसे मैदान में आ जाये आप, कुछ उपाय नहीं करते। ये जो गुप्त ज्ञान है। कोई पहाड़ नहीं कुछ, मैं कितना समझाऊँ ये रामायण रोज बोल। ऐसे ये उन्मुक्त करने से आंनद, बन्द द्वार से जो उन्मुक्त हो जाता है उसके कोई कार्य नहीं होता। दिव्य शक्ति, दिव्यशक्ति, ये दिव्य सागर में, दिव्यसागर में जैसे आप अंदर घुसता है अनुभव में स्नान होंगे। ये आना जाना अनुभव होगा आपको। निष्णात होगा, वैसे आंनद होगा, वो आनंद, शक्ति संपन्न होते

चला जाता है। बैठने से होता है, योग से होता है। दुर्बल को कभी आनंद नहीं होता है। दुर्बल को जग में कहीं स्थान नहीं।, विकनिंग हैव नो प्लेस इन द वर्ल्ड। कमजोर कहीं भी ठिकाना नहीं है। देवो दुर्बल घातका - ये देव जो होते है न अमर जाति के देव, घातक है। ये दुर्बलों को खूब मारते है, माया में, अपने शक्ति में अपने और अपनी पूजा में, इधर उधर घुमाता है सब कुछ करता है। वो किसी का सगा नहीं है, वो मानव के बंधन में नहीं आना चाहता। इसमें आपकी अच्छे मार्ग में चलने पर, वो समीप में नहीं आते ताकि देव, देवी देवता वश में न कर दे। हम लोग इनके वश में न जाय नहीं तो काम करना पड़ेगा। इसलिए ये इंद्रियाँ बहिर्मुख बनाई गई है,और उसमें सतगुरु सतपुरुष के द्वारा वो जो सेंट्रल केनाल है, उसका मुँह खोलता है, अभ्यास के द्वारा होता है। गुरु के आदेशानुसार जो पालन करता है वो द्वार मुक्त होता है, उन्मुक्त हो जाता है, माने सदा के लिए खुल जाता है। हम इसको मुक्ति बोलते है, बाकि हमको और मालूम नहीं। जितने लोग जो है घुसने के बाद मार्ग में जो प्रकाश है, वो प्रकाश में आना जाना होता है, दिव्य दर्शन ये दर्शन होते है। नाना शक्तियाँ मिल जाती है। आपके वाणी में शक्ति आ जाती है, आपके जीवन में धैर्य आ जाता है। अस्थिरता दूर हो, स्थिरता आती है और शांतता, शांति की अनुभव होते है। तो ये तुर्यावस्था जो है ये शान्त्यावस्था है जोकि इसमें बड़ी शांति मिलती जाती है और बड़ा वो अच्छा लगता है। जैसे जैसे आप जायेंगे, अंदर वैसे वैसे आपको शांति मिलती जाती है।

धर्म माने क्या, अब आप बताइये, धर्म माने आत्मा। यही आत्मा है जो परम है, उसी को जो परम आत्मा कहा गया। जिसने आत्मसाक्षात्कार कर लिया वो महान हो गया। वो दुनिया में है, कहीं चला गया दुनिया से क्या नहीं। लेकिन उसकी चर्या है बदल जाती है, उसके सब कारोबार बदल जाते है, चरित्र बदल जाते है।और जीवन कष्टरहित हो गया, नाना शक्ति संपन्न हो गया। उसकी चाहना नहीं रहती, कोई चाहना नहीं।

लेकिन उसकी चाहना लोगों की चाहना होती है, लोग उससे कुछ चाहते है, तो लोगों के चाहने से, इनके द्वारा ऐसे ज्ञानी पुरुष के द्वारा, लोगों का कल्याण होता है। और वो आशीष,आशीर्वचन, आश्वासन मिलता है लोगों को, और ऐसे ज्ञानी पुरुष का आशीष समाज को प्राप्त होती है, समाज का कल्याण होता है। क्योंकि समाज का बहुत बड़ा ऋण है उसके ऊपर। वो ऋण चुकाता है सबके है समाज में संसार में। आपको समाज को देना है कुछ। क्या देना है, अरे बाप रे, समाज के लोग नहीं पालते, यही मानके समाज में तो आप आ गये। जब तक आप जीवित है समाज के अंतर्गत है। समाज का आप पर ऋण है क्या? संस्कृति जो दिये।क्या मिला, व्यवहार मिला। क्या मिला, भला बुरा मिला। क्या मिला,विद्या मिला कला मिला। नाना प्रकार के युक्ति, आपको ये सब जब तक है समाज ने दिया है। समाज रूपी भाषा में आप, माता पिता से लेकर निमित्त लेकर, यानी माँ का शरीर दिया, जीव, कितना दोष है तब ये जीव, माता के शरीर में प्रवेश कर, शरीर पाकर उसमें से जन्म लेता है उसके बाद भी माता पिता से उऋण हो गये? उसके बाद सब चीज सामाजिक है। नहीं तो खाली माँ बाप जो है, माँ बाप है? कितना बड़ा ऋण है सोचिये आप। हम समाज के घटक, समाज हमारे, मैं समाज का, जाना गया। बहुत देर में सब समझ में आ जाता है। ऋण चुकता करना है, समाज का हम पर ऋण जो है हम कोई पर्याय नहीं करते समाज के ऋण से हमें उऋण होना है। इसलिए समाज का सेवा करना हमारे लिए अनिवार्य विषय हो जाता है। जितना बन सके, बुद्धि से घर से शरीर से अर्थ से द्रव्य से जैसा जो बने, ऋण है समाज में। बड़े अच्छे है कोई परवाह नहीं, बड़े सुख में है बड़े, यद्यपि शुद्धं लोक विरुद्धं.. आप बहुत शुद्ध है लेकिन लोग विरुद्ध, इसलिए नहीं करना चाहिए न बोलना चाहिये। इतना बड़ा ऋण है हमारे ऊपर हमारे समाज के। मौन होकर,

तठस्ट होकर, साक्षी भाव होकर, किसी.. वो भी निष्पक्ष होकर, निरपेक्ष होकर रहना है, उसकी सेवा करना है, जहाँ जिसकी जो आवश्यकता हो। पंगु हो, बोल नहीं सी, चल नहीं सकता, बीमार हो, जा नहीं सकता, पड़ा हुआ है, सड़ रहा है, गल रहा है, इनकी सेवा करना है। येका यन्ज रेका चास्य मने.. वो जो साधु होगा..। वो कहाँ देवता है, मंदिर, मस्जिद, वो चर्च में नहीं है, वो आप है। अभी हमें केवल क्या करना है, पूछना है, पूछकरके ये वासना रूपी कुल आवरण इतनी चढ़ गई है, आत्मा रूपी पारदर्शक मणि में, ऐसा जो आत्मा है। जो कि निर्गुण निराकार है लेकिन वो सगुण साकार है, निर्गुण निराकार हो के भी वो सगुण साकार है। वो दो रूप है,निर्गुण भी है सगुण भी है। लेकिन निर्गुण भी तो एक गुण है। निर्गुण माने निरपेक्ष। निर माने कोई हेतु नहीं, कोई हेतु नहीं। गुण ये शक्ति है, गुण ये विद्या है, ये वो शक्ति है अपने में, अपने में है तभी तो करता है वो समाज के लिए समाज जैसी चाहती है। उसे अंतःकरण पूर्वक से वचन भी है और ये समाज में आश्वासन है और समाज में कार्य होता चला जाता है, इसलिए ऐसे ज्ञानी पुरुष आदर्श सम्मान प्रतिष्ठा होती है और वो प्रतिष्ठा बताये न क्या चीज है। ऐसा महान हो जाता है कि स्वानुभूत्या विराजते। ये आत्मा के अनुभव से होता है। प्रत्येक व्यक्ति अपने अपने अनुभूति से उसके पास में पहुँच जाता है। सब लोग सबके मन में वो बस जाता है, उसे मन में अपने स्थान दे देते है। वो जो सब इंस्पेक्टर थे.. ने जवाब दिया था। बच्चे का जनेऊ किया था। पुस्तक में दिया, भोजन करने बैठे एक सब इंस्पेक्टर श्री महाजन ने उस समय कहा था,रात को दस बजे, १००आदमी भोजन बना उसमें जो है चार पांच सौ आदमी खा गये और फिर वो बच गया। तो तात्पर्य ये है हम लोग बैठ के खाये वो कहता है पंडितजी मैं कुछ कहना चाहता हूँ एक पुलिस, पुलिस क्या कहती है भई आपके यहाँ मैंने देखा बिना आमन्त्रण के बिना

न्यौता के जितने पार्टिस है भारत में उसमें के नेता और यहाँ बिना बुलाये सब काम किया, बनाया ला दे लाया सब और लिखा दिये लाये सब और इतना शांतता पूर्वक हुआ कि मैं देखकर दंग रह गया। पैसे वाले जो है उनके यहाँभी ये कार्य नहीं होता है। ये विशेष बात है, क्या विशेष बात है। यहाँ जो जमा होकर लोगों ने जो जो मन में आपको, लोगों ने मन में आपको स्थान दे रखा है बसा रखा है वरना ऐसा कोई नहीं,आता। मैं सब इंस्पेक्टर बोल रहा हूँ। मेरा यही काम है निरीक्षण करना। भाई ये हमको मालूम नहीं आप कह रहे है। सही तो बात न्यौता तो हमने ७२ आदमी को दिये उनमें भी चार आदमी को दिये नाउ वापस आ गया। तो ये चीज जैसे जैसे आप आत्मानुसंधान में आप चले जायेंगे इसमें जो शक्तियाँ है वो प्राप्त होती जाती है। आपको न मालूम,आपको प्राप्त होता चला जाता है। अखण्ड ज्योति, कि ये जो धारणा है सारे जग और सारे ब्रम्हांड को उसने धारण किया है। पूरा धारणा हुई आप में है वो परमा शक्ति है वही आत्मशक्ति वही आत्मा है।सबको धारण किया है।और वो समाहित अनेक ब्रम्हांड अनंत ब्रम्हांड है सबको।पहले से है, अभी भी है, आगे भी रहेगा।ये है, सत्यं ज्ञान अंनतं ब्रम्ह।ये सत्य है ज्ञान ही अनंत है और वही पद है दूसरा और कोई नहीं उसमें।ज्ञान मराठी में है ये ज्ञान सबमें जो है वह आपमें भी है। स्वामी रामदास जी स्पष्ट बोले है - ज्ञाने च लक्षण।ज्ञान माने आत्मज्ञान।पहावे आपण स आपण या...ये ज्ञान है और कुछ नहीं आत्मा क्या है, वो ज्ञान। आत्मस्वरूप ज्ञान ये बोध होना चाहिए आपको।क्या बोध होना चाहिए कि नाहं मनुष्यों न च देवो...अहं निज बोध रुपः।अयं आत्मा ब्रम्ह।बने हुए है वही प्रकाश जीवन है।और जहाँ वासना ये एक भी संस्कार बाकी है वहाँ तक तो अहं बना है, एक भी संस्कार बाकी है,अनंत जन्मों के संस्कार हमारे सहस्त्र दल कमल में पड़ा है एक भी यहाँ पर बाकी है आपका अहंकार जा नहीं सकता। वहाँ

तक पीछा करती है जब तक एक भी संस्कार जलते जलते सहस्त्र दल में एक भी जो हो वहाँ पर,उसके बाद में निर्बिज समाधि है। पुण्य और पाप के वासनाएं के बीज है। उनके बाद पद है। बीज क्या है वासना।वासना रूपी ने मैं,मैं,मैंने किया, मैंने किया हूँ। मैंने किया हूँ नहीं तो तुम्हारा ऐसा हो जाता,मैं तुमको देख लूंगा भाग जाओ यहाँ से।तुम्हारे जो है क्या कहते है उसको, खून भी करवा दे।कितना तगड़ा मैं है ये कि वो खून भी कर सकता है वो आदमी।आदमी न मालूम क्या कर सकता है। तो संगात् संजायते कामः... मनुष्य स्वयं अपने नाश का कारण है। सोचिये ये परमावधि तक परमशक्ति जो है, ये धारणा है वही आत्मा धर्म है।वही परम आत्मा है। ये क्यों सोचते हो कि हम बड़े पापी है बड़े पापी है। अरे हम बड़े पवित्र है आत्मा क्यों नहीं सोचते। अरे सोचने से तो वही बनता है।ध्यान धारणा आप क्या करते है, सोचने तो करते है आप। आगे सोचे हमें ये करना है, ऐसा होना है। अच्छा मार्ग क्यों नहीं आते। अच्छे मार्ग में आकरके अभ्यास सुंदर करिये। जैसे ही आप भीतर जायेंगे, नाना प्रकार शक्ति संपन्न होंगे।और आपकी ये सुरक्षा और उद्धार उसकी चिंता नहीं रहेगी। क्यों नहीं रहेगी, आप मुक्त हो जायेंगे। मुक्त क्या है, पहावे आपणा.. तो ये आत्मा आप अपने आप को देखो न हम कितने अच्छे भले है बुरे है। इतना रोज सोचिये सोते समय इतना ही सोचके सो जाय, मुक्त माने वासनाओं से।

ññ âÎàÏuàÂàsw ññ

- एक गुरुभाई है जिनकी माँ लगभग 83 वर्ष की है 96 में गुरुजी से दीक्षित है। सुगर पेशेंट है पैर के पास फरवरी 2020 के आसपास घाव हो जाता है, कोरोना का भी डर है ड्रेसर के आने जाने से, (फरवरी से सितम्बर अक्टूबर),7-8 माह में गहरा होते कुरूप जैसे होते, घर में सबको लगने लगता है, यह ठीक होगा भी की नहीं सभी चिंतित रहते है, पैर काटने की आशंका बनी रहती है। ऐसे में उन्हें एक प्रेरणा होती है, गुरुजी के श्री चरणों के पास संकल्प से मां के घाव को ठीक करने की इच्छा में, उन्हें विनती कर कहकर, एक वस्तु के रूप अर्पित कर देते है। इसके बाद ही मां को जो प्रायः कभी अब तक न हुआ था, गुरुजी का दर्शन मिलता है। दर्शन के बाद से घाव ठीक होते, शीघ्र ही एक माह के अंदर पूरा भर जाता है। साथ ही उन्हें तीन बार दिन इन्सुलिन लगाना पड़ता था, अब नहीं लगाना पड़ता है, थोड़ी सी दवा, आधी गोली, देने से बस ठीक हो गया है। और इससे भी बड़ी बात यह है, माँ को तब से अब तक लगभग प्रतिदिन और कई बार हर समय गुरुजी का दर्शन मिल रहा है, ऐसी कृपा में,असाध्य जैसा तबियत और घाव ठीक होने के साथ साथ दर्शन भी गुरुजी मिलते जा रहा है, देते जा रहे है। गुरुभाई को 2020 के ऐसे समय में जबलपुर जे.ई.ई. एग्जाम हेतु बिटिया को लेकर जाना था, उन्हें दोनों हाथों में मस्कुलर पेन एक दो दिनों के लिए अचानक उठता है उनकी आवाज निकलना भी बन्द हो जाता है, 5-7 घण्टे कार चलाते समय तो बड़ी विकट स्थिति हो सकती है, जाये या न जाये असमंजस है, बेटी का भविष्य भी है।, तब वो पुनः गुरुजी को कहकर, सौंपकर आप ही लेके चलिए साथ लेके आइये, आप ही एग्जाम दिलवाइये, उनके भरोसे से एक नहीं दो बार ऐसे ही एग्जाम दिलवाने निकल जाते है उन्हें कोई तकलीफ या दर्द नहीं उठता है, गुरुजी की ऐसी कृपा है आने जाने में लग रहा है कि जैसे 23 जुलाई को जैसे मुंगेली जाने पर आनन्द उत्साह लगते

रहता है। इस तरह गुरुजी साथ में बने रहते है और सब काम बना देते है। बेटी का इंजी.में एडमिशन हेतु सलेक्शन होकर उन्हें कालेज में दाखिला हेतु जाना है, उन्हें ऐसा कुछ मिला हुआ है जिससे उन्हें लगता है, ऐसे में बेटी का दाखिला होने में बहुत कठिनाई हो सकती है और इस हेतु पूर्व तैयारी भी कर लेते है। पुनः फिर गुरुजी को सब सौंपते हुए संकल्प समर्पण में कुछ फूल चढाकर और उन्हें साथ लेकर, वो निकल जाते है और पाते है कि उनकी कृपा से न कोई प्रश्न उठता है और न उन सब तैयारी की कोई जरूरत उन्हें पड़ती है, उनका दाखिला बिना अड़चन के, जाते ही हो जाता है।गुरुजी के बल से वो 9 घण्टे गाड़ी चला पाते है। ऐसे हमारे गुरुजी सब गुरुभाइयों के साथ रहते हुए सबका कार्य करते रहते है, कर रहे है।

- दुर्ग के एक गुरुभाई है (अर्जुन सिंह नागरे जी, लगभग 76 वर्ष, रिटायर्ड लेक्चरर गोवर्नमेंट हाईस्कूल दुर्ग) के घुटने में तकलीफ अभी कुछ माह पूर्व ऐसा हो गया था, कि उन्हें हिलने डुलने में भी परेशानी थी चलना फिरना कहाँ, अत्यंत कष्टमय, पुत्र डॉक्टर, सब दवाई हो गई, ठीक वह हुआ नहीं। चार छह माह में बहुत परेशानी हुई। एक दिन गुरुजी की प्रेरणा हुई मिली कि पूजा स्थल में गुरुजी के श्री चरणों को छूकर, छू छूकर वो घुटने को ठीक करने की भावना करने लगे। उनके शब्दों में गुरुजी के चरणों को छू छूकर फिर उस हाथ को घुटनों में लगाकर, उतार (वहां से नीचे की ओर हाथ को लेते जाना, शायद) लेता था। आज मैं घुटने की परेशानी से पूर्ण मुक्त होकर स्वस्थ हूँ, ऐसे वो कल दिनांक3.1.21 को फोन पर बताये है। ऐसी गुरूजी की कृपा है, हुई है, प्रायः सब उन्हें मानने वालों पर है, कोई न देखे हो पर भी है, और होती रहती है। अभी कुछ समय पहले ही,एक गुरुभाई शिवपुर आश्रम आये वकील साहब है, एक दो दिन रुके भी, उन्हें विभ्रम जैसा हो गया था कि

एक अत्यंत महत्वपूर्ण पेशी है जो कि कल है, ऐसा सोचते आश्रम में आश्रय में थे, तभी किन्हीं का फोन आया वो पेशी तो आज है, वो परेशान सा होकर घबरा उठे। प्रेरणा वश, किसी मित्र वकील को वो फोन किये, मित्र जज साहब के पास गये, ऐसे गये जैसे उनके साथ श्री गुरुजी ही गये, और ये यहां है और वहां उनकी उपस्थिति भी हो गई, क्लाइंट का कुछ नुकसान न हानि होते हुए, जैसे वो शरीर में होते और करते वैसे ही सब कुछ लगभग हो गया। अच्छा हो गया। ये अभी अभी की बात है, कुछ समय पूर्व की बात है, ऐसी गुरुजी की महती कृपा का उनके, आश्रय का, प्रभाव है। जो अविश्वसनीय जैसा कह सकते है, कहा जा सकता है।

- बिलासपुर की एक गुरुबहन जो.पी.एच्.डी. पिछले कुछ सालों से कर नहीं पा रही थी। वे एक दिन पूजास्थल में पादुका / चित्र में गुरुजी के श्रीचरणों में सिर रखकर खूब फुट फुटकर रोई, जैसे हो भाव यही था कि पी.एच्. डी. नही हो पा रहा है, गुरुजी कृपा करें। दूसरे दिन वह कमरा सफेद रोशनी से भर गया, उनको गुरुजी एक कागज दिखाए जो सर्टिफिकेट था फिर बोले इसी के लिए रो रही थी न, यह ले, कहकर वो सर्टिफिकेट दे दिए, जो आगे मिलने वाला पी.एच्.डी. का रिजल्ट था। फिर पिछले वर्ष वो गुरुबहन पी. एच्. डी. की उपाधि से विभूषित हुई, उन्हें जो सर्टिफिकेट मिला वो हूबहू वही था जो गुरुजी पहले से उनको दे दिए थे। रात को लगभग 10-11 बजे खुली आँखों से उन्हें यह सब गुरुजी दिखाए थे, उनका कहना है मैं जाग्रत अवस्था में यह सब देखी हूँ, और गुरुजी मुझे वह रिजल्ट दे दिए जो बाद में मुझे मिला, बिल्कुल वह वही था। सादर प्रणाम।

- गुरु प्रसाद भैय्या बताये, उस घर में पूरे परिवार के साथ कुल ६ लोग बहुत दिनों से रहा करते थे, गुरुजी की प्रेरणा से उन्हें लगा इस घर को

जल्द ही छोड़ देना चाहिए। सामान समेटे और दूसरे घर को भिजवाये, सारे सदस्यों के जाने के बाद वो स्वयं जैसे ही उस घर में ताला लगाये बाहर निकले उनकी आँखों के सामने तत्काल ही घर का पक्का छत भरभराकर नीचे गिर गया। यदि वे रहते तो सभी ६ सदस्य कांक्रिट के नीचे दबकर मर जाते, ऐसा वे कहे। सादर प्रणाम, जयगुरुजी।

- गुरु प्रसाद भैय्या हमें बताये कि गांव में एक बार बहनोई, बहन को लेने आये थे, तब उस समय गुरुजी भी थे। बहनोई को छुट्टी नहीं मिली थी, उन्हें दूसरे दिन वापस बहन को लेकर जाना था। गुरुजी दूसरे दिन जाने के लिए उन्हें मना किये, तब वे छुट्टी न मिलने के कारण से असमर्थता में वापस उसी दिन जाना होगा गुरुजी को बताये। दूसरे दिन वो बहन बच्चों को और रिक्सा में बिठाकर और स्वयं साइकल से पीछे पीछे चल पड़े, रिक्से में अनाज वगैरह जो सामान हम बेटी बहन को देते है, वो सब नीचे रखे हुए थे। एक ढालान आता है और रिक्से का ब्रेक खराब हो जाता है सामने बहुत बड़ी चट्टान है जिसमें उसे सबके साथ टकराना था और सबको खत्म होना था, और या उधर एक खाई या नदी कुछ बताये थे, थी उसमें रिक्से को चला जाना था। इसी बीच क्या होता है चट्टान की ओर रिक्सा बढ़ी ही जा रही है और हैंडल रिक्से का अचानक मुड़ जाती है, और चट्टान में टकराने से वो सब बच जाते है और उधर खाई या नदी में जाने से पहले रिक्सा खुद ब खुद पलट जाती है।और पलटी ऐसी की पहले इनको जो ऊपर बैठे थे, गिरना था फिर रसद सामान जो नीचे बोरियों में था उसे इनके ऊपर गिरना था। लेकिन हुआ ठीक उल्टा, बोरियों में भरा सब सामान पहले गिरा और उसके ऊपर ये लोग गिरे, तथा बहनोई भी सायकल में चट्टान से टकराते नीचे जाने से पहले सायकल से नीचे वे भी गिर पड़े। इस तरह गुरुजी की शक्ति कृपा से सब होनी अनहोंनी होकर, सब सुरक्षित बच गये।

- ओ.पी.शर्मा भैय्या के छोटे भैय्या जो गाँव में रहते है को, गुरुजी के जन्म दिन २३.७. १९ में रात्रि लगभग ८ बजे एक स्कार्पियों का ड्राइवर एक्सीडेंट करने के बाद तेजी से भागने की फिराक में तीन चार लोगों को हताहत करते हुए इन्हें भी पीछे से मार देना चाह रहे थे, छोटे भैय्या बाइक में थे चलते हुए वो ट्रक के नीचे आने की स्थिति में होने से ट्रक को पकड़े हुए भी थे, वो एक प्रकार से स्कार्पियों वाले को कहना चाह रहे थे मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है जो मुझे मारने में उतारू हो ठीक लगभग उसी समय गुरुजी की परम् कृपा से वह स्कार्पियों स्वतः रुक गया, और ड्राइवर की पुलिस व नागरिको के द्वारा जमकर पिटाई हुई, किंतु छोटे भैय्या जो ट्रक से सटकर बाइक चला रहे थे लगभग ५० फिट बाइक के साथ घसीटते गये, इससे इन्हें कुछ चोटे आई जो घटना की तुलना में काफी कम कहीं जानी होगी और पैर में एड़ी के पास फेक्चर हुआ है मगर बगैर हेल्मेट के कोई भी हेड इंज्यूरि नहीं हुई यह विशेष कृपा है। इस तरह गुरुजी के जन्मदिन में उनकी अपार कृपा से एक होनी अनहोनी में वो बदल दिये।

- मुंगेली 83 में ओसवाल भवन में गुरु पूर्णिमा के समय, वहां मैं सपरिवार पहुंचा, शीत पित्त की तकलीफ शुरू हो गई, मुझे वह बीमारी थी जिसमें चकत्ते निकल आते है और साथ में बुखार कभी तेज बुखार कभी हल्की बुखार, के साथ में जलन और खुजली आंख भी सूज जाती थी बहुत बैचेनी और तकलीफ होती थी और ये आये दिन होते रहते था महीने में कभी एक दो बार कई बार तो मैं (श्री ओ.पी.शर्मा जी इंदौर) परीक्षा भी नहीं दे पाता था इनकी वजह से जैसे बोर्ड परीक्षा दो साल दसवीं और ग्यारहवीं बोर्ड में मैं अपने एक एक पेपर मिस कर गया था क्योंकि बीमारी में इतनी तकलीफ हो जाती थी मेरा ही खून निकालते थे एक हाथ से और मुझे ही इंजेक्ट करते थे तब जाके कुछ राहत होती थी तो

उस दिन मैं बैचेन था और गुरुजी कि पूजा हुई और उसके बाद लोग अपना अपना बोले और ध्यान किये जब प्रवचन दे रहे थे तो गुरुजी से मन ही मन प्रार्थना कर रहा था गुरुजी इस बीमारी की वजह से मैं अपना ध्यान केंद्रित नहीं कर पा रहा हूँ ठीक से सुन नहीं पा रहा हूँ, जब गुरुजी का प्रवचन समाप्त हो गया तो मैं सबसे पहले प्रणाम किया गुरुजी से मैंने कुछ बोला नहीं सर्वज्ञ है हमारे सब जानते थे सब समझते है पंद्रह बीस सेकंड में जैसे सबको आशीष वो देते थे ऐसा मुझको भी दिये और मैं वहां से चला गया-तब से लेकर आज तक मुझे ये बीमारी कभी नहीं हुई। तब से लेकर आज तक(3.6.21)चकत्ता को लेकर कभी जिसको शीत पित्त कहते है। मैं गुरुजी के चरणों में बार बार प्रणाम करता हूँ।

- 2020 मार्च की यह घटना है, जिसमें गुरुजी की सर्वज्ञता, सर्वशक्तिमत्ता, सर्वत्रता को प्रकट पा सकते है। एक पहाड़ है ऊपर 300 मीटर की ऊंचाई दिखाता हुआ ऊँचाई लिखा हुआ है। वहां एक गुरु परिवार है घूमे घामे साथ में एक सोलह साल का युवक है, गुरुभाई के मामा का लड़का है, जिनकी मां एक वर्ष पहले खत्म हो चुकी है। उस युवक के मन में सीढ़ी से न उतरकर शार्ट कट जैसे फिसलने वाले रास्ते से वह उतरने लगा, पहाड़ है पहाड़ में चलने लगा और स्पीड उसका बहुत बढ़ गया, उसके नीचे में निर्माण कार्य चल रहा था, लोहे के सरिये छड़, सीमेंट, और गिट्टी रखा हुआ था।और वो 100 मीटर करीब उतर चुकने पर 600 फिट से, पता नहीं क्या हुआ उसका पैर फिसल गया, दौड़ा हल्का, चला चलने लगा, और फिर दौड़ने लगा, दौड़ने लगा फिर पैर फिसला तो कई राउंड वो हवा में घूमा हम लोग भी घबरा गये तुरंत गुरुभाई बोले हे गुरुजी इसको बचा लो, बस,कुछ भी करके। और उसके बाद वो गिरा, जमीन में जहां पर इतना पत्थर था, इतना गिट्टी था,

हम लोग जल्दी सब दौड़ कर नीचे उतरे, देखा तो उसको एक खरोच तक नहीं आया था। हम लोग सोचे ये गया, इसका सिर विर फूट गया, इतना चोट लगेगा ऐसा लगा कि...।करीब करीब वो 600 फिट से गिरा, डैम के पहाड़ से सरोदा बांध नाम है 300 मीटर लिखा है ऊँचाई पर, उसमें। जब वो गिरा लुढ़कते लुढ़कते तो हम लोग सोचे सिर कान इसका फूटा बचने की, बहुत उम्मीद कम था। याने कि गुरुजी ने बचा दिये।गोल गोल घूमते हुए वो गिरने लगा तो हम लोग बोले हे गुरुजी इसे बचा लीजिए नहीं तो हमारा नाम खराब हो जायेगा, बच्चे को घुमाने लाये थे, मां खत्म हो गई है।चश्मा जो पहना था, चश्मा में तक खरोच कुछ भी नहीं आया,जबकि वहां पर इतना पत्थर था, सौ दो सौ लोग लगभग वहां थे सब आश्चर्य कर रहे थे। भीड़ जम गया था, देखने के लिए उसको। हम लोग को ऊपर से उतरने में दस बीस मिनट लगा, हम लोग तब तक देखे तो वो 600 फिट से गिरा, गिरा वो फिर बैठा, फिर वो खड़े हो गया।100-200 लोग वहां थे किसी को उम्मीद नहीं था कि ये बचेगा, नीचे में गार्डन में भी लोग थे, वो सब आश्चर्य के साथ जमा होकर देखने लगे कि इतने ऊँचाई से बड़े बड़े पत्थरों और नुकीले नुकीले गिट्टी से यह कैसे बच गया। उसे खरोच तक नहीं आया,कुछ भी गहरा चोंट न आया, खरोच थोड़ा बहुत आया होगा तो आया होगा, लेकिन खरोच तक नहीं आया ऐसा बोल सकते है। सब लोग (जानने वाले) मेरी ओर देख रहे थे कि गुरुजी इनके साथ रहते है मैं बोला जय गुरुजी खींचों इसको पकड़ के ऐसा, और अपने हाथ से भावना से एक्शन किया मानो मैं (मुझमें जो गुरुजी है जो, सब शिष्यों के साथ मैं रहता हूँ,अर्थात जो मानते है उनके साथ भी, ऐसा गुरुजी बोले है) उसे खींच रहा हूँ। सब लोग और वो युवक बोलने लगे, आपके भगवान है गुरुजी है तो मैं बच गया नहीं तो कोई नहीं बचा सकता था, मामा लोग सब लोग बोल रहे थे, आपके गुरुजी ने बचा

लिये। गुरुजी आपके साथ रहते है नहीं तो मुश्किल था। ऐसे हमारे पूज्यनीय परम पूज्यनीय गुरुजी को दण्डवत हमारा प्रणाम, सतत, सर्वत्र होता रहे। हमारे क्षुद्र अहंकार को, मिथ्या मैं को, कुछ उनसे पाये और मैं मैं बकरी की तरह चिल्लाने वाले मन को, बार बार खत्म कर कृपया, हम सबका, सबकी मृत्यु से अपनी भी जो होगी, उसे देखकर, हर पल अनुकूल प्रतिकूल को तजकर दण्डवत मैं को शरच्छेद करते कृपया ऐसा हरपल प्रतिपल, बगैर ये है यहां है ये हूँ कितना हूँ, क्या बात है, मैं मेरे मेरा जैसे होशियरी के कृपया हो सके तो होता रहे।अन्यथा हम उनके कभी भी ठीक से न रह, उनके, सर्वथा, न, हो सकेंगे। ऐसे महान महिमावान के-उनका हो जाना ही लगता है, सब कुछ हो।

- दीक्षा ग्रहण करने के (श्री गुरुप्रसाद पाण्डेय जी,शहडोल) दूसरे या तीसरे दिन से ही साधना / अभ्यास करते समय पैरों में घुटने से नीचे झनझनाहट सी होने लगी।

  सप्ताह भर बाद शवासन में ध्यान करते समय अचानक सुनहरा ॐ दिखाई दिया।कमर में तेज धमाका हुआ व जीभ बाहर निकल आई।पास ही पूज्य गुरुजी की आकृति दिखाई दे रही थी व शरीर बहुत ही हल्का महसूस हो रहा था।मैं चाहकर भी जीभ अंदर नहीं कर पा रहा था, मांसपेशियों निष्क्रिय हो गई थी,कुछ देर बाद जीभ अंदर हो गई।

  सुबह जागने पर शरीर बहुत ही हल्का लगता रहा,सारा वातावरण इतना सुंदर इतना आकर्षक व शांत लगने लगा जितना जीवन में कभी भी नहीं लगा था,संसार में जो भी दृष्टिगोचर होता,सब प्रेम व आनन्द से ओतप्रोत प्रतीत होता।

  तरह तरह के देवी देवताओं के दर्शन होने लगे,२८दिसम्बर७४से करीब १५दिनों तक श्रीकृष्ण जी विभिन्न रूपों में दिखाई देते रहे।मुझे पूज्य गुरुजी के दर्शन की अभिलाषा रहती थी।गुरुजी बताये एक ही दिव्य

शक्ति है जो विभिन्न रूपों में स्वयं को प्रदर्शित करती है। साधना काल में विभिन्न तरीकों से प्रकाश दिखाई देता था-कभी मस्तक के सामने से, कभी सिर के पीछे से आता हुआ दिखता, कभी बहुत तीव्र असहनीय होता था। कभी मेघाच्छादित आकाश तो कभी निकलता हुआ / ताम्रवर्णी / अरुणोदय सूर्य।परिणामतः एकांत में बैठकर पूर्णिमा का चंद्रमा / उगता या अस्त होते सूर्य नहीं देख सकता हूँ, नहीं तो अपने आप में डूबने लगता हूँ क्योंकि ये ठीक वैसे ही दिखते है जैसे ध्यानावस्था में दिखाई देने वाला प्रकाश।कुछ माह बाद मुँह में एक स्वादिष्ट द्रव स्रवित होने लगा, वह कहां से आता था,यह पता न लग सका। अब जब भी याद आती है, रसास्वादन मिल जाता है।

एक बार स्वयं की मृत्यु भी भोग चुका हूँ, शरीर अलग पड़ा दिख रहा था, मैं वही बाहर खड़ा था।स्वयं का शरीर इतना गन्दा दिख रहा था कि वापस उसमें जाने की इच्छा ही नहीं हो रही थी। ऐसे अनुभव जब भी होते थे, किसी न किसी कारण से / गुरुजी के कहने से, मुझे शरीर में प्रविष्ट होना ही पड़ता था।

सन ७७ में सुषुम्ना मार्ग में कम्पन बढ़ने लगा, पूज्य गुरुजी / ॐ का स्मरण होते ही / इनके चर्चा होते ही,सनसनाहट व उत्तेजना बढ़ जाती थी।दिव्यज्योति सारे मस्तिष्क में फैल जाती तथा ललाट में भार व कम्पन होने लगता, ऐसा लगता मानों पूरे मस्तिष्क में कुछ भर गया हो, तथा स्थिति को संभालना कठिन हो जाता।

रास्ता चलते चलते पूज्यगुरुजी का स्मरण हो आता तो चलना बन्द हो जाता। यदि साइकल पर बैठा रहता साइकल खड़ी हो जाती गिरती नहीं थी। यदि पीछे से आने वाला कोई राहगीर कह पड़ते, बीच में खड़े क्यों हो? तो (साइकल) पुनः चल पड़ता।

कभी कभी साधनावस्था / अभ्यास में बहुत अधिक जलराशि / जलप्रवाह दिखाई देता है। कभी गुरुजी उसमें से निकलते हुए दिखते, तो कभी मैं तैर रहा हूँ, ऐसा लगता / दिखता।कभी जोर से हवा चल रही

है, ऐसा लगता।
गुरुजी की असीम कृपा से अलौकिक दिव्य शक्तियों का आभास होने लगा है। अब प्रकाश अधिक तीव्र दिखाई देता है, लाल, ताम्रवर्ण, सफेद, हरा, पीला व सुनहरा रँग दिखाई देता है।प्रकाश का स्वरूप चांद सूर्य तारे, दीपक / जलती हुई अग्नि का सा दिखाई देता है। कभी कभीयह शरीर स्वयं को, किसी दर्पण में प्रतिबिम्बित होता दिखाई देता है, वह अत्यंत सुंदर व स्वस्थ होता है। मन जब गुरु चरणों में लीन होने लगता है, मन इतना अधिक शांत हो जाता है कि चाहकर भी उसे दूसरी ओर ले जाया नहीं जा सकता, आंखें बंद हो जाती है या फटी रह जाती है, इस शांति सागर में सम्पूर्ण शरीर गतिहीन हो जाता है, श्वास प्रश्वास का भी अहसास नहीं रह जाता, सुख दुःख की अनुभूति न होकर आनन्दवत पड़ा रखते है, पता नहीं यही ब्रम्हानन्द है या आगे कुछ और है। काश ऐसा हर वक्त बना रहता, इसके सामने सारे सांसारिक आनन्द अतितुच्छ है।
कभी कभी खुली आँखों से भी यह दिव्य प्रकाश दिखाई देता है। सत्यवाणी, सत्यभाषण की ओर विशेष रुचि होती जा रही है।
पहले शरीर हाथ पैर आदि अंगों में सनसनाहट से भर जाता था, अब यह सब बन्द हो गया है। जब से उत्तेजना, सुषुम्ना मार्ग से बिना किसी रुकावट के ऊपर मस्तक तक जाने लगी है, तब से बन्द हो गया है। यह उत्तेजना कब आरम्भ हो, कब बन्द होती है मुझे मालूम नहीं पड़ता।
एक बार ध्यान में काले रंग के शिवलिंग पर सफेद चमकदार सर्प लिपटा दिखाई पड़ा, जब वह सर्प हिलता तो लगता सिर का निचला हिस्सा फूट जायेगा, वह थोड़ा भी ऊपर उठता तो इतने जोर का सिर में धक्का लगता कि आवाज भी सुनाई देती साथ ही ललाट पर ॐ व गुरुजी के दर्शन होते, कुन्डलिनी के दर्शन के बाद यह सब क्रियाएं शांत हो गई।पूज्य गुरुजी को बताने पर उन्होंने ध्यान करने पर रोक लगा दी।

यह साधना गुरु कृपा बिना प्रायः असम्भव है। साधना में सफलता दिलाना, किसी महान शक्ति / सतगुरु का ही कार्य है। संशय व भ्रम बिना सतगुरु सहायता के दूर नहीं होते। पहले गीता समझ में नहीं आती थी, अब सारा रहस्य समझ में आने लगा है, स्वयं के अनुभवों को उसमें पाता हूँ। संतों की वाणी भी सहजता से समझ आने लगी है। मन तब तक शांत नहीं हो पाता, जब तक कि कोई दर्शन नहीं हो पाता। अब सारे जग का वास्तविक रूप समझ में आने लगा है। मुझे जो कुछ भी इस मार्ग में प्राप्ति हुई है, वह सब सद्गुरु कृपा से ही हुई है, गुरुस्मरण व गुरुपूजा के अतिरिक्त मैंने और कुछ भी नहीं किया । गुरुजी ने अतुलकृपा करके जो सुख,शांति दी है, उसकी कभी भी किसी भी रूप में कीमत नहीं चुकाई जा सकती।